प्रश्न बैंक-सह-उत्तर पुस्तक

Question Bank–Cum–Answer Book

2023

Class-12

भूगोल
(GEOGRAPHY)

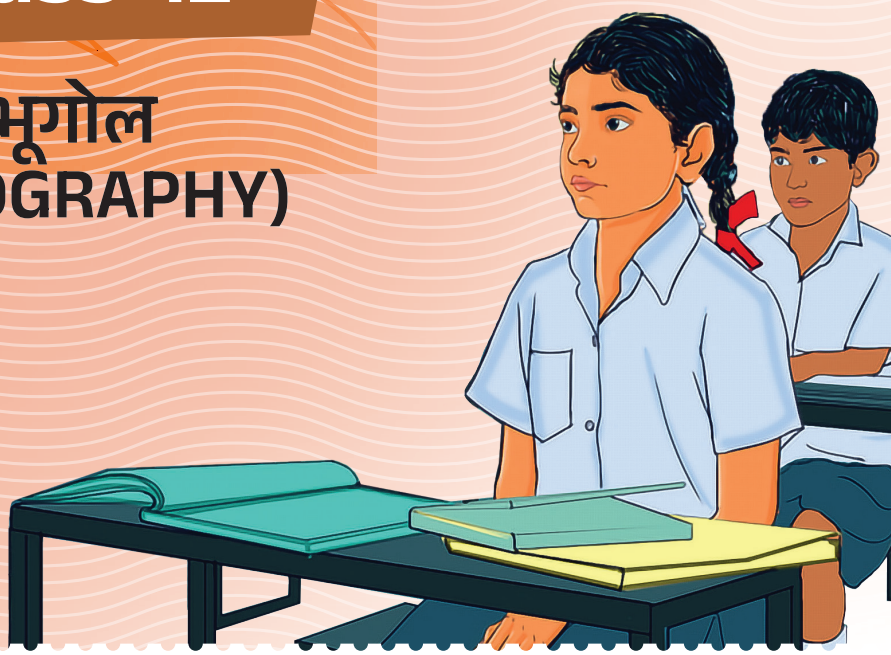

Jharkhandlab.com

झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi

प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक
Question Bank-Cum-Answer Book

Class - 12

भूगोल
Geography

Jharkhandlab.com

2023

झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi

प्रथम संस्करण : माह अगस्त 2023, श्रावण विक्रम संवत् 2080

© झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड

jharkhandlab.com

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, छायाप्रतिलिपि अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण या जिल्द के साथ अथवा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।

- **क्रय–विक्रय दण्डनीय अपराध**

झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड द्वारा प्रकाशित

प्राक्कथन

बच्चों के लिए निर्धारित अधिगम प्रतिफल प्राप्त करने का मार्ग सरल एवं सुगम होना आवश्यक है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड के द्वारा कक्षा 12 के सभी विषयों के लिए प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक का निर्माण बच्चों के अधिगम कौशल को सुगमतापूर्वक विकसित करने एवं झारखंड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा के लिए उन्हें तैयार करने के उद्देश्य से किया गया है। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में सरल भाषा एवं रुचिकर ढंग से विषय–वस्तु को स्पष्ट करते हुए प्रश्नोत्तर दिए गए हैं। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के माध्यम से बच्चों में न केवल ज्ञानजन्य प्रतिभा का विकास होगा बल्कि आज के इस प्रतियोगिता के दौर में भी वे अनुकूल सफलता पाएंगे। हमारे प्रयत्न की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि विद्यालय के शिक्षकवृन्द बच्चों की कल्पनाओं के साथ कितना जुड़ पाते हैं और विभिन्न प्रकार के प्रश्नोत्तरों को सीखने–सिखाने के दौरान अपने अनुभवों के साथ–साथ बच्चों के विचारों के साथ कैसे सामंजस्य बनाते हैं।

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में झारखंड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों के विविध प्रकारों यथा– बहुवैकल्पिक, अतिलघु उत्तरीय, लघु उत्तरीय एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न आदि के अंतर्गत पर्याप्त मात्रा में प्रश्नोत्तर समाहित किए गए हैं ताकि इसके अध्ययन से छात्रों में ना केवल विषय–वस्तु की समझ विकसित हो बल्कि उन्हें सीखने के प्रतिफल की भी प्राप्ति हो, साथ ही वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा के लिए उनकी अच्छी तैयारी हो सके और वे परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करते हुए सफलता प्राप्त कर सकें।

अंत में मैं इन पुस्तकों के लेखकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ।

के० रवि कुमार भा.प्र.से.
सचिव
स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड

Jharkhandlab.com

भूमिका

प्रिय शिक्षक एवं विद्यार्थी,

जोहार !

हमें कक्षा 12 के विभिन्न विषयों के प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक से आपका परिचय कराने में प्रसन्नता हो रही है। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों के विषयवार एवं अध्यायवार अधिगम बिन्दुओं को समायोजित करते हुए झारखण्ड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा में पूछे जानेवाले प्रश्नों के विविध प्रकारों के अंतर्गत पर्याप्त मात्रा में प्रश्नों का समावेश किया गया है। इस विषय आधारित प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के निर्माण का उद्देश्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को और अधिक रुचिकर, सरल एवं प्रभावशाली बनाना तथा विद्यार्थियों को वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा की तैयारियों में सहयोग प्रदान करना है, जिससे सकारात्मक रूप से छात्रों को सीखने के प्रतिफल प्राप्त हों और वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा में वे बेहतर प्रदर्शन कर सकें। राज्य के विभिन्न जिलों से चयनित अनुभवी शिक्षकों के द्वारा इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक का निर्माण किया गया है।

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ यह है कि इनमें प्रश्नों के उत्तर को सरल भाषा में प्रस्तुत करते हुए वैचारिक समझ (Conceptual Understanding) विकसित करने पर जोर दिया गया है। साथ ही इन पुस्तकों में झारखण्ड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा – 2023 के प्रश्नोत्तर को भी समाहित किया गया है। इन पुस्तकों के माध्यम से न केवल विद्यार्थियों की प्रतिभा में निखार आएगा बल्कि वर्तमान समय के प्रतियोगिताओं के इस दौर में वे अनुकूल एवं अपेक्षित सफलता प्राप्त करने में भी सक्षम हो सकेंगे। आशा है कि यह प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक आपको पसंद आएगी एवं आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं के साथ।

किरण कुमारी पासी भा.प्र.से.
निदेशक
झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
राँची, झारखण्ड

jharkhandlab.com

पाठकों से अनुरोध

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के निर्माण में काफी सावधानियाँ बरती गई है। इसके बावजूद यदि किसी प्रकार की अशुद्धियाँ मिले या कोई सुझाव हो तो इस email ID :- jcertquestionbank@gmail.com पर सूचित करें, ताकि अगले मुद्रण में इसे शुद्ध रूप से प्रस्तुत किया जा सके।

Jharkhandlab.com

प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक निर्माण समिति

मुख्य संरक्षक

श्री के० रवि कुमार (भा.प्र.से.)
सचिव
स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड

संरक्षक

श्रीमती किरण कुमारी पासी (भा.प्र.से.)
निदेशक
झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

अवधारणा एवं मार्गदर्शन

श्री मुकुंद दास उपनिदेशक (प्र.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची	**श्री बाँके बिहारी सिंह** सहायक निदेशक (अ.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची	**श्री मसुदी टुडू** सहायक निदेशक (अ.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

समन्वय एवं निर्देशन

डॉ0 नीलम रानी
संकाय सदस्य, जे.सी.ई.आर.टी., राँची
(टी.जी.टी., सामाजिक विज्ञान, राजकीयकृत उत्क्रमित उच्च विद्यालय पैतानो, जलडेगा, सिमडेगा)

सहयोग

श्री मणिलाल साव
संकाय सदस्य, जे.सी.ई.आर.टी., राँची
(पी.जी.टी. जीव विज्ञान, के. एन. +2 उच्च विद्यालय हरनाद, कसमार, बोकारो)

Jharkhandlab.com

प्रश्न बैंक निर्माण कार्य समिति

संतोषी कुमारी
PGT (भूगोल)
बालकृष्ण +2 उच्च विद्यालय, राँची

मेनका कुमारी
PGT (भूगोल)
मारवाड़ी +2 उच्च विद्यालय, राँची

समीर कुमार नंद
PGT (भूगोल)
एस.एस. +2 उच्च विद्यालय, ककरिया, राँची

रेखा कुमारी
PGT (भूगोल)
हंसराज वाधवा +2 उच्च विद्यालय, राँची

Jharkhandlab.com

Jharkhandlab.com

विषय सूची

भाग 'अ' – मानव भूगोल के मूलभूत सिद्धांत		पृष्ठ संख्या
अध्याय – 1	मानव भूगोल : प्रकृति एवं विषय क्षेत्र	3–6
अध्याय – 2	विश्व की जनसंख्या : वितरण, घनत्व तथा वृद्धि	7–10
अध्याय – 3	जनसंख्या संघटन	11–14
अध्याय – 4	मानव विकास	15–17
अध्याय – 5	प्राथमिक क्रियाएँ	18–24
अध्याय – 6	द्वितीयक क्रियाएँ	25–28
अध्याय – 7	तृतीयक और चतुर्थ क्रियाकलाप	29–32
अध्याय – 8	परिवहन एवं संचार	33–36
अध्याय – 9	अंतरराष्ट्रीय व्यापार	37–39
अध्याय – 10	मानव अधिवास/बस्ती	40–46
भाग 'ब' – भारत : लोग और अर्थव्यवस्था		
अध्याय – 1	जनसंख्या : वितरण, घनत्व, वृद्धि एवं संघटन	49–52
अध्याय – 2	प्रवास : प्रकार, कारण एवं परिणाम	53–54
अध्याय – 3	मानव विकास	55–57
अध्याय – 4	मानव बस्तियाँ	58–60
अध्याय – 5	भू–संसाधन तथा कृषि	61–65
अध्याय – 6	जल संसाधन	66–69
अध्याय – 7	खनिज तथा ऊर्जा संसाधन	70–76
अध्याय – 8	निर्माण उद्योग	77–80
अध्याय – 9	भारत के संदर्भ में नियोजन और सततपोषणीय विकास	81–84
अध्याय – 10	परिवहन एवं संचार	85–88
अध्याय – 11	अंतर्राष्ट्रीय व्यापार	89–91
अध्याय – 12	भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में चयनित कुछ मुद्दे एवं समस्याएँ	92–96
	Solved Paper of JAC Annual Intermediate Examination - 2023	97–103

Jharkhandlab.com

Jharkhandlab.com

भाग – 'अ'
मानव भूगोल के मूलभूत सिद्धांत

PART - A
FUNDAMENTALS OF HUMAN GEOGRAPHY

jharkhandlab.com

WORLD

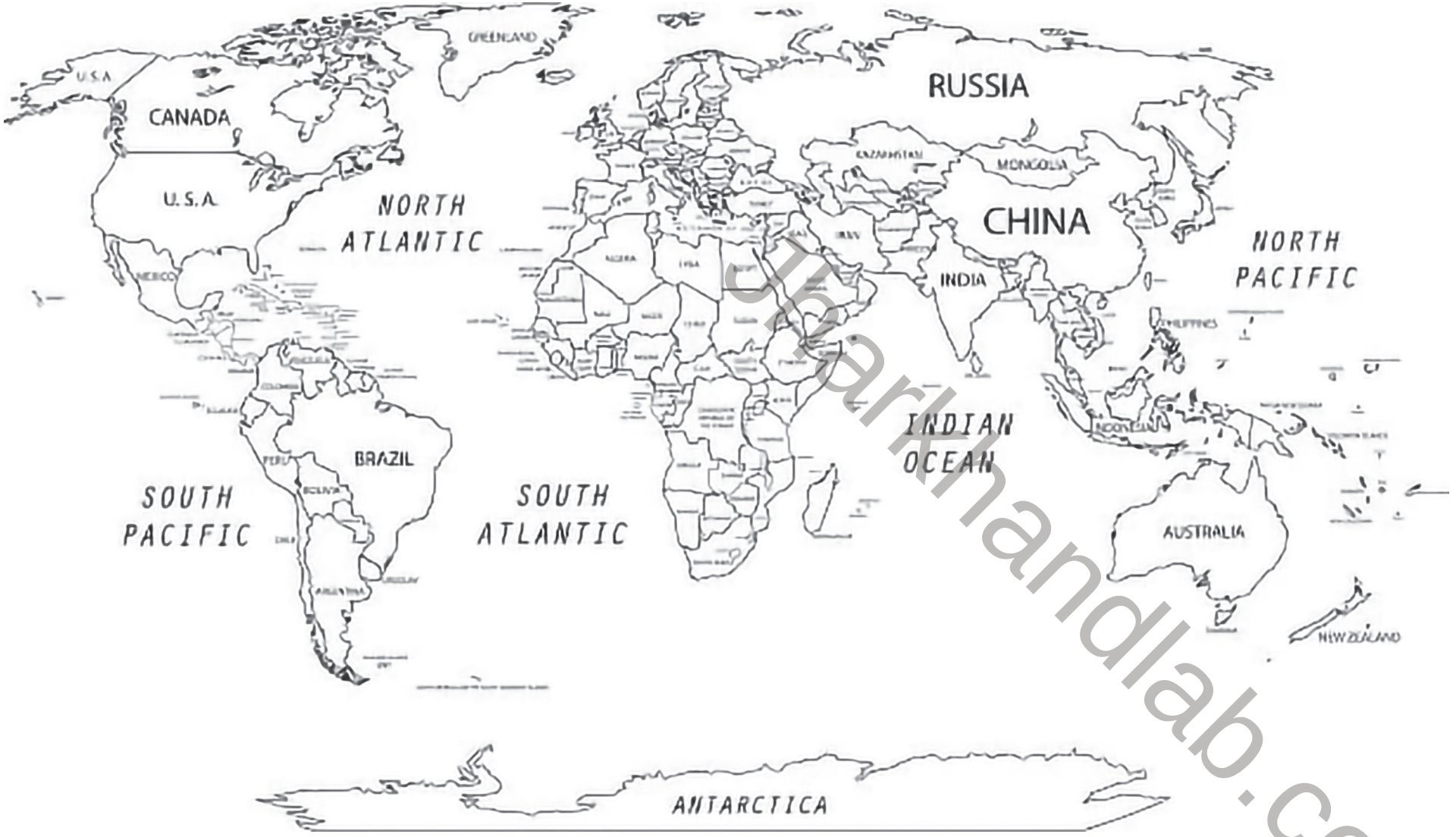

Jharkhandlab.com

अध्याय - 1

मानव भूगोल : प्रकृति एवं विषय क्षेत्र
HUMAN GEOGRAPHY NATURE AND SCOPE

पाठ के मुख्य बिंदु

- भूगोल एक ऐसा वैज्ञानिक विषय है, जिसमें पृथ्वी के भौतिक तथा मानवीय दोनों घटकों का अध्ययन स्थानिक दृष्टिकोण से किया जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि भौतिक भूगोल तथा मानव भूगोल, भूगोल की दो प्रमुख शाखाएं हैं।
- भूगोल आनुभाविक, व्यावहारिक एवं समाकलन करने वाला विषय है, इसके अंतर्गत पृथ्वी के धरातल पर होने वाली सभी घटनाओं का अध्ययन स्थान एवं समय के संदर्भ में किया जाता है।
- पृथ्वी के धरातल पर घटित घटनाओं को दो वर्गों में रखा जाता है। प्रथम वर्ग में पृथ्वी के भौतिक घटक या भौतिक तत्व जैसे पठार, पर्वत, मैदान, जीव- जंतु, प्राकृतिक वनस्पति, वायुमंडल, महासागर आदि को सम्मिलित किया जाता है, जिसे हम भौतिक पर्यावरण भी कह सकते हैं।
- पृथ्वी के धरातल में दूसरे वर्ग में मानव तथा मानव जनित भू - दृश्यों को जैसे - अधिवास, कृषि, उद्योग, व्यापार, जनसंख्या, सड़क, रेलमार्ग आदि को सम्मिलित कर सकते हैं, इनको सम्मिलित रूप से सांस्कृतिक भू - दृश्य कहा जाता है। सांस्कृतिक भू - दृश्यों का अध्ययन भूगोल की दूसरी प्रमुख शाखा मानव भूगोल में किया जाता है।
- मानव वातावरण का एक क्रियाशील प्राणी है। मानव भूगोल के अंतर्गत मानव और प्रकृति के बीच सतत एवं परिवर्तनशील पारस्परिक क्रिया से उत्पन्न सांस्कृतिक लक्षणों की स्थिति एवं वितरण की विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है। अथवा हम कह सकते हैं कि मानव भूगोल के अंतर्गत मानव एवं उसके प्राकृतिक पर्यावरण के साथ समायोजन का अध्ययन किया जाता है।
- मानव भूगोल में पृथ्वी तल पर मानवीय तथ्यों के स्थानिक वितरणों का अर्थात् विभिन्न प्रदेशों के मानव-वर्गों द्वारा किये गये वातावरण के साथ समायोजनों और स्थानिक संगठनों का अध्ययन किया जाता है।
- इरेटॉस्थनीज (प्राचीन यूनानी विद्वान) को **'भूगोल का जनक'** कहा जाता है। इन्होंने भूगोल शब्द का प्रयोग सबसे पहले किया।
- 19 वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में जर्मनी के प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता फ्रेडरिक रेटजेल, जो मानव भूगोल के जन्मदाता कहे जाते हैं, इन्होंने 1882 में प्रकाशित अपनी पुस्तक **' एन्थ्रोपोज्योग्राफी '** में मानव के कार्यकलापों के अध्ययन को प्रमुखता दी।
- मानव भूगोल की प्रकृति का मुख्य उद्देश्य है, मानव जीवन की विभिन्नताओं को समझना तथा इसके अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत सांस्कृतिक भू-दृश्य, संसाधनों का उपयोग एवं वातावरण के साथ समायोजन को सम्मिलित किया जाता है।
- प्रकृति के अनुसार मनुष्य का ढलना मानव का प्राकृतिकरण कहलाता है, यह स्थिति तब आती है जब प्रौद्योगिकी का विकास नहीं के बराबर होता है। आदि मानव समाज प्रकृति की प्रबल शक्तियों के बीच रहकर प्रकृति की पूजा करता था, प्रकृति से भयभीत रहता था और प्रकृति के साथ अन्योन्य क्रिया करता था, जिसे हम पर्यावरण निश्चयवाद कह सकते हैं।
- प्रकृति का मानवीकरण के अंतर्गत मनुष्य के द्वारा प्रकृति के नियमों को बेहतर ढंग से समझते हुए सक्षम प्रौद्योगिकी का विकास कर लिया जाता है, और प्रकृति की संभावनाओं के साथ काम किया जाता है। विद्वानों ने इसे संभववाद का नाम दिया।
- सक्षम प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर मानव प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की कोशिश करने लगा और प्रकृति प्रदत संसाधनों का अति दोहन भी प्रारंभ कर दिया, जिससे पर्यावरण क्षतिग्रस्त होने लगी और कई भयावह परिणाम हमारे सामने उपस्थित हुए जैसे हरित गृह प्रभाव, ओजोन परत अवक्षय, भूमंडलीय तापन, पीछे हटती हिम नदियां निम्नीकृत भूमिया आदि। ऐसे में नव निश्चयवाद या रुको और जाओ निश्चयवाद का जन्म हुआ। जो निश्चयवाद तथा संभववाद के बीच मध्य मार्ग का अनुसरण करती है।
- समय के गलियारों से मानव भूगोल का विकास निरंतर जारी रहा और इसमें कई विचारधाराएं समाहित होती रही जैसे कल्याण परक अथवा मानवतावादी विचार धारा जिसमें लोगों के सामाजिक कल्याण के विभिन्न पक्षों पर विशेष ध्यान दिया गया जैसे - आवास, स्वास्थ्य और शिक्षा आदि।
- आमूलवादी या रेडिकल विचारधारा इस में निर्धनता के कारण, बंधन और सामाजिक असमानता की व्याख्या की गई इसके लिए मार्क्स के सिद्धांत का उपयोग किया गया।
- व्यवहारवादी विचारधारा में प्रत्यक्ष अनुभव के साथ-साथ मानव जातीयता, प्रजाति, धर्म आदि पर आधारित सामाजिक संबंधों के अध्ययन पर जोर दिया गया।
- समय के साथ-साथ मानव भूगोल में उसके कई उपागम जैसे अन्वेषण और विवरण, प्रादेशिक विश्लेषण, क्षेत्रीय विभेदन, स्थानिक संगठन, विभिन्न विचारधाराएं एवं भूगोल में उत्तर आधुनिक वाद से संबंधित बृहद लक्षणों का अध्ययन किया जाने लगा।
- मानव भूगोल के अंतर्गत इसके मुख्य क्षेत्र एवं उप क्षेत्रों के साथ-साथ इसे सामाजिक विज्ञानों के सहयोगी के रूप में देखा जाने लगा।

jharkhandlab.com

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक भूगोल का वर्णन नहीं करता?**
   (क) समाकलनात्मक अनुशासन।
   (ख) मानव और पर्यावरण के बीच अंतर-संबंधों का अध्ययन।
   (ग) द्वैधता पर आश्रित।
   (घ) प्रौद्योगिकी के विकास के फलस्वरूप आधुनिक समय में प्रासंगिक नहीं।

2. **संभववाद शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किस फ्रांसीसी विद्वान ने किया ?**
   (क) जीन ब्रूंश। (ख) विडाल डी ला ब्लाश।
   (ग) लूसियन फैब्रे। (घ) हंबोल्ट।

3. **नव - निश्चयवाद के प्रवर्तक कौन है ?**
   (क) हंबोल्ट। (ख) विडाल डी ला ब्लाश।
   (ग) ग्रिफिथ टेलर। (घ) जीन ब्रूंश।

4. **निम्नलिखित में से कौन-सा एक भौगोलिक सूचना का स्रोत नहीं हैं?**
   (क) यात्रियों के विवरण
   (ख) प्राचीन मानचित्र
   (ग) चंद्रमा से चट्टानी पदार्थों के नमूने
   (घ) प्राचीन महाकाव्य

5. **एन्थ्रोपोज्योग्राफी नामक पुस्तक किसने लिखी?**
   (क) कुमारी एलन सेंपल। (ख) विडाल डी ला ब्लाश।
   (ग) चार्ल्स डार्विन। (घ) फ्रेडरिक रेटजेल।

6. **'जियोग्राफी' शब्द का प्रयोग सबसे पहले किसने किया ?**
   (क) कार्ल रिटर। (ख) इरेटॉस्थनीज।
   (ग) कुमारी ऐलन सेंपल। (घ) विडाल-डी-ला-ब्लाश।

7. **'रुको और जाओ' शब्द का संबंध किस विचारधारा से है ?**
   (क) संभावाद विचारधारा।
   (ख) व्यवहारवादी विचारधारा।
   (ग) नव- निश्चयवाद विचारधारा।
   (घ) प्रकृतिवाद अथवा निश्चयवाद विचारधारा।

8. **निम्नलिखित में से कौन-सा एक लोगों और पर्यावरण के बीच अन्योन्यक्रिया का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारक हैं?**
   (क) मानव बुद्धिमत्ता। (ख) प्रौद्योगिकी।
   (ग) लोगों का अनुभव। (घ) मानवीय भाईचारा।

9. **"मानव भूगोल मानव समाज तथा धरातल के बीच संबंधों का संश्लेषित अध्ययन है।" यह कथन किसका है?**
   (क) कुमारी एलन सेंपल। (ख) विडाल डी ला ब्लाश।
   (ग) चार्ल्स डार्विन। (घ) फ्रेडरिक रेटजेल।

10. **निम्नलिखित में से कौन-सा एक मानव भूगोल का उपागम नहीं है?**
    (क) क्षेत्रीय विभिन्नता (ख) मात्रात्मक क्रांति
    (ग) स्थानिक संगठन (घ) अन्वेषण और वर्णन

11. **फ्रेडरिक रेटजेल की शिष्या का नाम बताएं?**
    (क) कुमारी एलेन सेंपल। (ख) विडाल डी ला ब्लाश।
    (ग) चार्ल्स डार्विन। (घ) फ्रेडरिक रेटजेल।

12. **आर्थिक भूगोल में किस उपक्षेत्र को सम्मिलित नहीं करते हैं?**
    (क) संसाधन भूगोल। (ख) उद्योग भूगोल।
    (ग) कृषि भूगोल। (घ) सांस्कृतिक भूगोल।

13. **संभववाद की अवधारणा में किस घटक को ज्यादा महत्वपूर्ण माना गया है?**
    (क) मानवीय घटक।
    (ख) प्राकृतिक घटक।
    (ग) मानवीय एवं प्राकृतिक घटक दोनों।
    (घ) इनमें से कोई नहीं।

14. **मार्क्स के सिद्धांत का उपयोग किस विचारधारा के अंतर्गत किया गया है?**
    (क) कल्याणपरक अथवा मानवतावादी विचारधारा।
    (ख) अमूलवादी अथवा रेडिकल विचारधारा।
    (ग) व्यवहारवादी विचारधारा।
    (घ) इनमें से कोई नहीं।

15. **1990 का दशक भूगोल के किस उपागम के लिए जाना जाता है?**
    (क) आधुनिकतावाद (ख) संभववाद
    (ग) अन्वेषणवाद (घ) आधुनिकतावाद

उत्तर - 1. (घ), 2. (ग), 3. (ग), 4. (ग), 5. (घ), 6. (ख), 7 (ग), 8. (ख), 9. (घ), 10. (ख), 11. (क), 12. (घ) 13. (क) 14. (ख) 15. (क)।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न।

1. **भूगोल की दो शाखाओं के नाम लिखें।**
   उत्तर : भूगोल की दो मुख्य शाखाएं हैं - भौतिक भूगोल एवं मानव भूगोल।

2. **'संभववाद' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया था?**
   उत्तर : संभववाद' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग लूसियन फैब्रे ने किया था।

3. **"जियोग्राफी" का शाब्दिक अर्थ क्या होता है?**
   उत्तर : "जियोग्राफी" का शाब्दिक अर्थ, पृथ्वी का वर्णन करना है।

4. **'ओरिजिन ऑफ स्पीशीज' नामक पुस्तक किसने लिखी?**
   उत्तर : ओरिजिन ऑफ स्पीशीज नामक पुस्तक के लेखक चार्ल्स डार्विन हैं।

5. **पर्यावरण निश्चयवाद क्या है?**
   उत्तर : प्रकृति के अनुसार अपने को ढालने की कोशिश करना ही पर्यावरण निश्चयवाद कहलाता है।

6. **राजनीतिक भूगोल के दो उपशाखाओं के नाम लिखें।**
   उत्तर : निर्वाचन भूगोल एवं सैन्य भूगोल।

7. **"एन्थ्रोपोज्योग्राफी" नामक पुस्तक किसने लिखी?**
   उत्तर : फ्रेडरिक रेटजेल।

8. **संभववाद क्या है?**
   उत्तर : प्रकृति के नियम को समझकर, प्रौद्योगिकी का विकास करना तथा प्रकृति को अपने अनुसार ढालना ही संभववाद है।

9. **नव- निश्चयवाद के प्रवर्तक कौन है?**
   उत्तर : ग्रिफिथ टेलर। (अमेरिकन भूगोलवेत्ता)

10. **मानव भूगोल में अध्ययन हेतु उपागम के रूप में मानवतावादी एवं व्यवहारवादी विचारधारा का आरंभ कब हुआ?**
    उत्तर : 1990 के दशक में।

11. **आधुनिक मानव भूगोल का जनक किसे कहा जाता है?**
    उत्तर : जर्मन विद्वान फ्रेडरिक रैटजेल को आधुनिक मानव भूगोल का जनक कहा जाता है।

Jharkhandlab.com

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मानव भूगोल को परिभाषित कीजिए।

उत्तर- अनेक विद्वानों के द्वारा मानव भूगोल को परिभाषित किया है, वास्तव में भौतिक वातावरण तथा मानवीय क्रियाओं के अंतर्संबंधों तथा विभिन्नताओं का अध्ययन करना ही मानव भूगोल है। रेटजेल के अनुसार, "मानव भूगोल मानव समाजों और धरातल के मध्य संबंधों का संश्लेषित अध्ययन है।"

एलेन चर्चिल सैंपल के अनुसार, "मानव भूगोल अस्थिर पृथ्वी और क्रियाशील मानव के मध्य परिवर्तनशील संबंधों का अध्ययन है।"

2. "अपनी आरंभिक अवस्था में मानव प्रकृति से अधिक प्रभावित हुआ"। इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर : "अपनी आरंभिक अवस्था में मानव प्रकृति से अधिक प्रभावित हुआ"। इस कथन की पुष्टि निम्नलिखित से होती है :-

(क) अपनी आरंभिक अवस्था में मानव प्रकृति के अनुसार अपने को ढाल लेता था तथा प्रकृति के समक्ष यह बिल्कुल निष्क्रिय था।

(ख) इस अवस्था में मनुष्य प्रकृति की सुनता था और प्रकृति की प्रचंडता से भयभीत रहता था तथा प्रकृति की पूजा करता था।

(ग) प्रकृति के अनुसार अपने आप को ढाल लेने की अवस्था को ही पर्यावरणीय या निश्चयवाद कहा गया।

(घ) अपनी आरंभिक अवस्था में मानव के प्रौद्योगिकी ज्ञान का स्तर काफी निम्न था अतः समाजिक विकास का स्तर काफी निम्न था। यही कारण था कि अपनी आरंभिक अवस्था में मनुष्य प्रकृति से अधिक प्रभावित हुआ।

3. मानव भूगोल के कुछ उप-क्षेत्रों के नाम बताइए।

उत्तर- मानव भूगोल के कुछ उप-क्षेत्र निम्नलिखित हैं-

(क) कृषि भूगोल। (ख) सांस्कृतिक भूगोल।
(ग) सामाजिक भूगोल। (घ) नगरीय भूगोल।
(ङ) जनसंख्या भूगोल। (च) राजनीतिक भूगोल।
(छ) आर्थिक भूगोल। (ज) आवास भूगोल।
(झ) संसाधन भूगोल।

4. मानव भूगोल की मानवतावादी विचारधारा से आपका क्या तात्पर्य है?

उत्तर मानव भूगोल के मानवतावादी विचारधारा से हमारा तात्पर्य है, मानव भूगोल के अध्ययन को मानव के कल्याण एवं उनकी सामाजिक स्थिति के विभिन्न पक्षों से जोड़ना। इस विचारधारा का जन्म 1970 के दशक में हुआ। इसके अंतर्गत मानव के आवास, स्वास्थ्य एवं शिक्षा जैसे पक्षों पर विशेष ध्यान दिया गया ताकि मानव का कल्याण सुनिश्चित हो सके एवं उनकी सामाजिक स्थिति सुदृढ़ हो। इस विचारधारा के अनुसार मानव की स्थिति को केंद्रीय एवं क्रियाशील माना गया है।

5. मानव भूगोल किस प्रकार अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंधित हैं?

उत्तर : मानव भूगोल की प्रकृति अत्यधिक अंतर-विषयक है, क्योंकि इसमें मानव और प्राकृतिक पर्यावरण के बीच अन्तर्सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है अर्थात् धरातल के विभिन्न भागों में प्राकृतिक वातावरण के संदर्भ में मानवीय क्रियाकलापों के अध्ययन को प्रधानता दी जाती है। हम जानते हैं कि मानव मानवीय समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई है, अतः मानव भूगोल का उन सभी सामाजिक विज्ञानों से संबंध हो जाता है, जो अपने अध्ययनों में मानवीय क्रियाकलापों के अध्ययनों को प्रमुखता से सम्मिलित करते हैं जैसे - सामाजिक विज्ञान, मनोविज्ञान, जनांकिकी, अर्थशास्त्र, आदि।

6. नव निश्चयवाद से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर : इस विचारधारा के प्रवर्तक ग्रिफिथ टेलर हैं। नव - निश्चयवाद विचारधारा, नियतिवाद एवं संभववाद विचारधाराओं के बीच का मार्ग है इसे 'रुको और जाओ निश्चयवाद' भी कहा जाता है। यह पर्यावरण को नुकसान किए बगैर समस्याओं को सुलझाने पर बल देती है। इस विचारधारा के अनुसार मनुष्य ना तो प्रकृति पर पूरी तरह निर्भर होकर रह सकता है और ना ही प्रकृति से स्वतंत्र रहकर जी सकता है। इसके अनुसार मानव, प्रकृति में विकास के लिए एक सीमा तक ही जा सकता है और अंततः उसे प्रकृति के साथ समझौता करना पड़ता है। जैसे :- औद्योगीकरण करते हुए जंगलों को नष्ट होने से बचाना। खनन करते समय खनिज संसाधनों को अति दोहन से बचाना।

7. आमूलवादी या रेडिकल विचारधारा क्या है ?

उत्तर : आमूलवादी विचारधारा का विकास 1970 के दशक में हुआ। यह विचारधारा मार्क्सवादी सिद्धांतों का उपयोग करते हुए पूरे विश्व में व्याप्त मानवीय समस्याओं जैसे- गरीबी, भूखमरी, बीमारियां, जातिभेद, रंगभेद आदि का अध्ययन करती है। इस विचारधारा का मानना है कि पूंजीवाद के विकास के कारण ही इन समस्याओं का जन्म होता है। यह विचारधारा एक ऐसी सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था पर बल देती है जिसके अंतर्गत विश्व के समस्त निवासियों का विश्व के संसाधनों पर समान स्वामित्व एवं नियंत्रण हो।

8. संभववाद (Possibilism) से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर : संभववाद की विचारधारा का सर्वप्रथम प्रतिपादन फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता विडाल-डी-ला-ब्लाश ने किया था। संभववाद शब्द का प्रयोग लूसियन फेब्रे के द्वारा किया गया। संभववाद के अनुसार मानव अपने पर्यावरण में परिवर्तन करने में सक्षम है तथा वह प्रकृति द्वारा प्रदत संभावनाओं को अपने लाभ के लिए उपयोग कर सकता है। संभववाद विचारधारा के अनुसार मानवीय क्रियाकलापों तथा मानव द्वारा विकसित सांस्कृतिक भू-दृश्य को महत्व प्रदान किया गया है। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से ही मानवीय क्रियाकलापों का प्रभाव बढ़ता रहा, मानव ने प्राकृतिक वातावरण पर निर्भरता कम कर दिया।

9. भौतिक और मानव भूगोल के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - भौतिक और मानव भूगोल के बीच अंतर :

भौतिक भूगोल	मानव भूगोल
(i) भौतिक भूगोल, प्राकृतिक परिघटनाओं के अध्ययन तक सीमित है।	(i) मानव भूगोल, मानव-निर्मित (सांस्कृतिक) परिघटनाओं के अध्ययन तक सीमित है।
(ii) भौतिक भूगोल उच्चावच, जलवायु, मृदा, जल-निकास प्रणाली, पेड़-पौधों तथा जीव-जंतुओं आदि के अध्ययन से संबंधित है।	(ii) मानव भूगोल जनसंख्या, आवास, कृषि, निर्माण, उद्योग, बस्ती तथा यातायात आदि के अध्ययन से संबंधित है।
iii) भूआकृतिक विज्ञान, मौसम विज्ञान, जलविज्ञान तथा मृदा विज्ञान आदि भौतिक भूगोल के क्षेत्र हैं।	(iii) आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा शहरी भूगोल आदि मानव भूगोल के क्षेत्र हैं। मानव यातायात तथा उद्योग आदि मानव भूगोल के उप-क्षेत्र हैं।

10. नियतिवाद से आपका क्या तात्पर्य है ?

उत्तर : इस विचारधारा के प्रमुख समर्थक रैटजेल, कार्ल रिटर, हंबोल्ट, हंटिंगटन आदि थे। इस विचारधारा के अनुसार मनुष्य के प्रत्येक

Jharkhandlab.com

क्रियाकलाप को पर्यावरण के द्वारा नियंत्रित किया जाता है। इसके अनुसार भौतिक कारक जैसे- जलवायु, उच्चावच, प्राकृतिक वनस्पति, आदि मानव के समस्त क्रियाकलापों और जीवन शैली को नियंत्रित करते हैं। नियतिवाद मानव को एक निष्क्रिय प्राणी समझता है, जो पर्यावरणीय कारकों से प्रभावित है। जैसेः- आदिवासियों की प्रकृति पर निर्भरता । किसानों की जलवायु पर निर्भरता।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. मानव के प्राकृतीकरण की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- आदिम अवस्था में, जब प्रौद्योगिकी का स्तर अत्यंत निम्न था तब मानव, प्रकृति के आदेशों के अनुसार अपने-आपको ढालने के लिए बाध्य था। उस समय मानव के सामाजिक विकास की अवस्था भी आदिम ही थी। मानव की इस प्रकार की अन्योन्यक्रिया कों पर्यावरणीय निश्चयवाद कहा गया। इस अवस्था में मानव प्रकृति की सुनता था, उसकी प्रचण्डता से भयभीत होता था और उसकी पूजा करता था।

विश्व में आज भी ऐसे समाज हैं जो प्राकृतिक पर्यावरण के साथ पूर्णतः सामंजस्य बनाए हुए हैं और प्रकृति एक शक्तिशाली बल एवं पूज्य सत्कार योग्य बनी हुई है। अपने सतत् पोषण हेतु मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर करता है। ऐसे समाजों में भौतिक पर्यावरण माता-प्रकृति का रूप धारण किए हुए है। किंतु-समय के साथ लोग अपने पर्यावरण और प्राकृतिक बलों को समझने लगते हैं। अपने अर्जित ज्ञान के बल पर तकनीकी कौशल विकसित करने में समर्थ होते जाते हैं। इस तरह सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के साथ लोग और अधिक सक्षम प्रौद्योगिकी का विकास करते हैं। वे अभाव की अवस्था से स्वतंत्रता की ओर अग्रसर होते हैं। वास्तव में, पर्यावरण से प्राप्त संसाधन ही संभावनाओं को जन्म देते हैं। मानवीय क्रियाएँ सांस्कृतिक भू-दृश्य की रचना करती हैं, जिनकी छाप प्राकृतिक वातावरण पर सर्वत्र दिखाई पड़ती है। इस तरह प्रकृति का मानवीकरण होने लगता है।

2. मानव भूगोल के विषय क्षेत्र पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर- मानव भूगोल, भूगोल की दो प्रमुख शाखाओं में से एक मुख्य शाखा है। वास्तव में भूगोल का अर्थ ही पृथ्वी को मानव के घर के रूप में समझना और उन सभी तत्वों का अध्ययन करना है, जिन्होंने मानव को पोषित किया है। मानव भूगोल में प्राकृतिक तथा मानवीय परिघटनाओं के स्थानिक वितरण एवं मानवीय जगत के बीच अंतर्सम्बन्धों, उनके घटित होने के कारणों तथा विश्व के विभिन्न भागों में सामाजिक और आर्थिक विभिन्नताओं का अध्ययन किया जाता है।

सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन का केंद्र ही मानव होता है। मानव व उसके विकास में उसके द्वारा की गई अन्योन्यक्रियाओं के परिणामस्वरूप विभिन्न सामाजिक विज्ञानों की उत्पति संभव हुई हैं जैसे - समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, मानव विज्ञान, कल्याण अर्थशास्त्र, जनांकिकीय अध्ययन, इतिहास, महामारी विज्ञान, सैन्य विज्ञान, लिंग अध्ययन, नगर व ग्रामीण नियोजन, नगरीय अध्ययन व नियोजन, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, संसाधन अध्ययन, कृषि विज्ञान, औद्योगिक अर्थशास्त्र, व्यावसायिक अर्थशास्त्र व वाणिज्य, पर्यटन व यात्रा प्रबंधन तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार आदि। इस तरह ज्ञान के विस्तार के साथ मानव भूगोल के नए उप-क्षेत्रों का विकास होता रहा हैं।

3. वर्णन करें कि तकनीकी विकास समाज का सांस्कृतिक विकास कैसे दर्शाता है।

उत्तर- तकनीकी विकास निम्नलिखित तरीकों से समाज के सांस्कृतिक विकास के स्तर को दर्शाता है :

(i) मनुष्य प्रकृति के नियमों को समझने के बाद ही तकनीकी विकास कर पाया, जैसे आग का आविष्कार तब हुआ जब मनुष्य को यह पता चला कि दो वस्तुओं के घर्षण से ऊष्मा उत्पन्न होती है।

(ii) डी०एन०ए० और आनुवांशिकों के रहस्यों के जानने के बाद ही कई बीमारियों का इलाज संभव हो पाया।

(iii) तकनीकी विकास के कारण ही मनुष्य आदिमानव से विकसित होकर होमोसेपियंस (ज्ञानी मानव) बन पाया और तकनीक के माध्यम से ही उसने अपनी संस्कृति को विकसित किया।

(iv) तकनीकी विकास के कारण ही जो मनुष्य पहले पर्यावरण का दास था अब वह अपने अनुकूल पर्यावरण में भी बदलाव करने में सक्षम हो गया है।

4. मानव भूगोल के अध्ययन के तीन विचारधाराओं की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- **(क) निश्चयवादी विचारधारा** - इसके अनुसार मनुष्य प्रकृति और पर्यावरण का दास है अर्थात पर्यावरण मनुष्य की क्रियाकलापों को प्रभावित करता है। इसलिए सामाजिक आर्थिक विकास, संस्कृति तथा लोगों का जीवन स्तर प्रकृति से बहुत अधिक प्रभावित होता है।

(ख) संभववाद विचारधारा - इस विचारधारा के अनुसार इस विचार के विरोध स्वरूप कि "मानव प्रकृति द्वारा नियंत्रित होता है" अन्य भूगोल नेताओं ने एक नए विचार को संपादित किया। इन्होंने बताया कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं के अनुसार प्रकृति अथवा पर्यावरण को परिवर्तित कर सकता है दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मनुष्य प्रकृति या पर्यावरण का दास है तथा पर्यावरण मनुष्य के क्रियाकलापों को प्रभावित करता है।

(ग) नव निश्चयवाद विचारधारा - इस विचारधारा के अनुसार मानव पर प्रकृति का प्रभाव सीमित है, जबकि मानव की क्रियाएं असीमित हैं, जिस कारण मनुष्य ने प्रकृति के प्रभाव को भी सीमित कर दिया है। इस विचारधारा का जन्म उस समय हुआ जब ग्रिफिथ टेलर ने रुको और जाओ के सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

jharkhandjac.com

अध्याय - 2 विश्व की जनसंख्या : वितरण, घनत्व, तथा वृद्धि।
POPULATION OF THE WORLD - DISTRIBUTION, DENSITY AND GROWTH

Jharkhandgap.com

पाठ की मुख्य बिंदु

- किसी भी देश की जनसंख्या उस देश के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन होती है, जो अन्य संसाधनों का उपयोग करती है, साथ ही देश के विकास हेतु नीतियों का निर्धारण भी करती है।
- किसी राष्ट्र के प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग वहां के मानव संसाधन द्वारा ही संभव है, और देश की प्रौद्योगिकी एवं व्यापारिक उन्नति वहां निवास करने वाली जनसंख्या पर निर्भर करती है अतः हम कह सकते हैं कि किसी राष्ट्र का समुचित विकास वहां की मानव संसाधन द्वारा ही किया जा सकता है।
- वास्तव में मानव भूगोल के अध्ययन का केंद्र बिंदु मानव ही होता है तथा मानव के समूह को जनसंख्या कहा जाता है।
- जनांकिकीय विशेषताओं के अंतर्गत जनसंख्या वितरण, घनत्व, वृद्धि, लिंगानुपात, जन्म दर, मृत्यु दर, साक्षरता, नगरीय - ग्रामीण जनसंख्या एवं कार्यशील जनसंख्या जैसे पक्षों का अध्ययन किया जाता है।
- किसी क्षेत्र विशेष में लोगों के फैलाव को जनसंख्या वितरण कहा जाता है यह बहुत ही असमान है, क्योंकि विश्व की कुल जनसंख्या का लगभग 90% भाग केवल 10% भाग पर ही निवास करते हैं।
- विश्व की कुल जनसंख्या का 80% भाग 20 से 60 डिग्री उत्तरी अक्षांश के मध्य निवास करती है।
- दक्षिणी गोलार्ध में विश्व का केवल 10% जनसंख्या निवास करती है जबकि, उत्तरी गोलार्ध में विश्व की 90% जनसंख्या निवास करती है।
- विश्व के 10 देशों में 58% जनसंख्या निवास करती हैं। ये देश हैं - चीन, भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका, इंडोनेशिया, ब्राजील, पाकिस्तान, नाइजीरिया बांग्लादेश, रूस एवं मेक्सिको।
- एशिया महाद्वीप में विश्व की सर्वाधिक 60% जनसंख्या निवास करती है।
- जनसंख्या घनत्व :- प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या को वहां का जनसंख्या घनत्व कहा जाता है। अर्थात जनसंख्या घनत्व मानव एवं भूमि का अनुपात होता है। अतः किसी प्रदेश के क्षेत्रफल तथा जनसंख्या में जो पारस्परिक अनुपात होता है, उसे जनसंख्या घनत्व कहते हैं।
- प्रति वर्ग किलोमीटर निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या को गणितीय घनत्व कहा जाता है।
- अंकगणितीय घनत्व = $\frac{\text{प्रदेश की कुल जनसंख्या}}{\text{प्रदेश का कुल क्षेत्रफल।}}$
- कायिक घनत्व = $\frac{\text{देश की कुल जनसंख्या}}{\text{कुल कृषि योग्य भूमि।}}$
- कृषि घनत्व = $\frac{\text{कृषि में संलग्न जनसंख्या}}{\text{कुल कृषि योग्य भूमि।}}$
- विश्व के सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाले राष्ट्र हैं :- बांग्लादेश (1265 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर),भारत (450 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर), जापान (348 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर), फिलिपिंस (352 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर)।
- विश्व के विभिन्न महाद्वीपों में भी जनसंख्या का वितरण असमान है। चीन एवं भारत विश्व के 2 सर्वाधिक विशाल जनसंख्या वाले देश है, जिसमें विश्व की कुल जनसंख्या का लगभग 37% भाग निवास करता है।
- चीन विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है। 2011 के अनुसार यहां की कुल जनसंख्या 134 करोड़ थी और यहां जनसंख्या घनत्व 141 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था।
- जनसंख्या के वितरण तथा घनत्व को प्रभावित करने वाले कारकों में भौगोलिक कारक, आर्थिक कारक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों को शामिल किया जाता है
- भौगोलिक कारक के अंतर्गत जल की उपलब्धता, भू-आकृति, जलवायु एवं मृदाओं को सम्मिलित कर सकते हैं।
- आर्थिक कारक के अंतर्गत खनिजों की उपलब्धता, नगरीकरण और औद्योगिकरण मुख्य भूमिका निभाती है।
- सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक के अंतर्गत प्राचीन परंपराएं, धार्मिक आस्था, राजनीतिक अस्थिरता एवं शांति तथा भाषा आदि मुख्य होते हैं।
- जनसंख्या की वृद्धि :- समय के दो अंतरालों के बीच एक क्षेत्र विशेष में होने वाली जनसंख्या के आकार में परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि कहा जाता है, यह परिवर्तन धनात्मक अथवा ऋणात्मक दोनों हो सकती है।
- जनसंख्या परिवर्तन के तीन मुख्य घटक है :- जन्म दर, मृत्यु दर और प्रवास।
- वार्षिक वृद्धि दर :- एक वर्ष के अंदर जन्म दर और मृत्यु दर के अंतर से वार्षिक वृद्धि दर ज्ञात की जाती है।
- प्रवास :- किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह का एक स्थान से किसी दूसरे स्थान पर स्थाई अथवा अस्थाई रूप से चले जाना प्रवास कहलाता है।
- उद्गम स्थान :- प्रवास के दौरान जहां से लोग जाते हैं उसे उद्गम स्थल कहा जाता है।
- गंतव्य स्थान :- प्रवास के दौरान जहां पर लोग जाते हैं उसे गंतव्य स्थान कहा जाता है।
- विश्व में जनसंख्या वृद्धि और आर्थिक विकास में ऋणात्मक सह संबंध पाया जाता है।
- विश्व में जनसंख्या घनत्व 45 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है।
- जनसंख्या की वास्तविक वृद्धि :- जनसंख्या की वास्तविक वृद्धि = जन्म - मृत्यु + आप्रवास - उत्प्रवास।
- जनसंख्या की धनात्मक वृद्धि :- यह तब अधिक होती है जब दो समय अंतरालों के बीच जन्म दर, मृत्यु दर से अधिक हो जाती है या जब अन्य देशों से लोग स्थाई रूप से किसी देश में प्रवास कर जाते हैं।
- जनसंख्या की ऋणात्मक वृद्धि :- यदि दो समय अंतरालों के बीच जनसंख्या कम हो जाए तो उसे जनसंख्या की ऋणात्मक वृद्धि कहते हैं। यह तब होता है जब जन्म दर, मृत्यु दर से कम हो जाती है अथवा लोग अन्य देशों में प्रवास कर जाते हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्नलिखित में से किस महाद्वीप में जनसंख्या वृद्धि सर्वाधिक है ?

(क) अफ्रीका (ख) एशिया
(ग) दक्षिण अमेरिका (घ) **उत्तर** अमेरिका

2. निम्नलिखित में से कौन-सा एक विरल जनसंख्या वाला क्षेत्र नहीं है?

(क) अटाकामा (ख) भूमध्य रेखा प्रदेश
(ग) दक्षिण पूर्वी एशिया (घ) ध्रुवीय प्रदेश

3. निम्नलिखित में से कौन-सा एक प्रतिकर्ष कारक नहीं है

(क) जलाभाव
(ख) बेरोजगारी
(ग) चिकित्सा शैक्षणिक सुविधाएं
(घ) महामारियां

4 किसी क्षेत्र की जनसंख्या परिवर्तन का सूचक होता है ?

(क) आर्थिक प्रगति
(ख) सामाजिक उत्थान
(ग) ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
(घ) इनमें से सभी

5. प्रवास के संदर्भ में वह स्थान जहां से लोग गमन करते हैं ,क्या कहलाता है ?

(क) उद्गम स्थान (ख) गंतव्य स्थान
(ग) लक्ष्य स्थान (घ) इनमें से कोई नहीं

6. मानव जनसंख्या का प्रारंभिक एक करोड़ होने में कितना समय लगा?

(क) 1 लाख वर्ष (ख) 5 लाख वर्ष
(ग) 10 लाख वर्ष (घ) 20 लाख वर्ष

7. विश्व की जनसंख्या को एक अरब से 2 अरब होने में कितने वर्ष लगे थे?

(क) 40 वर्ष। (ख) 50 वर्ष
(ग) 100 वर्ष। (घ) 150 वर्ष

8. 100% शहरी जनसंख्या वाले देश का नाम है?

(क) सिंगापुर। (ख) थाईलैंड
(ग) जापान। (घ) इंडोनेशिया

9. निम्नलिखित में से कौन-सा एक तथ्य सही नहीं है:-

(क) विगत 500 वर्षों में जनसंख्या 10 गुना से अधिक बढ़ी है।

(ख) 5 अरब से 6 अरब तक बढ़ने में जनसंख्या को 100 वर्ष लगे

(ग) जनांकिकीय संक्रमण की प्रथम अवस्था में जनसंख्या वृद्धि उच्च होती है।

(घ) जनांकिकीय संक्रमण की प्रथम अवस्था में जन्म दर उच्च होती है

उत्तर: 1. (ख) 2. (ग) 3 (ग) 4 (घ) 5 (क) 6 (ग) 7 (ग) 8 (क) 9 (ग)

अति लघुतरीय प्रश्न

1. जनसंख्या घनत्व को परिभाषित करें।

उत्तर: प्रति इकाई क्षेत्रफल में रहने वाले लोगों की संख्या को जनसंख्या घनत्व कहते हैं।

2. जनसंख्या शून्य क्षेत्र किसे कहते हैं?

उत्तर: विश्व के जिन क्षेत्रों में जनसंख्या बहुत कम अति विरल,या अनुपस्थित हैं, उन्हें जन शून्य क्षेत्र कहते हैं।

3. एशिया महादेश में विश्व की कितनी प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है।

उत्तर: लगभग 60%

4. जनसंख्या वृद्धि क्या है?

उत्तर: दो समय अंतरालों के बीच जनसंख्या में हुए परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि कहते हैं।

5. जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि किसे कहते हैं?

उत्तर: किसी क्षेत्र विशेष में दो समय अंतरालों में जन्म और मृत्यु के अंतर से हुए जनसंख्या वृद्धि ही, प्राकृतिक वृद्धि कहलाता है।

6. जनसंख्या वृद्धि और आर्थिक विकास में कैसा सहसंबंध पाया जाता है?

उत्तर: ऋणात्मक सहसंबंध

7. जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न सर्वाधिक गंभीर समस्या क्या है?

उत्तर: संसाधनों का ह्रास

8. जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत का उपयोग क्या है?

उत्तर: किसी क्षेत्र की जनसंख्या के वर्णन तथा भविष्य की जनसंख्या के पूर्वानुमान के लिए किया जा सकता है।

9. जनसंख्या परिवर्तन के तीन घटक कौन से है?

उत्तर: जनसंख्या परिवर्तन के तीन घटक जन्म दर, मृत्यु दर और प्रवास है।

लघु उत्तरीलय प्रश्न

1. विश्व में उच्च जनसंख्या घनत्व वाले अनेक क्षेत्र है। ऐसा क्यों होता है?

उत्तर: विश्व के अनेक क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करने वाले भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक अनुकूल पाए जाते हैं। उन क्षेत्रों में उच्च जनसंख्या घनत्व पाए जाते हैं। उदाहरण दक्षिण, दक्षिण- पूर्वी एवं पूर्वी एशिया के भाग।

2. अशोधित जन्म दर किसे कहते हैं?

उत्तर: अशोधित जन्म दर को प्रति हजार स्त्रियों द्वारा जन्म दिए जीवित बच्चों के रूप में किया जाता है।

$$\text{अशोधित जन्म दर} = \frac{\text{किसी वर्ष विशेष में जीवित जन्में बच्चों की संख्या}}{\text{किसी क्षेत्र विशेष में वर्ष के मध्य की कुल जनसंख्या}} \times 1000$$

3. जनसंख्या की धनात्मक वृद्धि से क्या समझते हैं। व्याख्या करें।

उत्तर: दो समय अंतराल के बीच जन्म दर, मृत्यु दर से अधिक हो या जब अन्य देशों से लोग स्थायी रूप से उस देश में प्रवास कर जाएँ। फलस्वरूप वहाँ की जनसंख्या अधिक हो जाए तो, उसे जनसंख्या की धनात्मक वृद्धि कहते हैं।

4. जनसंख्या का ऋणात्मक वृद्धि दर क्या है ,समझाएं।

उत्तर : दो समय अंतराल के बीच जनसंख्या कम हो जाए ,तो उसे जनसंख्या के ऋणात्मक वृद्धि कहते हैं। किसी क्षेत्र में जब जन्म दर मृत्यु दर से कम हो जाए अथवा लोग अन्य देशों में प्रवास कर जाए, तो वहां जनसंख्या में ऋणात्मक विधि होती है।

5. विश्व में उच्च जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्र को बताएं।

उत्तर: उच्च जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व 150 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से अधिक होता है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित क्षेत्र आते हैं :

jharkhandlab.com

(क) दक्षिण, दक्षिण - पूर्वी एवं पूर्वी एशिया।

(ख) मध्यवर्ती एवं उत्तर पश्चिमी यूरोप, यूरोपीय रूस का दक्षिण-पश्चिम भाग।

(ग) संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तर पूर्वी भाग तथा कनाडा का पूर्वी भाग।

6. **प्रवास के प्रतिकर्ष और अपकर्ष कारक में अंतर स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर : प्रवास के प्रतिकर्ष और अपकर्ष कारक

प्रतिकर्ष कारकः	अपकर्ष कारक :
प्रतिकूल परिस्थिति में परेशान होकर जब लोग एक जगह से दूसरी जगह प्रवास करते हैं, तो उसे प्रतिकर्ष कारक कहा जाता है। उदाहरण बेरोजगारी, रहन-सहन की निम्न दशाएं, राजनीतिक उपद्रव, प्रतिकूल जलवायु, प्राकृतिक आपदाएं, महामारी, सामाजिक आर्थिक पिछड़ेपन जैसे कारक उद्गम स्थान को प्रतिकूल बनाते है।	अनुकूल अवसर से आकर्षित होकर जब लोग एक जगह से दूसरी जगह प्रवास करते हैं तो उसे अपकर्ष कारक कहते हैं। उदाहरण काम के बेहतर अवसर, रहन-सहन की अच्छी दशाएं, शांति व स्थायित्व, जीवन व संपत्ति की सुरक्षा, अनुकूल जलवायु जैसे कारण गंतव्य स्थान को अधिक आकर्षक बनाते हैं।

7. **जनशून्य क्षेत्र किसे कहते हैं? विश्व में इन क्षेत्रों की स्थिति बताएं।**

उत्तर: विश्व के जिन क्षेत्रों में जनसंख्या बहुत कम अति विरल, या अनुपस्थित हैं, उन्हें जन शून्य क्षेत्र कहते हैं।

जनशून्य क्षेत्र या अति विरल क्षेत्र के अंतर्गत निम्नलिखित क्षेत्रों को शामिल किया जाता है :-

(क) अत्यधिक ठंडे मरुस्थलीय प्रदेश।

(ख) अत्यधिक गर्म एवं शुष्क प्रदेश।

(ग) उच्च पर्वतीय भाग।

(घ) विषुवत रेखीय घने वन।

8. **जनसंख्या वृद्धि को परिभाषित कीजिए ।**

उत्तर- जनसंख्या वृद्धि से तात्पर्य एक निश्चित समय अवधि के दौरान किसी क्षेत्र में बसे हुए लोगों की संख्या में आए परिवर्तन से है। इन परिवर्तनों को निरपेक्ष संख्या तथा प्रतिशत के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यदि एक प्रस्तुत क्षेत्र की जनसंख्या समय की एक निश्चित अवधि में बढ़ती है तो यह 'धनात्मक परिवर्तन' कहलाता है और यदि प्रस्तुत क्षेत्र की जनसंख्या में समय की एक निश्चित अवधि के दौरान कमी आती है तो यह 'ऋणात्मक परिवर्तन' कहलाता है। विश्व के विकासशील देशों में 'धनात्मक परिवर्तन' दिखाई देता है, जबकि विकसित देश विशेषकर पूर्वी यूरोपीय देश ऋणात्मक परिवर्तन की दशा को दर्शातें हैं।

9. **एशिया महादेश में जनसंख्या के उच्च घनत्व होने के क्या कारण है?**

उत्तर- मानसून एशिया में उच्च जनसंख्या घनत्व के प्रमुख कारण, पर्याप्त वर्षा के साथ-साथ सिंचाई के अन्य स्रोतों वाली निम्न भूमियों व नदी की घाटियों में सघन कृषि की जाती है। उपजाऊ भूमि, पर्याप्त वर्षा तथा धान की सघन खेती इन क्षेत्रों में जनसंख्या के उच्च घनत्व का मुख्य आधार हैं। इस क्षेत्र में चीन, भारत, बांग्लादेश, जापान, कोरिया, इंडोनेशिया का जावा द्वीप, श्रीलंका तथा सिंगापुर शामिल हैं। चीन, जापान व इंडोनेशिया औद्योगिक रूप से भी विकसित हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. **विश्व में जनसंख्या के वितरण और घनत्व को प्रभावित करने वाले कारकों की विवेचना कीजिए ।**

उत्तर : किसी भी देश का का वास्तविक धन, जन अर्थात लोग होते है। यह देश का महत्वपूर्ण संसाधन है तथा देश के अन्य संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग कर राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करता है। 21 वीं शताब्दी में विश्व की जनसंख्या 6 अरब से अधिक दर्ज की गई। इस विशाल जनसंख्या का विश्व में असमान वितरण पाया जाता है। असमान वितरण के संदर्भ में जार्ज बी. क्रेसी की टिप्पणी है।

"एशिया में बहुत अधिक स्थान पर कम लोग और कम स्थान पर बहुत अधिक लोग रहते हैं।"

मोटे तौर पर विश्व की 90% जनसंख्या, केवल 10% स्थल भाग में निवास करते हैं। विश्व का लगभग 33% भाग प्रायः मानव विहीन है। लोग ऐसे स्थानों पर बसना चाहते हैं, जहां उन्हें भोजन पानी घर बनाने के लिए समतल भूमि आदि मिले अधिक गर्म और अधिक ठंडे क्षेत्रों में जनसंख्या कम पाई जाती है।

जनसंख्या के असमान वितरण और घनत्व को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं-

जनसंख्या के असमान वितरण और घनत्व को प्रभावित करने वाले कारकः		
भौगोलिक कारक	**आर्थिक कारक**	**सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक**
जल की उपलब्धता	खनिज	धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थल
भू-आकृति	नगरीकरण	सामाजिक एवं राजनीतिक सुरक्षा
जलवायु	औद्योगिकरण	सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति
मृदा	-	-

भौतिक कारक

(क) **जल की उपलब्धता** :- जल जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। मानव के विभिन्न क्रियाओं में जल की आवश्यकता पड़ती है। अतः जिन क्षेत्रों में जल आसानी से उपलब्ध होते हैं, उन क्षेत्रों में लोगों का घना बसाव पाया जाता है। प्राचीन काल से ही नदी घाटियों में सघन बसाव मिलते हैं।

(ख) **भू-आकृतिः**- हमारे पृथ्वी के धरातल पर पर्वत, पठार, मैदान पाए जाते हैं। पर्वत एवं पठारी क्षेत्रों में अपेक्षाकृत बस्तियां परिवहन आदि संरचनाओं में दिक्कते होती है। कृषि कार्यों में भी मुश्किल होती है। अतः मैदानी क्षेत्रों में कृषि उत्पादन, सड़क निर्माण, बस्तियों के निर्माण में आसान होता है, फलस्वरूप मैदानी क्षेत्रों में घना बसाव पाये जाते हैं।

(ग) **जलवायुः**- विषम जलवायु अर्थात अत्यधिक ठंड एवं अत्यधिक गर्म दोनों ही क्षेत्रों में निवास करना अत्यंत कठिन है। कृषि एवं वानिकी में भी बहुत मुश्किल होती है। फलस्वरूप ध्रुवीय क्षेत्रों एवं विषुवत रेखीय प्रदेश दोनों में जनसंख्या का बसाव निम्न है। समकारी जलवायु क्षेत्रों में अर्थात मध्य अक्षांशीय क्षेत्रों में घना बसाव पाया जाता है।

(घ) **मृदा / मिट्टी** :- उपजाऊ मिट्टी वाले क्षेत्रों में फसल की अधिक उत्पादकता लोगों को आकर्षित करती है। किसान कृषि कार्य के लिए उपजाऊ समतल मैदानी क्षेत्रों में सघन बसे होते हैं। उदाहरणः नदी घाटी क्षेत्र, भारत में गंगा का मैदान।

(ङ) **खनिज पदार्थ** : विषम जलवायु वाली परिस्थितियों में भी उपयोगी खनिजों के मिल जाने पर मनुष्य वहां रहने के लिए उपाय ढूंढ लेता है जैसे सऊदी अरब के भीष्ण गर्मी वाले क्षेत्र में खनिज तेल क्षेत्र और अलास्का के बर्फीले क्षेत्रों में सोने तथा तेल के लिए मनुष्य ने बस्तियां बसा ली है।

Jharkhandlab.com

आर्थिक कारक :

(क) **खनिज :-** धरातल के जिन भागों में खनिजों का भंडार है, उन क्षेत्रों में खनन और औद्योगिक कार्य प्रारंभ हो जाते हैं। यहाँ रोजगार की तलाश में बहुत से लोग आकर काम करने लगते हैं, फलस्वरूप वह क्षेत्र सघन बसाव का बन जाता है। भारत का छोटानागपुर पठारी क्षेत्र, अफ्रीका का कटंगा, जांबिया तांबा पेटी क्षेत्र इसका अच्छा उदाहरण है ।

(ख) **नगरीकरण :-** नगरीय क्षेत्रों में रोजगार के बेहतर विकल्प, शिक्षा, चिकित्सा, परिवहन, संचार की अच्छी सुविधा लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। अतः ग्रामीण क्षेत्रों से आकर नगरों में लोग बसना अधिक पसंद करते हैं। अतः नगरीय क्षेत्र सघन हो जाते हैं।

(ग) **औद्योगीकरण :-** औद्योगिक क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ जाते हैं। इन क्षेत्रों में बहुत से कार्यकर्ता आकर बस जाते हैं। उद्योग और कार्यकर्ता को सेवा उपलब्ध कराने वाले दुकानदार, बैंककर्मी, व्यवसायी आदि भी यहाँ आकर बसने लगते हैं, फलस्वरूप यह सघन बसा क्षेत्र बन जाता है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक:

(क) **धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थल :-** धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थल लोगों को आकर्षित करते हैं। इन क्षेत्रों में वे शांति एवं आनंद महसूस करते हैं।

(ख) **सामाजिक एवं राजनीतिक सुरक्षा :-** जिन क्षेत्रों में सामाजिक एवं राजनीतिक सुरक्षा सुनिश्चित होती है वहाँ जनसंख्या घनत्व अधिक पाया जाता है।

(ग) **सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति :-** सामाजिक एवं राजनीतिक अशांति वाले क्षेत्रों से लोग पलायन करने लगते हैं। फलस्वरूप वहाँ निम्न बसाव पाया जाता है।

उपयुक्त कारकों से विश्व की जनसंख्या घनत्व एवं वितरण प्रभावित होती है।

2. जनांकिकीय संक्रमण की तीन अवस्थाओं की विवेचना कीजिए ।

उत्तर: जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत का उपयोग किसी क्षेत्र की जनसंख्या के वर्णन तथा भविष्य की जनसंख्या के पूर्वानुमान के लिए किया जा सकता है। यह सिद्धांत हमें बताता है कि जैसे ही समाज ग्रामीण, खेतिहर और अशिक्षित अवस्था से उन्नति करके, नगरीय औद्योगिक एवं साक्षर बनता है, तो उस क्षेत्र की जनसंख्या उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर से परिवर्तित होकर निम्न जन्मदर और निम्न मृत्यु दर हो जाती है। ये परिवर्तन अवस्थाओं में होते हैं जिन्हें सामूहिक रूप से जनांकिकीय चक्र के रूप में जाना जाता है।

	जनांकिकीय	
ग्रामीण,खेतिहर	⟶	नगरीय, औद्योगिक
	संक्रमण	

संक्रमण सिद्धांत की तीन अवस्थाएं ।

(क) **प्रथम अवस्था :** इस अवस्था में उच्च जन्मदर एवं उच्च मृत्युदर होती है। अधिकांश जनसंख्या कृषि कार्यों में संलग्न है,जहाँ बड़े परिवारों को संपत्ति मानी जाती है। अधिकांश लोग निरक्षर होते हैं।, अतः मृत्युदर की क्षति पूर्ति के लिए अधिक पुनरुत्पादन करते थे अर्थात जन्मदर अधिक है। उनके प्रौद्योगिकी का स्तर निम्न होते हैं। महामारियों, और भोजन की अपर्याप्त आपूर्ति, तथा जीवन प्रत्याशा (जीवन जीने के इच्छा) में कमी के कारण उच्च मृत्युदर होती है । 200 वर्ष पूर्व विश्व के सभी देश इसी अवस्था में थे।

(ख) **द्वितीय अवस्था :** इस अवस्था के प्रारंभ में उच्च जन्म दर रहती है, परंतु समय के साथ इसमें कमी आती जाती है। स्वास्थ्य संबंधी दशाओं एवं स्वच्छता में सुधार के कारण मृत्यु दर में कमी आती है। फलस्वरूप उच्च जन्म दर एवं निम्न मृत्यु दर के अंतर के कारण शुद्ध योग अर्थात वृद्धि उच्च होता है।

(ग) **तृतीय अवस्था :** इस अवस्था में जन्मदर एवं मृत्युदर दोनों अधिक घट जाती है। जनसंख्या नगरीय एवं शिक्षित होती है । उनमें विज्ञान एवं तकनीकी का ज्ञान हो जाता है। लोग विचारपूर्वक परिवार के आकार को नियंत्रित करती है तथा स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं का उपयोग करती है । अतः जनसंख्या या तो स्थिर हो जाती है या वृद्धि मंद हो जाती है। वर्तमान में विभिन्न देश जनांकिकीय संक्रमण की विभिन्न अवस्थाओं में है।

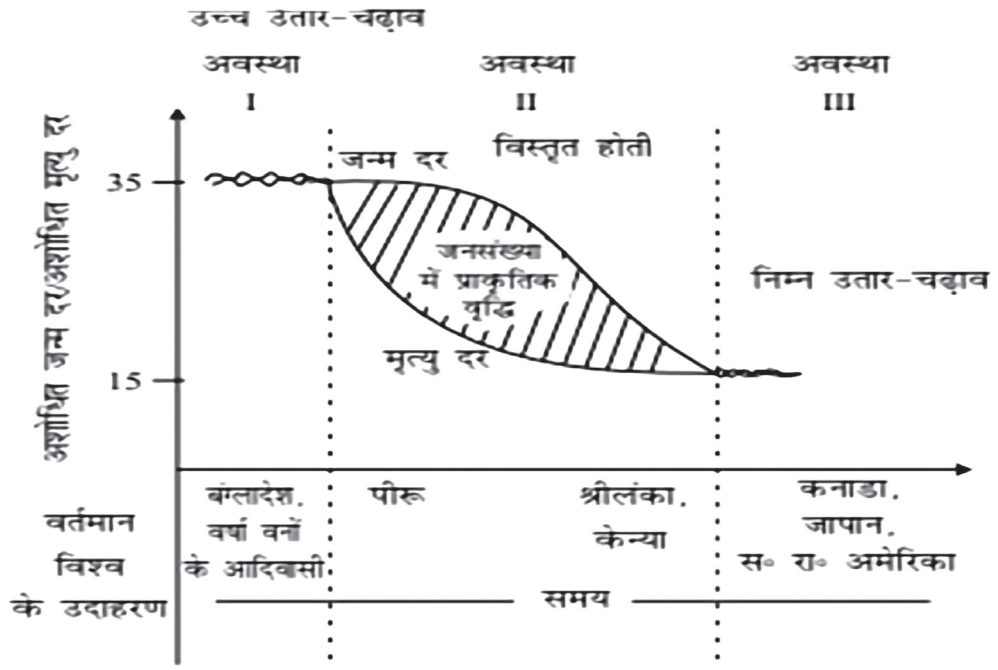

Jharkhandlab.com

अध्याय - 3 जनसंख्या संघटन
POPULATION COMPOSITION

पाठ के मुख्य बिंदु

- जनसंख्या संघटन के अंतर्गत जनसंख्या या मानव समूह की समस्त विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है। ये विशेषताएं दो प्रकार की होती हैं - शारीरिक एवं सांस्कृतिक विशेषताएं।
- शारीरिक विशेषताओं के अंतर्गत मानव की आयु, लिंग, जन्म दर, मृत्यु दर तथा प्रजाति जैसी विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है।
- सांस्कृतिक विशेषताओं के अंतर्गत मानवीय जनसंख्या की धर्म, भाषा, शिक्षा, आर्थिक स्तर, व्यवसायिक संरचना, ग्रामीण - नगरीय आवास, जैसी विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है।
- **लिंगानुपात :-** किसी जनसंख्या समूह में महिलाओं तथा पुरुषों की संख्या में मिलने वाले अनुपात को लिंगानुपात कहा जाता है। इस अनुपात की गणना भिन्न-भिन्न देशों में अलग-अलग प्रकार से की जाती है। लिंगानुपात से हमारा तात्पर्य पुरुष स्त्री की संख्या के अनुपात से है। इसके अंतर्गत प्रति हजार पुरुषों की संख्या पर स्त्रियों की संख्या की गणना की जाती है।
- विकसित देशों में लिंगानुपात महिलाओं के पक्ष में होता है, जबकि विकासशील और अविकसित देशों में यह पुरुषों के पक्ष में होता है।
- भारत में लिंगानुपात को प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या के रूप में व्यक्त किया जाता है जिसे निम्नलिखित सूत्र के द्वारा प्रदर्शित किया जाता है :-

$$\text{लिंगानुपात} = \frac{\text{महिलाओं की कुल संख्या}}{\text{पुरुषों की कुल संख्या}} \times 1000$$

- लिंगानुपात को प्रभावित करने वाले कारकों में जन्म दर, मृत्यु दर एवं प्रवास या स्थानांतरण को शामिल किया जाता है।
- विश्व में सर्वाधिक लिंगानुपात वाले महाद्वीप क्रमशः यूरोप, दक्षिण अमेरिका एवं मध्य अमेरिका हैं।
- विश्व में सबसे कम लिंगानुपात (954) वाला महाद्वीप एशिया महाद्वीप है।
- आयु संरचना किसी भी जनसंख्या की आधारभूत विशेषता होती है, कुल जनसंख्या में विभिन्न आयु वर्गों की जनसंख्या का मिलने वाला अनुपात ही आयु संरचना कहलाता है। इसे तीन वर्गों में बांटा जाता है:-
  - (क) बाल आयु वर्ग (0 - 14 वर्ष)
  - (ख) प्रौढ़ आयु वर्ग (15 - 59 वर्ष)
  - (ग) वृद्ध आयु वर्ग (60 वर्ष व उससे अधिक)
- जनसंख्या पिरामिड जनसंख्या की आयु व लिंग संरचना को प्रदर्शित करने वाले पिरामिड को जनसंख्या पिरामिड कहा जाता है, इसे आयु - लिंग पिरामिड भी कहा जाता है।
- वृद्ध होती जनसंख्या कुल जनसंख्या में वृद्धि आयु वर्ग की जनसंख्या के अनुपात यदि बढ़ जाए , तो ऐसी स्थिति वृद्ध होती जनसंख्या कहलाती है। वर्तमान में विश्व के अधिकांश विकसित देशों में उच्च जीवन प्रत्याशा तथा निम्न जन्म दरों के कारण जनसंख्या में वृद्ध आयु वर्ग की जनसंख्या का प्रतिशत बढ़ रहा है।
- निवास स्थान के आधार पर जनसंख्या को नगरीय और ग्रामीण में विभाजन किया जाता है , जिसे ग्रामीण नगरीय संयोजन कहा जाता है।
- संपूर्ण विश्व की जनसंख्या का 48% नगरों में निवास करता है गांव का प्रतिशत 52 है।
- विकसित देशों में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 76 और विकासशील देशों में यह मात्र 41% है। विकासशील देश कृषि प्रधान होते हैं अतः अधिकांश जनसंख्या गांव में निवास करती है।
- सामान्यतया लिखने पढ़ने की कला का न्यूनतम स्तर ही साक्षरता कहलाता है विश्व के विभिन्न देशों में साक्षरता की परिभाषा में अंतर मिलता है।
- भारत में, 7 वर्ष या उससे अधिक उम्र वाले उन सभी व्यक्तियों को साक्षर की श्रेणी में सम्मिलित किया जाता है, जो किसी भाषा को समझते हुए पढ़ तथा लिख सकते हैं, साथ ही उस व्यक्ति में समझ के साथ अंकगणितीय परिकलन करने की योग्यता होती है।
- साक्षरता को प्रभावित करने वाले कारकों के अंतर्गत अर्थव्यवस्था के प्रकार, नगरीकरण, जीवन स्तर, प्राविधिक विकास स्तर, जातीय संरचना, स्त्रियों की स्थिति, यातायात और संचार के साधन, एवं सरकारी नीति आदि को सम्मिलित किया जाता है।
- कार्यशील जनसंख्या के अंतर्गत 15 से 59 वर्ष की आयु वर्ग के व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है। कार्यशील जनसंख्या में, कार्य क्षमता सर्वाधिक रहती है और यह वर्ग विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत रहते हैं।
- व्यावसायिक संरचना के आधार पर किसी देश की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है या औद्योगिक यह ज्ञात होता है।
- कार्यशील जनसंख्या मुख्य रूप से चार क्षेत्रों में कार्यरत रहती है :-
  - (क) प्राथमिक क्षेत्र : कृषि वानिकी मत्स्य एवं खनन।
  - (ख) द्वितीय क्षेत्र : विनिर्माण या उद्योग।
  - (ग) तृतीय क्षेत्र : परिवहन संचार तथा अन्य सेवाएं।
  - (घ) चतुर्थ क्षेत्र : अनुसंधान तथा वैचारिक विकास से संबंधित कार्य

Jharkhandian.com

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्नलिखित में से किस ने संयुक्त अरब अमीरात के लिंगानुपात को निम्न किया है ?

(क) पुरुष कार्यशील जनसंख्या का चयनित प्रवास
(ख) पुरुषों की उच्च जन्म दर
(ग) स्त्रियों की निम्न जन्म दर
(घ) स्त्रियों का उच्च उत्प्रवास

2. निम्नलिखित में से कौन-सी संख्या जनसंख्या के कार्यशील आयु वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है?

(क) 15 से 65 वर्ष (ख) 15 से 66 वर्ष
(ग) 15 से 64 वर्ष (घ) 15 से 59 वर्ष

3. निम्नलिखित में से किस देश का लिंगानुपात विश्व में सर्वाधिक है?

(क) लैटविया। (ख) जापान
(ग) संयुक्त अरब अमीरात। (घ) फ्रांस

4. भारत के नगरीय क्षेत्रों में महिलाओं की संख्या में कमी के कारण है?

(क) रहन-सहन की उच्च लागत।
(ख) रोजगार के अवसर की कमी
(ग) सुरक्षा की कमी
(घ) उपर्युक्त सभी

5. पश्चिमी विकसित देशों में ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की संख्या के कम होने के कारण है

(क) कृषि का मशीनीकरण
(ख) नगरीय क्षेत्रों में महिलाओं के रोजगार के अवसर
(ग) क और ख दोनों
(घ) उपर्युक्त कोई नहीं

उत्तर: 1. (क) 2. (घ) 3. (क) 4 .(घ) 5. (ग)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लिंगानुपात शब्द का परिभाषा दीजिए।

उत्तर: जनसंख्या में स्त्रियों और पुरुषों की संख्या के अनुपात को लिंग अनुपात कहा जाता है ।

2. विश्व की जनसंख्या का औसत लिंगानुपात कितना है?

उत्तर: 100 स्त्रियों पर 102 पुरुष

3. विश्व में सबसे न्यूनतम लिंगानुपात वाला देश कौन सा है?

उत्तर: संयुक्त अरब अमीरात (प्रति 100 स्त्रियों पर 311 पुरुष)

4. संयुक्त राष्ट्र संघ का सूचीबद्ध कितने देशों में लिंगानुपात स्त्रियों के अनुकूल है?

उत्तर: 139 देशों में लिंगानुपात स्त्रियों के अनुकूल है।

5. जनसंख्या की आयु लिंग संरचना या पिरामिड से क्या अभिप्राय है?

उत्तर: विभिन्न आयु -वर्ग में स्त्रियों और पुरुषों की संख्या से है।

6. जापान के पिरामिड का संकीर्ण आधार और शुंडाकार शीर्ष क्या दर्शाता है ?

उत्तर: निम्न जन्म और मृत्यु दरों को दर्शाता है।

7. अनुसंधान सूचना प्रौद्योगिकी और वैचारिक विकास से जुड़े कार्यों को किस आर्थिक क्रियाओं के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है ?

उत्तर: चतुर्थक क्रियाओं के रूप में

8. विश्व में सबसे अधिक नगरीकृत देश कौन सा है?

उत्तर: ग्रेट ब्रिटेन।

9. कौन सा आयु वर्ग आर्थिक रूप से कार्यशील जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है ?

उत्तर: 15 से 59 वर्ष।

10. विश्व में सबसे अधिक लिंगानुपात किस देश का है ?

उत्तर: लाटविया

11. विश्व का सबसे बड़ा भाषा समूह कौन सा है ?

उत्तर: मंडारिन (चीनी)।

13. 100 प्रतिशत शहरी जनसंख्या वाला देश कौन सा है ?

उत्तर: सिंगापुर।

14. बाल आयु वर्ग के अंतर्गत किस आयु वर्ग को सम्मिलित किया जाता है ?

उत्तर: 0 से 14 वर्ष ।

15. विश्व में सबसे अधिक प्रजनन दर वाला देश कौन है ?

उत्तर: नाइजर।

16. वर्तमान में विश्व के नगरीय ग्रामीण जनसंख्या का अनुपात कितना है ?

उत्तर: 48 : 52

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जनसंख्या संघटन से आप क्या समझते हैं?

उत्तर: जनसंख्या को आयु, लिंग, निवास स्थान, शिक्षा, जाति, भाषा, धर्म, जीवन प्रत्याशा आदि के आधार पर वर्गीकृत कर उनकी विशेषताओं का अध्ययन करना ही जनसंख्या संघटन कहलाता है। जनसंख्या संघटन के माध्यम से हमें यह पता चलता है कि विभिन्न क्षेत्रों की जनसंख्या की विशेषताएं किस प्रकार की है।

2. आयु संरचना का क्या महत्व है ?

उत्तर: आयु संरचना विभिन्न आयु वर्गों के लोगों की संख्या को प्रदर्शित करती है । यह जनसंख्या संघटन का एक महत्वपूर्ण सूचक है। क्योंकि आयु संरचना विभिन्न जनांकिकी तथ्यों के साथ ही अनेक सामाजिक-आर्थिक क्रियाओं को प्रभावित करती है। इसके अन्तर्गत जनसंख्या में तीन आयु वर्गों के अनुपात का अध्ययन किया जाता है।

3. लिंगानुपात कैसे मापा जाता है ?

उत्तर: जनसंख्या में स्त्रियों और पुरुषों के बीच के अनुपात को लिंगानुपात कहा जाता है । विश्व के कुछ देशों में प्रति हजार स्त्रियों पर पुरुषों की संख्या के द्वारा ज्ञात किया जाता है । भारत में लिंगानुपात प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।

$$\frac{\text{महिलाओं की संख्या}}{\text{पुरुषों की संख्या}} \times 1000$$

4. जनसंख्या पिरामिड क्या है ?

उत्तर: जनसंख्या की आयु लिंग संरचना को दर्शाने वाला ऐसा पिरामिड जिस के बाएं भाग में विभिन्न आयु वर्गो में पुरुषों का प्रतिशत तथा दाएं भाग में विभिन्न आयु वर्गों में स्त्रियों का प्रतिशत प्रदर्शित

Jharkhandlab.com

किया जाता है, जनसंख्या पिरामिड कहलाता है। इसे आयु - लिंग पिरामिड भी कहते हैं क्योंकि इसमें मुख्य रूप से आयु व लिंग संरचना को प्रदर्शित किया जाता है। जनसंख्या पिरामिड मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं :-

(क) विस्तारित होती जनसंख्या का पिरामिड।
(ख) स्थिर जनसंख्या का पिरामिड।
(ग) ह्रासमान जनसंख्या का पिरामिड।

5. साक्षरता दर को परिभाषित करें ।

उत्तरः भारत में साक्षरता दर का तात्पर्य है 7 वर्ष या उससे अधिक आयु वर्ग वाले जनसंख्या जो पढ़ लिख सकता है और जिसमें समझ के साथ अंकगणितीय परिकलन करने की योग्यता है। किसी देश में साक्षरता जनसंख्या का अनुपात उसके सामाजिक -आर्थिक विकास का सूचक होता है क्योंकि इससे रहन-सहन के स्तर महिलाओं की सामाजिक स्थिति शैक्षणिक सुविधाओं की उपलब्धता तथा सरकार की नीतियों का पता चलता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. जनसंख्या के ग्रामीण नगरीय संघटन का वर्णन कीजिए।

उत्तरः जनसंख्या का ग्रामीण एवं नगरीय विभाजन उनके निवास / आवास के आधार पर होता है। ग्रामीण और नगरीय जीवन आजीविका एवं सामाजिक दशाओं में एक दूसरे से भिन्न होते हैं। ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में आयु, लिंग, संघटन, व्यावसायिक संरचना, जनसंख्या का घनत्व तथा विकास के स्तर अलग-अलग होते हैं ।

सामान्य रूप से ग्रामीण क्षेत्र में लोग आर्थिक प्राथमिक क्रियाओं जैसे कृषि, पशुपालन, मत्स्य पालन, आखेट, वानिकी आदि में संलग्न होते हैं। नगरीय क्षेत्र में अधिकांश कार्यशील जनसंख्या के गैर -प्राथमिक क्रियाओं जैसे उद्योग, परिवहन, व्यापार, परिवहन एवं सेवाओं में संलग्न होते हैं।

विकसित देशों में ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों की संख्या अधिक है, जबकि नगरीय क्षेत्रों में स्त्रियों की संख्या पुरुषों की अपेक्षा अधिक है । विकासशील देशों जैसे नेपाल पाकिस्तान और भारत जैसे देशों में स्थिति इसके विपरीत है ।ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों की संख्या अधिक है, जबकि नगरीय क्षेत्रों में पुरुषों की संख्या अधिक है।

विकसित देशों के नगरीय क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों की अधिक संभावनाओं के कारण ग्रामीण क्षेत्रों से महिलाओं का आगमन के परिणाम स्वरूप यूरोप कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका के नगरीय क्षेत्रों में महिलाओं की अधिकता है । कृषि कार्य विकसित देशों में अत्यधिक मशीनीकृत है। यह लगभग पुरुष प्रधान व्यवसाय है, क्योंकि मशीनों को चलाना पुरुषों के द्वारा होता है। फलस्वरूप यहां ग्रामीण क्षेत्रों में पुरुषों की संख्या अधिक है।

एशिया के नगरीय क्षेत्रों में पुरुष प्रधान प्रवास के कारण लिंगानुपात भी पुरुषों के अनुकूल है । भारत जैसे देशों में ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्यों में महिलाओं की सहभागिता काफी ऊंची है। अतः महिलाओं की संख्या ग्रामीण क्षेत्र में अधिक देखी जाती है। नगरों में आवास की कमी रहन-सहन की ऊंची लागत नगरों में रोजगार के अवसर की कमी और सुरक्षा की कमी महिलाओं के गांव से नगरीय क्षेत्रों में प्रवास को रोकती है, अतः नगरों में महिलाओं की संख्या कम पाई जाती है।

2. आयु पिरामिड के तीन प्रकारों के नाम लिखिए तथा उनका अर्थ स्पष्ट करें।

उत्तरः जनसंख्या की आयु लिंग संरचना को दर्शाने वाला ऐसा पिरामिड जिस के बाएं भाग में विभिन्न आयु वर्गो में पुरुषों का प्रतिशत तथा दाएं भाग में विभिन्न आयु वर्गों में स्त्रियों का प्रतिशत प्रदर्शित किया जाता है, जनसंख्या पिरामिड कहलाता है। इसे आयु - लिंग पिरामिड भी कहते हैं क्योंकि इसमें मुख्य रूप से आयु व लिंग संरचना को प्रदर्शित किया जाता है। जनसंख्या पिरामिड मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं :-

(क) **<u>विस्तारित होती जनसंख्या का पिरामिड :-</u>** इस प्रकार के पिरामिड में आधार चौड़ा और शीर्ष क्रमशः पतला होता जाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि ऐसे क्षेत्र में बच्चों की संख्या अधिक, युवाओं की उससे कम और वृद्धों की संख्या सबसे कम होती है। इस प्रकार का पिरामिड यह दर्शाता है कि मृत्यु दर तथा जन्म दर दोनों अधिक हैं। नाइजीरिया देश का आयु लिंग पिरामिड विस्तारित होती जनसंख्या को दर्शाता है।

(ख) **<u>स्थिर जनसंख्या का पिरामिड :-</u>** यह पिरामिड उन विकसित देशों की आयु लिंग संरचना को प्रदर्शित करता है, जिनमें जन्म दर तथा मृत्यु दर लगभग समान होती है। जिसके परिणामस्वरूप जनसंख्या स्थिर हो जाती है। यह पिरामिड घंटी के आकार की होता है, जो शीर्ष की ओर शुंडाकार होता है। ऑस्ट्रेलिया देश की आयु लिंग पिरामिड स्थिर जनसंख्या को प्रदर्शित करता है।

(ग) **<u>ह्रासमान जनसंख्या का पिरामिड :-</u>** यह पिरामिड उन विकसित देशों की आयु - लिंग संरचना को प्रदर्शित करता है, जिनमें जनसंख्या की जन्म दर तथा मृत्यु दर अति निम्न मिलती है, जिसके कारण जनसंख्या वृद्धि ऋणात्मक हो जाती है।

विश्व के विकसित राष्ट्रों की कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत उच्च मिलता है, जबकि ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत निम्न मिलता है । विकासशील राष्ट्रों में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत निम्न तथा ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत उच्च मिलता है । वर्ष 2020 में संपूर्ण विश्व की जनसंख्या का 56% नगरों में निवास करता है, जबकि ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत 44% है।

3. विश्व के विभिन्न भागों में आयु लिंग में असंतुलन के लिए उत्तरदायी कारकों तथा व्यावसायिक संरचना की विवेचना कीजिए।

उत्तरः आयु लिंग में असंतुलन के लिए उत्तरदायी कारक निम्नलिखित है:

क. **<u>जन्म दरों में भिन्नता :</u>** विश्व के जिन क्षेत्रों में उच्च जन्म दर मिलती है ,उनमे बाल आयु वर्ग 0 से 14 वर्ष का प्रतिशत उच्च रहता है जबकि वृद्ध आयु वर्ग 60 वर्ष से अधिक का प्रतिशत निम्न रहता है । दूसरी ओर विश्व के विकसित राष्ट्रों में निम्न जन्म दरों के चलते 0 से 14 वर्ष के आयु वर्ग के लोगों का प्रतिशत कम होता है तथा वृद्ध आयु का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक होता है।

ख. **<u>महिला -पुरुष मृत्यु दरों में भिन्नता :</u>** विश्व के विकासशील देशों में चिकित्सीय सुविधाओं की कमी होने के कारण शिशु मृत्यु -दर तथा मातृत्व मृत्यु- दर अधिक मिलती है । 0 से 14 आयु वर्ग के बच्चों की तथा 15 से 24 आयु वर्ग के महिलाओं की संख्या कम होती है। 65 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में विश्व के सभी देशों में महिलाओं की संख्या पुरुषों से अधिक हो जाती है क्योंकि इस आयु वर्ग में महिला मृत्यु -दर पुरुषों की तुलना में कम रहती है।

ग. **<u>लिंग चयनात्मक प्रवास :</u>** विश्व के विकासशील देशों में ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर 15 से 59 वर्ष के कार्यशील आयु वर्ग में पुरुष प्रधान प्रवास होता है। अधिकांश नगरों में आवास की कमी, रहन-सहन के उच्च लागत, महिलाओं के लिए रोजगार के सीमित अवसरों तथा महिलाओं की सुरक्षा की कमी, ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों में महिला प्रवास को अवरोधित करती है, फलस्वरूप नगरों में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की संख्या कम पाई जाती है।

Jharkhandlab.com

व्यावसायिक संरचना

कार्यशील जनसंख्या अर्थात 15 से 59 वर्ष के आयु वर्ग के व्यक्ति की कार्य क्षमता सर्वाधिक होती है। अधिकांश देशों में कार्यशील जनसंख्या में इसी आयु वर्ग का प्रतिशत सर्वाधिक रहता है। यह आयु वर्ग कृषि, वानिकी, विनिर्माण, व्यवसाय, परिवहन एवं सेवा में कार्यरत मिलती है।

किसी क्षेत्र की कार्यशील जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि उस देश की अर्थव्यवस्था कृषि आधारित, उद्योग तथा व्यापार पर आधारित है। इसके अध्ययन से उस देश के आर्थिक विकास के स्तर की भी जानकारी प्राप्त होती है। प्रदेश का भौतिक संसाधन व्यवसाय के आधार में सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। भौतिक संसाधनों की प्रकृति के अनुसार वहां के व्यवसाय आधारित होते हैं, जिस क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधन की प्रकृति जैसी होती है, वहां का व्यवसाय उसी पर आधारित होता है। समुद्र तटीय क्षेत्रों में मछली व्यवसाय एवं समुद्र आधारित व्यवसाय होते हैं। सघन वनस्पति वाले क्षेत्र में वन आधारित उद्योग पाए जाते हैं, फल -फूल तथा जड़ी-बूटी आधारित उद्योग होते हैं। विस्तृत घास क्षेत्र में पशु पालन का व्यवसाय मिलता है।खनिज क्षेत्रों में खनन तथा उद्योग विकसित होते हैं। प्राकृतिक संसाधन वहां के व्यवसाय को प्रभावित करती हैं।

विज्ञान एवं तकनीकी के विकास होने से व्यवसाय में विशिष्टीकरण आने लगता है, जिससे अति विशिष्ट प्रकार के नवीन व्यवसाय विकसित होने लगते हैं। व्यवसायिक स्तर औद्योगीकरण तथा विशिष्टीकरण जैसे सभी विकास मिलकर एक नवीन नगरीय संस्कृति को जन्म देती है। इस नवीन नगरीय संस्कृति में विभिन्न सेवाओं की प्रधानता मिलती है। कार्यशील जनसंख्या विभिन्न प्रकार की सेवाओं एवं उत्पादन कार्यों में संलग्न है।

कार्यशील जनसंख्या निम्नलिखित क्षेत्रों में कार्यरत होती है:

(क) प्राथमिक क्रियाओं के अंतर्गत कृषि, वानिकी, मत्स्यन तथा खनन आदि क्रिया होते हैं।

(ख) द्वितीयक क्रिया के अंतर्गत विनिर्माण शामिल है।

(ग) तृतीय क्रियाओं के अंतर्गत व्यापार, परिवहन, संचार और अन्य सेवाएं आते हैं।

(घ) चतुर्थक क्रियाओं में अनुसंधान सूचना प्रौद्योगिकी और वैचारिक विकास से जुड़े कार्यों को शामिल किया जाता है।

कार्यशील जनसंख्या का अनुपात किसी राष्ट्र के आर्थिक विकास के स्तर का एक अच्छा सूचक है। आदिम अर्थव्यवस्था वाले देशों की अधिकांश कार्यशील जनसंख्या प्राथमिक क्रियाओं में कार्यरत मिलती है, जिसमें केवल प्राकृतिक संसाधनों के द्वारा आधारित कार्य किए जाते हैं। उद्योगों तथा अवसंरचना से युक्त एक विकसित अर्थव्यवस्था वाले देश में कार्यशील जनसंख्या द्वितीयक, तृतीयक एवं चतुर्थक क्रियाओं में कार्यरत दिखाई पड़ते हैं।

Jharkhandlab.com

अध्याय - 4 मानव विकास HUMAN DEVELOPMENT

पाठ के मुख्य बिंदु

- समय के संदर्भ में किसी भी स्थान में होने वाले परिवर्तनों को वृद्धि तथा विकास के रूप में प्रदर्शित किया जाता है।
- वृद्धि मात्रात्मक तथा मूल्य निरपेक्ष होती है, तथा यह धनात्मक या ऋणात्मक दोनों रूपों में हो सकती है।
- विकास गुणात्मक तथा मूल्य सापेक्ष होता है और यह सदैव धनात्मक या सकारात्मक ही होता है।
- किसी राष्ट्र में यदि वृद्धि तथा विकास साथ - साथ नहीं चलते, तब ऐसी वृद्धि विकासहीन वृद्धि कहलाती है। विकासहीन वृद्धि विकासशील राष्ट्रों में दिखाई पड़ते हैं।
- विकासहीन वृद्धि से किसी राष्ट्र में प्रादेशिक असंतुलन एवं गरीबी उत्पन्न हो जाती है।
- विकास युक्त वृद्धि का तात्पर्य है, वृद्धि के साथ-साथ विकास। यहां वृद्धि मात्रात्मक व धनात्मक होने के साथ-साथ गुणात्मक भी होती है।
- विश्व के कुछ देशों में विकास के स्तर का मापन कई दशकों तक आर्थिक वृद्धि के संदर्भ में किया जाता रहा। अर्थात इस प्रकार के मापन में लोगों के जीवन स्तर में सुधार का कोई संबंध नहीं था।
- बाद में विकास के महत्वपूर्ण पक्षों के अंतर्गत जीवन की गुणवत्ता, अवसरों की उपलब्धता तथा स्वतंत्रताओं के उपभोग को शामिल किया गया।
- 1990 ई. में पहली बार पाकिस्तानी अर्थशास्त्री महबूब - उल - हक ने मानव विकास सूचकांक का निर्धारण किया और विकास का संबंध लोगों के विकल्पों में बढ़ोतरी से है, इस बात पर बल दिया।
- भारतीय अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन का भी मानना है, कि विकास का मुख्य उद्देश्य स्वतंत्रता में वृद्धि करना है।
- महबूब - उल - हक का मानना है, कि विकास का मतलब लोगों के विकल्पों में वृद्धि तथा उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार से है। इनके अनुसार विकास का केंद्र बिंदु अर्थव्यवस्था ना होकर मानव है।
- मानव विकास के अंतर्गत तीन पक्षों को शामिल किया गया है :- जैसे दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन या जीवन प्रत्याशा, साक्षर या ज्ञानवान होना और आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता।
- मानव विकास की अवधारणा के अनुसार स्वास्थ्य, शिक्षा तथा संसाधनों की उपलब्धता को मानव विकास का केंद्र बिंदु माना गया है।
- मानव विकास के चार स्तंभ निम्नलिखित है:-
  1. समता
  2. सतत पोषणीयता
  3. उत्पादकता
  4. सशक्तिकरण
- मानव विकास के अध्ययन के लिए 4 उपागम का उपयोग किया जाता है:-
  1. आय उपागम : मानव विकास के अध्ययन का सबसे पुराना उपागम।
  2. कल्याण उपागम : इस उपागम में मानव की शिक्षा स्वास्थ्य सामाजिक सुरक्षा तथा सुख साधनों पर पर्याप्त धनराशि व्यय करने की आवश्यक माना जाता है।
  3. आधारभूत आवश्यकता उपागम : इस उपागम का प्रतिपादन अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन ने किया था। इसके अंतर्गत मानव की छह आधारभूत आवश्यकता जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, भोजन, जलापूर्ति, स्वच्छता तथा आवास को सम्मिलित किया गया था।
  4. क्षमता उपागम : इस उपागम का प्रतिपादन भारतीय अर्थशास्त्री प्रोफेसर अमर्त्य सेन ने किया था। जिसमें उन्होंने बताया कि मानवीय क्षमताओं का निर्माण कर उनकी संसाधनों तक पहुंच को बढ़ाया जाना ही विकास की कुंजी है।
- सशक्तिकरण का अर्थ है, देश में रहने वाले सामाजिक - आर्थिक दृष्टि से पिछड़े मानवीय समूह पर विशेष ध्यान देना।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. मानव विकास सूचकांक (2011) के संदर्भ में विश्व के देशों में भारत की निम्नलिखित में से कौन-सी कॉटि थीं?

(क) 126 (ख) 134
(ग) 128 (घ) 129

2. मानव विकास सूचकांक में भारत के निम्नलिखित राज्यों से किस एक की कोटि उच्चतम है?

(क) तमिलनाडु (ख) पंजाब
(ग) केरल (घ) हरियाणा

3. भारत के निम्नलिखित राज्यों में से किस एक में स्त्री साक्षरता निम्नतम है?

(क) जम्मू और कश्मीर (ख) अरुणाचल प्रदेश
(ग) झारखंड (घ) बिहार

4. भारत के निम्नलिखित राज्यों में से किस एक में 0-6 आयु वर्ग के बच्चों में लिंग अनुपात निम्नतम है?

(क) गुजरात (ख) हरियाणा
(ग) पंजाब (घ) हिमाचल प्रदेश

5. भारत के निम्नलिखित केंद्र-शासित प्रदेशों में से किस एक की साक्षरता दर उच्चतम है?

(क) लक्षद्वीप
(ख) चंडीगढ़
(ग) दमन और दीव
(घ) अंडमान और निकोबार द्वीप समूह

6. मानव विकास के प्रमुख तत्व हैं ?

(क) स्वस्थ जीवन (ख) शिक्षा
(ग) उच्च जीवन स्तर (घ) यह सभी

7. मानव विकास के संकेतक हैं ?

(क) तीन (ख) चार
(ग) पांच (घ) छः

Jharkhandlab.com

8. मानव का विकास के द्वारा होता है?

(क) परिवार (ख) शिक्षा

(ग) समाज (घ) इनमें से कोई नहीं

9. मानव विकास की अवधारणा निम्नलिखित में से किस विद्वान की देन है?

(क) प्रोफेसर अमर्त्य सेन (ख) डॉ. महबूब- उल -हक

(ग) ऐलन. सी सेम्पल (घ) रेटजेल

10. मानव विकास सूचकांक में प्रथम स्थान पर है?

(क) अमेरिका (ख) जर्मनी

(ग) जापान (घ) नार्वे

11. लोगों के परिवर्धन की प्रक्रिया और जनकल्याण के स्तर को ऊंचा उठाना क्या कहलाता है?

(क) मानव विकास (ख) राजनीतिक विकास

(ग) सांस्कृतिक विकास (घ) आर्थिक विकास

12. मानव विकास का मापन किस प्रकार किया जाता है?

(क) गणना द्वारा (ख) मानव सूचकांक द्वारा

(ग) जनसंख्या की गणना द्वारा (घ) शिक्षा स्तर द्वारा

13. निम्नलिखित में से कौन सा विकास का सर्वोत्तम वर्णन करता है?

(क) आकार में वृद्धि

(ख) गुण में धनात्मक परिवर्तन

(ग) आकार में स्थिरता

(घ) गुण में साधारण परिवर्तन

उत्तर- 1. (ख) 134 2. (ग) केरल 3. (घ) बिहार 4. (ख) हरियाणा 5. (क) लक्षद्वीप 6. (घ) यह सभी 7. (क) तीन 8. (ख) शिक्षा 9. (ख) डॉ. महबूब- उल -हक 10. (घ) नॉर्वे 11. (क) मानव विकास 12. (ख) मानव सूचकांक द्वारा 13. (ख) गुण में धनात्मक परिवर्तन

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मानव विकास किसे कहते हैं ?

उत्तर : ऐसा विकास जो लोगों के विकल्पों में वृद्धि करता है और उनके जीवन स्तर में सुधार लाता है, मानव विकास कहलाता है।

2. सशक्तिकरण क्या है?

उत्तर : अपने विकल्पों को चुनने के लिए शक्ति प्राप्त करना सशक्तिकरण कहलाता है।

3. मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता क्या है ?

उत्तर : वैसी आवश्यकताएं जिसके बिना मानव का जीवन संभव नहीं है। जैसे :- भोजन, वस्त्र, आवास, पेयजल, शिक्षा एवं स्वास्थ्य आदि।

4. मानव विकास की तीन मूलभूत क्षेत्रों को लिखें।

उत्तर : मानव विकास के तीन मूलभूत क्षेत्र हैं- स्वास्थ्य, शिक्षा तथा संसाधनों तक पहुंच।

5. साक्षरता क्या है ?

उत्तर : साक्षरता का अर्थ है पढ़ने और लिखने की क्षमता का होना। अर्थात साक्षर व्यक्ति वह होता है, जो किसी भाषा के विषय वस्तु को पढ़कर समझे और लिख सके।

6. मानव विकास की अवधारणा किस विद्वान की देन है ?

उत्तर : मानव विकास की अवधारणा पाकिस्तान के अर्थशास्त्री डॉ. महबूब - उल - हक के द्वारा दी गई।

7. विकास किसे कहते हैं ?

उत्तर : विकास का अर्थ किसी राष्ट्र के ऐसे परिवर्तन से है, जो गुणात्मक हो और हमेशा धनात्मक उन्नति को दर्शाता हो।

8. समता से आपका क्या तात्पर्य है ?

उत्तर : समता का अर्थ प्रत्येक व्यक्ति को उपलब्ध अवसरों के लिए समान पहुंच की व्यवस्था करना है।

9. सतत पोषणीयता क्या है ?

उत्तर : किसी राष्ट्र के सभी संसाधनों का उपयोग भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर करना, सतत पोषणीयता कहलाता है।

10. वृद्धि कैसी होती है ?

उत्तर : वृद्धि हमेशा मात्रात्मक होती है एवं मूल्य निरपेक्ष होती है। इसे धनात्मक या ऋणात्मक दोनों प्रकार से व्यक्त किया जाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मानव विकास को परिभाषित कीजिए।

उत्तर- मानव विकास स्वस्थ भौतिक पर्यावरण से लेकर सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक स्वतंत्रता तक सभी प्रकार के मानव विकल्पों को सम्मिलित करते हुए लोगों के विकल्पों में विस्तार और उनके स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा, तथा सशक्तीकरण के अवसरों में वृद्धि की प्रक्रिया है।

2. उत्तरी भारत के अधिकांश राज्यों में मानव विकास के निम्न स्तर के दो कारण बताइए।

उत्तर- देश के प्रमुख 15 राज्यों में उत्तरी भारत के असम,बिहार, , मध्य प्रदेश, ओडिशा,उत्तर प्रदेश, राजस्थान व पश्चिमी बंगाल ऐसे राज्य हैं, जहाँ मानव विकास निम्न स्तर पर है। इसके प्रमुख कारण है :आर्थिक विकास का निम्न स्तर व साक्षरता है। इसके अलावा सामाजिक-राजनीतिक व ऐतिहासिक कारण भी इसके लिए उत्तरदायी हैं।

3. भारत के बच्चों में घटते लिंगानुपात के दो कारण बताइए।

उत्तर- भारत में स्त्री लिंगानुपात घट रहा है, विशेष रूप से 0-6 आयु वर्ग के बच्चों के लिंग-अनुपात के संदर्भ में यह बहुत ही अवांछनीय हैं। केरल, जहाँ साक्षरता दर भारत में सर्वोच्च है। इसके अलावा सभी राज्यों में बच्चों का लिंग अनुपात घटा है। हरियाणा व पंजाब जैसे विकसित राज्यों में यह सबसे अधिक चिंताजनक प्रति हज़ार बालकों पर 800 से भी कम बालिकाएँ हैं। लिंग-निर्धारण की वैज्ञानिक विधियों का उपयोग व सामाजिक दृष्टिकोण इसके प्रमुख कारण हैं।

4. मानव विकास क्या है?

उत्तर- मानव विकास सामाजिक और राजनीतिक स्वतंत्रता, स्वास्थ्य भौतिक पर्यावरण से लेकर आर्थिक तक सभी प्रकार के मानव विकल्पों को समाहित करते हुए लोगों के विकल्पों में विस्तार और उनके स्वास्थ्य सेवाओं शिक्षा और सशक्तिकरण के अवसर में वृद्धि करता है ।

5. मानव विकास सूचकांक से क्या तात्पर्य है?

उत्तर - किसी देश के लोगों के विकास का मापन उनके स्वास्थ्य, शिक्षा का स्तर तथा संसाधनों तक उनकी पहुंच के संदर्भ में किया जाए तो वह मानव विकास सूचकांक मापक कहलाता है । यह सूचकांक 0 से 1 के बीच हो सकता है । सूचकांक 1 से जितना समीप होगा मानव विकास का स्तर उतना ही अच्छा होगा ।

6. भारत में 2001 के स्त्री साक्षरता के स्थानिक प्रारूपों की विवेचना कीजिए और इसके लिए उत्तरदायी कारणों को समझाइए।

उत्तर- भारत में कुल साक्षरता दर लगभग 65.38 प्रतिशत है जबकि स्त्री साक्षरता 54.16 प्रतिशत है। (जनगणना 2001 के अनुसार) दक्षिण भारत के अधिकांश राज्यों में कुल साक्षरता और महिला साक्षरता

sharkhandlab.com

राष्ट्रीय औसत से ऊँची है। स्थानिक भिन्नताओं के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में, अनुसूचित जातियों व अनुसूचित जनजातियों में,स्त्रियों में, कृषि मजदूरों में तथा हमारे समाज के अन्य सीमांत वर्गों में साक्षरता का प्रतिशत बहुत ही कम है। यद्यपि सीमांत वर्गों में साक्षरों का प्रतिशत ठीक हुआ है, फिर भी धनी और सीमांत वर्गों की जनसंख्या के बीच यह अंतर समय के साथ बढ़ा है। भारत के राज्यों में साक्षरता दर में व्यापक प्रादेशिक असमानता मिलती हैं। यहाँ बिहार जैसे राज्य भी हैं, जहाँ साक्षरता दर बहुत कम 47.53% हैं। केरल और मिजोरम जैसे राज्य भी हैं, जिनमें साक्षरता दर क्रमशः 90.92% और 88.49% है।

7. भारत के कुछ राज्यों में मानव विकास के स्तरों में किन कारकों ने स्थानिक भिन्नता उत्पन्न की है?

उत्तर- भारत के कुछ राज्यों में मानव विकास के स्तरों में स्थानिक भिन्नता देखी जा सकती है। इन परिस्थितियों के लिए अनेक राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, और ऐतिहासिक कारण उत्तरदायी हैं। केरल के मानव विकास सूचकांक का उच्चतम मूल्य, शत-प्रतिशत के आसपास साक्षरता दर (90.92 प्रतिशत) प्राप्त करने के लिए उसके द्वारा किए गए प्रभावी कार्यशीलता के कारण है। इसके विपरीत मध्य प्रदेश, ओडिशा, बिहार, असम और उत्तर प्रदेश जैसे निम्न साक्षरता वाले राज्य हैं। उच्चतर साक्षरता दर दर्शाने वाले राज्यों में पुरुष और स्त्री साक्षरता दर के बीच कम अंतर पाया गया है।शैक्षिक उपलब्धियों के अतिरिक्त आर्थिक विकास भी मानव विकास सूचकांक पर सार्थक प्रभाव डालता है। आर्थिक दृष्टि से विकसित राज्यों के मानव विकास सूचकांक का मूल्य अन्य राज्यों की तुलना में ऊंचा है। उपनिवेश काल में सामाजिक विषमताएँ और विकसित प्रादेशिक विकृतियाँ अब भी भारत की अर्थव्यवस्था, शासनतंत्र व समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

8. मानव विकास में शिक्षा का क्या महत्व है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- मानव विकास में वृद्धि हेतु शिक्षा या ज्ञान को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। एक शिक्षित समाज ही विकसित समाज का निर्माण करता है अतः शिक्षा मानव का आभूषण है। शिक्षा के दो मापदंड है। प्रथम मापदंड शिक्षक- शिष्य अनुपात है अर्थात शिक्षक शिष्य अनुपात जितना कम होगा शिक्षा की गुणवत्ता उतनी ही अच्छी होगी। दूसरा मापदंड शिक्षा या साक्षरता योग्यता के स्तर को मापना है । यह मापदंड जितना अधिक होगा उस देश का सामाजिक स्तर भी उतना ही अधिक होगा। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP- United Nations Development Programme) की साल 2016 की मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार अधिकांश विकसित देशों में 98% या इससे अधिक जनसंख्या साक्षर है जबकि पिछड़े हुए देशों में 45% से कम जनसंख्या साक्षर है, जो इन देशों की निम्न मानव विकास स्तर को दिखाता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. मानव विकास अवधारणा के अंतर्गत क्षमता और सतत पोषणीयता से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- मानव विकास की अवधारणा के प्रमुख चार स्तंभ है । समता, सतत् पोषणीयता, उत्पादकता तथा सशक्तिकरण ।

समता का अर्थ एक ऐसे प्रदेश से है, जिसके अंतर्गत रहने वाले हर एक व्यक्ति को उपलब्ध अवसर के लिए समान पहुंच की व्यवस्था करना है जिससे समतामूलक समाज का सृजन हो सके तथा लोगों के उपलब्ध अवसर लिंग प्रजाति ,आय तथा जाति के भेदभाव के विचार के बिना समान रूप से मिल सके। भारत जैसे देशों में महिलाओं तथा सामाजिक आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए वर्गों तथा दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों को विकास के मापन समान अवसर प्राप्त नहीं होते हैं, अतः मानव विकास में इस अभाव को दूर करने का उपाय समतामूलक विकास के माध्यम से किया जाए।

सतत् पोषणीय का अर्थ मानव विकास हेतु जरूरी है। हर पीढ़ी को विकास तथा संसाधन उपभोग के समान अवसर मिलते रहना चाहिए, अतः वर्तमान पीढ़ी को समस्त प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग भविष्य को ध्यान में रखकर करना चाहिए। इन संसाधनों में से किसी भी एक का दुरुपयोग आने वाली पीढ़ियों के लिए विकास के अवसर को रोक सकता है इसे विकास का सतत् चक्र कहा जाता है । आज के समय में जिस प्रकार से पर्यावरणीय संसाधनों का दुरुपयोग हो रहा है उससे अनेक प्राकृतिक संसाधन नष्ट होने के कगार पर है, जिससे सतत् पोषणीय विकास की बाधा के रूप में हो सकता है। अतः मानव विकास अवधारणा की सतत् पोषणीय इसी गैर -टिकाऊ विकास की ओर सचेत करती है।

2. मानव विकास के उपागम का उल्लेख कीजिए?

उत्तर- इसके चार महत्वपूर्ण उपागम है

क. क्षमता उपागम

ख. आधारभूत आवश्यकता उपागम

ग. आय उपागम

घ. कल्याण उपागम

क. **क्षमता उपागम**- प्रोफेसर अमर्त्य सेन के द्वारा महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। इस उपागम में संसाधनों की मनुष्य तक पहुंच की क्षमता में वृद्धि पर बल दिया गया है।

ख. **आधारभूत आवश्यकता उपागम**- न्यूनतम आधारभूत आवश्यकताएं जैसे- भोजन, स्वास्थ्य, स्वच्छता, शिक्षा, जलापूर्ति तथा आवास की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है। इस उपागम को अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO)के द्वारा प्रस्ताव किया गया था।

ग. **आय उपागम**- इस उपागम को मानव विकास का सबसे प्राचीन उपागम माना गया है जो मानव विकास के आय से संबंध रखता है। इस उपागम में यह माना जाता है कि यदि किसी व्यक्ति की आय अधिक है तो उसका विकास उच्च होगा और यदि किसी व्यक्ति की आय निम्न है तो उसका विकास भी निम्न होगा।

घ. **कल्याण उपागम** - इस उपागम के तहत मानव कल्याणकारी कार्यों जैसे -शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा और सुख साधनों पर अधिकतम खर्च करके मानव विकास के स्तरो में वृद्धि करने पर बल दिया जाता है जिससे लोगों को अधिक से अधिक लाभ प्राप्त हो। अतः इसमें लोग केवल निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के रूप में होते हैं अर्थात व्यक्ति को सभी विकासात्मक गतिविधियों के लक्ष्य के रूप में देखा जाता है।

Jharkhandlab.com

अध्याय - 5 प्राथमिक क्रियाएँ
PRIMARY ACTIVITIES

पाठ के मुख्य बिंदु

- **आर्थिक क्रियाएँ** : मानव अपनी आजीविका चलाने एवं आय प्राप्त करने के लिए जिन कार्यों को करता है, उनको आर्थिक क्रियाओं के अंतर्गत सम्मिलत किया जाता है।
- मानव द्वारा किए जाने वाले आर्थिक क्रियाकलापों को चार वर्गों में बांटा जाता है:-
  1. प्राथमिक क्रियाकलाप।
  2. द्वितीयक क्रियाकलाप।
  3. तृतीयक क्रियाकलाप।
  4. चतुर्थक क्रियाकलाप।
- **प्राथमिक क्रियाएँ** : प्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण पर निर्भर होती है, क्योंकि ये क्रियाएँ पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों जैसे - भूमि, जल, वनस्पति, भवन निर्माण सामग्री तथा खनिजों के उपयोग से संबंधित होती है।
- प्राथमिक क्रियाकलाप के अंतर्गत वैसे व्यवसायों को सम्मिलित किया जाता है, जिनके द्वारा मानव प्राकृतिक संसाधनों का प्रत्यक्ष उपयोग करता है।
- प्राथमिक क्रियाकलाप के अंतर्गत आखेट, भोजन संग्रह, पशुचारण, मत्स्यपालन, वानिकी, कृषि एवं खनन जैसे कार्यों को सम्मिलित किया जाता है।
- **आर्थिक क्रियाएँ** : मानव की ऐसी गतिविधियाँ जो आय उत्पन्न करती हैं।
- **संग्रहण** : जीविका के लिए जंगली पौधों, भोजन, मछलियों, जड़ी-बूटियों आदि का संग्रह।
- **पशु चारण** : दूध तथा मांस आदि के लिए जानवरों को पालना।
- **चलवासी पशु चारण** : यह एक जीविका क्रिया है, जो पशुपालन पर निर्भर होती है। चलवासी पशुपालक अपने पशुओं के चारे तथा जल की तलाश में प्रवास करते रहते हैं। इनको खानाबदोश भी कहा जाता है।
- **ऋतु प्रवास** : ऋतु परिवर्तन के अनुसार, पशुओं के साथ पशुचारक एक स्थान को छोड़कर किसी दूसरे स्थान पर चले जाते हैं। यह गतिविधि ऋतु प्रवास कहलाती है। सर्दियों में ये मैदानों की ओर तथा गर्मियों में पर्वतों की ओर प्रवास करते हैं।
- **वाणिज्य पशुधन पालन** : यह वैज्ञानिक रूप से तथा एक सुसंगठित तरीके से पशुओं को पालना है। इसमें चारे की पौष्टिक फसलें उगाई जाती हैं तथा पशुधन के जननिक सुधार पर अधिक बल दिया जाता है।
- **कृषि** : भूमि जोतने तथा फसलों को उगाने एवं पशुधन के पालन-पोषण का विज्ञान ही, कृषि कहलाता है।
- **निर्वाह कृषि** : एक ऐसी कृषि प्रणाली जहाँ फसलें केवल स्व-उपभोग के लिए या विनिमय हेतु सामाजिक तंत्र के अंदर परिचालन के लिए उत्पन्न की जाती है।
- **डेयरी कृषि** : यांत्रिक तथा वैज्ञानिक तरीकों से दुधारू पशुओं का पालन करना यह शीतोष्ण घास के मैदान में अधिक प्रचलित है।
- **ट्रक कृषि** : यह शहरी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए फलों तथा सब्जियों की खेती है और इन फलों और सब्जियों का ग्रामीण से शहरी क्षेत्र में मुख्यतः ट्रकों द्वारा परिवहन किया जाता है।
- **सहकारी कृषि** : एक प्रकार की कृषि जिसमें किसानों का एक समूह अपनी कृषि से अधिक दक्षता व लाभ कमाने के लिए स्वेच्छा से एक सहकारी संस्था बनाकर कृषि कार्य संपन्न करता है।
- **खनन** : भूगर्भ से व्यवसायिक रूप से मूल्यवान खनिजों के निकालने से संबंधित एक आर्थिक गतिविधि।
- **स्थानांतरणशील कृषि** : यह कृषि की कर्तन एवं दहन विधि है। इसमें वन क्षेत्र के एक भाग से वृक्ष गिराकर अथवा काटकर तथा तनों व शाखाओं को जलाकर उस भाग को साफ किया जाता है। भूमि के एक भाग पर दो से तीन वर्षों तक फसल उगाई जाती है और फिर भूमि को पुनः उर्वरता प्राप्त करने के लिए छोड़ दिया जाता है।
- **सघन कृषि** : सघन कृषि का आशय बड़े भू-क्षेत्रों पर भूमि प्रयोग के ऋतु संबंधी प्रतिमानों से है। अनुपूरक ऊर्जा उत्पादों का प्रयोग करते हुए, एक ही क्षेत्र की आवर्ती कृषि, इस कृषि की विशेषता है।
- **रोपण कृषि** : यह फैक्ट्री उत्पाद से मिलती जुलती एक बड़े पैमाने वाली एक फसली कृषि है। क्षेत्र का विस्तृत आकार, अधिक पूँजी निवेश तथा खेती के लिए आधुनिक व वैज्ञानिक तकनीकों का प्रयोग, रोपण कृषि की विशेषता है। इस प्रकार की कृषि में चाय, कॉफी, रबड़, गन्ना, कोको आदि उगाए जाते हैं।
- **मिश्रित कृषि** : एक प्रकार की कृषि, जिसमें फसल उत्पादन तथा पशुपालन दोनों को समान महत्त्व दिया जाता है। इस प्रकार की कृषि, अत्यधिक विकसित देशों में पाई जाती है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्न में से कौन सी कृषि के प्रकार का विकास यूरोपीय औपनिवेशिक समूह द्वारा किया गया?

(क) कोलखहोज (ख) अंगूरोत्पादन
(ग) मिश्रित कृषि (घ) रोपण कृषि

2. निम्न में से कौन रोपण फसल नहीं है?

(क) कॉफी (ख) गन्ना
(ग) गेहूं (घ) रबर

3. निम्न देशों में से किस देश में सरकारी कृषि का सफल परीक्षण किया गया?

(क) रूस। (ख) डेनमार्क।
(ग) भारत। (घ) नीदरलैंड।

Jharkhandlab.com

4. **निम्न प्रदेशों में से किसमें विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि नहीं की जाती है?**
(क) अमेरिका एवं कनाडा के प्रेयरी क्षेत्र।
(ख) अर्जेंटीना के पंपास क्षेत्र।
(ग) यूरोपीय स्टेपीज क्षेत्र।
(घ) अमेजन बेसिन।

5. **फूलों की कृषि क्या कहलाती है?**
(क) ट्रक फार्मिंग (ख) कारखाना कृषि
(ग) मिश्रित कृषि (घ) पुष्पोत्पादन

6. **निम्न में से किस प्रकार की कृषि में खट्टे रसदार फलों की कृषि की जाती है?**
(क) बाजारी सब्जी कृषि (ख) भूमध्यसागरीय कृषि
(ग) रोपण कृषि (घ) सहकारी कृषि

7. **निम्न कृषि के प्रकारों में से कौन सा प्रकार कर्तन दहन कृषि का है?**
(क) विस्तृत जीवन निर्वाह कृषि
(ख) आदिकालीन निर्वाहक कृषि
(ग) विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि
(घ) मिश्रित कृषि

8. **निम्न में से कौन-सी एकल कृषि नहीं है?**
(क) डेयरी कृषि (ख) मिश्रित कृषि
(ग) रोपण कृषि (घ) वाणिज्य अनाज कृषि

9. **खनन की कितनी विधियां है?**
(क) दो विधियां (ख) तीन विधियां
(ग) चार विधियां (घ) पांच विधियां

10. **सामूहिक कृषि को कालखहोज नाम कहां दिया गया।**
(क) नीदरलैंड में (ख) कनाडा में
(ग) जर्मनी में (घ) सोवियत संघ में

11. **सहकारी कृषि को सर्वाधिक सफलता किस देश में मिली है?**
(क) डेनमार्क (ख) नीदरलैंड
(ग) बेल्जियम (घ) स्वीडन

12. **भूमध्यसागरीय कृषि में उगाई जाने वाली फसल है?**
(क) अंगूर (ख) जैतून
(ग) अंजीर (घ) उपरोक्त सभी

13. **रोपण कृषि में उगाई जाने वाली प्रमुख फसल है:-**
(क) चाय (ख) रबड़
(ग) गन्ना (घ) उपरोक्त सभी

14. **मलेशिया एवं इंडोनेशिया में स्थानांतरित कृषि का स्थानीय नाम क्या है?**
(क) झूमिंग (ख) लदांग
(ग) मिल्पा (घ) इनमें से कोई नही

15. **हॉर्टिकल्चर किससे संबंधित है ?**
(क) फूल से (ख) दाल से
(ग) अन्न से (घ) फल व सब्जी से

16. **ब्राजील में कॉफी बागान को क्या कहा जाता है?**
(क) एजेंडा (ख) लदांग
(ग) मिल्पा (घ) फेजेण्डा

17. **निम्नलिखित में से कौन रोपण फसल है?**
(क) राई (ख) मक्का
(ग) गेहूं (घ) कोको

18. **संसार के किस भाग में कर्तन और दहन कृषि को झुर्मिंग के नाम से जाना जाता है?**
(क) पूर्वी इंडोनेशिया (ख) जापान
(ग) मध्य अमेरिका (घ) भारत के **उत्तर** पूर्वी राज्य

19 **निम्नलिखित में से प्राथमिक क्रियाकलाप कौन सा है?**
(क) खेती (ख) व्यापार
(ग) बुनाई (घ) उद्योग

20. **रबड़ किस प्रकार की कृषि की उपज है?**
(क) रोपण कृषि (ख) भूमध्यसागरीय कृषि
(ग) मिश्रित कृषि (घ) गहन निर्वाह कृषि

21. **बुशमैन कहां के निवासी हैं?**
(क) कांगो (ख) न्यू गिनी
(ग) इक्वेडोर (घ) **उत्तर**ी कालाहारी

उत्तर - 1. (घ) 2. (ग) 3. (ख) 4. (घ) 5. (घ) 6. (ख) 7. (ख) 8. (ख) 9. (क) 10. (घ) 11. (क) 12. (घ) 13. (घ) 14. (ख) 15. (घ) 16. (घ) 17. (घ) 18. (घ) 19. (क) 20. (क) 21. (घ) ।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **आखेट से आप क्या समझते हैं?**
उत्तर: परंपरागत शैली से अर्थात पत्थर तथा लकड़ी से निर्मित औजारों एवं तीरों का उपयोग कर जंगली पशुओं तथा मछलियों का शिकार करना।

2. **संग्रहण क्या है?**
उत्तर: प्राचीन काल में मनुष्य द्वारा अपने भोजन, वस्त्र, सुरक्षा और आवश्यकताओं के लिए वस्तुओं का संग्रह करना।

3. **पशुचारण किसे कहते हैं?**
उत्तर: भौगोलिक परिवेश में उपलब्ध उपयोगी पशुओं का अपने भरण-पोषण हेतु पालन करना पशुचारण कहलाता है।

4. **कुत्तों एवं रेनडियर का उपयोग बोझा ढोने वाले पशुओं के रूप में किस क्षेत्र में किया जाता है?**
उत्तर: आर्कटिक और उप ध्रुवीय क्षेत्रों में।

5. **चलवासी पशुचारण से आप क्या समझते हैं?**
उत्तर : चलवासी पशुचारण में लोगों को अपने पशुओं के लिए चारागाह की तलाश में बार-बार एक स्थान से दूसरे स्थान पर अपने निवास को स्थानांतरित करना पड़ता है।

6. **रोपण कृषि की शुरुआत किन लोगों के द्वारा की गई?**
उत्तर: यूरोपीय लोगों के द्वारा।

7. **पुष्प उत्पादन में विशिष्टीकरण रखने वाले यूरोपीय देश का नाम बताएं?**
उत्तर: नीदरलैंड यहां विशेष रूप से ट्यूलिप की कृषि की जाती है।

8. **कौन से देश में व्यवहारिक रूप से प्रत्येक किसान सहकारी समिति का सदस्य है?**
उत्तर: डेनमार्क।

9. **वाणिज्य पशुधन पालन क्या है?**
उत्तर: विस्तृत घास भूमि पर आधुनिक वैज्ञानिक तरीके से किया जाने वाला व्यवस्थित एवं पूंजी प्रधान व्यवसाय है।

10. **भारत के उत्तर पूर्वी स्थानांतरित कृषि को किस नाम से जाना जाता है?**
उत्तर: झुमिंग।

Jharkhandlab.com

11. **मध्य अमेरिका एवं मेक्सिको में स्थानांतरित कृषि को क्या कहते हैं?**

उत्तर: मिल्पा।

12. **ट्रक फार्मिंग क्या है?**

उत्तर: नगरों के आसपास सब्जियों की खेती करना ट्रक फार्मिंग कहलाता है क्योंकि सब्जियों को फार्म से बाजार तक ले जाने में ट्रक की सहायता ली जाती है, एवं एक ही रात सब्जियों को ट्रक की सहायता से बाजार तक पहुंचाया जाता है।

13. **खनन से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर: भूगर्भ से प्राकृतिक अवस्था में स्थित खनिजों को खुदाई करके प्राप्त करने की प्रक्रिया खनन कहलाती है।

14. **सहकारी कृषि क्या है?**

उत्तर: किसानों का एक समूह कृषि से अधिक लाभ कमाने के लिए स्वेच्छा से एक सहकारी संस्था बनाकर कृषि कार्य करते हैं, इसे सहकारी कृषि कहते हैं।

15. **बागवानी अथवा उद्यान कृषि क्या है?**

उत्तर: खेतों में फसल उगाने की तुलना में प्रायः छोटे-छोटे भूखंडों पर सब्जियों और फलों को उगाना ही बागवानी कृषि कहलाता है।

16. **मलेशिया में स्थानांतरित कृषि को क्या कहा जाता है?**

उत्तर: लदांग।

17. **गन्ने की खेती के लिए कौन सा जलवायु क्षेत्र महत्वपूर्ण है?**

उत्तर: उष्णकटिबंधीय क्षेत्र।

17. **'लाल कॉलर श्रमिक' से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर: प्राथमिक क्रियाकलाप में सम्मिलित लोग, जिनका कार्यक्षेत्र घर से बाहर होता है। लाल श्रमिक कहलाते हैं। जैसे- कृषक, दैनिक, मजदूर।

18. **पशुपालन को कितने वर्गों में बांटा गया है?**

उत्तर: पशुपालन को दो वर्गों में बांटा गया है, चलवासी पशुपालन एवं वाणिज्य पशुधन पशुपालन।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **स्थानांतरी कृषि का भविष्य अच्छा नहीं है। विवेचना कीजिए।**

उत्तर: स्थानांतरित कृषि के अंतर्गत वनों को काटकर तथा जलाकर कृषि भूमि तैयार की जाती है, जब एक स्थान की कृषि भूमि की उर्वरा शक्ति समाप्त हो जाती है तो पुनः दूसरे स्थान पर वनों को काटकर जलाया जाता है और कृषि भूमि तैयार की जाती है। इस कृषि पद्धति के कारण वन भूमि में लगातार कमी आती है, अतः जैव विविधता में कमी आती है। मृदा अपरदन में वृद्धि होती है, वर्षा में कमी आती है, तथा तापमान वृद्धि के साथ-साथ पर्यावरण अवनयन जैसी समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं अतः स्थानांतरित कृषि भविष्य के लिए अच्छा नहीं माना जाता है।

2. **बाजारीय सब्जी कृषि नगरीय क्षेत्रों के समीप ही क्यों की जाती है?**

उत्तर: बाजारीय सब्जी कृषि, नगरीय क्षेत्रों के आसपास अथवा समीपवर्ती क्षेत्रों में की जाती है क्योंकि नगरीय क्षेत्रों में उच्च आय वर्ग के लोग रहते हैं। यहां ताजी सब्जी और फलों की भारी मांग रहती है। शहरी क्षेत्र यातायात के साधनों से जुड़े होते हैं अतः आसानी से प्रतिदिन सब्जी और फलों को कम समय में उपभोक्ताओं तक भेजा जा सकता है ताकि किसान अपने उत्पाद की उच्च कीमत वसूल कर सके।

3. **विस्तृत पैमाने पर डेयरी कृषि का विकास यातायात के संसाधनों एवं प्रशीतकों के विकास के बाद ही क्यों संभव हो सका है?**

उत्तर- डेरी उत्पाद जैसे दुग्ध व इससे बने उत्पाद शीघ्र ही खराब होने वाले होते है और इन्हें शीघ्रता से शहरों तथा औद्योगिक क्षेत्रों में पहुंचाना आवश्यक होता है। इसके लिए यातायात के साधनों का विकास तथा प्रशीतकों का होना आवश्यक है। प्रशीतकों का उपयोग करके विभिन्न डेयरी उत्पादों को अधिक समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

4. **ऋतु प्रवास किसे कहते हैं?**

उत्तर: नए चारागाहों की खोज में चलवासी पशुचारक समतल भागों एवं पर्वतीय क्षेत्रों में लंबी दूरियाँ तय करते हैं। गर्मियों में मैदानी भाग से पर्वतीय चरागाह की ओर एवं शीत ऋतु में पर्वतीय भाग से मैदानी चरागाहों की ओर प्रवास करते हैं। इस गतिविधि को ऋतुप्रवास कहते हैं। जैसे मध्य एशिया के खिरगीज, टुंड्रा प्रदेश के लैप्स, सेमोयड्स तथा एस्किमो एवं भारत के हिमालय पर्वतीय क्षेत्र के गुर्जर, गद्दी, बकरवाल तथा भूटिया जनजाति के पशुचारक ऋतु प्रवास करते हैं।

5. **मिश्रित कृषि की विशेषताएं बताइए एवं इसके प्रमुख क्षेत्रों के नाम लिखिए।**

उत्तर: मिश्रित कृषि में फसल उत्पादन के साथ-साथ पशुपालन भी किया जाता है। फसलों के साथ-साथ पशु जैसे मवेशी, भेड़, सुअर, कुक्कुट आदि आय के प्रमुख स्रोत है। मिश्रित कृषि में पशुओं के चारे के लिए मुख्य रूप से फसलों को उगाया जाता है। इस कृषि में खेतों का आकार मध्यम होता है। इसमें बोई जाने वाली अन्य फसलें गेहूँ, जौ, राई, जई, मक्का, कंदमूल प्रमुख है। शस्यावर्तन एवं अंतः फसली कृषि मृदा की उर्वरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मिश्रित कृषि विश्व के अत्यधिक विकसित भागों में की जाती है, जैसे उत्तरी पश्चिमी यूरोप, उत्तरी अमेरिका का पूर्वी भाग, यूरेशिया के कुछ भाग एवं दक्षिणी महाद्वीपों के समशीतोष्ण अंक्षाश वाले भाग।

6. **आदिमकालीन निर्वाह कृषि की विशेषताएँ बताइए।**

उत्तर: आदिमकालीन निर्वाह कृषि के अंतर्गत कृषक अपने व अपने परिवार के भरण पोषण के लिए उत्पादन करता है। इसमें फसलों के उत्पादन बिक्री के लिए नहीं होते। यह कृषि का प्राचीनतम रूप है, जिसे स्थानांतरी कृषि भी कहते हैं, जिसमें खेत स्थाई नहीं होते। खेतों के आकार छोटे-छोटे होते हैं। इस कृषि की पद्धति में किसान एक क्षेत्र के जंगल या वनस्पतियों को काटकर या जलाकर साफ करता है और खेती कार्य प्रारंभ करता है परंतु खेत का उपजाऊपन समाप्त होने पर उस स्थान को छोड़कर कृषि भूमि तैयार की जाती है। कृषि हेतु औजार पारम्परिक होते हैं, जैसे लकड़ी, कुदाली एवं फावड़े। आदिम कालीन निर्वाह कृषि के मुख्य उष्णकटिबंधीय क्षेत्र जहाँ आदिम जाति के लोग यह कृषि करते हैं:-

(क) अफ्रीका

(ख) उष्णकटिबंधीय दक्षिण व मध्य अमेरिका दक्षिण पूर्वी एशिया।

7. **भूमध्य सागरीय कृषि की विशेषताएँ बताइए।**

उत्तर: यह कृषि भूमध्यसागरीय जलवायु वाले प्रदेशों में अधिक की जाती है। भूमध्यसागरीय कृषि विशिष्ट प्रकार की कृषि है, जिसमें खट्टे फलों के उत्पादन पर विशेष बल दिया जाता है। भूमध्यसागरीय क्षेत्रों में शुष्क कृषि भी की जाती है एवं गर्मी के महीनों में अंजीर और जैतून पैदा होते हैं। इस क्षेत्र के कई देशों में अच्छे किस्म के अंगूरों से उच्च गुणवत्ता वाली मदिरा (शराब) का उत्पादन किया जाता है। शीत ऋतु में जब यूरोप एवं संयुक्त राज्य अमेरिका में फलों एवं सब्जियों की माँग होती है, तब भूमध्यसागरीय क्षेत्र से इसकी आपूर्ति को जाती है।

jharkhandlab.com

8. सहकारी कृषि क्या है?

उत्तर: जब कृषकों का एक समूह अपनी कृषि से अधिक लाभ कमाने के लिए स्वेच्छा से एक सहकारी संस्था बनाकर कृषि कार्य करते हैं तो उसे सहकारी कृषि कहते हैं। इसमें व्यक्तिगत फार्म या खेतों के रहते हुए सहकारी रूप में कृषि की जाती है। सहकारी संस्था के द्वारा कृषक को सभी रूप में सहायता प्राप्त होती है। यह सहायता कृषि कार्य में आवश्यक सामग्री की खरीद करने, कृषि उत्पाद को उचित मूल्य पर बेचने एवं सस्ती दरों पर प्रसंस्कृत साधनों को जुटाने के लिए होती है। सहकारी कृषि का प्रारंभ एक शताब्दी पूर्व प्रारंभ हुआ था एवं पश्चिमी यूरोप के डेनमार्क, नीदरलैंड, बेल्जियम, स्वीडन तथा इटली में यह सफलतापूर्वक चला। सबसे अधिक सफलता इसे डेनमार्क में मिली, जहाँ प्रत्येक कृषक इसका सदस्य है।

9. चलवासी पशुचारण से आपका क्या तात्पर्य है?

उत्तर: चलवासी पशुचारण एक प्राचीन जीवन-निर्वाह व्यवसाय है, जिसमें पशुचारक अपने भोजन, वस्त्र, आवास, एवं यातायात के लिए पशुओं पर ही निर्भर रहता है। वे अपने पालतू पशुओं के साथ पानी एवं चरागाह की उपलब्धता एवं गुणवत्ता हेतु एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित होते रहते हैं। इन पशुचारक वर्गों के अपने-अपने निश्चित चरागाह क्षेत्र होते हैं। वर्तमान में चलवासी पशुचारको की संख्या घट रही है। उत्तरी अफ्रीका, यूरोप, एशिया के टुंड्रा प्रदेश, दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका आदि प्रमुख क्षेत्र हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. चलवासी पशुचारण और वाणिज्य पशुधन पालन में अंतर बताइए।

उत्तर: चलवासी पशुचारण एवं वाणिज्य पशुधन पालन में निम्नलिखित अंतर है:-

चलवासी पशुचारण	वाणिज्य पशुधन पालन
1. अर्थ : चलवासी पशुचारण में पशुपालक समुदाय चारे एवं जल की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं।	1. जबकि वाणिज्य पशुधन पालन एक निश्चित स्थान पर विस्तृत फार्म पर किया जाता है और उनके चारे की व्यवस्था स्थानीय रूप से की जाती है।
2. पूंजी : इसमें अधिक पूँजी की आवश्यकता नहीं है। पशुओं को प्राकृतिक परिवेश में पाला जाता है।	2. जबकि चलवासी पशुचारण की अपेक्षा वाणिज्य पशुधन पालन - अधिक व्यवस्थित एवं पूँजी प्रधान है।
3. पशुओं की देखभाल : पशु प्राकृतिक रूप से बड़े होते हैं और उनकी विशेष देखभाल की आवश्यकता नहीं होती है।	3. वाणिज्य पशुधन पालन में पशुओं की देखभाल वैज्ञानिक तरीके से किया जाता है, अर्थात पशुपालन के लिए विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है।
4. पशुओं के प्रकार : चलवासी पशुपालक एक ही समय में विभिन्न - प्रकार के पशु रखते हैं। जैसे : भेड़-बकरी, ऊंट आदि।	4. पशुओं के प्रकार- इसमें उसी विशेष पशु को पाला जाता है। जिसके लिए वह क्षेत्र अत्यधिक अनुकूल होता है।
5. पशुओं के प्रजनन, जनांकिकी सुधार, बीमारियों पर नियंत्रण तथा स्वास्थ्य पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है।	5. जबकि इसमें पशुओं के प्रजनन, जनांकिकी सुधार, बीमारियों पर नियंत्रण तथा स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
6. क्षेत्र : यह पुरानी दुनिया तक ही सीमित है। इसके तीन प्रमुख क्षेत्र हैं :- **उत्तरी** अफ्रीका के एटलांटिक तट से अरब प्रायद्वीप होते हुए मंगोलिया एवं मध्य चीन, यूरोप व एशिया के टुंड्रा प्रदेश, दक्षिण पश्चिम अफ्रीका एवं मेडागास्कर द्वीप।	6. क्षेत्र: यह मुख्यतः नई दुनिया में प्रचलित है। विश्व में न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया, अर्जेंटाइना, युरुग्वे, संयुक्त राज्य अमेरिका में वाणिज्य पशुधन पालन किया जाता है।

2. रोपण कृषि की मुख्य विशेषताएं बताएँ एवं विभिन्न देशों में उगायी जाने वाली कुछ प्रमुख रोपण फसलों के नाम बताएँ।

उत्तर: रोपण कृषि (Plantation Agriculture) विश्व के अनेक भागों में यूरोपियन द्वारा स्थापित किए गए उपनिवेशों में प्रारम्भ किया गया। यूरोपियन द्वारा विशेष रूप से अपने अधीन उष्णकटिबन्धीय क्षेत्रों में चाय, कॉफी, कोको, कपास, गन्ना, केला तथा अनानास के बागान लगाकर सफलतापूर्वक कृषि की गई। वर्तमान में इन बागानों से विदेशी स्वामित्व लगभग समाप्त हो चुका है तथा अधिकांश बागान स्वामित्व देशों की सरकार या वहाँ के नागरिकों के आधिपत्य में है।

रोपण कृषि की विशेषताएँ-

(क) यह एक फसली व्यापारिक कृषि है जिसमें पौधे को एक बार रोपने के बाद कई वर्षों तक लगातार उत्पादन प्राप्त होता रहता है।

(ख) कृषि क्षेत्र अथवा बागानों का आकार बड़ा होता है।

(ग) इस कृषि में तकनीकी आधार, अधिक पूँजी निवेश, उच्च स्तरीय प्रबन्धन एवं वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाता है।

(घ) बागानों को कारखानों तथा बाजार से जोड़ने के लिये सस्ते परिवहन का प्रयोग किया जाता है।

(ड.) सस्ता अकुशल श्रम स्थानीय लोगों से प्राप्त किया जाता है।

इस कृषि के विकास के लिये यूरोपीय तथा अमेरिकी लोगों ने विशेष योगदान किया था।

मुख्य फसल

(क) फ्रांसीसियों ने पश्चिमी अफ्रीका में कॉफी एवं कोको की पौधा लगायी।

(ख) इंडोनेशिया में डच लोगों ने गन्ने की शुरुआत की।

(ग) स्पेन तथा अमेरिका के निवासियों ने फिलीपीन्स में नारियल तथा गन्ने के बागान लगाये।

(घ) यूरोपियन लोगों द्वारा ब्राजील में कॉफी बागान स्थापित किए हैं। ब्राजील के इन कॉफी बागानों को फजेन्डा कहा जाता है।

3. खनन किसे कहते हैं, खनन को प्रभावित करने वाले दो कारकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर: भूपर्पटी से मूल्यवान धात्विक और अधात्विक खनिजों को निकालने की प्रक्रिया को खनन कहते हैं। खनन की प्रक्रिया मानवीय सभ्यता की आधार मानी जाती है। प्रारंभिक अवस्था में खनिजों का प्रयोग सीमित था इसके बाद धीरे-धीरे मानव ने धातु का प्रयोग करना प्रारंभ किया। मानव विकास के इतिहास में खनिजों की खोज की कई अवस्थाएं हैं, जैसे ताम्र युग, कास्य युग एवं लौह युग। खनन का वास्तविक विकास औद्योगिक क्रांति के पश्चात ही संभव हुआ एवं वर्तमान में इसका महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है।

खनन कार्य को प्रभावित करने वाले कारक :-

(क) **भौतिक कारक -** इनमें खनिज पदार्थों के आकार, श्रेणी एवं उपस्थिति की अवस्था को सम्मिलित किया जाता है। खनिजों की अधिक गहराई, खनिजों में धातु की मात्रा का कम प्रतिशत तथा उपभोग के स्थानों से अधिक दूरी, खनिजों के खनन के व्यय को बढा देती है।

(ख) **आर्थिक कारक -** इसमें खनिजों की मांग, विद्यमान तकनीकी ज्ञान एवं उसका उपयोग, पूंजी की उपलब्धता, यातायात व श्रम पर होने वाला व्यय आदि सम्मिलित किया जाता है।

Jharkhandlab.com

4. मिश्रित कृषि की तुलना डेरी कृषि से तीन बिंदुओं में कीजिए।

उत्तर- मिश्रित कृषि की डेरी कृषि से तुलना निम्न प्रकार से की जा सकती है:-

मिश्रित कृषि	डेयरी कृषि
(1) यह गहन प्रकार की कृषि है, इसमें किसान पूरे वर्ष फसल उत्पादन और पशुपालन में व्यस्त रहता है।	(i) यह बहुत ही उन्नत प्रकार की कृषि है, इसमें दुधारू पशुओं को पाला जाता है।
(ii) मिश्रित कृषि में अत्याधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग होता है। किसान रासायनिक उर्वरकों, संकर बीजों और सिंचाई का विवेकपूर्ण और सक्षम उपयोग करता है। आधुनिक मशीनें और वैज्ञानिक फसल चक्र इसकी अन्य विशेषता है।	(ii) पशुओं के लिए रहने के लिए शेड, घास अथवा चारा संचित करने के भंडार तथा दुग्ध उत्पादन हेतु आधुनिक यंत्रों के प्रयोग के लिए अधिक पूंजी की आवश्यकता होती है।
(iii) इस कृषि में किसान सुरक्षित रहता है। मिश्रित कृषि के अधिकतम उत्पादन स्थानीय बाजारों में ही खप जाते हैं।	(iii) यह मुख्यतः नगरों एवं औद्योगिक केंद्रों के इर्द-गिर्द की जाती है क्योंकि इन क्षेत्रों में दूध तथा दुग्ध उत्पादों के लिए उचित बाज़ार उपलब्ध होता है।
(iv) इसमें खाद्य चारे की फसलें, गेहूँ, मक्का, आलू, जई तथा शकरकंद आदि बोए जाते हैं।	(iv) डेरी कृषि, प्राकृतिक चरागाहों पर की जाती है। इसमें गेहूँ, जई, मक्का व अल्फा- अल्फा आदि फसलें उगाई जाती हैं।
(v) मिश्रित कृषि मुख्यतः संयुक्त राज्य अमेरिका, पश्चिमी यूरोपीय देश व रूस आदि में की जाती है।	(v) डेरी कृषि मुख्यतः संयुक्त राज्य अमरीका, सी०आई०एस०, नीदरलैंड, डेनमार्क, आस्ट्रेलिया के घास के मैदानों में की जाती है।
(vi) इस प्रकार की कृषि में भारी मात्रा में श्रम शक्ति की आवश्यकता होती है।	(Vi) इस प्रकार की खेती में वैज्ञानिक तकनीकों तथा भारी पूँजी निवेश की आवश्यकता होती है।

5. धरातलीय एवं भूमिगत खनन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: धरातल एवं भूमिगत खनन में निम्नलिखित अंतर हैं:-

धरातलीय खनन	भूमिगत खनन
1. धरातलीय खनन अपेक्षाकृत आसान, सुरक्षित और सस्ता होता है।	1. भूमिगत खनन बहुत जोखिमपूर्ण तथा असुरक्षित होता है।
2. इस खनन में सुरक्षात्मक उपायों एवं उपकरणों पर अतिरिक्त खर्च अपेक्षाकृत कम होता है।	2. सुरक्षात्मक उपायों व उपकरणों पर अत्यधिक खर्च होता है। इसमें दुर्घटनाओं की संभावना अधिक होती है।
3. खनिजो के भंडार धरातल के निकट ही कम गहराई पर होते है।	3. खानें काफी गहराई पर होती है। इन खानों में वेधन मशीन, माल ढोने वाली गाडियों तथा वायु संचार प्रणाली की आवश्यकता होती है।

6. ट्रक कृषि से आप क्या समझते हैं ? इसकी मुख्य विशेषताएँ स्पष्ट करें।

उत्तर- नगरीय बाजारों के लिए उगाई जाने वाली सब्जियों की विशिष्ट कृषि, ट्रक कृषि कहलाती है और इसमें यातायात शामिल होता है। नगरीय बाजार से ट्रक फार्मों की दूरियाँ, ट्रक द्वारा रातभर में तय की जाती है। ट्रक कृषि का शहरीकरण से गहरा संबंध है। शहरी क्षेत्रों की भारी जनसंख्या, सब्जियों की भारी माँग निर्मित करती है। ट्रक कृषि, उत्तर-पश्चिमी यूरोप, ब्रिटेन, डेनमार्क, बेल्जियम, नीदरलैंड, जर्मनी तथा फ्रांस, संयुक्त राज्य अमरीका के उत्तर-पूर्वी भागों तथा भूमध्यसागरीय क्षेत्र के सघन जनसंख्या वाले औद्योगिक जिलों में काफी विकसित है। अपनी लंबी उत्पादन ऋतु के साथ, भारत ट्रक कृषि के लिए काफी उपयुक्त है।

ट्रक कृषि की मुख्य विशेषताएँ हैं :

- कृष्य खेत छोटे होते हैं।
- यह एक गहन कृषि है।
- बेहतर तथा तीव्र यातायात की सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं।
- इसमें बेहतर सिंचाई सुविधाओं की आवश्यकता होती है।
- खाद तथा रासायनिक उर्वरकों का भारी मात्रा में प्रयोग किया जाता है।
- उच्च उत्पादन देने वाले बीजों का प्रयोग होता है।
- कृषि का अधिकतम कार्य, मानव श्रम द्वारा किया जाता है।
- फसलों को बीमारियों से बचाने के लिए कीटनाशकों का प्रयोग किया जाता है।
- बाजार माँगों को पूरा करने के लिए किसानों ने ट्रक कृषि को अपना लिया है।

7. स्थानांतरित कृषि तथा स्थाई कृषि के बीच अंतर स्पष्ट करें।

उत्तर- स्थानांतरणशील कृषि तथा स्थायी कृषि के बीच अंतर :

स्थानांतरणशील कृषि	स्थायी कृषि
(i) स्थानांतरणशील कृषि, कृषि के प्राचीनतम रूपों में से एक है।	(I) स्थायी कृषि प्राचीन / आदिकालीन निर्वाह कृषि का एक विकसित रूप है।
(ii) खेती योग्य भूमि, प्रकृति में अस्थाई होती हैं। इसमें पेड़ों को काटकर तथा तनों व जड़ों को जलाकर जंगलों को साफ करना शामिल होता है।	(ii) इसमें खेती योग्य भूमि स्थायी होती है तथा यह एक स्थान पर व्यवस्थित किसान द्वारा की जाती है।
(iii) यह कृषि जनसंख्या के एक बड़े भाग की आवश्यकताओं की कृषि है। इसमें पशुधन पालन नहीं होता।	(iii) यह कृषि जनसंख्या के एक बड़े भाग की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है तथा इसमें दुधारू पशुओं का पालन होता है।
(iv) इस प्रकार की खेती उष्णकटिबंधीय जंगलों में रहने वाली जातियों के द्वारा किया जाता है तथा इसे विभिन्न स्थानीय नामों, जैसे- लाडांग, झूम, मिल्पा, रोका तथा कोनुको आदि नाम से जाना जाता है।	(iv) स्थायी कृषि अफ्रीका मध्य अमेरिका तथा दक्षिण पूर्व एशिया के प्राचीन कृषक द्वारा की जाती है।

8. विस्तृत कृषि क्या है ? विस्तृत कृषि की मुख्य विशेषताओं की विवेचना कीजिए तथा मध्य आक्षांशों में वाणिज्यिक अनाज कृषि भी स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- विस्तृत कृषि मुख्य रूप से देश के कम जनसंख्या वाले भागों में की जाती है, जहाँ पर भूमि का अधिक क्षेत्र कृषि हेतु उपलब्ध होता है तथा खेत स्वचालित रूप से क्षेत्र में अधिक होते हैं। अतः इस प्रकार की कृषि विस्तृत कृषि तथा मशीनीकृत कृषि कही जाती है, क्योंकि कृषि संबंधी सभी गतिविधियाँ मुख्य रूप से मशीनों द्वारा की जाती हैं। यह मुख्य रूप से उन देशों में की जाती है, जिन देशों में कृषि हेतु अधिक भूमि उपलब्ध होती है।

Jharkhandlab.com

विस्तृत कृषि के क्षेत्र : इस प्रकार की कृषि शीतोष्ण अक्षांशीय घास के मैदानों में की जाती है जैसे कि संयुक्त राज्य अमरीका की प्रेयरीज, यूरोप व एशिया की स्टेपीज, अर्जेंटीना के पम्पास, आस्ट्रेलिया के डाउन्स। इन मैदानों में गेहूँ की फसल भारी मात्रा में बोई जाती है, लेकिन कृषि भूमि के बड़े आकार के अनुसार, उत्पादन तुलनात्मक रूप से कम है।

विस्तृत कृषि की विशेषताएँ :

- कृषि उस स्थान के समतल मैदानों पर की जाती है, जहाँ खेतों का आकार बड़ा होता है।
- किसान आधुनिक वैज्ञानिक मशीनों का प्रयोग करते जैसे कि ट्रैक्टर, हारवेस्टर, थ्रेशर तथा लिफ्टिंग पंप आदि। आधिक्य खाद्य फसलों के संरक्षण के लिए बड़े गोदाम तथा एलिवेटर बनाए जाते हैं।
- प्रति हेक्टर औसत उत्पादन तुलनात्मक रूप से कम होता है, लेकिन कम जनसंख्या घनत्व के कारण प्रति व्यक्ति उत्पादन उच्च हो जाता है।
- कृषि, वाणिज्यिक उद्देश्य से की जाती है ताकि खाद्य फसलों को जल्द ही माँग क्षेत्र में भेजा जा सके।
- मशीनों का उच्च प्रयोग, मानव कार्य क्षमता/शक्ति को निरुत्साहित करता है
- प्रति हेक्टर उत्पादन को बढ़ाने के लिए रासायनिक उर्वरकों का अधिकतर प्रयोग किया जाता है।
- बाजार में उत्पादन की तीव्र पूर्ति के लिए, यातायात के साधन विकसित किए गए हैं। मध्य अक्षांशों में वाणिज्यिक अनाज कृषि मध्य-अक्षांशों के अधिकतर भागों में संयुक्त राज्य अमरीका, कनाडा, यूक्रेन, पश्चिमी यूरोप, अर्जेंटीना, दक्षिणी आस्ट्रेलिया में वाणिज्यिक स्तर पर गेहूँ के उत्पादन में विशेषज्ञता प्राप्त की गई है। कृषि संबंधी अधिकतर कार्य मशीनों द्वारा किए जाते हैं।

9. गहन निर्वाह कृषि की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर: गहन निर्वाह कृषि (Intensive Subsistence Agriculture) यह कृषि मुख्य रूप से एशिया के घनी जनसंख्या वाले देश भारत-पाकिस्तान, बांग्लादेश व जापान में की जाती है। यह कृषि मुख्यतः दो प्रकार की होती है-

(क) **<u>चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि -</u>** चावल सबसे महत्वपूर्ण फसल होता है। अधिक जनसंख्या घनत्व के कारण खेतों का आकार छोटा होता है एवं कृषि कार्य में कृषक का संपूर्ण परिवार लगा रहता है। भूमि का गहन उपयोग होता है। यंत्रों की अपेक्षा मानव श्रम का अधिक महत्त्व होता है। उर्वरता बनाए रखने के लिए पशुओं के गोबर की खाद एवं हरी खाद का उपयोग किया जाता है। इस कृषि में प्रति इकाई उत्पादन अधिक होता है, परंतु प्रति कृषक उत्पादन कम है।

(ख) **<u>चावल रहित गहन निर्वाह कृषि -</u>** चावल के स्थान पर गेहूं, सोयाबीन, जौ आदि फसलों का उत्पादन किया जाता है। गहन निर्वाह कृषि प्रमुख रूप से मानसूनी एशिया के उन भागों में की जाती है, जहाँ उच्चावचन, जलवायु, मिट्टी तथा अन्य भौगोलिक कारकों की भिन्नता के कारण चावल की कृषि सम्भव नहीं हो पाती।

10. चलवासी पशुचारण और वाणिज्यिक पशुधन पालन में अंतर कीजिए।

उत्तर: चलवासी पशुचारण और वाणिज्यिक पशुधन पालन में निम्नलिखित अंतर हैं:-

चलवासी पशुचारण	वाणिज्यिक पशुपालन
(i) चलवासी पशुचारण प्राकृतिक चारागाहों पर पशुओं के चरने का एक विस्तृत रूप है, जहाँ खानाबदोश जातियाँ पानी तथा चारे की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान तक विचरण करती है।	(i) वाणिज्यिक पशुधन पालन निर्यात द्वारा लाभ अर्जित करने के लिए वैज्ञानिक मार्गदर्शन के आधार पर स्थायी घास के मैदानों पर पशुओं को बड़े पैमाने पर पालना है।
(ii) चलवासी पशुचारणपालन का मुख्य उद्देश्य स्व-निर्वाह है।	(ii) पशुपालन का मुख्य उद्देश्य अधिक उत्पादों की बिक्री से लाभ अर्जित करना है
(iii) यह मुख्य रूप से कम जनसंख्या वाले क्षेत्रों तक सीमित है जहाँ आधिक्य भूमि उपलब्ध है।	(iii) यह कम जनसंख्या वाले क्षेत्रों में किया जाता है. जहाँ दुधारु पशुफार्म 15000 वर्ग किमी. से अधिक क्षेत्र में फैले होते हैं।
(iv) पशुचारण मध्य एशिया, अफ्रीका तथा दक्षिणी-पश्चिमी एशिया के अर्द्ध-शुष्क तथा शुष्क क्षेत्रों में किया जाता है।	(iv) वाणिज्यिक पशुपालन शीतोष्ण तथा उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में किया जाता है।
(v) खिरगिज, मासिया, फुलानि, बेडोइन्स प्रमुख चलवासी पशुचारण करने वाली जातियां हैं।	(v) यह चारण का वाणिज्यिक रूप है। आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड तथा अर्जेंटीना में दुधारू पशु ऊन, डेरी उत्पाद आदि के लिए पाले जाते हैं।

11. निर्वाह कृषि तथा वाणिज्यिक कृषि के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- निर्वाह कृषि तथा वाणिज्यिक कृषि में निम्नलिखित अंतर हैं

निर्वाह कृषि	वाणिज्यिक कृषि
(i) इस प्रकार की खेती कृषकों द्वारा अपने परिवार के निर्वाह मात्र के लिए की जाती है।	(i) वाणिज्यिक कृषि का मुख्य उद्देश्य बाजार में उत्पाद बेचना है।
(ii) फसल का विशिष्टीकरण संभव नहीं है।	(ii) फसल का विशिष्टीकरण मुख्य विशेषता है।
(iii) निर्वाह कृषि मुख्यत विकासशील देशों में की जाती है।	(iii) वाणिज्यिक कृषि विकसित देशों में की जाती है।
(iv) खेतों का आकार छोटा होता है।	(iv) खेतों का आकार बड़ा होता है।
(v) अधिकतर कृषीय कार्य मानव श्रम द्वारा किए जाते हैं।	(v) कृषि संबंधी सभी गतिविधियाँ मशीनों द्वारा की जाती है
(vi) निर्वाह कृषि मुख्य रूप से भारत, बांग्लादेश तथा पाकिस्तान जैसे विकासशील देशों में की जाती है।	(vi) वाणिज्यिक कृषि मुख्य रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा तथा आस्ट्रेलिया जैसे विकसित देशों में की जाती है।

Jharkhandlab.com

12. रोपण कृषि तथा उद्यान कृषि (बागवानी) के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए:-

उत्तर- रोपण कृषि तथा उद्यान कृषि में अंतरः-

रोपण कृषि	उद्यान कृषि
(i) चाय, कॉफी, कोको जैसी विशिष्ट वाणिज्यिक फसलों का उत्पादन, रोपण कृषि है।	(1) अच्छे उच्च उत्पादन वाले भिन्न बीजों कीटनाशकों आदि द्वारा भूमि के छोटे-से टुकड़े फलों, सब्जियों तथा फूलों आदि का उत्पादन उद्यान कृषि (बागवानी) कहलाती है।
(ii) इसमें खेतों का आकार बड़ा होता है।	(ii) इसमें खेतों का आकार छोटा होता है।
(iii) इस प्रकार की कृषि मुख्यतः ब्राजील, मलेशिया, इंडोनेशिया, श्रीलंका तथा साइबेरिया के कम जनसंख्या वाले क्षेत्रों में की जाती है।	(iii) इस प्रकार की कृषि मुख्य रूप से नीदरलैंड, भारत जार्जिया, इथोपिया तथा अर्मेनिया आदि में की जाती है।
(iv) इस प्रकार की कृषि में मशीनों तथा उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है।	(iv) इस प्रकार की कृषि में नई तकनीक तथा मशीनों का प्रयोग किया जाता है।
(v) इस प्रकार की कृषि यूरोपियों द्वारा शुरू की गई थी, किंतु अब यह स्थानीय सरकार के प्रबंधन के अंतर्गत आती है।	(v) इस प्रकार की कृषि मुख्य रूप से व्यापार और वाणिज्य के उद्देश्य से की जाती है, किंतु जल्दी खराब हो जाने की प्रकृति के कारण यह आस-पास की भूमियों में ही सीमित होती है।
(vi) रोपण फसलों की सार्वभौमिक बाजार में काफी माँग है।	(vi) उद्यान कृषि की फसलों की स्थानीय नगरीय बाजार में भारी माँग है।

13. मिश्रित कृषि की विशेषताएँ बताते हुये इसके प्रमुख क्षेत्रों के नाम लिखिए।

उत्तर: मिश्रित कृषि की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं -

(क) इस प्रकार की कृषि में फसल उत्पादन एवं पशुपालन दोनों को समान महत्व दिया जाता हैं। फसलों के साथ-साथ पशु जैसे मवेशी, भेड़, सुअर, कुक्कुट आय के प्रमुख स्रोत हैं।

(ख) चारें की फसलें मिश्रित कृषि के मुख्य घटक हैं।

(ग) इस कृषि में खेतों का आकार मध्यम होता है।

(घ) इसमें बोई जाने वाली अन्य फसलें गेहूँ, जौ, राई, जई, मक्का, कंदमूल प्रमुख है। शस्यावर्तन एवं अंतः फसली कृषि मृदा की उर्वरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

<u>प्रमुख क्षेत्र :</u> इस प्रकार की कृषि विश्व के अत्यधिक विकसित भागों में की जाती है, जैसे उत्तरी पश्चिमी यूरोप, उत्तरी अमेरिका का पूर्वी भाग, यूरेशिया के कुछ भाग एवं दक्षिणी महाद्वीपों के समशीतोष्ण अंक्षाश वाले भाग।

jharkhandjcert.com

अध्याय - 6 द्वितीयक क्रियाएँ SECONDARY ACTIVITIES

पाठ के मुख्य बिंदु

- विनिर्माण : कच्चे माल का मूल्यवान उत्पादों के रूप में क्रमबद्ध रूपांतरण, जिसकी विशेषता श्रम विभाजन तथा आधुनिक तकनीक का विस्तृत प्रयोग है।
- कुटीर उद्योग : स्व उपभोग के लिए, स्थानीय कच्चे माल की सहायता से वस्तुओं का निर्माण करने वाली विनिर्माण की सबसे छोटी इकाई होती है।
- छोटे पैमाने के उद्योग : वे उद्योग, जो प्रत्येक इकाई में कर्मचारियों की सापेक्षतः कम संख्या नियुक्त करते हैं तथा कम पूंजी निवेश करते हैं।
- बड़े पैमाने के उद्योग : वे उद्योग, जो प्रत्येक इकाई में श्रम शक्ति की बड़ी संख्या नियुक्त करते हैं तथा भारी पूँजी निवेश करते हैं।
- कृषि आधारित उद्योग : वे उद्योग, जिन्हें कच्चा माल कृषि क्षेत्र से प्राप्त होता है।
- निजी क्षेत्र के उद्योग : वैसे उद्योग होते हैं, जिनका स्वामित्व व्यक्तिगत निवेशकों के पास होता है। यह मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था तथा मिश्रित अर्थव्यवस्था में अधिक पाए जाते हैं।
- सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग : ये उद्योग होते हैं, जिनका स्वामित्व व प्रबंधन सरकार द्वारा होता है। सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग मुख्य रूप से समाजवादी तथा मिश्रित अर्थव्यवस्था में पाए जाते हैं।
- खनिज आधारित उद्योग : उद्योग, जो कच्चे माल के रूप में खनिज (धात्विक तथा गैर-धात्विक दोनों ही प्रकार के खनिज) का प्रयोग करते हैं।
- रसायन आधारित उद्योग : उद्योग, जो कच्चे माल के रूप में प्राकृतिक रासायनिक पदार्थो का प्रयोग करते हैं।
- द्वितीयक क्रियाएँ वे क्रियाएँ होती हैं जिनमें प्रौद्योगिकी की मदद से कच्चे माल को तैयार वस्तुओं में परिवर्तित किया जाता है।
- द्वितीयक क्रियाएँ अप्रत्यक्षतः प्रकृति से संबंधित होती हैं।
- कपास से कपड़े, गन्ने से चीनी, लौह अयस्क से स्टील तथा जानवरों से डेरी उत्पादों का निर्माण, द्वितीयक क्रियाओं के उदाहरण हैं।
- द्वितीयक क्रियाएँ जटिल होती हैं और प्रौद्योगिकी पर भारी पूँजी निवेश की आवश्यकता होती है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्न में से कौन-सा कथन असत्य है?

(क) हुगली के सहारे जूट के कारखाने सस्ती जल यातायात की सुविधा के कारण स्थापित हुए।

(ख) चीनी, सूती वस्त्र एवं वनस्पति तेल उद्योग स्वच्छंद उद्योग है।

(ग) खनिज तेल एवं जल विद्युत शक्ति के विकास ने उद्योगों की अवस्थिति कारक के रूप में कोयला शक्ति के महत्व को कम किया है।

(घ) पत्तन नगरों ने भारत में उद्योगों को आकर्षित किया है।

2. निम्न में से कौन-सी एक अर्थव्यवस्था में उत्पादन का स्वामित्व व्यक्तिगत होता है?

(क) पूंजीवादी (ख) मिश्रित

(ग) समाजवाद (घ) कोई भी नहीं

3. निम्न में से कौन-सा प्रकार का उद्योग अन्य उद्योगों के लिए कच्चे माल का उत्पादन करता है?

(क) कुटीर उद्योग (ख) छोटे पैमाने के उद्योग

(ग) आधारभूत उद्योग (घ) स्वच्छंद उद्योग

4. निम्न में से कौन-सा एक जोड़ा सही मेल खाता है?

(क) स्वचालित वाहन उद्योग ... लॉस एंजिल्स

(ख) पोत निर्माण उद्योग ... लूसाका

(ग) वायुयान निर्माण उद्योग ... फ़्लोरेंस

(घ) लौह-इस्पात उद्योग ... पिट्सबर्ग

5. निम्न में से कौन सा उपभोक्ता उद्योग है

(क) सीमेंट (ख) पेट्रोलियम

(ग) शक्कर (घ) लोहा इस्पात

6. निम्न में से कौन- सा लघु उद्योग है ?

(क) गलीचे बनाना (ख) सूती वस्त्र बनाना

(ग) चीनी बनाना (घ) रेल के इंजन बनाना

7. निम्न में से कौन सा कुटीर उद्योग नहीं है?

(क) दरिया बनाना (ख) चटाई बनाना

(ग) चीनी मिट्टी के बर्तन बनाना (घ) चीनी बनाना

8. मानचेस्टर किस उद्योग के लिए प्रसिद्ध है?

(क) सूती वस्त्र (ख) ऊनी वस्त्र

(ग) लोहा इस्पात (घ) कागज

9. निम्नलिखित में से कौन सा द्वितीयक क्रियाकलाप है?

(क) डॉक्टर (ख) शिक्षक

(ग) औजार बनाना (घ) कृषि

10. पेट्रोकेमिकल उद्योग में अग्रणी देश का नाम है?

(क) जापान (ख) संयुक्त राज्य अमेरिका

(ग) चीन (घ) भारत

jharkhandlab.com

11. **टोयोटा कंपनी किस देश की है?**

(क) ग्रेट ब्रिटेन (ख) जापान

(ग) जर्मनी (घ) फ्रांस

12. **जापान का डैट्रायट किसे कहा जाता है?**

(क) टोक्यो (ख) नगोया

(ग) नागासाकी (घ) ओसाका

उत्तर 1. (ख) 2. (क) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ख) 6. (क) 7. (घ) 8. (क) 9. (ग) 10. (ख) 11. (क) 12. (ख)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **विश्व के वृहद औद्योगिक प्रदेशों के दो समूह के नाम बताएं?**

उत्तर- विश्व के वृहद औद्योगिक प्रदेशों के दो समूह के नाम निम्नलिखित हैं-

1. यूनाइटेड किंगडम सहित पश्चिमी यूरोपीय औद्योगिक प्रदेश।

2. संयुक्त राज्य अमेरिका का **उत्तर** -पूर्वी औद्योगिक प्रदेश।

2. **आधारभूत उद्योग क्या है ?**

उत्तर - आधारभूत उद्योग के अन्य उद्योगों को अपने उत्पादों के द्वारा कच्चा माल प्राप्त कराते हैं। जैसे लोहा इस्पात उद्योग अन्य मशीनरी उद्योगों के लिए इस्पात रूपी कच्चा माल उपलब्ध कराता है। इसलिए लोहा इस्पात उद्योग आधारभूत उद्योग कहलाता है।

3. **स्वामित्व के आधार पर उधोगों वर्गीकरण कीजिए?**

उत्तर- स्वामित्व के आधार पर उद्योगों का वर्गीकरण तीन प्रकार से किया जाता है

1.निजी क्षेत्र के उद्योग

2. सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग

3.संयुक्त क्षेत्र के उद्योग

4. **द्वितीयक क्रिया से क्या समझते हैं?**

उत्तर- द्वितीयक क्रिया में प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का प्रत्यक्ष उपयोग ना करके उसे साफ परिष्कृत अथवा उनका रूप परिवर्तित कर उपयोग किया जाता है। इसमें प्राथमिक उत्पादों से नए वस्तुएँ तैयार की जाती है इसलिए इन वस्तुओं को तैयार करने वाले उद्योग गौण या द्वितीयक व्यवसाय कहा जाता है।

5. **कुटीर उद्योग को परिभाषित कीजिए?**

उत्तर - घर में किए जाने वाले छोटे पैमाने के उद्योग कुटीर उद्योग कहलाते हैं। यह विनिर्माण की सबसे लघु इकाई होते हैं।

6. **उपभोक्ता उद्योग से क्या अभिप्राय है?**

उत्तर- उपभोक्ता उद्योग के उत्पाद का प्रयोग अधिकतर लोग दैनिक जीवन में करते हैं, इन्हें गैर- आधारभूत उद्योग भी कहा जाता है। जैसे- कागज, वस्त्र एवं खाद्य पदार्थ आदि के उद्योग।

7. **उद्योगों के स्थानीयकरण से क्या अभिप्राय है?**

उत्तर- किसी निश्चित क्षेत्र या प्रदेश में उद्योगों के जमाव को उद्योगों का स्थानीकरण कहते हैं। अतः ऐसे भौगोलिक कारक या सुविधाएं जो उद्योगों की स्थापना हेतु आवश्यक है, जब किसी स्थान पर उपलब्ध होती है, तो उस स्थान पर उद्योग सकेंद्रित हो जाते हैं जिससे उद्योगों का स्थानीयकरण कहा जाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

8. **उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग पर टिप्पणी लिखिए?**

उत्तर- उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग निर्माण क्रियाओं में नवीनतम पीढ़ी है। इसमें उन्नत वैज्ञानिक और इंजीनियरिंग उत्पादकों का निर्माण गहन शोध तथा विकास के प्रयोग द्वारा किया जाता है। संपूर्ण श्रमिक शक्ति का अधिकतर भाग व्यवसायिक (सफ़ेद कॉलर) श्रमिकों का होता है। ये उच्च, दक्ष तथा विशिष्ट व्यवसायिक श्रमिक वास्तविक उत्पादन (नीला कॉलर) श्रमिकों से संख्या में अधिक होते हैं। उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग में यंत्रमानव, कम्प्यटूर आधारित डिज़ाइन (कैड) और निर्माण, धातु पिघलाने तथा शोधन के इलेक्ट्रॉनिक नियंत्रण व नए रासायनिक तथा औषधीय उत्पाद प्रमुख स्थान रखते हैं।

9. **विनिर्माण पर टिप्पणी लिखिए।**

उत्तर- विनिर्माण, किसी भी वस्तु का उत्पादन है। विनिर्माण का शाब्दिक अर्थ है 'हाथ से बनाना' फिर भी इसमें यंत्रों द्वारा बनाया गया सामान भी शामिल किया जाता है। हस्तशिल्प कार्य से लेकर लोहे तथा इस्पात को गढ़ना या बनाना, प्लास्टिक के खिलौने बनाना, कम्प्यूटर के अति सूक्ष्म घटकों को जोड़ना तथा अंतरिक्ष यान निर्माण इत्यादि सभी प्रकार के उत्पादन को निर्माण के अंतर्गत ही माना जाता है। विनिर्माण की सभी प्रक्रियाओं में कुछ साधारण विशेषताएँ होती हैं, जैसे शक्ति का उपयोग, एक ही प्रकार की वस्तुओं का बड़ा उत्पादन तथा कारखानों में विशिष्ट रमिक जो मानक वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। विनिर्माण आधुनिक शक्ति के साधन तथा मशीनरी के द्वारा या पुराने साधनों द्वारा किया जाता है। तृतीय विश्व के अधिकतर देशों में विनिर्माण को अब भी शाब्दिक अर्थों में प्रयोग किया जाता है।

10. **स्वच्छंद उद्योग पर टिप्पणी लिखिए।**

उत्तर- स्वच्छंद उद्योग व्यापक विविधता वाले स्थानों में स्थित होते हैं। यह किसी विशिष्ट कच्चे माल जिनके भारत में कमी हो रही है अथवा नहीं, पर निर्भर नहीं रहते हैं। यह उद्योग संघटक पुर्जों पर निर्भर रहते हैं जो कहीं से भी प्राप्त किए जा सकते हैं। इसमें उत्पादन कम मात्रा में होता है, एवं श्रमिकों की भी कम जरूरत होती है। साधारणतः ये उद्योग प्रदूषण नहीं फैलाते। इनकी स्थापना में महत्वपूर्ण कारक सड़कों के जाल द्वारा अभिगम्यता होती है।

11. **उत्पादों की स्वरूप के आधार पर उद्योगों का वर्गीकरण कितने प्रकार से किया जा सकता है?**

उत्तर- उत्पादों के स्वरूप के आधार पर उद्योगों को दो वर्गों में रखा जाता है।

(क) आधारभूत उद्योग - इन उद्योगों में उत्पादित उत्पादों का प्रयोग अन्य प्रकार के उत्पादन प्राप्त करने में किया जाता है अर्थात् उद्योग जिनके उत्पाद को अन्य वस्तुएँ बनाने के लिए कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त किया जाता है उन्हें आधारभूत उद्योग कहा जाता है। जैसे -लोहा इस्पात उद्योग, सूती वस्त्र उद्योग।

(ख) उपभोग वस्तु निर्माण उद्योग - इस प्रकार के उद्योगों में वस्तुओं का उत्पादन सीधे उपभोग के लिए किया जाता है। जैसे- वस्त्र, तेल, बिस्कुट, चाय, कागज, रेडियो, टेलीविजन आदि।

12. **कच्चे माल के आधार पर उद्योगों का वर्गीकरण करें,?**

उत्तर- कच्चे माल के आधार पर उद्योगों को निम्न भागों में बांटा जा सकता है :-

Jharkhandlab.com

(क) **कृषि आधारित उद्योग** - जिस उद्योग में कच्चे माल के रूप में कृषि से प्राप्त उत्पादों का प्रयोग करते हैं उसे कृषि आधारित उद्योग कहा जाता है । जैसे-चीनी, सुती व रेशमी वस्त्र उद्योग, जूट, चाय, कॉफी रबर आदि

(ख) **रसायन आधारित उद्योग**- जब कच्चे माल के रूप में खनिजों का प्रयोग करते हैं उसे खनिज आधारित उद्योग कहते हैं। जैसे लोह इस्पात उद्योग, तांबा एलयुमिनियम एवं रत्न आभूषण उद्योग।

(ग) **वन आधारित उद्योग**- उद्योगों में वनों में प्राप्त उत्पादों का प्रयोग होता है जैसे कागज एवं लुगदी बनाना, दियासलाई, फर्नीचर उद्योग, लाख उद्योग तारपीन का तेल उद्योग आदि।

(घ) **रसायन आधारित उद्योग**- इस वर्ग के उद्योग में कच्चे माल के रूप में प्राकृतिक रूप में पाए जाने वाले रासायनिक पदार्थों का उपयोग करते हैं। जैसे पेट्रो रसायन उद्योग, नमक उद्योग, गंधक उद्योग, पोटाश उद्योग एवं प्लास्टिक उद्योग।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्राथमिक एवं द्वितीयक गतिविधियों में क्या अंतर है?

उत्तर- **प्राथमिक गतिविधियाँ -**

आर्थिक क्रियाओं में प्रमुख रूप से प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से उत्पादन किया जाता है तो उन क्रियाओं को प्राथमिक क्षेत्र के अंतर्गत रखा जाता है।मानव प्राथमिक क्रियाकलापों के द्वारा हर रूप में वस्तुएँ प्राप्त करता है।प्राथमिक गतिविधियों के उदाहरण- कृषि, संग्रहण तथा मछली पकड़ना, खनन, पशुचारण आदि।

प्राथमिक गतिविधियों से उद्योगों को कच्चा माल मिलता है।ये वे क्षेत्र हैं, जहाँ अभी तक आधुनिक प्रौद्योगिकी तथा तकनीकी का विकास और हस्तक्षेप नहीं हुआ।

प्राथमिक गतिविधि प्राकृतिक पर्यावरण से प्राप्त संसाधनों के विकास से संबंधित है।

द्वितीयक गतिविधियाँ

प्राकृतिक उत्पादों को विनिर्माण प्रणाली के द्वारा अन्य रूपों में परिवर्तित किया जाता है उसे द्वितीयक क्षेत्र कहते हैं। द्वितीयक क्रियाकलापों में उद्योगों को सम्मिलित किया जाता है जो विभिन्न वस्तुओं का निर्माण करते हैं। द्वितीयक गतिविधियों के उदाहरण– बीमा, बैंकिंग, विनिर्माण उद्योग, डेयरी उद्योग, कुटीर उद्योग, यातायात व्यापार आदि।द्वितीयक गतिविधियों से कच्चे माल का परिष्करण होता है तथा उसकी उपयोगिता बढ़ती है। विश्व के इन क्षेत्रों को आधुनिकी प्रौद्योगिकीकरण उच्च स्तर तक पहुँच चुका है। द्वितीयक गतिविधि मनुष्य द्वारा कच्चे माल को संशोधित करके उसे नई वस्तुओं में बदलने से है।

2. अफ्रीका में अपरिमित प्राकृतिक संसाधन हैं फिर भी औद्योगिक दृष्टि से यह बहुत पिछड़ा महाद्वीप है। समीक्षा कीजिए।

उत्तर - भौगोलिक विस्तार और जनसंख्या की दृष्टि से विश्व का दूसरा सबसे बड़ा महाद्वीप अफ्रीका प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण है परंतु संसाधनों की प्रचुरता के पश्चात भी यह महाद्वीप औद्योगिक दृष्टि अपेक्षाकृत कमज़ोर है। संसाधनों की दृष्टि से देखा जाए तो अफ्रीका में कोबाल्ट, हीरा, प्लेटिनम, क्रोमियम जैसी बहुमूल्य धातुओं का बड़ा भंडार पाया जाता है। उदाहरण- बोत्सवाना और कांगो गणराज्य हीरे के उत्पादन के लिए बहुत अहम है। इसके अतिरिक्त दक्षिण अफ्रीका के किम्बरले ओर प्रिटोरिया विश्व के मुख्य हीरा-उत्पादक क्षेत्रों में सम्मिलित हैं।

आधुनिक समय में सर्वाधिक बहुमूल्य धातु में से एक माने जाने वाले सोना का सबसे अधिक उत्पादन दक्षिण अफ्रीका में होता है। यहाँ का जोहान्सबर्ग स्वर्ण खनन के लिए विश्व है। इसके अतिरिक्त ताँबा, मैंगनीज, एस्बेस्टस, यूरेनियम जैसे खनिज भी अफ्रीका में सबसे अधिक बॉक्साइट उत्खनन गिनी में, ताँबे का भंडार जायरे की कटंगा प्रदेश में और ग्रेफ़ाइट का निक्षेप मेडागास्कर देश में पाया जाता है। धातु के अतिरिक्त यहाँ जीवाश्म आधारित खनिज भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। अफ्रीका के नाइजीरिया, अल्जीरिया, ट्यूनीशिया जैसे प्रदेश पेट्रोलियम की दृष्टि से अहम है। कृषि आधारित संसाधन भी अफ्रीका में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। केन्या चाय उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। वहीं दक्षिण अफ्रीका का डरबन रसदार फलों के उत्पादन हेतु प्रसिद्ध है। घाना के निकटवर्ती क्षेत्र कोको उत्पादन तथा निर्यात के लिए विश्व प्रसिद्ध है वहीं अफ्रीका के मरुस्थल पशुपालन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है परंतु प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता के पश्चात भी औद्योगिक दृष्टि से अफ्रीका महाद्वीप बहुत पिछड़ा है।

3. उद्योगों के स्थानीयकरण को प्रभावित करने वाले कौन कौन से कारक हैं?

उत्तर - उद्योगों के स्थानीयकरण को प्रभावित करने वाले निम्नलिखित कारक है-

क. **कच्चे माल की निकटता** - निर्माण उद्योग की सबसे पहली आवश्यकता कच्चे माल की होती है जिसका रूप और उपयोग बदलकर मूल्य वृद्धि की जाती है अतः जहां पर कच्चे माल की निकटता होगी विनिर्माण उद्योगों का स्थानीयकरण भी वहीं पर होगा।

ख. **पूंजी की सुलभता**- किसी भी उद्योग को चलाने के लिए पर्याप्त पूंजी की आवश्यकता होती है अतः पूंजी की सुलभता विनिर्माण उद्योगों का स्थानीयकरण में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

ग. **शक्ति के साधनों की निकटता**- वर्तमान समय में समस्त निर्माण उद्योग किसी न किसी शक्ति के संसाधन पर निर्भर रहते हैं। जैसे -कोयला, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस, जल विद्युत, आदि शक्ति के संसाधन है क्योंकि बिना बिजली के कोई भी उद्योग को नहीं संचालित किया जा सकता है अतः शक्ति के साधनों की निकटता आवश्यक है।

घ. **परिवहन के साधनों की सुविधा**- कच्चे माल को फैक्ट्री तक लाने के लिए और निर्मित माल को बाजार तक पहुंचाने के लिए सस्ता और गतिमान परिवहन औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक है । अतः वर्तमान समय में उद्योगों के स्थानीयकरण में परिवहन के साधनों का सुविधा जैसे- रेल, सड़क, हवाई मार्ग से जुड़ा होना आवश्यक है।

ङ. **बाजार की निकटता** - बाजार से निकटता वाले औद्योगिक क्षेत्रों में उत्पादित वस्तुओं की खपत अधिक होती है, क्योंकि वैसे क्षेत्रों में अधिक संख्या में उपभोक्ता आसानी से उपलब्ध होते हैं। अतः निर्मित वस्तुओं के खपत हेतु बाजार की निकटता आवश्यक है।

च. **अनुकूल जलवायु** - किसी भी उद्योग की स्थापना के लिए अनुकूल जलवायु का होना एक महत्वपूर्ण कारक है । अतः उद्योग ऐसे स्थानों पर स्थापित किए जाते हैं जहां की जलवायु स्वास्थ्यप्रद हो। किसी उद्योग को विशेष जलवायु की आवश्यकता होती है। जैसे -सूती वस्त्र उद्योग के लिए आर्द जलवायु। क्योंकि इस जलवायु में धागा महीन तथा कम टूटता है। अतः सूती वस्त्र उद्योग को आर्द जलवायु में ही स्थापित किया जाता है।

Jharkhandlab.com

छ. **कुशल और सस्ते श्रमिक-** कुशल एवं सस्ते श्रमिकों की उपलब्धता वाले क्षेत्र उद्योगों की अवस्थिति के लिए अनुकूल होते हैं। जैसे अलीगढ़ में ताला निर्माण उद्योग एवं महाराष्ट्र में सूत्ती वस्त्र उद्योग का विकास।

ज. **सरकारी संरक्षण-** किसी भी उद्योग को चलाने के लिए उद्योगों को सरकारी संरक्षण में होना आवश्यक है ताकि वह अच्छे से विकास कर पाए।

4. संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रमुख लौह इस्पात उद्योग केंद्रों का वर्णन कीजिए ?

उत्तर- संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रमुख लौह इस्पात उद्योग केंद्र निम्नलिखित हैं :-

क. **उत्तरी अप्लेशियन प्रदेश-** संयुक्त राज्य अमेरिका का सबसे बड़ा तथा महत्वपूर्ण लोहा इस्पात उत्पादक क्षेत्र है यह क्षेत्र पश्चिमी पेंसिलवेनिया से लेकर पूर्वी ओहियो राज्य तक फैला हुआ है। इस प्रदेश की दो मुख्य प्रदेश है।

ख. **पिट्सबर्ग-यंगस्टाउन प्रदेश-** पिट्सबर्ग यंगस्टाउन प्रदेश संयुक्त राज्य अमेरिका का सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक क्षेत्र माना जाता है यहां पर लगभग संयुक्त राज्य अमेरिका का 35% लोहा तथा इस्पात तैयार किया जाता है। क्षेत्र का विस्तार ओहियो, मोनेगहेला तथा अलैधनी नदियों की घाटियों में है तथा प्रमुख इस्पात केंद्र पिट्सबर्ग, मिडिलटन आर्यन वारेन पोर्ट्समाउथ तथा जॉन्सटाउन इत्यादि है।

Jharkhandlab.com

अध्याय - 7 तृतीयक और चतुर्थ क्रियाकलाप
TERTIARY AND QOUARTERNARY ACTIVITIES

पाठ के मुख्य बिंदु

- तृतीयक क्रियाकलाप में उत्पादन और विनिमय दोनों सम्मिलित होते हैं।
- उत्पादन में सेवाओं की उपलब्धता शामिल होती है, जिनका उपभोग किया जाता है, परोक्ष रूप से इसे हम पारिश्रमिक और वेतन के रूप में मापते हैं।
- विनिमय के अंतर्गत व्यापार, परिवहन और संचार सुविधाएं सम्मिलित होती है, जिनका उपयोग दूरी को निष्प्रभावी करने मे किया जाता है।
- तृतीयक क्रियाकलाप के अंतर्गत समाज को दी जाने वाली व्यक्तिगत तथा व्यावसायिक सेवाएं सम्मिलित हैं।
- सेवा सेक्टर का संबंध ऐसे क्षेत्रों से है, जिसमें मूर्त वस्तुओं के उत्पादन की अपेक्षा सेवाओं का व्यावसायिक उत्पादन सम्मिलित होता है।
- व्यापारिक केंद्रों को ग्रामीण और नगरीय वितरण केंद्रों में विभक्त किया जाता है।
- सेवा सेक्टर के अंतर्गत निम्नलिखित तीन क्रियाकलाप सम्मिलित किए जाते हैं:-

  तृतीयक क्रियाकलाप
  चतुर्थ क्रियाकलाप एवं
  पंचम क्रियाकलाप।
- तृतीयक क्रियाकलाप के अंतर्गत व्यापार एवं वाणिज्य ,परिवहन, संचार सेवाएं सम्मिलित की जाती है।
- चतुर्थ क्रियाकलाप के अंतर्गत अनुसंधान एवं विकास आधारित विशिष्ट ज्ञान, तकनीकी दक्षता तथा प्रशासनिक क्षमता से संबंधित क्रियाकलाप सम्मिलित होते हैं।
- सेवाएँ- वे समस्त क्रियाकलाप जिनमें वस्तुओं का उत्पादन नहीं होता है, किन्तु वे वस्तुओं के उत्पादन एवं विपणन में सहायक होते हैं।
- व्यापार-अन्यत्र उत्पादित वस्तुओं का क्रय तथा विक्रय व्यापार कहलाता है।
- लाभ प्राप्ति के उद्देश्य से फुटकर और थोक व्यापार की समस्त क्रियाओं को सम्पन्न करने वाले नगरीय केन्द्र मुख्यतः व्यापारिक केन्द्र कहलाते हैं। यह व्यापारिक केंद्र कस्बों और नगरों में हो सकता है।
- उपभोक्ताओं को जब वस्तुएं प्रत्यक्ष रूप से विक्रय की जाती हैं, ऐसे व्यापारिक क्रियाकलापों को फुटकर व्यापार कहा जाता है।
- थोक व्यापार- श्रृंखला भण्डारों सहित कुछ बड़े भंडार विनिर्माताओं से की जाने वाली सीधी खरीद करने सम्बन्धी व्यापारिक क्रियाकलापों को थोक व्यापार कहा जाता है।
- परिवहन - वह व्यवस्था है, जिसमें वस्तुओं और यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जाता है।
- परिवहन व्यवस्थाओं के अंतर्गत जब विभिन्न स्थान को आपस में जोड़ा जाता है तो एक जाल तंत्र का निर्माण होता है।
- जब दो या दो से अधिक मार्ग किसी बड़े कस्बे पर आकर मिल जाते हैं, तो वह कस्बा या क्षेत्र नोड कहलाता है।
- संचार सेवाओं के अंतर्गत तथ्यों तथा विचारों का प्रेषण किया जाता है। वर्तमान समय में आधुनिक प्रौद्योगिकी के आधार पर रेडियो, दूरदर्शन, समाचार पत्र, उपग्रह संचार और इंटरनेट के माध्यम से संचार सेवाएं प्रदान की जाती हैं।
- सेवाएं ऐसे क्रियाकलाप हैं, जिनमें वस्तुओं का उत्पादन नहीं होता बल्कि सेवाएं विभिन्न स्तरों पर ली एवं दी जाती हैं। प्रत्येक सेवा का अपना मूल्य निश्चित होता है।
- तृतीयक क्रियाकलाप सेवा सेक्टर से संबंधित होते हैं जिसमें अमूर्त सेवाओं का व्यवसायिक उत्पादन होता है।
- पर्यटन तृतीयक क्रियाओं के अंतर्गत शामिल किया जाता है। पर्यटन एक ऐसी यात्रा होती है जो व्यापार के बजाय आमोद - प्रमोद अथवा मनोरंजन के उद्देश्य से की जाती है।
- जब चिकित्सा उपचार को अंतरराष्ट्रीय पर्यटन गतिविधि से संबंधित कर दिया जाता है, तो इसे सामान्यतः चिकित्सा पर्यटन कहा जाता है
- मानव की ज्ञान पर आधारित सेवाओं से संबंधित क्रियाकलापों को चतुर्थक व्यवसाय के अंतर्गत शामिल किया जाता है। इस प्रकार के व्यवसाय में सूचना प्रौद्योगिकी, शोध प्रबंध, सुरक्षा, उच्च सेवाएं, प्रशासन, शिक्षा, नियोजन तथा अंतरराष्ट्रीय संबंधों को सम्मिलित करते हैं।
- पंचम क्रियाकलापों के अंतर्गत उन सेवाओं को सम्मिलित किया जाता है, जिनका संबंध नवीन एवं वर्तमान विचारों की रचना उनके पुनर्गठन एवं व्याख्या, आंकड़ों की व्याख्या एवं प्रयोग तथा नवीन तकनीक के मूल्यांकन से है।
- प्राथमिक क्रियाएं जैसे आखेट, भोजन संग्रहण, पशु चारण, कृषि एवं खनन आदि कार्यों में संलग्न लोगों को लाल कॉलर कहा जाता है।
- पंचम क्रियाकलाप जिसके अंतर्गत नवीन एवं वर्तमान विचारों की रचना एवं पुनर्गठन तथा उनकी व्याख्या की जाती है। इस कार्य में संलग्न लोगों को स्वर्ण कॉलर कहा जाता है।
- ऐसे अतिकुशल व्यवसायिक श्रमिक जो उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग में संलग्न होते हैं, श्वेत कॉलर कहलाते हैं।

Jharkhandlab.com

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **निम्नलिखित में से कौन-सा एक तृतीयक क्रियाकलाप है?**

(क) खेती (ख) बुनाई
(ग) व्यापार (घ) आखेट

2. **निम्नलिखित क्रियाकलापों में से कौन-सा एक द्वितीयक सेक्टर का क्रियाकलाप नहीं है?**

(क) इस्पात प्रगलन (ख) वस्त्र निर्माण
(ग) मछली पकड़ना (घ) टोकरी बुनना

3. **निम्नलिखित में से कौन-सा एक सेक्टर दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता में सर्वाधिक रोजगार प्रदान करता है?**

(क प्राथमिक (ख) द्वितीयक
(ग) पर्यटन (घ) सेवा

4. **वे काम जिनमें उच्च परिमाण और स्तर वाले अन्वेषण सम्मिलित होते हैं, कहलाते हैं।**

(क) द्वितीयक क्रियाकलाप (ख) पंचम क्रियाकलाप
(ग) चतुर्थ क्रियाकलाप (घ) प्राथमिक क्रियाकलाप

5. **निम्नलिखित में से कौन सा क्रियाकलाप चतुर्थ सेक्टर से संबंधित है?**

(क) संगणक विनिर्माण
(ख) विश्वविद्यालयी अध्यापन
(ग) कागज़ और कच्ची लुगदी निर्माण
(घ) पुस्तकों का मुद्रण

6. **निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक सत्य नहीं है?**

(क) बाह्यस्त्रोतन दक्षता को बढ़ाता है और लागतों को घटाता है।

(ख) कभी-कभार अभियांत्रिकी और विनिर्माण कार्यों की भी बाह्यस्रोतन की जा सकती है।

(ग) बी.पी.ओ के पास के.पी.ओ की तुलना में बेहतर व्यावसायिक अवसर होते हैं।

(घ) कामों के बाह्यस्रोतन करने वाले देशों में काम की तलाश करने वालों में असंतोष पाया जाता है।

7. **स्वर्ण कॉलर का संबंध निम्न में से किस आर्थिक क्रियाकलाप से है?**

(क) प्राथमिक क्रियाकलाप (ख) द्वितीय क्रियाकलाप
(ग) चतुर्थ क्रियाकलाप (घ) पंचम क्रियाकलाप

8. **जिन नगरों में बड़ी-बड़ी वैश्विक कंपनियों के मुख्यालय होते हैं, कहलाते हैं?**

(क) वैश्विक नगर (ख) नगर
(ग) ग्राम (घ) कस्बा

9. **चतुर्थ क्रियाकलाप वर्ग में निम्नलिखित में से कौन से घटक है ?**

(क) कृषि एवं खनन (ख) उद्योग एवं विनिर्माण
(ग) शिक्षा, सूचना, शोध, प्रबंध (घ) व्यापार एवं वाणिज्य

10. **लाल कालर कर्मियों का संबंध निम्न में से किस आर्थिक क्रियाकलाप से है?**

(क) प्राथमिक क्रियाकलाप (ख) द्वितीय क्रियाकलाप
(ग) तृतीय क्रियाकलाप (घ) चतुर्थ क्रियाकलाप

11. **चिकित्सा पर्यटन है?**

(क) मनोरंजन हेतु पर्यटन (ख) रोजगार हेतु पर्यटन
(ग) चिकित्सा हेतु पर्यटन (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

12. **पर्यटन किस आर्थिक गतिविधि का अंग है?**

(क) प्राथमिक क्रियाकलाप (ख) द्वितीय क्रियाकलाप
(ग) तृतीय क्रियाकलाप (घ) चतुर्थ क्रियाकलाप

उत्तर:- 1. (ग)व्यापार 2. (ग) मछली पकड़ना 3. (घ) सेवा 4. (ग) चतुर्थ क्रियाकलाप 5. (ख) विश्वविद्यालय अध्यापन 6. (ग) बी.पी.ओ (व्यवसाय प्रक्रमण बाह्यस्रोतन) के पास के.पी.ओ (ज्ञान प्रक्रमण बाह्यस्रोतन) की तुलना में बेहतर व्यावसायिक अवसर होते हैं। 7. (घ) पंचम क्रियाकलाप 8. (क) वैश्विक नगर 9. (ग) शिक्षा सूचना, शोध, प्रबंध 10. (क) प्राथमिक क्रियाकलाप 11. (ग) चिकित्सा हेतु पर्यटन 12. (ग) तृतीय क्रियाकलाप

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **पर्यटन क्या है ?**

उत्तर : पर्यटन तृतीयक क्रियाओं के अंतर्गत शामिल किया जाता है। पर्यटन एक ऐसी यात्रा होती है जो व्यापार के बजाय आमोद - प्रमोद अथवा मनोरंजन के उद्देश्य से की जाती है।

2. **फुटकर व्यापार सेवा क्या है ?**

उत्तर : वैसे सभी व्यापारिक क्रियाकलाप जिसके अंतर्गत उपभोक्ता आवश्यकताओं की वस्तुओं को प्रतिष्ठान एवं भंडारों से प्रत्यक्ष खरीद सकते हैं। जैसे फेरी, रेहड़ी डाक आदेश, दूरभाष आदि से संबंधित सेवाएं।

3. **तृतीयक व्यवसाय से आप क्या समझते हैं ?**

उत्तर : तृतीय व्यवसाय अथवा क्रियाकलाप के अंतर्गत किसी वस्तु का उत्पादन नहीं होता है, इसके अंतर्गत अमूर्त सेवाओं को शामिल किया जाता है। जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, परिवहन आदि।

4. **ग्रामीण विपणन केंद्र क्या है ?**

उत्तर : ग्रामीण विपणन केंद्र के अंतर्गत अर्द्ध - नगरीय व्यापारिक केंद्रों को शामिल किया जाता है, जो अपने आस - पास अवस्थित ग्रामीण बस्तियों को संग्रहण और वितरण जैसी सेवाएं प्रदान करते हैं।

5. **इंटरनेट क्या है ?**

उत्तर : इंटरनेट संचार की अत्याधुनिक सेवा है। यह वाइड एरिया नेटवर्क (WAN) भी कहलाता है, जिसके माध्यम से संपूर्ण देश अथवा महाद्वीप आपस में जुड़े होते हैं।

6. **वैश्विक गांव क्या है ?**

उत्तर : इंटरनेट के माध्यम से संपूर्ण विश्व आपस में जुड़ जाते हैं अतः विश्व के किसी भी कोने में घटने वाली घटना कुछ सेकेंडों में विश्व भर में प्रसारित हो जाती है, इस परिघटना के कारण विश्व गांव का उद्भव होता है।

7. **पर्यटन को प्रभावित करने वाले दो कारकों को लिखें।**

उत्तर : किसी क्षेत्र के पर्यटन को दो कारक मुख्य रूप से प्रभावित करते हैं:-

क. मांग
ख. परिवहन की सुविधा।

8. **परिवहन क्या है ?**

उत्तर : परिवहन वह व्यवस्था है जिसमें वस्तुओं और यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जाता है।

9. **संचार सेवाएं क्या है ?**

उत्तर : संचार सेवाओं के अंतर्गत शब्दों और संदेशों, तथ्यों तथा विचारों का आदान-प्रदान किया जाता है।

10. **चिकित्सा पर्यटन क्या है ?**

उत्तर : जब चिकित्सा उपचार को अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन से जोड़ दिया जाता है, तो इसे चिकित्सा पर्यटन कहते हैं।

Jharkhandlab.com

11. व्यापारिक केंद्र किसे कहते हैं?

उत्तर:

- व्यापार अथवा वाणिज्य की सेवाएं उपलब्ध कराने वाले कस्बे और नगर व्यापारिक केंद्र कहलाते हैं।
- व्यापारिक केंद्रों को ग्रामीण तथा नगरीय बाजार केंद्रों में विभक्त किया जाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. फुटकर व्यापार सेवा को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

- फुटकर व्यापार सेवा वह क्रियाकलाप है जिसमें उपभोक्ताओं को वस्तुओं व उत्पादों का विक्रय प्रत्यक्ष रूप से किया जाता है।
- अधिकांश फुटकर व्यापार सेवा वस्तुओं एवं उत्पादों के विक्रय के उद्देश्य स्थापित प्रतिष्ठानों एवं भंडारों से संपन्न होता है।
- किंतु कुछ फुटकर व्यापार सेवा, भंडार रहित होते हैं जैसे द्वार से द्वार, इंटरनेट के माध्यम से खरीदारी, फेरी आदि।

2. चतुर्थ सेवाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

- चतुर्थ क्रियाकलाप अनुसंधान और विकास पर केंद्रित होते हैं यह एक ज्ञानोंमुख सेवा क्षेत्र है जिसमें सूचनाओं का संग्रहण, उत्पादन और प्रकीर्णन आदि कार्य सम्मिलित होते हैं।
- चतुर्थ क्रियाकलाप के अंतर्गत शिक्षा, शोध, वित्त, कानून और संचार से जुड़ी आर्थिक गतिविधियों को सम्मिलित किया जाता है।
- चतुर्थ क्रियाकलाप विशिष्टीकृत ज्ञान, प्रौद्योगिकी कुशलता और प्रशासकीय सामर्थ्य से संबंधित सेवाओं के रूप में जाने जाते हैं।

3. विश्व में चिकित्सा पर्यटन के क्षेत्र में तेज़ी से उभरते हुए देशों के नाम लिखिए।

उत्तर:

- चिकित्सा पर्यटन- जब किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा किसी अन्य देश की यात्रा मूल रूप से चिकित्सा या उपचार के उद्देश्य से किया जाता है तो उसे चिकित्सा पर्यटन कहते हैं।
- वर्तमान में चिकित्सा पर्यटन के क्षेत्र में भारत अग्रणी देश बनकर उभरा है। भारत के अलावा चिकित्सा पर्यटन के क्षेत्र में सिंगापुर, मलेशिया, जापान, चीन, थाईलैंड जैसे एशियाई देश महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं ।
- चिकित्सा पर्यटन हेतु अन्य लोकप्रिय देश कनाडा, यूनाइटेड किंगडम, ऑस्ट्रेलिया आदि है।

4. अंकीय विभाजक क्या है?

उत्तर:

- सूचना और संचार प्रौद्योगिकी पर आधारित विकास से मिलने वाले अवसरों का वितरण पूरे ग्लोब पर समान रूप से वितरित है।
- वास्तव में विकसित देश अपने नागरिकों को सूचना और संचार प्रौद्योगिकी तक पहुंच बनाने और उसके लाभ उपलब्ध करा पाने में आगे निकल गए जबकि विकासशील देश पिछड़ गए, इसी अंतर को अंकीय विभाजक या डिजिटल डिवाइड कहा जाता है।

5. वैश्विक नगर क्या है? तीन वैश्विक नगरों के नाम लिखिए ।

उत्तर:

- ऐसे नगर तथा महानगर जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वृहत व्यापारिक केंद्र के रूप में उभरे हैं और अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थिति रखते हैं, वैश्विक नगर कहलाते हैं।
- न्यूयॉर्क, लंदन, शिकागो, लॉस एंजिल्स, सियोल, सिडनी, शंघाई आदि विश्व के कुछ प्रमुख वैश्विक नगर है।

6. चतुर्थ क्रियाकलाप क्या है?

उत्तर:

- यह सेवा सेक्टर का ज्ञानोन्मुखी भाग है, जिसमें उच्च बौद्धिक व्यवसाय सम्मिलित हैं, जैसे शिक्षा शोध प्रबंध नियोजन आदि। इस सेवा सेक्टर से जुड़े लोगों का दायित्व चिंतन, शोध और विकास के लिए नए विचार देना होता है।

7. तृतीयक क्रियाकलाप से आप क्या समझते हैं?

उत्तर:

- इस आर्थिक गतिविधि के अंतर्गत वस्तुओं का उत्पादन नहीं होता बल्कि अमूर्त सेवाएं प्रदान की जाती है।
- तृतीयक क्रियाकलाप के अंतर्गत व्यापार- वाणिज्य, परिवहन, संचार तथा विभिन्न व्यक्तिगत व व्यवसायिक सेवाओं से संबंधी गतिविधियों को सम्मिलित किया जाता है।

8. पंचम क्रियाकलाप से आप क्या समझते हैं?

उत्तर:

- आर्थिक गतिविधियों में इन क्रियाकलापों का स्थान उच्चतम होता है। पंचम क्रियाकलापों में संलग्न व्यक्ति सर्वोच्च पदों पर आसीन होते हैं और महत्वपूर्ण निर्णय लेने व नीतियों के निर्माण का कार्य करते हैं।
- ये व्यवसाय तृतीयक क्रियाकलापों का एक और विकसित उप-विभाग हैं जिनमें वरिष्ठ तथा श्रेष्ठ व्यावसायिक अधिकारियों, प्रशासनिक अधिकारियों, अनुसन्धान वैज्ञानिकों, वित्त एवं विधि परामर्शदाताओं को शामिल किया जाता है। ये सभी लोग विश्व में उच्चतम वेतन और मनचाही सुविधाओं वाली कुशलताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- इस वर्ग के अधिकारियों को स्वर्ण कॉलर कर्मी कहां जाता है।

9. आवधिक बाजार से आप क्या समझते हैं?

उत्तर:

- यह ग्रामीण बाजार केंद्र का ही भाग है।
- जिन ग्रामीण क्षेत्रों में नियमित बाजार नहीं होते अर्थात स्थाई विपणन केंद्रों की उपलब्धता नहीं होती। उन क्षेत्रों में विभिन्न कालिक अंतरालों पर स्थानीय आवधिक बाजार लगाए जाते हैं।
- यह बाजार साप्ताहिक या पाक्षिक होते हैं तथा आसपास के ग्रामीण इलाकों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।
- यह बाजार निश्चित तिथि पर लगते हैं और एक स्थान से दूसरे स्थान पर लगते ही रहते हैं। जिससे दुकानदार सभी दिन व्यस्त रहते हैं और विस्तृत क्षेत्र को सेवा प्रदान करते हैं।

Jharkhandlab.com

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. आधुनिक आर्थिक विकास में सेवा सेक्टर की सार्थकता और वृद्धि की चर्चा कीजिए।

उत्तर:

सेवा सेक्टर व्यापार, परिवहन, संचार और निम्न व उच्च स्तरीय सेवाओं से संबंधित गतिविधियों को समाहित करता है। इन गतिविधियों को सामान्यता तृतीयक एवं चतुर्थक क्रियाकलापों के अंतर्गत रखा जाता है। सेवाएं वास्तव में वे क्रियाकलाप हैं जिनमें वस्तुओं का उत्पादन प्रत्यक्ष रूप से नहीं होता। इस प्रकार किसी प्रदेश के आर्थिक विकास में सेवा क्षेत्र की महत्ता और इस क्षेत्र में हो रही वृद्धि के आकलन हेतु सेवा क्षेत्र के प्रमुख घटकों की चर्चा अनिवार्य है।

वाणिज्यिक सेवाएं- किसी देश की वाणिज्यिक सेवाओं में हो रही वृद्धि उस देश के आर्थिक विकास के स्तर को इंगित करती है. प्रदेश में बढ़ती आय के साथ विभिन्न सेवाओं के मांग में भी वृद्धि होती है।

परिवहन सेवाएं- किसी व्यक्ति या वस्तु का एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाना ले जाना परिवहन के रूप में जाना जाता है वास्तव में देखा जाए तो वर्तमान युग में अधिकांश आर्थिक गतिविधियां परिवहन पर ही निर्भर करती हैं। यह सेवा क्षेत्र विभिन्न माध्यमों से रोजगार उपलब्ध कराने के अलावा आर्थिक गतिविधियों को गति प्रदान करने में भी सहायक होती है। स्पष्ट है परिवहन सेवा के क्षेत्र में प्रगतिशील देश आर्थिक विकास के क्षेत्र में भी आगे हैं।

संचार सेवाएं- संचार सेवाओं के विभिन्न माध्यमों जैसे डाक मोबाइल दूरभाष रेडियो टेलीविजन उपग्रह संचार इंटरनेट संचार समाचार पत्र पत्रिकाओं की विकसित अवस्था एवं उपलब्धता किसी देश के आर्थिक विकास का सूचक होती है।वर्तमान समय में संचार सेवाओं में हो रही वृद्धि आर्थिक विकास के नए मार्ग खोल रही हैं।

उच्च स्तरीय सेवाएं: जैसे- सूचना, प्रौद्योगिकी, शोध, प्रबंध, प्रशासन, नियोजन आदि उच्च आर्थिक विकास वाले देशों की पहचान बन चुकी हैं।

2. परिवहन और संचार सेवाओं की सार्थकता को विस्तारपूर्वक स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

परिवहन एवं संचार सेवाओं का समुचित विकास क्षेत्र विशेष के आर्थिक विकास का सूचक होती है। यह सेवाओं की बेहतर उपलब्धता व्यापारिक एवं वाणिज्य कार्यों को गतिशीलता प्रदान करती है।

परिवहन -

परिवहन एक ऐसी सेवा अथवा सुविधा है इसके व्यक्तियों विनिर्मित वस्तुओं तथा संपत्ति को भौतिक रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता है।

यह मनुष्य की गतिशीलता संबंधी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करता है।

परिवहन के विभिन्न साधनों जैसे सड़क परिवहन रेल परिवहन वायु मार्ग परिवहन जल परिवहन पाइपलाइन परिवहन आदि की विकसित अवस्था आधुनिक समाज की मूलभूत आवश्यकता है।

जनसंख्या में तीव्र वृद्धि के साथ ही विश्व में परिवहन व्यवस्था में भी विकास हुआ है।

संचार -

सूचनाओं तथा विचारों को लिखित, शाब्दिक अथवा श्रव्य दृश्य रूप में प्राप्तकर्ता तक भेजने की प्रक्रिया संचार कहलाता है तथा इस प्रक्रिया में जिन साधनों का प्रयोग किया जाता है उन्हें संचार माध्यम कहा जाता है जैसे डाक समाचार पत्र पत्रिका मोबाइल दूरभाष फैक्स रेडियो इंटरनेट टेलीविजन आदि संचार के माध्यम हैं।

विश्व में संचार माध्यमों के तीव्र विकास ने वाणिज्य और व्यापारिक क्षेत्रों की गतिशीलता और उत्पादकता को बढ़ा दिया है। संचार एवं परिवहन साधनों के विकास नहीं आज पूरे विश्व को एक वैश्विक ग्राम का रूप दे दिया है।

3. सेवा सेक्टर में पर्यटन के महत्व को स्पष्ट कीजिए तथा पर्यटन को प्रभावित करने वाले कारकों की व्याख्या करें।

उत्तर: सेवा सेक्टर में पर्यटन के महत्व :

- पर्यटन मनोरंजन के उद्देश्यों से की जाने वाली यात्रा है।
- पर्यटन के अंतर्गत पर्यटकों के लिए आवास उपलब्ध कराना, भोजन, परिवहन, मनोरंजन, खरीदारी के लिए दुकान मुहैया कराना, आदि सेवाएं सम्मिलित है।
- वर्तमान में पर्यटन आर्थिक विकास और रोजगार सृजन का एक सशक्त माध्यम बन चुका है। यह देश के सिर्फ सेवा उद्योगों में से एक है।
- पर्यटन स्थानीय अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक आर्थिक प्रभाव डाल रहा है साथ ही सामुदायिक विकास और गरीबी में कमी लाने वाला प्रमुख घटक सिद्ध हो रहा है।
- 1980 से प्रति वर्ष 27 सितंबर को विश्व पर्यटन दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- भारत में पर्यटन को लेकर लोगों के बीच जागरूकता बढ़ी है और भारत के उत्तरी तथा उत्तरी पूर्वी राज्यों ने पर्यटकों की संख्या में काफी बढ़ोतरी हुई है। इसके अलावा भारत के पश्चिमी तथा पूर्वी तटीय भागों के पर्यटक क्षेत्रों में सैलानियों की तादाद में वृद्धि देखी गई है।

पर्यटन को प्रभावित करने वाले कारक-

- अवकाश का उपभोग का उद्देश्य:- मांग पिछले कुछ दशकों में अवकाश के उद्देश्य से पर्यटन में वृद्धि हुई है। लोग अपने तनाव ग्रस्त जीवन से आराम पाने के लिए पर्यटन का सहारा ले रहे हैं।
- परिवहन :- परिवहन सुविधाओं में सुधार के साथ ही पर्यटन के क्षेत्र में तीव्र वृद्धि देखी गई है।
- जलवायु :- पर्यटक अवकाश के दिनों में अनुकूल जलवायु वाले क्षेत्रों में जाना पसंद करते हैं जैसे गर्मियों के दिनों में भारत के पर्यटक उत्तर के पर्वतीय क्षेत्रों में जाना पसंद करते हैं।
- भू दृश्य :- लोग आकर्षक एवं मनमोहक भू दृश्यों के प्रति आकर्षित रहते हैं। जैसे पर्वत, झीलें, दर्शनीय स्थान, समुद्री तट आदि।
- इतिहास एवं कला लोग प्राचीन ऑफ सुंदर नगर पुरातात्विक स्थानों को देख कर आनंदित होते हैं। इस कारण इतिहास और कला से परिपूर्ण क्षेत्र लोगों के पर्यटन के लिए आकर्षण का केंद्र बिंदु होते हैं।

Jharkhandlab.com

अध्याय - 8 परिवहन एवं संचार TRANSPORT AND COMMUNICATION

पाठ के मुख्य बिंदु

- परिवहन तृतीयक क्रियाकलाप के अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है। ऐसी सेवा या सुविधा जिसमें व्यक्तियों तथा वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जाता है परिवहन कहलाता है।
- परिवहन जाल के अंतर्गत अनेक स्थानों को आपस में जोड़ने के लिए श्रेणी बद्ध मार्गों को आपस में जोड़ दिया जाता है ।
- मानव एवं किसी राष्ट्र के अर्थव्यवस्था की प्रगति परिवहन के विकास पर निर्भर करती है। यह केवल सामान व व्यक्तियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर नहीं ले जाता, बल्कि देश की संस्कृति, सामाजिक और नैतिक विकास को भी प्रभावित करता है।
- ऐसा माना जाता है, कि यदि कृषि और उद्योग किसी देश के आर्थिक जीवन के शरीर और हड्डियां हैं, तो परिवहन को उस आर्थिक ढांचे की रक्तवाहिनी मानना बेहतर होगा।
- परिवहन की चार विधाएं होती हैं। जैसे स्थल, जल, वायु और पाइपलाइन। यह सभी विधाएं एक दूसरे की संपूरक होती हैं। इनका प्रयोग राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर परिवहन हेतु किया जाता है।
- स्थल, जल तथा वायु परिवहन के साधनों का उपयोग यात्रियों तथा माल के परिवहन के लिए किया जाता है। जबकि पाइपलाइन का उपयोग जल, पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस जैसे द्रवीय पदार्थों के परिवहन के लिए किया जाता है।
- अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए सर्वाधिक मात्रा में जल परिवहन को प्राथमिकता दिया जाता है, क्योंकि यह परिवहन का सबसे सस्ता माध्यम है। जबकि वायु परिवहन का सबसे महंगा माध्यम होता है।
- कम दूरी तथा घर से घर तक परिवहन सेवा प्रदान करने में सड़क परिवहन एक सस्ता एवं तीव्रगामी साधन है। जबकि भारी पदार्थों के विशाल भार को लंबी दूरी तक ढोने के लिए रेल सबसे अधिक उपयोगी है।
- विश्व में बोझा ढोने वाले पशुओं के अंतर्गत घोड़ा, कुत्ता, रेनडियर, खच्चर, ऊंट एवं बैल जैसे पशुओं को शामिल किया जाता है।
- विश्व में 1825 ई. में उत्तरी इंग्लैंड के स्टॉकटन एवं डार्लिंग्टन के मध्य पहली रेल लाइन का निर्माण किया गया।
- रेलमार्गों का सर्वाधिक घनत्व संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी भाग (विश्व के कुल रेलमार्ग का 40%)तथा पश्चिमी यूरोप में मिलते हैं।
- स्थलीय परिवहन साधनों में सड़क परिवहन सबसे अधिक उपयोगी एवं महत्वपूर्ण साधन है। सड़के दो प्रकार की होती हैं - कच्ची सड़कें एवं पक्की सड़कें।
- विश्व में सर्वाधिक सड़क घनत्व तथा अधिक सड़क वाहनों की संख्या उत्तरी अमेरिका में मिलती है।
- दूरस्थ स्थानों को आपस में जोड़ने वाली ऐसी पक्की सड़कें जिनका निर्माण अबाधित रूप से यातायात के आवागमन के उद्देश्य से किया जाता है, महामार्ग कहलाते हैं।
- उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के प्रमुख महामार्ग निम्नलिखित हैं :-
    1. ट्रांस कैनेडियन महामार्ग
    2. अलास्का महामार्ग
    3. पान- अमेरिकन महामार्ग।
- मॉस्को - व्लाडीवोस्टक महामार्ग यूरोपीय महाद्वीप का प्रमुख महामार्ग है, जो यूरोपियन रूस को साइबेरिया के पूर्वी प्रदेश से जोड़ता है।
- स्टुवर्ट महामार्ग ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप का सबसे महत्वपूर्ण महामार्ग है, जो डार्विन नगर को मेलबोर्न से जोड़ता है।
- भारत का लगभग 53 लाख किलोमीटर का सड़क नेटवर्क है जो विश्व का दूसरा सबसे बड़ा नेटवर्क है। जिसमें राष्ट्रीय महामार्ग, राज्य महामार्ग एवं अन्य सड़कों को शामिल किया गया है।
- राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 7 (NH7) वाराणसी को कन्याकुमारी से जोड़ता है, तथा भारत का यह सबसे लंबा राजमार्ग है।
- स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना के अंतर्गत नई दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, चेन्नई, कोलकाता तथा हैदराबाद महानगरों को आपस में जोड़ा गया है।
- सीमावर्ती सड़कें, अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के सहारे निर्मित किए जाते हैं। ये सड़कें सुदूरवर्ती क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को देश के प्रमुख नगरों से जोड़ने एवं प्रतिरक्षा प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।
- रेलगाड़ियां लोहे की बनी हुई पटरियों पर चलती है, जिनको रेलपथ कहा जाता है।
- रेलपथ के निम्नलिखित प्रकार होते हैं :-
    1. बड़ी लाइन : इस प्रकार के रेल पथ में पटरियों के बीच की चौड़ाई 1.5 मीटर से अधिक होती है।
    2. मानक लाइन : इस प्रकार के रेल पथ में दोनों पटरियों के बीच की दूरी 1.44 मीटर होती है।
    3. मीटर लाइन इस प्रकार के रेल पथ में दोनों पटरियों के बीच की दूरी 1 मीटर होती है।
    4. छोटी लाइन : इस प्रकार के रेल पथ में पटरियों के बीच की चौड़ाई 1 मीटर से कम अर्थात 0.67 मीटर होती है।
- वर्तमान में जिनिंग - ल्हासा रेलमार्ग विश्व का सर्वाधिक ऊंचाई पर अवस्थित रेलमार्ग है। इससे पहले पेरूवियन रेलमार्ग विश्व का सबसे अधिक ऊंचा रेल मार्ग था।
- एशिया महाद्वीप के चीन, भारत तथा जापान के सघन बसे क्षेत्रों में रेल मार्गों का संघनतम घनत्व पाया जाता है। रेलमार्ग की लंबाई की दृष्टि से चीन का विश्व में संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद दूसरा स्थान है।
- ट्रांस साइबेरियन रेलमार्ग एशिया के सुदूर पूर्व प्रशांत तट पर स्थित व्लाडीवोस्टक नगर से यूरोपीय भाग में स्थित रूस की राजधानी मॉस्को से होकर सेंट पीटर्सबर्ग बंदरगाह तक जाता है।
- उत्तरी अटलांटिक समुद्री मार्ग विश्व का सर्वाधिक व्यस्ततम समुद्री मार्ग है, जो उत्तर पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका तथा पश्चिमी यूरोप को जोड़ता है।
- महासागरीय नहरें वैसे जलमार्ग होते हैं, जो व्यापार के लिए किसी ना किसी विशेष उद्देश्य से बनाए जाते हैं।
- स्वेज नहर भूमध्यसागर और लाल सागर को जोड़ती है, जबकि पनामा नहर प्रशांत महासागर एवं अटलांटिक महासागर को जोड़ती है।

Jharkhandlab.com

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **निम्न में से किन आर्थिक क्रियाकलापों के अंतर्गत परिवहन गतिविधियों को सम्मिलित किया जाता है?**
   (क) प्राथमिक क्रियाकलाप (ख) द्वितीय क्रियाकलाप
   (ग) तृतीयक क्रियाकलाप (घ) चतुर्थ क्रियाकलाप

2. **अनेक स्थानों को परस्पर मार्गों की श्रेणियों द्वारा जोड़ दिए जाने पर किस प्रारूप का निर्माण होता है, उसे क्या कहते हैं?**
   (क) योजक (ख) नोड
   (ग) परिवहन जाल (घ) कोई नहीं

3. **कम दूरी एवं डोर टू डोर सेवाएं प्रदान करने में सर्वाधिक सस्ता एवं तीव्रगामी माध्यम है?**
   (क) सड़क परिवहन (ख) जल परिवहन
   (ग) वायु परिवहन (घ) पाइपलाइन परिवहन

4. **भाप इंजन का आविष्कार किस सदी में हुआ था?**
   (क) 17 मई (ख) 18वीं
   (ग) 9वीं (घ) 20वीं

5. **एंडीज पर्वत या भागों में निम्न में से किस पशु का प्रयोग परिवहन के माध्यम के रूप में किया जाता है?**
   (क) याक (ख) रेनडियर
   (ग) ऊंट (घ) लामा

6. **पार महाद्वीपीय स्टुअर्ट महामार्ग किन के मध्य से गुजरता है ?**
   (क) डार्विन और मेलबर्न (ख) एडमंटन और इनकोरेट
   (ग) वैंकुअर व सेंट जॉन (घ) चेगाडू और ल्हासा

7. **किस देश में रेल मार्ग के जाल का सघन तम घनत्व पाया जाता है?**
   (क) ब्राजील (ख) कनाडा
   (ग) संयुक्त राज्य अमेरिका (घ) रूस

8. **वृहद ट्रंक मार्ग जाता है?**
   (क) भूमध्य सागर और हिंद महासागर से होकर
   (ख) उत्तरी अटलांटिक महासागर से होकर
   (ग) दक्षिणी अटलांटिक महासागर से होकर
   (घ) हिंद महासागर से होकर

9. **बिग इंच पाइप लाइन के द्वारा परिवहन किया जाता है?**
   (क) दूध (ख) जल
   (ग) गैस (घ) पेट्रोलियम

10. **चैनल टनल जोड़ता है?**
    (क) लंदन बर्लिन (ख) बर्लिन पेरिस
    (ग) पेरिस लंदन (घ) बार्सिलोना बर्लिन

11. **निम्न में से कौन भारत का सबसे लंबा नेशनल हाईवे है, जो वाराणसी को कन्याकुमारी से जोड़ता है ?**
    (क) NH 7 (ख) NH 33
    (ग) NH 1 (घ) NH 10

12. **रेल लाइनों की चौड़ाई के विभिन्न प्रकारों में से मानक गेज की माप क्या होती है?**
    (क) 1 मीटर (ख) 1.5 मीटर
    (ग) 1.44 मीटर (घ) इनमें से सभी

13. **स्वेज नहर का निर्माण कब हुआ था?**
    (क) 1914 में (ख) 1869 में
    (ग) 1900 में (घ) 1969 में

14. **कील नहर स्थित है ?**
    (क) ब्रिटेन में (ख) जर्मनी में
    (ग) बेल्जियम में (घ) रूस में

15. **उच्च मूल्य वाली एवं नाशवान वस्तुओं के परिवहन का सर्वश्रेष्ठ साधन है?**
    (क) जल परिवहन (ख) स्थल परिवहन
    (ग) पाइपलाइन परिवहन (घ) वायु परिवहन

उत्तर:- 1. (ग) तृतीयक क्रियाकलाप 2. (ग) परिवहन जाल 3. (क) सड़क परिवहन 4. (ख) 18वीं 5. (घ) लामा 6. (क) डार्विन और मेलबर्न 7. (ग) संयुक्त राज्य अमेरिका 8. (ख) उत्तरी अटलांटिक महासागर से होकर 9. (घ) पेट्रोलियम 10. (ग) पेरिस लंदन 11. (क) NH7 12. (ग) 1.44 मीटर 13. (ख) 1869 में 14. (ख) जर्मनी में 15. (घ) वायु परिवहन।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **पाइपलाइन परिवहन की दो विशेषताओं को लिखें।**
   उत्तर : क. पाइपलाइन तरल एवं गैसीय पदार्थों के परिवहन का सर्वाधिक सुगम व सस्ता माध्यम है।
   ख. पाइपलाइन को असमतल क्षेत्रों तथा जल के अंदर भी बिछाया जा सकता है।

2. **संचार से आप क्या समझते हैं?**
   उत्तर : सूचनाओं को उनके उद्गम स्थान से गंतव्य तक किसी चैनल के माध्यम से पहुंचाने की प्रक्रिया को संचार कहा जाता है।

3. **साइबर स्पेस क्या है ?**
   उत्तर : विद्युत द्वारा कंप्यूटरीकृत स्पेस के विश्व को साइबर स्पेस कहा जाता है। साइबर स्पेस काल्पनिक या विचारमूलक पर्यावरण है, जिसमें कंप्यूटर नेटवर्कों से संचार संपन्न होता है।

4. **इंटरनेट के किसी एक लाभ को लिखें।**
   उत्तर : इंटरनेट के माध्यम से राष्ट्र के आर्थिक तथा सामाजिक परिदृश्य स्पेस को ई - मेल, ई वाणिज्य, ई - शिक्षा तथा प्रशासन जैसी सेवाओं में बेहतर सुधार संभव है।

5. **हार्डवेयर क्या है?**
   उत्तर: हार्डवेयर के रूप में एक कंप्यूटर सिस्टम, एक स्कैनर तथा डिजिटाइजर होता है, जिसकी सहायता से भौगोलिक सूचना प्रणाली का उपयोग किया जाता है।

6. **पार महाद्वीपीय रेलमार्ग क्या है ?**
   उत्तर : पार महाद्वीपीय रेलमार्ग ऐसे रेल मार्गों को कहा जाता है जो पूरे महाद्वीप से गुजरते हुए महाद्वीप के दो छोरों को एक दूसरे से जोड़ते हैं।

7. **जल परिवहन के दो लाभ लिखें ।**
   उत्तर : जल परिवहन के दो लाभ निम्नलिखित हैं -
   - जल परिवहन मार्गों का निर्माण नहीं करना पड़ता है।
   - यह अन्य परिवहनों की तुलना में काफी सस्ता होता है।

8. **स्वेज नहर किन दो सागरों को आपस में जोड़ती है?**
   उत्तर : स्वेज नहर भूमध्यसागर और लाल सागर को जोड़ती है।

jharkhandlab.com

9. मीटर लाइन में दो पटरियों के बीच की दूरी कितनी होती है ?

उत्तर : मीटर लाइन के रेल पथ में दोनों पटरियों के बीच की दूरी 1 मीटर होती है।

10. राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 7 किन दो स्थानों को जोड़ता है?

उत्तर : राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 7 (NH7) वाराणसी को कन्याकुमारी से जोड़ता है, तथा भारत का यह सबसे लंबा राजमार्ग है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पर्वतों, मरुस्थलों तथा बाढ़ संभावित प्रदेशों में स्थल परिवहन की क्या-क्या समस्याएं हैं?

उत्तरः- उपर्युक्त क्षेत्रों में समस्याएँ निम्नलिखित हैं-

- पर्वत मरुस्थल तथा बाढ़ संभावित क्षेत्रों में सड़कों तथा रेल मार्गों के निर्माण व रख-रखाव में काफी लागत आती है।
- पर्वतीय क्षेत्रों में तीखे ढलान के कारण सड़क मार्ग अथवा रेल मार्ग का निर्माण एक दुष्कर कार्य होता है।
- मरुस्थलीय प्रदेशों में रेतीली भूमि के कारण स्थल मार्गों का निर्माण कठिन है साथ ही रेतीली हवाओं के कारण इनके रखरखाव का खर्च भी अधिक है।
- बाढ़ प्रभावित प्रदेशों में बाढ़ के कारण स्थल मार्गों व रेल मार्गों का क्षतिग्रस्त होना एक प्रमुख समस्या है।

2. पार-महाद्वीपीय रेलमार्ग क्या होता है?

उत्तरः- पार-महाद्वीपीय रेलमार्ग उन्हें कहते हैं जो एक पूरे महाद्वीप में विस्तृत होते हैं और इसके एक छोर को दूसरे छोर से जोड़ते हैं। ये रेल मार्ग आर्थिक एवं सामाजिक कारणों से विकसित किए जाते हैं, जो उस महाद्वीप में आवागमन एवं व्यापार को प्रोत्साहित करते हैं।

प्रमुख पार महाद्वीपीय रेलमार्ग- पार साइबेरियन रेल मार्ग, पार-कैनेडियन रेल मार्ग, आस्ट्रेलियाई पारमहाद्वीपीय रेलमार्ग आदि।

3. जल परिवहन के क्या लाभ हैं ?

उत्तरः- जल परिवहन के निम्नलिखित लाभ हैं-

- परिवहन के समस्त साधनों में से जल परिवहन सबसे सस्ता है।
- वृहद् अंतरराष्ट्रीय आयात निर्यात हेतु जल परिवहन सर्वश्रेष्ठ माध्यम है।
- जलमार्ग के लिए सड़क तथा रेल पटरी की भांति मार्ग बनाने में खर्च नहीं करना पड़ता है।
- अंतरराष्ट्रीय व्यापार हेतु जल परिवहन का महत्व सर्वाधिक है।

4. परिवहन के माध्यमों के नाम बताइए-

उत्तरः- परिवहन व्यक्तियों और वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक वाहन करने की सेवा या सुविधा को कहते हैं।

- परिवहन के माध्यम स्थल परिवहन, जल परिवहन, वायु परिवहन, पाइपलाइन परिवहन, सड़क परिवहन, रेल मार्ग परिवहन, समुद्री जलमार्ग एवं आंतरिक जलमार्ग।

5. परिवहन राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है । कारण बताएं ।

उत्तरः- किसी भी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए परिवहन निम्न कारणों से महत्वपूर्ण हैं-

- किसी भी राष्ट्र के आर्थिक व सामाजिक विकास के लिए परिवहन साधनों का विकसित होना अनिवार्य है।
- परिवहन व्यवस्था किसी देश के कृषि उद्योग व्यापार के विकास की कुंजी होता है।
- परिवहन के विकास विकसित जाल द्वारा औद्योगिक उत्पादों के लिए विशाल बाजार उपलब्ध हो पाता है । साथ ही औद्योगिक केंद्रों के लिए कच्चे माल पहुंचाना भी संभव हो पाता है।
- प्रदेश की आर्थिक प्रगति वहां उपलब्ध परिवहन के स्तर पर निर्भर करती है।
- यही कारण है कि कई प्रकृति प्रदत्त संसाधनों से समृद्ध देश भी परिवहन तंत्र के समुचित विकास के अभाव में पिछड़े हुए हैं।

6. संचार प्रणाली से आप क्या समझते हैं?

उत्तरः- प्रेषक एवं प्राप्तकर्ता के बीच संदेशों के आदान-प्रदान के माध्यम को सामान्यतया संचार प्रणाली कहा जाता है। वर्तमान वैज्ञानिक युग में मानव ने संचार के विभिन्न माध्यमों का विकास कर लिया है।

संचार प्रणाली के महत्वपूर्ण माध्यम- टेलीग्राफ, फैक्स, दूरभाष, टेलीविजन, रेडियो, समाचार पत्र -पत्रिकाएं, मोबाइल सेवा, इंटरनेट आदि।

(vii) भारत में पाइपलाइन परिवहन के मुख्य लाभ बताएँ ।

उत्तरः- भारत में पाइपलाइन परिवहन के मुख्य लाभ निम्नलिखित हैं-

- पाइपलाइन परिवहन, परिवहन के नवीनतम साधनों में है।
- पाइपलाइन के रखरखाव का खर्च कम है।
- यह परिवहन के अन्य साधनों की तरह प्रदूषण नहीं फैलाते।
- इन्हें स्थल अथवा जल कहीं भी बिछाया जा सकता है।
- इनमें विशेषकर तरल एवं अधिकृत पदार्थों को लंबी दूरी तक कम खर्च में परिवहन किया जा सकता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. एक सुप्रबंधित परिवहन प्रणाली में विभिन्न विधाएँ एक दूसरे की संपूरक होती हैं। इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः- एक सुप्रबंधित परिवहन प्रणाली में विभिन्न विधाएँ एक दूसरे की संपूरक होती हैं। यह कथन निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट होता हैं-

- जैसे-जैसे परिवहन व्यवस्था विकसित होती हैं विभिन्न स्थान आपस में जुड़कर जाल तंत्र की रचना करते हैं यह तंत्र विभिन्न नोडों और योजकों से मिलकर बनता है।
- आगे चलकर अनेक स्थान मार्गों की विभिन्न श्रेणियों द्वारा जुड़ जाते हैं और परिवहन जाल का निर्माण होता है।
- स्पष्ट तौर पर हम देख सकते हैं कि परिवहन की विभिन्न विधाएं आपस में जुड़ कर एक दूसरे के संपूरक का कार्य करती हैं।
- आज परिवहन की विभिन्न विधाओं का प्रयोग विशिष्टीकृत हो चुका है जैसे अंतरराष्ट्रीय व्यापार हेतु जल परिवहन का प्रयोग।
- कम दूरी की सेवाओं हेतु सड़क परिवहन उपयुक्त है, वहीं प्रदेश के आंतरिक भागों में वृहद स्तर पर वस्तुओं के निपटान एवं लंबी दूरी की यात्रा हेतु रेल परिवहन का इस्तेमाल सर्वाधिक होता है। जबकि तीव्रतम यातायात के साधन के रूप में वायु परिवहन सर्वश्रेष्ठ है।
- इस प्रकार विशाल मात्रा में वस्तुओं के अंतरराष्ट्रीय परिवहन व व्यापार हेतु भार वाही जानवरों का प्रयोग किया जाता है। वही तटीय भागों से आंतरिक भागों में भारी एवं विद्युत मात्रा में वस्तुओं के निपटान हेतु स्थल माध्यम के अंतर्गत रेल परिवहन का प्रयोग होता है। मुख्य वितरण केंद्रों

Jharkhandlab.com

से फिर इन्हें सड़क परिवहन द्वारा विभिन्न नोडों तक पहुंचाया जाता है।

- उच्च मूल्य तथा जल्द खराब होने वाली वस्तुओं का निपटान वायु परिवहन के माध्यम से किया जाता है, साथ ही वायु परिवहन का प्रयोग विपदा ग्रस्त क्षेत्रों में बचाव हेतु एवं अन्य विभिन्न कार्यों में होता है।

2. परिवहन एवं संचार में अंतर स्पष्ट करें-

उत्तर:- परिवहन एवं संचार में निम्नलिखित अंतर है:-

परिवहन	संचार
• एक स्थान से दूसरे स्थान पर मनुष्यों एवं वस्तुओं को लाना ले जाना परिवहन कहलाता है।	• विचारों तथा संदेशों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रेषित करना संचार कहलाता है।
• परिवहन के विभिन्न माध्यम हैं, जैसे जल मार्ग, वायु मार्ग, सड़क मार्ग, पाइपलाइन परिवहन आदि।	• संचार के विभिन्न माध्यम है जैसे डाक, तार, टेलीफोन, मोबाइल, टेलीविजन, इंटरनेट, पत्र-पत्रिकाएं आदि।
• परिवहन के विभिन्न साधन पर्यावरण प्रदूषण के कारण बने हुए हैं।	• संचार के माध्यम प्रदूषण नहीं फैलाते हैं।
• परिवहन प्रणाली किसी देश के आर्थिक और सामाजिक उत्थान के लिए रीढ़ का काम करता है।	• संचार व्यवस्था किसी देश के विकास में उल्लेखनीय भूमिका निभाता है।

3. वायु परिवहन के महत्व बताएं तथा वह कौन से प्रमुख प्रदेश है जहां वायु मार्ग का सघन तंत्र पाया जाता है?

उत्तर:- वायु परिवहन के निम्नलिखित महत्व हैं-

- वायु परिवहन यातायात के तीव्रतम साधनों में से एक है।
- यह अत्याधुनिक तकनीकी पर आधारित परिवहन का अतिव्ययी माध्यम है।
- आज विश्व में 250 से भी अधिक वाणिज्यिक एयरलाइने है।
- विकसित वायु परिवहन तंत्र के माध्यम से आज विश्व का कोई भी स्थान 35 घंटे से अधिक दूरी पर नहीं रह गया है।
- यह परिवहन का वह माध्यम है जिसके द्वारा दुर्गम से दुर्गम इलाकों में आसानी से पहुंचा जा सकता है तथा आपदाओं के समय मानव जीवन को सुरक्षित रखने हेतु तीव्रतम बचाव कार्य किया जा सकता है।
- वायु परिवहन की अनगिनत लाभों के साथ कुछ हानियां भी हैं जैसे परिवहन का अत्यधिक खर्चीला माध्यम होना, सामान्य सी तकनीकी खामी का भी बड़ी दुर्घटना का कारण बनना, मौसम की गतिविधियों द्वारा अत्यधिक प्रभावित होना आदि।
- दक्षिणी गोलार्ध की अपेक्षा उत्तरी गोलार्ध में वायु मार्ग का सघन तंत्र मिलता है।
- विश्व के कुल वायु मार्गों के 60% भाग का प्रयोग अकेला यूएसए करता है।

निम्नलिखित प्रदेशों में प्रमुख वायु मार्ग पाये जाते हैं-

- एल ए, होनोलूलू, मनिला, हांगकांग, टोक्यो वायु मार्ग।
- लंदन, पेरिस, रोम, कराची, दिल्ली वायु मार्ग।
- लंदन, रोम, काहिरा, खार्तूम, जोहांसबर्ग वायु मार्ग।
- मास्को, ताशकंद, बैंकाक, सिंगापुर वायु मार्ग।
- वहीं रूस के एशियाई भाग अफ्रीका और दक्षिणी अमेरिका में वायु परिवहन सेवाओं का अभाव मिलता है।
- उत्तरी गोलार्ध में उत्तर अमेरिका, पश्चिमी यूरोप, दक्षिणी पूर्वी एशिया में वायु मार्गों का सघन तम जाल पाया जाता है जहां न्यूयॉर्क, लंदन, पेरिस, एम्स्टर्डम, शिकागो प्रमुख केंद्र है।

Jharkhandiac.com

अध्याय - 9 अंतरराष्ट्रीय व्यापार INTERNATIONAL TRADE

पाठ के मुख्य बिंदु

- व्यापार का तात्पर्य वस्तुओं और सेवाओं के स्वैच्छिक आदान-प्रदान से होता है, व्यापार के दो पक्ष होते हैं, बेचने वाला एवं खरीदने वाला।
- व्यापार के दो स्तर होते हैं, अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं राष्ट्रीय व्यापार।
- जब सेवाओं का आदान-प्रदान अर्थात् व्यापार दो देशों के मध्य होता है, तो उसे अंतरराष्ट्रीय व्यापार कहा जाता है।
- जब किसी देश के अंदर व्यापार होता है तो उसे राष्ट्रीय व्यापार कहा जाता है।
- आयात : जब वस्तुओं को दूसरे देशों या जगहों से मंगाया जाता है, तो उसे आयात कहते हैं।
- निर्यात जब वस्तुओं को दूसरे देशों या जगहों में भेजा जाता है, तो उसे निर्यात कहते हैं।
- वस्तु विनिमय दो पक्षों के मध्य परस्पर लाभ के लिए मुद्रा के जगह पर, वस्तुओं का ही एक दूसरे से आदान-प्रदान करते हैं तो उसे वस्तु विनिमय कहते हैं।
- विश्व युद्ध के बाद के समय के दौरान 'व्यापार व शुल्क हेतु सामान्य समझौता' (GATT) जैसे संस्थाओं ने (जो कि बाद में विश्व व्यापार संगठन WTO बना) शुल्क को घटाने में सहायता की।
- विश्व व्यापार संगठन : एक अंतरराष्ट्रीय संगठन, जो विश्वव्यापी व्यापार तंत्र के नियमों का निर्धारण करता है।
- व्यापार का उदारीकरण : व्यापार हेतु अर्थव्यवस्था को खोलने का कार्य मुक्त व्यापार या व्यापार उदारीकरण कहलाता है।
- व्यापार संघ : व्यापार संघ ऐसे देशों का समूह होता है जिनके भीतर व्यापारिक अनुबंधों की समान्यीकृत प्रणाली कार्य करती है।
- व्यापार संतुलन : देश के निर्यात और आयात के कुल मूल्यों के बीच अंतर जब आयात की तुलना में निर्यात की अधिकता होती है तो इसे अनुकूल व्यापार संतुलन और यदि निर्यात कम और आयात अधिक होते हैं तो उसे प्रतिकूल व्यापार संतुलन कहा जाता है।
- पतन : जलयानों पर यात्रियों को चढ़ाने व उतारने, माल लादने और चढ़ाने के साथ, नौभार के भंडारण की सुविधाओं से युक्त पोताश्रय का एक वाणिज्यिक भाग पतन या बंदरगाह कहलाता है।
- पोताश्रय : जल का एक विस्तृत क्षेत्र जहां जलयान, सागर और प्राकृतिक लक्षणों अथवा कृत्रिम कार्यों से उत्पन्न सागर की महातरंगों से सुरक्षा प्राप्त करने के लिए लंगर डालते हैं।
- डंप करना : लागत की दृष्टि से नहीं वरन भिन्न-भिन्न कारणों से अलग-अलग कीमत की किसी वस्तु को दो देशों में विक्रय करने की प्रथा डंप करना कहलाती है।
- विश्व व्यापार संगठन का मुख्यालय जिनेवा (स्विट्जरलैंड) में स्थित है।
- विश्राम पतन या मार्ग पतन : ऐसे पतन, जो मूल रूप से मुख्य समुद्री मार्गों पर विश्राम केंद्र के रूप में विकसित हुए ।जहां पर जहाज पुनः ईंधन भरने, जल भरने तथा खाद्य सामग्री लेने के लिए लंगर डालने का काम करते थे । बाद में वे वाणिज्यिक पतनों के रूप में विकसित हुए । अदन, होनोलूलू तथा सिंगापुर इसके अच्छे उदाहरण है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. संसार के अधिकतम महान पत्तन इस प्रकार वर्गीकृत किए गए हैं।
(क) नौसेना पत्तन (ख) विस्तृत पत्तन
(ग) तेल पत्तन (घ) औद्योगिक पत्तन

2. निम्नलिखित महाद्वीपों में से किस एक से विश्व व्यापार का सर्वाधिक प्रवाह होता है?
(क) एशिया (ख) यूरोप
(ग) **उत्तरी** अमेरिका (घ) अफ्रीका

3. दक्षिण अमेरिकी राष्ट्र में से कौन सा एक ओपेक का सदस्य है?
(क) ब्राजील (ख) वेनेजुएला
(ग) चिल्ली (घ) पेरू

4. निम्न व्यापार समूहों में से भारत किस का एक सदस्य है?
(क) साफ्टा (ख) आसियान
(ग) ओ ई सी डी (घ) ओपेक

5. सार्क देशों में शामिल नहीं है
(क) भारत (ख) पाकिस्तान
(ग) मालदीव (घ) अफगानिस्तान

6. 1995 में गेट का रूप बदलकर किस संगठन का उदय हुआ
(क) विश्व व्यापार संगठन (ख) यूरोपीय संघ
(ग) नाफ्टा (घ) आसियान

7. 1948 में स्थापित संगठन GATT का पूरा नाम क्या है?
(क) ग्रुप ऑफ एशियन ट्रेड एंड टेरिफ
(ख) जनरल एग्रीमेंट ऑन ट्रेड एंड टेरिफ
(ग) जनरल एशियन ट्रेड टेन्योर
(घ) ग्रुप ऑफ टेबल टेनिस

8. डब्ल्यूटीओ का मुख्यालय कहां है?
(क) जेनेवा (ख) जकार्ता
(ग) वियाना (घ) मान्टेवीडियो

9. आयात-निर्यात के बीच मूल्यों में अंतर को क्या कहते हैं?
(क) असंतुलित व्यापार (ख) विलोम व्यापार
(ग) व्यापार संतुलन (घ) अनुकूल व्यापार संतुलन

10. निम्न में से अंतरराष्ट्रीय व्यापार के प्रकार कौन-कौन है?
(क) द्वि पार्श्विक व्यापार (ख) बहु पार्श्विक व्यापार
(ग) व्यापार (घ) क और ख दोनों

उत्तरः- 1. (ख) विस्तृत पत्तन 2. (ग) उत्तरी अमेरिका 3. (ख) वेनेजुएला 4. (क) साफ्टा 5. (घ) अफगानिस्तान 6. (क) विश्व व्यापार संगठन 7. (ख) जनरल एग्रीमेंट ऑन ट्रेड एंड टेरिफ 8. (क) जेनेवा 9. (ग) व्यापार संतुलन 10. (घ) क और ख दोनों।

Jharkhandlab.com

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. विश्व व्यापार संगठन के आधारभूत कार्य कौन से हैं?

उत्तर:- विश्व व्यापार संगठन के आधारभूत कार्य निम्नलिखित हैं-

- यह विश्वव्यापी व्यापार तंत्र के लिए नियमों को निश्चित करता है।
- सदस्य देशों के बीच विवादों का निपटारा करता है।
- व्यापार संबंधी मुद्दों पर विचार-विमर्श के लिए मंच प्रदान करता है।
- विश्व संसाधनों का अनुकूलतम प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करता है।

2. ऋणात्मक भुगतान संतुलन का होना किसी देश के लिए क्यों हानिकारक होता है?

उत्तर:- ऋणात्मक भुगतान संतुलन या प्रतिकूल व्यापार संतुलन से आशय उस स्थिति से है जब निर्यातों की तुलना में आयात अधिक हो अर्थात वस्तुओं के आयात के लिए किए गए भुगतान वस्तुओं के निर्यात से प्राप्त राशि से अधिक हो।

- इस स्थिति में देश की विदेशी मुद्रा भंडार कम होती जाती है।
- देश के उद्योगों पर दबाव बढ़ता जाता है।

3. व्यापारिक समूहों के निर्माण द्वारा राष्ट्रों को क्या लाभ प्राप्त होते हैं?

उत्तर:- व्यापारिक समूहों के निर्माण द्वारा राष्ट्रों को निम्न लाभ प्राप्त होते हैं-

- विभिन्न आवश्यकताओं और उद्देश्यों की समानता लिए देशों के समूह लाभ पूर्ण व्यापार हेतु संगठनों का निर्माण करते हैं।
- इन संगठनों में व्यापारिक अनुबंधों की सामान्यीकृत प्रणाली कार्य करती है जिससे संबंधित देशों के बीच व्यापार निर्बाध रूप से संपन्न हो सके।
- प्रत्येक संबंधित देश को इन संगठनों द्वारा विकास करने के बराबर अवसर प्रदान किए जाते हैं।
- कुछ महत्वपूर्ण व्यापारिक समूह सार्क, आसियान, EU, OPEC आदि।

4. मुक्त व्यापार से आप क्या समझते हैं? इसके गुण एवं दोष बताइए।

उत्तर:- जब दो देशों के बीच व्यापारिक बाधाएं हटा दी जाती हैं तो उसे मुक्त व्यापार या व्यापार उदारीकरण कहा जाता है। मुक्त व्यापार हेतु सीमा शुल्क को पूर्ण रूप से समाप्त या कम किया जाता है साथ ही अन्य व्यापारिक बाधाओं का निराकरण किया जाता है।

गुण

- मुक्त व्यापार से घरेलू उत्पादों एवं सेवाओं को अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा मिलती है।
- व्यापार एवं उत्पादन की गुणवत्ता में वृद्धि होती है।

दोष

- मुक्त व्यापार द्वारा विकसित देश अपने उत्पादों को कम दामों में बड़ी मात्रा में अविकसित और विकासशील देशों को भेजते हैं जिससे वहां के उद्योग बंद हो जाते हैं।
- मुक्त व्यापार द्वारा विकसित एवं विकासशील देश प्रसंस्कृत वस्तुओं एवं नवीन तकनीकी हेतु पूर्ण रुपेण विकसित देशों पर निर्भर हो जाते हैं इससे इनकी अर्थव्यवस्था को हानि होती है।

5. अंतरराष्ट्रीय व्यापार के तीन महत्वपूर्ण पक्ष क्या है?

उत्तर:- दो देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं के क्रय-विक्रय को अंतरराष्ट्रीय व्यापार कहते हैं। अंतरराष्ट्रीय व्यापार के तीन महत्वपूर्ण पक्ष है-

- व्यापार का परिमाण
- व्यापार का संयोजन
- व्यापार की दिशा

6. व्यापार संतुलन से क्या समझते हैं? इसके प्रकारों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- दो या दो से अधिक देशों के मध्य निश्चित समय में होने वाले आयात निर्यात के अंतर को व्यापार संतुलन या व्यापार शेष करते है। अर्थात किसी देश का व्यापार संतुलन वह संबंध है जो एक निश्चित समयावधि में उसके आयात तथा निर्यात के मूल्यों के बीच पाया जाता है। व्यापार संतुलन दो प्रकार का होता है :-

क. **ऋणात्मक या प्रतिकूल व्यापार संतुलन**- प्रतिकूल व्यापार संतुलन से आशय उस स्थिति से है जब निर्यातों की तुलना में आयात अधिक हो।

ख. **धनात्मक या अनुकूल व्यापार संतुलन**- अनुकूल व्यापार संतुलन से आशय उस स्थिति से है जब आयातों की तुलना में निर्यात अधिक हो।

7. अंतरराष्ट्रीय व्यापार में डंपिंग से आप क्या समझते हैं?

उत्तर:- जब कोई देश या फर्म अपने घरेलू बाजार में किसी उत्पाद की कीमत से कम कीमत पर उस उत्पाद का निर्यात करती है तो इसे डंपिंग कहा जाता है। इससे आयातित देश में उसके उत्पाद की कीमत प्रभावित होती है और स्थानीय विनिर्माण उद्योगों को हानि पहुंचती है।

8. अंतरराष्ट्रीय व्यापार की आवश्यकता क्यों है?

उत्तर:- अंतरराष्ट्रीय व्यापार की आवश्यकता के निम्न कारण हैं-

- विश्व में विभिन्न देशों के बीच प्राकृतिक संसाधनों का असमान वितरण मिलता है, जो अंतरराष्ट्रीय व्यापार को आवश्यक बनाता है।
- अलग-अलग देशों में उत्पादन के विभिन्न कारक जैसे- पूंजी, प्रौद्योगिकी, कच्चे माल की उपलब्धता, सस्ते एवं कुशल श्रमिकों की उपलब्धता आदि में अंतर दिखाई देती है। जो स्थान विशेष को वस्तु विशेष के उत्पादन हेतु अनुकूल बनाता है, जिससे वे कम लागत पर वस्तुओं का उत्पादन कर पाते हैं और अंतरराष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा मिलता है।

11. अंतरराष्ट्रीय व्यापार के प्रकार कौन-कौन से हैं?

उत्तर:- अंतरराष्ट्रीय व्यापार के दो प्रकार होते हैं

क. **द्वि-पार्श्विक व्यापार** - देशों द्वारा एक दूसरे के साथ किया जाने वाला व्यापार द्वि पार्श्विक व्यापार कहलाता है। ये विभिन्न समझौतों द्वारा आपस में निर्दिष्ट वस्तुओं के व्यापार के लिए सहमत होते हैं।

ख. **बहु-पार्श्विक व्यापार** - बहुत से देशों के साथ किया जाने वाला व्यापार बहु पार्श्विक व्यापार कहलाता है।

10. अवस्थिति के आधार पर पत्तनों की व्याख्या करें-

उत्तर:- अवस्थिति के आधार पर पतन निम्न प्रकार के हैं-

- **अंतर्देशीय पत्तन** - यह पतन समुद्री तट से दूर अवस्थित होते हैं। यह समुद्र से एक नदी अथवा नहर द्वारा जुड़े होते हैं। जैसे- कोलकाता, हुगली नदी पर स्थित है।
- **बाह्य पतन** - यह गहरे जल के पतन है, जो वास्तविक पतन से दूर बने होते हैं। यह उन जहाजों, जो अपने बड़े आकार के कारण उन तक पहुंचने में अक्षम है, को ग्रहण करके मुख्य पतनों को सेवा प्रदान करते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पत्तन किस प्रकार व्यापार के लिए सहायक होते हैं? पत्तन का वर्गीकरण उनकी अवस्थिति के आधार पर कीजिए।

उत्तर:- पतन व्यापार के लिए सहायक होते हैं, इसे निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

- पतन अंतरराष्ट्रीय व्यापार के प्रवेश द्वार होते हैं।
- इन्हीं पत्तनो के द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वस्तुओं का लेनदेन संभव हो पाता है।
- पत्तन वस्तुओं के अतिरिक्त यात्रियों के एक भाग से दूसरे भाग में जाने का साधन होते हैं।
- पत्तन व्यापार हेतु जहाज में सामान लादने, उतारने तथा भंडारण में सुविधा प्रदान करते हैं।
- पत्तन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वृहद मात्रा में वस्तुओं को लंबी दूरी तक कम लागत में लाने ले जाने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है।
- आज अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का अधिकांश समुद्री भागों से ही संपन्न हो रहा है जो पत्तन के माध्यम से संभव है।

अवस्थिति के आधार पर पत्तनों को दो भागों में विभाजित किया जाता है-

क. **अंतर्देशीय पत्तन**- यह पतन समुद्री तट से दूर अवस्थित होते हैं। यह समुद्र से एक नदी अथवा नहर के द्वारा जुड़े होते हैं। जैसे कोलकाता, जो हुगली नदी पर स्थित है एक अंतर्देशीय पत्तन है।

ख. **बाह्य पतन** - यह गहरे जल के पतन है जो वास्तविक पतन से दूर बने होते हैं। यह उन जहाजों, जो अपने बड़े आकार के कारण उन तक पहुंचने में अक्षम है को ग्रहण करके पैतृक पतन को सेवा प्रदान करते हैं। एथेंस तथा यूनान में बाह्य पत्तन पिरेअस एक उच्च कोटि का संयोजक है।

2. अंतरराष्ट्रीय व्यापार कैसे लाभ पहुंचाते हैं?

उत्तर:- विभिन्न देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं का लेनदेन अंतरराष्ट्रीय व्यापार कहलाता है। इससे विश्व को निम्नलिखित लाभ प्राप्त होते हैं-

- ऐसा विश्वास किया जाता है कि अंतरराष्ट्रीय व्यापार द्वारा दोनों ही देश लाभ प्राप्त करते हैं।
- प्राचीन समय से ही अंतरराष्ट्रीय व्यापार देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं के लेन-देन का माध्यम बना हुआ है।
- अंतरराष्ट्रीय व्यापार उत्पादन में विशिष्टीकरण करण को बढ़ावा देता है जिसके फलस्वरूप उस देश में वस्तुओं के मूल्य में गिरावट तथा गुणवत्ता में वृद्धि होती है।
- आज विश्व के कई देश कुछ खास वस्तुओं के निर्माण में विशेषता हासिल कर लिए हैं।
- अंतरराष्ट्रीय व्यापार के माध्यम से आयातक देश को वे वस्तुएं उपभोग हेतु प्राप्त हो जाती हैं, जो वहां उपलब्ध नहीं होती और निर्यातक देश को अतिरिक्त वस्तुओं का निर्यात कर आर्थिक लाभ प्राप्त होता है।
- भारत में आने वाली कुछ फसलें जैसे तंबाकू, आलू, टमाटर आदि अंतरराष्ट्रीय व्यापार की ही देन है।
- आज अंतरराष्ट्रीय व्यापार राष्ट्रों की विदेश नीति का प्रमुख अंग है।
- आज कोई भी देश अंतरराष्ट्रीय व्यापार से मिलने वाले लाभों से वंचित नहीं रहना चाहता।

jharkhandjcert.com

अध्याय - 10 मानव अधिवास या बस्ती HUMAN SETTLEMENTS

पाठ के मुख्य बिंदु

- मानव बस्ती : वह स्थान जो साधारणतः स्थाई रूप से बसा हुआ हो, उसे मानव बस्ती कहते है। इसके अंतर्गत मानव आवास के लिए भवनों तथा उनके आवागमन के मार्गों को भी सम्मिलित किया जाता है।
- मानवीय बस्तियों को प्रमुख रूप से नगरीय एवं ग्रामीण बस्तियों में बांटा जाता है, पुनः ग्राम और नगरों को उनके आकार और प्रकार्यों के आधार पर बाँटा जाता है।
- ग्रामीण बस्तियाँ : ऐसा स्थान जहां लोग जीविका के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भूमि पर निर्भर रहते हैं। इनका संबंध मुख्य रूप से प्राथमिक क्रियाओं के साथ होता है।
- नगरीय बस्तियाँ : ऐसी बस्ती जिसमें निवासियों का मुख्य काम द्वितीयक और तृतीयक व्यवसायों से संबंधित होती है।
- बस्तियों को उनकी बसावट की सघनता के आधार पर संहत और प्रकीर्ण बस्तियों के अन्तर्गत रखा जाता है।
- संहत बस्ती: ऐसी बस्ती जिसमें मकान एक दूसरे के समीप स्थापित होते हैं। इन बस्तियों को एकत्रित/सघन/पुंजित या संकेंद्रित अधिवास/बस्ती भी कहा जाता है। इन अधिवासों का विकास मुख्य रूप से उपजाऊ मैदान एवं नदी घाटियों के समीप देखने को मिलता है।
- प्रकीर्ण बस्तियां : ये वैसी बस्ती है, जिनमें घर प्रायः अलग-अलग या दूर दूर स्थित होते हैं तथा दो मकानों के मध्य कृषि भूमि मिलती है। इनको एकाकी बस्ती भी कहा जाता है।
- एक नगरीय बस्ती ग्रामीण बस्ती से प्रशासनिक, व्यावसायिक तथा जनसंख्या के आधार पर पृथक की जा सकती है। विश्व के भिन्न-भिन्न देशों में इसके भिन्न-भिन्न मानक होते हैं।
- अपने प्रकार्यों के अनुसार नगरों को प्रशासनिक, सुरक्षात्मक, सांस्कृतिक, औद्योगिक तथा व्यापारिक और परिवहन आदि नगरों में वर्गीकृत किया जा सकता है।
- प्रशासनिक नगर : वैसे नगर जिनमें राष्ट्रीय सरकारों के प्रशासनिक विभागों के मुख्यालय हो प्रशासनिक नगर कहलाते हैं।
- सांस्कृतिक नगर : वह नगर जो धार्मिक, शैक्षणिक अथवा मनोरंजन के केंद्र होते हैं, सांस्कृतिक नगर कहलाते हैं।
- ऊष्मा द्वीप : नगर के आंतरिक भाग का तापमान उसके बाहरी भाग तथा समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में 4 से 8 डिग्री सेंटीग्रेड तक अधिक रहता है। नगर के आंतरिक भागों को इस स्थिति में ऊष्मा द्वीप कहा जाता है।
- मिलियन सिटी : दस लाख से अधिक लेकिन एक करोड़ से कम जनसंख्या वाले महानगरों को मिलियन सिटी कहते हैं।
- मेगा सिटी : एक करोड़ से अधिक जनसंख्या रखने वाले महानगरीय क्षेत्र मेगा सिटी कहलाते हैं।
- सन्नगर : एक विशाल नगरीय क्षेत्र जो अलग-अलग शहरों के आपस में मिलने से बना होता है।
- विश्व नगरी या मेगालोपोलिस : एक बड़ा महानगर प्रदेश जिसमें सन्नगरों का समूह मिलता है।
- ग्रामीण बस्तियों की स्थिति तथा विकास को प्रभावित करने वाले कारकों में मुख्य हैं :- जलापूर्ति, भूमि, उच्च भूमि के क्षेत्र, गृह निर्माण सामग्री, सुरक्षा, वर्षा एवं सूर्य प्रकाश। इसके अतिरिक्त मिट्टी की उत्पादकता, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक तत्व भी ग्रामीण आदिवासियों की अवस्थिति तथा विकास को प्रभावित करते हैं।
- किसी क्षेत्र में सरकार द्वारा भूमि का अधिग्रहण करके जब वहां एक कुशल योजना के माध्यम से आवास, पेयजल तथा अन्य सभी प्रकार की संरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध करा दी जाती है और बस्ती का विकास होता है तो ऐसी बस्ती नियोजित बस्ती कहलाती है।
- ग्रामीण बस्तियों को उनके प्रतिरूप के आधार पर गोलाकार, वर्गाकार, रैखिक, टी आकार, वाई आकार, तारे के आकार तथा क्रास आकृति में बांटा जा सकता है।
- नगरीय बस्तियों का वर्गीकरण वहां की जनसंख्या का आकार, व्यवसायिक संरचना तथा प्रशासनिक दृष्टिकोण से किया जाता है।
- नगरों को उनके कार्य के आधार पर कई वर्गों में बांटा गया है जैसे : प्रशासनिक नगर, व्यापारिक या व्यवसायिक नगर, सांस्कृतिक नगर, स्वास्थ्य एवं मनोरंजन नगर, औद्योगिक नगर, खनन नगर, परिवहन नगर आदि।
- ग्रामीण एवं नगरीय दोनों ही बस्तियाँ अलग-अलग प्रकार की समस्याओं का सामना करती है।
- ग्रामीण बस्तियों की समस्यायें आधारभूत सुविधाओं का न मिलना होता है जैसे शुद्ध पेयजल, पक्की सड़के, चिकित्सा, स्वच्छता, शिक्षा आदि।
- नगरीय बस्तियाँ जनसंख्या के अधिक दबाव, पर्यावरण के निम्नीकरण, आर्थिक सामाजिक-सांस्कृतिक जैसी समस्याओं का सामना करती है।

Jharkhandlab.com

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **निम्न में से किस प्रकार की बस्तियाँ सड़क, नदी या नहर के किनारे होती हैं।**
(क) वृत्ताकार। (ख) रेखीय।
(ग) चौक पट्टी (घ) वर्गीकार।

2. **निम्न में कौन-सी एक आर्थिक क्रिया ग्रामीण बस्तियों की मुख्य आर्थिक क्रिया है?**
(क) प्राथमिक। (ख) द्वितीयक।
(ग) तृतीयक। (घ) चतुर्थक।

3. **निम्न में किस प्रदेश में प्रलेखित प्राचीनतम नगरीय बस्ती रही है?**
(क) हांगही की घाटी। (ख) सिन्धु घाटी।
(ग) नील घाटी। (घ) मेसोपोटामिया।

4. **2011 के प्रारम्भ में भारत में कितने मिलियन शहर थे ?**
(क) 53 (ख) 41
(ग) 42 (घ) 14

5. **विकासशील देशों की जनसंख्या के सामाजिक ढाँचे के विकास एवं आवश्यकताओं की पूर्ति में कौन से प्रकार के संसाधन सहायक है?**
(क) वित्तीय (ख) मानवीय
(ग) प्राकृतिक (घ) सामाजिक।

6. **किसी झील के चारों ओर बसा गांव किस प्रतिरूप में होगा?**
(क) रेखीय। (ख) नाभिक।
(ग) तारा। (घ) वृत्ताकार।

7. **निम्नलिखित आर्थिक क्रियाओं में कौन ग्रामीण अधिवास से संबंधित है ?**
(क) प्राथमिक। ख) द्वितीयक।
(ग) तृतीयक। (घ) चतुर्थक।

8. **पर्वतीय प्रदेशों में किस प्रतिरूप का अधिवास पाया जाता है ?**
(क) सीढ़ीनुमा। (ख) आयताकार।
(ग) पंखाकार। (घ) तारानुमा।

9. **टुंड्रा क्षेत्रों में एस्किमो द्वारा बर्फ के टुकड़ों से बनाए गए अधिवास को क्या कहा जाता है ?**
(क) क्रॉल। (ख) इग्लू।
(ग) यूर्त। (घ) इनमें से कोई नहीं।

10. **भिलाई नगर किस वर्ग का है ?**
(क) औद्योगिक। (ख) व्यापारिक।
(ग) परिवहन। (घ) खनन।

11. **नदी के सहारे बसा गांव किस प्रतिरूप का होगा ?**
(क) आयताकार। (ख) वृत्ताकार।
(ग) अरीय। (घ) रेखीय।

12. **निम्नलिखित में कौन औद्योगिक नगर है ?**
(क) केनबेरा। (ख) सिंगापुर।
(ग) वाराणसी। (घ) जमशेदपुर।

13. **धारावी मलिन बस्ती किस नगर में स्थित है ?**
(क) कोलकाता। (ख) दिल्ली।
(ग) हैदराबाद। (घ) मुंबई।

14. **मेगा नगर की जनसंख्या कितनी होती है ?**
(क) 10 लाख। (ख) 50 लाख से अधिक।
(ग) 50 लाख से कम। (घ) एक लाख।

15. **निम्नलिखित में से कौन ऑस्ट्रेलिया की राजधानी है ?**
(क) बीजिंग। (ख) अदीस अबाबा।
(ग) कैनबरा। (घ) पर्थ।

उत्तर : 1. (ख) 2. (क) 3. (ख) 4. (क) 5. (घ) 6. (घ) 7. (क) 8. (क) 9. (ख) 10. (क) 11. (घ) 12. (घ) 13. (घ) 14. (ख) 15. (ग)।

अति लघु उत्तरीय

1. **कौन सा बस्ती प्रतिरूप सड़कों व नदियों के किनारे विकसित होता है?**
उत्तर : रेखिक प्रतिरूप।

2. **खनिज अयस्क क्या है ?**
उत्तर : पृथ्वी से स्वतंत्र अवस्था में प्राप्त धातु।

3. **अदीस अबाबा किस राष्ट्र की राजधानी है ?**
उत्तर : इथोपिया की राजधानी है। इसकी स्थापना 1878 मे की गई आदिस का अर्थ है 'नवीन' तथा अबाबा का अर्थ है 'पुष्प' अतः इस नगर को नवीन पुष्प भी कहा जाता है।

4. **'सन्नगर' शब्द का सबसे पहले प्रयोग किसने किया था ?**
उत्तर : सन्नगर शब्द का सबसे पहले प्रयोग 1915 ई. में पैट्रिक गिडीज नामक विद्वान ने किया था। सन्नगर अलग-अलग नगरो व शहरों के आपस में मिले जाने से एक विशाल नगरीय क्षेत्र सन्नगर का रूप ले लेता है। जैसे - ग्रेटर लंदन, मैनचेस्टर, शिकागो, टोक्यो, बृहत मुंबई आदि।

5. **मेगालोपोलिस शब्द का क्या अर्थ है ? इसका प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया ?**
उत्तर : मेगालोपोलिस का अर्थ 'विशाल नगर' होता है, यह एक यूनानी शब्द है इसका प्रयोग सबसे पहले 1857 ईस्वी में जीन गोटमेन नामक विद्वान ने किया था।

6. **दस लाख से अधिक जनसंख्या वाले महानगर क्या कहलाते हैं?**
उत्तर : दस लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगर को मिलियन सिटी कहा जाता है।

7. **भारत की जनगणना के अनुसार नगर में न्यूनतम कितनी जनसंख्या अनिवार्य है ?**
उत्तर : न्यूनतम जनसंख्या 5000 आवश्यक है।

8. **किस प्रकार की बस्ती प्रतिरूप झीलों व तालाबों के इर्द-गिर्द विकसित होती है।**
उत्तर : गोलाकार बस्ती प्रतिरूप।

9. **एक करोड़ या उससे अधिक जनसंख्या वाले नगरों को क्या कहते हैं ?**
उत्तरः मेगासिटी।

10. **वे नगर जिनकी आकृति विषम होती है क्या कहलाते हैं ?**
उत्तर : अनियोजित नगर।

11. **100% प्रतिशत नगरीय जनसंख्या वाले देश का नाम बताइए।**
उत्तर : सिंगापुर।

12. **विश्व का पहला मेगासिटी कौन सा है ?**
उत्तर : न्यूयॉर्क।

Jharkhandlab.com

13. विश्व के किन्ही दो नियोजित नगरों के नाम लिखो।

उत्तर : कैनबरा एवं अदीस अबाबा।

14. बस्ती किसे कहते हैं?

उत्तर: बस्ती मनुष्य के आवासों के उस संगठित निवास स्थान को कहते हैं जिसमें रहने अथवा प्रयोग करने वाले भवनों तथा उनके जाने आने के लिए बनाए गए रास्ते वह गलियों को सम्मिलित किया जाता है।

15. विश्व के किन्ही दो सांस्कृतिक नगरों के नाम लिखें।

उत्तर : जेरूसलम, मक्का, जगन्नाथपुरी, बनारस आदि।

16. विश्व के किन्हीं दो औद्योगिक नगर के नाम बताएं।

उत्तर : पिट्सबर्ग एवं जमशेदपुर।

17. उच्च भूमि के क्षेत्र से आप क्या समझते हैं?

उत्तर : वैसे क्षेत्र जहां बाढ़ के समय होने वाली क्षति से बचा जा सके एवं मकान व जीवन सुरक्षित रह सके उच्च भूमि क्षेत्र कहलाते हैं।

18. प्रकीर्ण बस्ती से आप क्या समझते हैं?

उत्तर : वैसी बस्तियाँ जिसमें मकान काफी दूर-दूर होते हैं तथा प्रायः खेतों के द्वारा एक दूसरे से अलग होते हैं।

19. पर्यटन नगर किसे कहते हैं? एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर : एक ऐसा रुचिकर क्षेत्र जहां लोग प्राकृतिक या सांस्कृतिक मूल्य, ऐतिहासिक महत्व, प्राकृतिक सुंदरता के लिए अवकाश और मनोरंजन हेतु जाया करते हैं। कश्मीर घाटी में बसा श्रीनगर भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है।

20. मानव बस्ती किसे कहते हैं?

उत्तर : वैसा स्थान जहाँ लोगों का बसाव क्षेत्र हो मानव बस्ती कहलाता है।

21. बस्तियों को उनकी बसावट की सघनता के आधार पर कितने वर्गों में बांट सकते हैं?

उत्तर : संहत बस्ती और प्रकीर्ण बस्ती।

22. ग्रामीण बस्तियों का प्रतिरूप के आधार पर किन - किन आकृतियों में बांट सकते हैं ?

उत्तर : ग्रामीण बस्तियों को उनके प्रतिरूप के आधार पर गोलाकार वर्गाकार, रैखिक, टी आकार, वाई आकार, तारे के आकार तथा क्रास आकृति में बांटा जा सकता है।

23. प्रकार्यों के अनुसार नगरों को किन वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है?

उत्तर: प्रकार्यों के अनुसार नगरों को प्रशासनिक, सुरक्षा, सांस्कृतिक, औद्योगिक तथा व्यापारिक और परिवहन आदि नगरों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

24. नगरों को किस रूप में जाना जाता है?

उत्तर : नगरों को निर्माण, खुदरा एवं थोक व्यापार व व्यवसायिक सेवाओं के केंद्र के रूप में जाना जाता हैं।

25. विश्व की सबसे पहली मिलियन सिटी कौन सी है?

उत्तर : लंदन।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. आप बस्ती को कैसे परिभाषित करेंगे ?

उत्तर- एक स्थान जो साधारणतया स्थायी या अस्थायी रूप से बसा हुआ हो, उसे बस्ती अथवा अधिवास कहा जाता है। मानव के आवासों के उस संगठित निवास स्थान को बस्ती कहा जाता है, जिसमें उनके रहने अथवा प्रयोग करने वाले भवनों तथा उनके आवागमन के मार्गों को सम्मिलित किया जाता हो।

2. स्थान (साइट) एवं स्थिति (सिचुएशन) के मध्य अन्तर बताइए।

उत्तर : स्थान तथा स्थिति के बीच अंतरः-

स्थान (Site)	स्थिति (Situation)
(1) स्थान का तात्पर्य भूमि के उस वास्तविक टुकड़े से है, जिस पर बस्ती निर्मित होती या बसती है।	स्थिति का तात्पर्य आसपास के क्षेत्रों के संबंध में गांव या शहर की स्थिति से है।
(2) बस्ती के स्थल का भौतिक वातावरण के संबंध में अध्ययन किया जाता है।	बस्ती की स्थिति का अध्ययन भौतिक वातावरण तथा सांस्कृतिक विरासत दोनों के ही संबंध में किया जाता है।
(3) आद्र बिंदु तथा शुष्क बिंदु बस्ती के लिए आदर्श स्थल हैं। उदाहरण के लिए, खनन शहर, खनिज संसाधनों के नजदीक स्थित होते हैं।	किसी भी विशिष्ट क्षेत्र में बस्ती की स्थिति प्राकृतिक वातावरण को प्रत्यक्ष रूप से प्रतिबंधित करती है।
(4)बस्ती के स्थल का भौतिक वातावरण के संबंध में स्थान उस वास्तविक भूमि का सूचक है, जिस पर बस्ती बसी होती है। जैसे एक पहाड़ी पर बसा गाँव, मैदान में बसा गाँव आदि ।	अपने परिवेश के संदर्भ में किसी स्थान की अवस्थिति कोई बस्ती जिन सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक परिवेश के बीच में बसी होती है. उन्हीं दशाओं को बस्ती की स्थिति कहा जाता है।

3. बस्तियों के वर्गीकरण के क्या आधार हैं ?

उत्तर- बस्तियों को उनके आकार तथा कार्य के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है :

आकार के अनुसार बस्तियाँ ग्रामीण तथा नगरीय बस्तियों में विभाजित होती हैं। ग्रामीण बस्ती को नगरीय बस्ती से भिन्न करने का कोई सार्वभौमिक रूप से मापदंड नहीं है। जनसंख्या का आकार एक महत्वपूर्ण मापदंड है, जो बस्ती ज्ञात करने के लिए जनगणना विभाग द्वारा अपनाया गया है। डेनमार्क तथा फिनलैंड में लगभग 250 व्यक्तियों वाली बस्तियाँ समानांतर बस्ती कहलाती हैं, जबकि जापान में 30,000 जनसंख्या करती है। वाली बस्तियाँ, ग्रामीण बस्ती के अंतर्गत आती हैं।

कार्य के अनुसार बस्तियों के स्थान तथा स्थिति उनके कार्यों द्वारा ज्ञात की जाती है। कृषकों की अधिक जनसंख्या वाले गाँव उपजाऊ कृषि क्षेत्रों में विकसित होंगे। शहर अक्सर स्थान व स्थिति की विशेषताओं से संबंधित विभिन्न कारणों से विकसित हो सकते हैं। नगरों के प्रमुख कार्य व्यापार तथा वाणिज्य, यातायात व संचार, खनन, विनिर्माण, रक्षा, प्रशासन, सांस्कृतिक तथा मनोरंजन संबंधी क्रियाएँ हैं।

4. ग्रामीण बस्तियों की समस्याओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर : ग्रामीण बस्तियों की मुख्य समस्याएँ गरीबी, बेरोजगारी, शिक्षा, स्वास्थ्य, पीने का पानी, स्वच्छता तथा सफाई आदि जैसी आधुनिक सुविधाओं की कमी है। विकासशील देशों में रहने वाले अधिकतर ग्रामीण निवासी कृषि करते हैं जो एक मौसमी प्रक्रिया है। बुआई और कटाई की अवधि के अतिरिक्त वे वर्ष के बाकी समय बिना किसी लाभदायक व्यवसाय के गुजारते हैं। फसल खराब होने के कारण होने वाली कुपोषण तथा भुखमरी एक प्राकृतिक परिणाम है।

5. अवैध बस्ती की तीन विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

उत्तर- अवैध बस्ती की तीन विशेषताएँ हैं :

(i) भौतिक विशेषताएँ: स्वाभाविक 'गैर-कानूनी' स्तर के कारण,

Jharkhandlab.com

अवैध बस्ती में अपर्याप्त सेवाएँ तथा निम्न आधार तंत्र होता है। जल की पूर्ति, स्वच्छता, विद्युत, सड़कें, निकास व्यवस्था, विद्यालय, स्वास्थ्य केंद्र तथा बाजार स्थल या तो अनुपस्थित होते हैं या अनौपचारिक रूप से व्यवस्थित किए जाते हैं।

(ii) सामाजिक विशेषताएँ : अधिकतर अवैध मकान निम्न आय समूह से संबंधित होते हैं। निवासी मुख्यतः प्रवासी होते हैं, किंतु दूसरी या तीसरी पीढ़ी तक स्थान बदलने वाले होते हैं।

(iii) वैधानिक विशेषताएँ : अवैध बस्तियों के भूस्वामित्व की पूर्णतः कमी होती है।

6. प्रशासनिक तथा सांस्कृतिक बस्तियों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- प्रशासनिक तथा सांस्कृतिक बस्तियों को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है :

- **प्रशासनिक बस्तियाँ** : ये केंद्र सरकार के प्रशासनिक विभागों के मुख्यालय होते हैं जैसे कि नई दिल्ली, कैनबेरा, मास्को, बीजिंग, वाशिंगटन डी.सी, पेरिस, लंदन आदि।
- **सांस्कृतिक बस्तियाँ** : ऐसे बस्ती धार्मिक, शैक्षिक तथा मनोविनोदात्मक नगर होते हैं। अयोध्या, मक्का, हरिद्वार, मदुरै, वाराणसी का धार्मिक महत्त्व है। अलीगढ़, ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज शैक्षणिक शहर हैं। अमरीका में लॉसवेगास, भारत शिमला, श्रीनगर मनोविनोदात्मक शहर हैं।

7. विश्व के विकासशील देशों में ग्रामीण बस्तियों की प्रमुख समस्याओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर : ग्रामीण बस्तियों की प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं :--

(क) जल की अपर्याप्त आपूर्ति।

(ख) आधारभूत सुविधाओं का अभाव।

(ग) शिक्षा व स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं का अभाव।

(घ) अनियोजित व अनाधिकृत बस्तियों की बढ़ती संख्या।

(ड.) पक्की सड़कों की समस्या।

8. मानव भूगोल में मानव बस्तियों के अध्ययन का औचित्य बताइए।

उत्तर : मानव भूगोल में मानव बस्तियों का अध्ययन मूल आधार है, क्योंकि किसी भी क्षेत्र में बस्तियों का स्वरूप उस क्षेत्र के वातावरण से मानव के सम्बन्धों को प्रदर्शित करता है। मानव द्वारा निर्मित सांस्कृतिक भू-दृश्यों में बस्ती एक महत्वपूर्ण भू-दृश्य है। बस्ती के निर्माण प्राकृतिक वातावरण के सामंजस्य के बिना संभव नहीं है। किसी क्षेत्र के मानवीय अधिवास को देखकर हम वहां के मनुष्य की संस्कृति, सामाजिक, आर्थिक एवं औद्योगिक विकास का अनुमान लगा सकते हैं अतः मानव भूगोल में मानव बस्तियों का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है।

9. उपनगरीकरण से क्या अभिप्राय है?

उत्तर: उपनगरीकरण एक नई प्रवृत्ति है, जिसमें मनुष्य शहर के घने बसे क्षेत्रों से हटकर रहन-सहन की अच्छी गुणवत्ता की खोज में शहर के बाहर स्वच्छ एवं खुले क्षेत्रों में जा रहे हैं क्योंकि वर्तमान समय में मुख्य शहर में लोगों को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे - ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, भीड़ - भाड़, गंदगी की समस्या, मलिन बस्तियाँ आदि। बड़े शहरों के समीप ऐसे महत्वपूर्ण उपनगर विकसित हो जाते हैं, जहाँ से प्रतिदिन हजारों व्यक्ति अपने घरों से कार्य स्थल पर आते - जाते हैं।

10. किस प्रकार के नगर को आप स्वस्थ नगर की श्रेणी में रखोगे?

उत्तर: विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार एक स्वस्थ नगर में निम्न विशेषताएँ होनी चाहिए-

(क) स्वच्छ एवं सुरक्षित वातावरण या पर्यावरण।

(ख) सभी निवासियों की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति।

(ग) स्थानीय सरकार में समुदाय की भागीदारी।

(घ) सभी के लिए आसानी से उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाएँ।

11. मलिन बस्ती की मुख्य समस्याओं को लिखें।

उत्तर : मलिन बस्ती नगरीय क्षेत्र का वह आवासीय भाग है, जिसमें अत्यंत निर्धन लोग बसे होते हैं तथा जो अपनी निजी भूमि खरीदने में असमर्थ होते हैं। अतः खाली पड़ी निजी अथवा सार्वजनिक भूमि पर बस जाते हैं, जिसके कारण नगरों में अनाधिकृत और अनियमित बसाव का निर्माण हो जाता है। मलिन बस्ती में रहने वाले लोगों की आर्थिक स्थिति निम्न होती है, तथा यहां गरीब लोग रहते हैं। यह क्षेत्र भीड़भाड़ वाला क्षेत्र होता है। मलिन बस्ती में रहने वाले लोगों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे स्वास्थ्य एवं सफाई की सार्वजनिक सेवाओं से यह वंचित रहते हैं। यहां नैतिकता का अभाव पाया जाता है। बाल श्रम एवं बाल अपराध जैसी प्रवृतियां मिलती है। मलिन बस्तियों का समाज असंगठित होता है।

12. प्रशासनिक नगर किसे कहा जाता है?

उत्तर : राष्ट्रीय तथा राज्यों की राजधानियां जहां केंद्रीय सरकार या प्रांतीय सरकार के प्रशासनिक कार्यालय होते हैं उन्हें प्रशासनिक नगर कहा जाता है। जैसे नई दिल्ली (भारत), केनबेरा (ऑस्ट्रेलिया), बीजिंग (चीन) इत्यादि। राज्यों में भी प्रशासनिक कार्य वाले नगर होते हैं, जैसे - पटना (बिहार), चेन्नई (तमिलनाडु) आदि।

13. विश्व में बढ़ते हुए नगरीकरण के कारण हमें किन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है?

उत्तर : विश्व के विकासशील राष्ट्रों में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर तीव्र जनसंख्या गति से पलायन हो रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों से लाखों लोग रोजगार की तलाश में नगरीय क्षेत्रों में प्रवास कर रहे हैं, इस प्रक्रिया को नगरीकरण कहा जाता है परंतु नगरीकरण के कारण निम्नलिखित समस्याएं उठ खड़ी हुई हैं-

जैसे- नगरीय बस्तियाँ जनसंख्या के अधिक दबाव, पर्यावरण के निम्नीकरण, आर्थिक सामाजिक-सांस्कृतिक जैसी समस्याओं का सामना करती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. ग्रामीण एवं नगरीय बस्ती किसे कहते हैं ? इनकी विशेषताएं बताइए।

उत्तर : **ग्रामीण बस्तियों** के निवासी अपने जीविकोपार्जन के लिए मुख्यतया भूमि के विदोहन पर निर्भर करते हैं, उन्हें ग्रामीण बस्ती कहा जाता है।

ग्रामीण बस्ती की विशेषताएँ निम्नांकित हैं-

(क) ग्रामीण बस्ती का जनसंख्या आकार नगरीय बस्ती की तुलना में छोटा होता है। विश्व के विभिन्न देशों में ग्रामीण बस्ती के जनसंख्या आकार की अधिकतम सीमा अलग-अलग मिलती है।

(ख) ग्रामीण बस्ती में व्यवसायों- कृषि, पशुपालन लकड़ी काटना तथा मत्स्य पालन जैसे प्राथमिक व्यवसाय जीविकोपार्जन का सर्वप्रमुख स्रोत होते हैं।

(ग) ग्रामीण बस्तियों में आधुनिकता का प्रभाव कम देखने को मिलता है, अतः यहाँ सामाजिक संगठन सुदृढ़ अवस्था में देखने में मिलते हैं।

(घ) ग्रामीण बस्तियों में आधारभूत सुविधाओं का कम विन्यास देखने को मिलता है।

नगरीय बस्ती - ग्रामीण बस्ती के विपरीत नगरीय बस्ती उन बस्तियों को कहा जाता है, जहाँ के निवासी अपने जीविकोपार्जन के लिए भूमि पर निर्भर न रहकर अन्य सेवाओं जैसे निर्माण उद्योग, परिवहन, व्यापार, शिक्षा, चिकित्सा, प्रशासन तथा अन्य सम्बन्धित सेवाओं पर निर्भर रहते हैं।

jharkhandlabs.com

नगरीय बस्ती की विशेषताएँ निम्नांकित हैं-

(क) नगरीय बस्तियों में गैर कृषिगत कार्यों को प्रमुखता मिलती है। जिनमें द्वितीयक तथा तृतीयक व्यवसायों को प्रधानता मिलती है।

(ख) नगरीय बस्ती की श्रेणी में आने के लिए विश्व के विभिन्न देशों में जनसंख्या का न्यूनतम आकार अलग-अलग निर्धारित है। भारत में नगर का न्यूनतम जनसंख्या आकार 5,000 है।

(ग) नगरीय बस्ती में जनसंख्या का उच्च घनत्व, त्वरित गतिशीलता, जटिल श्रम विभाजन तथा तीव्र सामाजिक अन्तर देखने को मिलता है।

(घ) नगरीय बस्तियों में आधारभूत सुविधाओं का अपेक्षाकृत अधिक विकास देखने को मिलता है।

2. विश्व के विकासशील देशों की ग्रामीण बस्तियों की छः समस्याओं का वर्णन करें।

उत्तर : विकासशील देशों में ग्रामीण बस्तियों में निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ता है :-

(क) जल की पर्याप्त आपूर्ति नहीं होती है। पर्वतीय एवं शुष्क क्षेत्रों में निवासियों को पेयजल हेतु लंबी दूरी तय करनी पड़ती है।

(ख) जल जनित बीमारियां जैसे हैजा, पीलिया आदि से प्रायः ग्रामीण जनसंख्या परेशान रहती है।

(ग) दक्षिण एशिया के देश प्रायः ग्रामीण क्षेत्र बाढ़ एवं सूखे से ग्रस्त रहते हैं।

(घ) सिंचाई सुविधाओं का अभाव होने से कृषि कार्य प्रभावित होता है।

(ड.) कच्ची सड़के एवं आधुनिक संचार के साधनों का अभाव उनके विकास मार्ग में बाधा डालता है।

(च) विशाल ग्रामीण जनसंख्या के लिए स्वास्थ्य एवं शिक्षा संबंधी पर्याप्त सुविधाओं का अभाव है।

(छ) विकास के लिए अपेक्षित आधारभूत अवसंरचना का सदैव अभाव है।

3. विकासशील देशों में नगरीय बस्तियों की समस्याओं की विवेचना कीजिए।

उत्तर- विकासशील देशों की नगरीय बस्तियों की समस्याओं को निम्नलिखित तीन वर्गों में रखा जा सकता है-

(क) **आर्थिक समस्याएँ-** विश्व के विकासशील राष्ट्रों के ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के घटते अवसरों के कारण प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में ग्रामीण जनसंख्या नगरीय क्षेत्रों की ओर पलायन कर जाती है, जिससे नगरीय क्षेत्रों में अधिक भीड़ हो जाती है, आवासों की कमी हो जाती है तथा अनाधिकृत बस्तियों की संख्या बढ़ जाती है।

(ख) **सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याएँ-** विकासशील देशों की नगरीय बस्तियों की सामाजिक सांस्कृतिक समस्याओं में निम्नलिखित समस्याएँ महत्वपूर्ण हैं-

(i) अधिकांश नगर निवासियों को आधारभूत सामाजिक ढाँचागत सुविधाएँ भी पर्याप्त रूप से नहीं मिल पाती हैं।

(ii) उपलब्ध स्वास्थ्य व शिक्षा सुविधाएँ गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन कर रही जनसंख्या की पहुँच से बाहर रहती हैं।

(iii) बेरोजगारी के बढ़ने तथा शिक्षा की कमी के कारण अपराध बढ़ जाते हैं।

(iv) पुरुष प्रधान प्रवास के कारण नगर में जनसंख्या का लिंगानुपात असन्तुलित हो जाता है।

(ग) **पर्यावरण सम्बन्धी समस्याएँ-**

(i) विभिन्न कार्यों तथा पीने के लिए जल की पर्याप्त आपूर्ति नहीं मिल पाती है।

(ii) घरेलू व औद्योगिक कार्यों के लिए परम्परागत ईंधन के व्यापक उपयोग के कारण वायु प्रदूषित हो जाती है।

(iii) औद्योगिक व घरेलू अपशिष्ट को सामान्य सीवर व्यवस्था में डाल दिया जाता है तथा इनके बिना शोधित किये अनिश्चित स्थानों पर डालने से जल प्रदूषण तथा संक्रामक बीमारियों की सम्भावना बढ़ जाती है।

(iv) नगरों में विशाल कंकरीट के ढाँचों की प्रमुखता मिलने से नगर के आन्तरिक भाग अधिक गर्म होकर ऊष्मा द्वीप के रूप में कार्य करने लगते हैं जिससे नगर के आन्तरिक भागों के तापमान समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में 1° सेग्रे. से 4° सेग्रे. तक अधिक हो जाते हैं।

4. विश्व के विभिन्न भागों में पाई जाने वाली बस्तियों की आकृति के आधार पर प्रति रूपों का वर्णन करें।

उत्तर : बस्तियों को उनकी आकृति के आधार पर निम्नलिखित प्रतिरूपों में विभक्त किया जाता है:-

(क) **रैखिक प्रतिरूप :** ऐसी बस्तियों का विकास सड़को, नदियो, नहरों, रेल लाइनों के किनारे अथवा तटबंधों के साथ-साथ होता है।

(ख) **आयताकार प्रतिरूप :** ऐसी बस्तियों का विकास ऐसे स्थानों पर होता है जहां सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती है।

(ग) **तारक प्रतिरूप :** कभी-कभी कई सड़क मार्ग विभिन्न दिशाओं से आकर एक बिंदु पर मिलते हैं, ऐसे स्थानों पर बसे गांव सभी दिशाओं से आने वाली सड़कों के किनारे बने होते हैं, वहां तारे के आकार की बस्तियां विकसित हो जाती है।

(घ) **वृत्ताकार प्रतिरूप :** ऐसी बस्तियां मुख्य रूप से किसी तालाब या झील के चारों और विकसित हो जाते हैं।

(ड.) **टी-आकृति प्रतिरूप :** ऐसी बस्तियां वहां विकसित होती है, जहां कोई सड़क मुख्य सड़क से आकर मिलती है और वहीं समाप्त हो जाती है। ऐसे स्थानों पर सड़कों के किनारे बने मकानों से टी आकृति की बस्ती विकसित हो जाती है।

(च) **दुहरा ग्राम :** नदी पर पुल के दोनों किनारों पर बसने वाले ग्रामों का प्रतिरूप दूहरा ग्राम प्रतिरूप कहलाता है।

5. ग्रामीण बस्तियों की अवस्थिति को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर: ग्रामीण बस्तियों के व स्थिति को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं:-

(क) **जलापूर्ति :** ज्यादातर ग्रामीण बस्तियां जल के स्रोतों के निकट स्थापित होती है, जैसे नदियां, झील, तालाब आदि। इन स्रोतों से वहां के निवासी भोजन के लिए मछलियां पकड़ते हैं तथा आवागमन के लिए जल्द यातायात का प्रयोग करते हैं।

(ख) **भूमि :** मानव कृषि कार्यों के लिए बेहतर और उपजाऊ भूमि का चयन करते हैं और उसके नजदीक ही ज्यादातर ग्रामीण बस्तियां स्थापित होती है।

(ग) **उच्च भूमि के क्षेत्र :** मनुष्य अपनी आवास उच्च भूमि वाले क्षेत्र में बनाते हैं ताकि बाढ़ से बचाव हो सके।

(घ) **सुरक्षा :** मानव बस्ती का निर्माण वैसे क्षेत्रों में अधिकतर होता है, जहां राजनीतिक स्थिरता, शांति एवं जीवन की सुरक्षा सुनिश्चित होती हो।

Jharkhandlab.com

(ड.) **वर्षा :** मानव बस्ती अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में बाढ़ के कारण एवं भूमि के दलदली हो जाने के कारण बहुत कम बसते हैं। कम एवं मध्यम वर्षा वाले क्षेत्रों में ग्रामीण बस्तियां पाई जाती हैं।

(च) **सूर्य प्रकाश :** सूर्य का प्रकाश मनुष्य के स्वास्थ्य पशु तथा फसलों के लिए बहुत ही आवश्यक होता है अतः समशीतोष्ण तथा शीत प्रदेशों में सूर्य प्रकाश की प्राप्ति के आधार पर ही अधिवास बनाए जाते हैं।

6. मलिन बस्तियों की प्रमुख विशेषताएं लिखें।

उत्तर : मलिन बस्तियों की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं :

(क) गंदी बस्तियों के अंतर्गत झुग्गी बस्तियां, गंदी बस्तियां, झोपड़ पट्टी तथा पटरियों के किनारे बने ढांचे सम्मिलित होते हैं।

(ख) इसमें वे लोग रहते हैं जिन्हें ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों में आजीविका की खोज में प्रवासित होने के लिए विवश होना पड़ता है।

(ग) गंदी बस्तियों के अधिकांश जनसंख्या नगरी अर्थव्यवस्था के असंगठित क्षेत्र में कम वेतन और अधिक जोखिम भरे कार्यों में लगी होती है।

(घ) गंदी बस्तियों में जीर्ण शीर्ण मकान, स्वास्थ्य की निम्न स्तरीय सुविधाएं, खुली हवा का अभाव तथा पेयजल की कमी प्रकाश तथा शौच जैसी आधारभूत आवश्यक सुविधाओं का अभाव होता है।

(ड.) गंदी बस्तियों के लोग अल्प पोषित होते हैं जिसके कारण इसमें विभिन्न रोगों और बीमारियों की संभावना बनी रहती है। यहां पर आग लगने की घटनाएं अधिक होती है।

(च) गंदी बस्तियों में गरीबी उन्हें नशीली दवाओं, शराब, अपराध, गुंडागर्दी, पलायन, उदासीनता और अंततः सामाजिक बहिष्कार की ओर धकेलती है।

7. ग्रामीण तथा नगरीय बस्तियों में आधारभूत अंतर बताएं।

उत्तर : ग्रामीण बस्ती एवं नगरीय बस्ती में निम्नलिखित अंतर है:-

ग्रामीण बस्ती	नगरीय बस्ती
1. ग्रामीण बस्तियाँ छोटी होती हैं। इसकी जनसंख्या कम होती है। प्रायः ग्रामीण बस्तियाँ प्रकीर्ण व एकाकी होती हैं।	1. नगरीय बस्तियों का आकार बड़ा होता है जनसंख्या काफी अधिक होती है और यह प्रायः सघन या एकत्रित होते हैं।
2. इनके निवासियों का व्यवसाय कृषि, पशुचारण, आखेट, खनन आदि होता है।	2. नगरवासियों के व्यवसाय उद्योग, परिवहन, व्यापार व उच्च सेवाएँ होती हैं।
3. यहाँ प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उत्पादन होता है। जैसे- भोजन के लिए अनाज, कारखानों हेतु कच्चा माल जैसे- कपास, गन्ना, जूट, ऊन आदि।	3. नगरों में निर्मित माल का उत्पादन होता है। जैसे- वस्त्र, मशीनें, औजार आदि इनसे व्यापार व परिवहन का विकास होता है।
4. गाँवों में परिवहन पिछड़ी तथा पुरानी होती हैं। जैसे–कच्ची सड़क, बैलगाड़ी आदि।	4. नगरों में परिवहन सुविधाएँ अधिकाधिक तथा विकसित होती हैं। जैसे–सड़क, रेलमार्ग, वायु मार्ग आदि।
5. गाँव में उच्च सेवाओं का अभाव होता है। ऐसी सेवाएँ यदि हैं भी तो वे प्राथमिक स्तर की होती हैं। जैसे–प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय।	5. नगरों में उच्च सेवाएँ सुलभ रहती हैं। जैसे- उच्च विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय।

8. विश्व में ग्रामीण बस्तियों की स्थिति को प्रभावित करने वाले किन्हीं पाँच कारकों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- विश्व में ग्रामीण बस्तियों की स्थिति को प्रभावित करने वाले पांच कारक निम्नलिखित हैं-

(क) **जल आपूर्ति :** जल मानव जीवन के लिए अनिवार्य है और बस्तियाँ, नदियों, झीलों, झरनों जैसे जल के स्त्रोतों के निकट ही स्थापित की जाती हैं, ताकि इनसे बस्ती के निवासियों को जल सुगमता से उपलब्ध हो सकें इन जलाशयों से पीने, नहाने, खाना बनाने, वस्त्र धोने, सिंचाई आदि के लिए जल का प्रयोग किया जाता है। कभी-कभी पानी की आवश्यकता लोगों को दलदल से घिरे दुद्वीपों अथवा नदी किनारों के निचले क्षेत्रों में बसने के लिए प्रेरित करती है।

(ख) **भूमि :** बस्तियाँ बसाने के लिए लोग उपजाऊ भूमि को प्राथमिकता देते हैं क्योंकि उपजाऊ भूमि कृषि को बढ़ावा देती है। प्राचीन काल में सभी बस्तियां नदी घाटियों की उपजाऊ भूमि पर स्थापित की गई थी। जैसे दक्षिणी-पूर्वी एशिया में नदी घाटियों के निम्न भागों एवं तटवर्ती मैदानों के निकटवर्ती भागों में बस्तियाँ बनाई गईं क्योंकि ये भाग चावल की खेती के लिए उपयोगी थे।

(ग) **गृह निर्माण सामग्री :** गृह निर्माण के लिए सामान्यतः स्थानीय रूप से मिलने वाली सामग्री का प्रयोग किया जाता प्रमुख है। इनमें पत्थर, लकड़ी, मिट्टी, सरकंडे आदि • हैं। वन क्षेत्रों में लकड़ी प्रचूर मात्रा में मिलने के कारण वहाँ ग्रामीण बस्तियाँ बस जाती हैं। चीन के लोयस क्षेत्र के निवासी कंदराओं में मकान बनाते थे, अफ्रीका के सवाना प्रदेश में कच्ची ईटों तथा धुव्रीय क्षेत्रों में एस्किमो हिम. खंडों से अपने इग्लू का निर्माण करते हैं।

(घ) **सुरक्षा :** बस्ती का निर्माण करते समय सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा जाता है और बस्तियाँ सुरक्षित स्थान पर ही बसाई जाती थीं। राजनीतिक अस्थिरता, युद्ध, उपद्रव आदि की स्थिति में गांवों को सुरक्षात्मक पहाड़ियों एवं द्वीपों पर बसाया जाता था। भारत के अधिकांश दुर्ग उच्च स्थानों पर स्थित हैं।

(ङ) **नियोजित बस्तियाँ :** इन बस्तियों का निर्माण नियोजित ढंग से सरकार द्वारा किया जाता है। इन बस्तियों में निवासियों के आवास, जल तथा अन्य सुविधाएँ उपलब्ध करा जाती हैं। इथोपिया में सरकार द्वारा ग्रामीणीकरण योजन एवं भारत में इंदिरा गांधी नहर के क्षेत्र में नहरी बस्ति का विकास इसके अच्छे उदाहरण हैं।

9. विकासशील देशों की अधिकतर आबादी ग्रामीण है। फिर भी यहाँ की ग्रामीण बस्तियाँ कई समस्याओं से जूझ रही है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : भारत, पाकिस्तान, बांग्ला देश जैसे कई विकासशील देशों में ग्रामीण जनसंख्या कुल जनसंख्या के 50 प्रतिशत से भी अधिक है। यही स्थिति विश्व के अन्य कई विकासशील देशों की है किन्तु इन देशों की ग्रामीण बस्तियाँ कई समस्याओं से जूझ रही हैं।

ग्रामीण बस्तियों की समस्याएँ

विकासशील देशों में ग्रामीण बस्तियों में जल की आपूर्ति पर्याप्त नहीं होती है। पर्वतीय एवं शुष्क क्षेत्रों में निवासियों को पेयजल हेतु लम्बी दूरियाँ तय करनी पड़ती है। जल जनित बीमारियाँ, जैसे हैजा, पीलिया आदि सामान्य समस्या है। दक्षिणी एशिया के देश प्रायः बाढ़ एवं सूखे से ग्रस्त रहते है। सिंचाई सुविधाओं का अभाव होने से कृषि कार्य प्रभावित होता है। कच्ची सड़के एवं आधुनिक संचार के साधनों का अभाव उनके विकास मार्ग में बाधा डालता है। विशाल ग्रामीण जनसंख्या के लिए स्वास्थ्य एवं शिक्षा सम्बन्धी पर्याप्त सुविधाओं का अभाव है। (शौच घर एवं कूड़ा-कचरा निस्तारण, विद्यालयों का अभाव। विकास के लिए आपेक्षित आधारभूत अवसरंचना का सदैव अभाव रहता है।

jharkhandlab.com

प्रश्न 10. बस्तियों के वर्गीकरण के क्या आधार है? किसी बस्ती को ग्रामीण कहे जाने के क्या आधार होते हैं?

उत्तर: व्यवसाय तथा जनसंख्या के आधार पर बस्तियों को ग्रामीण तथा नगरीय बस्तियों में वर्गीकृत किया जाता है। ग्रामीण बस्तियों का वर्गीकरण उनकी स्थिति, कार्य तथा आकृति के आधार पर किया जाता है। नगरीय बस्तियों का वर्गीकरण उनकी जनसंख्या, व्यवसायिक सरंचना प्रशासनिक व्यवस्था, अवस्थिति एवं आकृति के आधार पर किया जाता है।

ग्रामीण बस्ती उसे कहते हैं जहाँ के निवासियों का मुख्य व्यवसाय प्राथमिक आर्थिक क्रियाओं से संबंधित होता है जैसे कृषि, पशुपालन, खनन आदि। इसके अतिरिक्त नगरीय बस्तियों की अपेक्षा यहाँ जनसंख्या कम होती है ग्रामीण क्षेत्र निर्धारित करने के लिए विश्व के विभिन्न देशों में जनसंख्या की सीमा अलग-अलग है।

11. "आवासों की कमी और गंदी बस्तियों की वृद्धि विकासशील देशों में शहरी बस्तियों की प्रमुख समस्याएं है।" इस कथन की उदाहरणों सहित पुष्टि कीजिए।

उत्तर : उपर्युक्त कथन की निम्नलिखित उदाहरण के सहायता से पुष्टि की जा सकती हैं-

(क) लोग रोजगार के अवसर एवं नागरिक सुविधाओं के लिए शहरों की ओर आते हैं जिससे अत्यंत भीड़ की स्थिति पैदा होती है।

(ख) आधुनिक शहरों में आवासों की कमी, गंदी बस्तियों में वृद्धि और जनसंख्या का बढ़ता भाग निम्न स्तरीय आवासों में रहता है।

(ग) नगरीय बस्तियों की अनियोजित वृद्धि शहरों की सुन्दरता को धूमिल करती है।

(घ) एशिया पेसिफिक देशों में नगरीय जनसंख्या का 60 प्रतिशत भाग अनाधिकृत बस्तियों में रहता है।

(ड.) भारत में अधिकांश मिलियन सिटी 25 प्रतिशत निवासी अवैध बस्तियों में रहते हैं।

Jharkhandlab.com

भाग - 'ब'
भारत : लोग और अर्थव्यवस्था

PART - 'B'
INDIA : PEOPLE AND ECONOMY

jharkhandlab.com

New Political Map of India

Jharkhandlab.com

अध्याय - 1 जनसंख्या : वितरण, घनत्व, वृद्धि एवं संघटन
POPULATION : DISTRIBUTION, DENSITY, GROWTH AND COMPOSITION

पाठ के मुख्य बिंदु

- जनसंख्या घनत्व प्रति वर्ग किमी. क्षेत्रफल पर निवास करने वाले लोगों की संख्या को जनसंख्या घनत्व कहा जाता है। इसे गणितीय घनत्व कहते है
- कायिक घनत्व-किसी क्षेत्र की कृषि योग्य भूमि व उस क्षेत्र की जनसंख्या के बीच का अनुपात।
- कृषि घनत्व - प्रति वर्ग किमी. कृषि योग्य भूमि पर निवासित कृषक को कृषि घनत्व कहा जाता है।
- जनसंख्या वृद्धि-दो निश्चित समय अवधियों के मध्य किसी क्षेत्र विशेष के रहने वाले लोगों की संख्या में होने वाले परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि कहते है। इसकी दर को प्रतिशत में अभिव्यक्त किया जाता है।
- प्राकृतिक जनसंख्या वृद्धि : अशोधित जन्म दर तथा अशोधित मृत्यु दर के अंतर को जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि कहा जाता है।
- जनसंख्या विस्फोट-मृत्यु दर में तेजी से गिरावट तथा उच्च जन्म दर के प्रभाव से रहने पर जनसंख्या में होने वाली तीव्र वृद्धि को जनसंख्या विस्फोट कहा जाता है।
- जनसंख्या संघटन-भूगोल के अन्तर्गत जनसंख्या संघटन अध्ययन का एक सुस्पष्ट क्षेत्र है, जिसके अंतर्गत आयु संरचना, लिंग संरचना, निवास का स्थान, मानव प्रजातीय लक्षण, जातीय संरचना, भाषाई संरचना, धार्मिक संरचना व व्यावसायिक विशेषताओं आदि का अध्ययन किया जाता है। दूसरे शब्दों में जनसंख्या के भौतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विशेषताओं को जनसंख्या का संघटन कहते है
- मुख्य श्रमिक वर्ष में कम-से-कम 183 दिन कार्य करता है। सीमांत श्रमिक वर्ष में 183 दिनों से कम दिन कार्य करता है।
- कुल जनसंख्या में क्रियाशील श्रमिक जनसंख्या का प्रतिशत ही श्रम की प्रतिभागिता दर कहलाती है।
- किसी भी राष्ट्र के संसाधनों का समुचित उपयोग एवं राष्ट्र के विकास में जनसंख्या का महत्वपूर्ण योगदान होता है।
- राष्ट्र के प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग और देश की प्रौद्योगिकी एवं व्यापारिक उन्नति वहां निवास करने वाली जनसंख्या के वितरण, उनकी कुशलता एवं क्षमता पर निर्भर करती है।
- किसी भी राष्ट्र की जनसंख्या को मानव शक्ति संसाधन मानकर उनके सभी पहलुओं का अध्ययन करना आवश्यक है।
- भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है, जो संपूर्ण विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.4% है, लेकिन यहां विश्व की कुल जनसंख्या का 17.64% जनसंख्या निवास करती है।
- जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में चीन का प्रथम स्थान है, जबकि भारत का दूसरा स्थान है। लेकिन क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व में भारत सातवां स्थान रखता है।
- भारत में जनसंख्या वृद्धि तीव्र गति से बढ़ रही है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या 102.87 करोड़ थी, वहीं 2011 में 121.02 करोड़ हो गयी।
- भारत में सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य उत्तर प्रदेश है, जबकि सबसे कम जनसंख्या वाला राज्य सिक्किम है।
- भारत के केंद्र शासित प्रदेशों में सर्वाधिक जनसंख्या पुदुचेरी में तथा सबसे कम जनसंख्या लक्षद्वीप में पाई जाती है।
- भारत की 15वीं जनगणना वर्ष 2011 में संपन्न हुई, इस समय भारत के जनगणना आयुक्त सी. चंद्रमौली थे।
- भारत में जनसंख्या का वितरण असमान है। एक ओर जहां मैदानी क्षेत्र हैं वहां जनसंख्या सघन पायी जाती है, जबकि पर्वतीय और दुर्गम क्षेत्रों में जनसंख्या विरल पायी जाती है।
- जनसंख्या के असमान वितरण को अनेक कारक प्रभावित करते हैं। जैसे - उच्चावच, जलवायु, जलापूर्ति, वर्षा की मात्रा, उपजाऊ मृदा, कृषि, परिवहन की सुविधा, खनन एवं औद्योगिक केंद्र, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विशिष्टताएं आदि।
- भारत में जनसंख्या संबंधी आंकड़ों को इकट्ठा करने का कार्य भारतीय जनगणना आयोग का है यह आयोग प्रति 10 वर्षों के अंतराल पर जनगणना संपन्न कराती है।
- भारत में सर्वप्रथम जनगणना 1872 में लॉर्ड मेयो के कार्यकाल में की गई थी, जो अधूरी एवं अपूर्ण थी। वर्ष 1881 ई में पहली बार व्यवस्थित जनगणना की गई।
- भारत में जनसंख्या घनत्व भी असमान है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत का जनसंख्या घनत्व 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है।
- भारत में सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाला राज्य बिहार है, जिसका जनसंख्या घनत्व 1102 है। जबकि सबसे कम जनसंख्या घनत्व वाला राज्य अरुणाचल प्रदेश है, जिसका जनघनत्व 17 है।
- वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत 68.8 तथा नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 31.2 था।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. सन 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या निम्नलिखित में से कौन सी है ?

(क) 102. 8 करोड़ (ख) 128. 7 करोड़
(ग) 118 . 2 करोड़ (घ) 121.02 करोड़

2. निम्नलिखित राज्यों में से किस एक में जनसंख्या का घनत्व सर्वाधिक है?

(क) पश्चिम बंगाल (ख) केरल
(ग) उत्तर प्रदेश (घ) पंजाब

Jharkhandlab.com

3. **सन् 2011 की जनगणना के अनुसार निम्नलिखित में से किस राज्य में नगरीय जनसंख्या का अनुपात सर्वाधिक है?**

(क) तमिलनाडु (ख) केरल
(ख) महाराष्ट्र (घ) गोआ

4. **निम्नलिखित में से कौन-सा एक समूह भारत में विशालतम भाषाई समूह है?**

(क) चीनी-तिब्बती (ख) आस्ट्रिक
(ग) द्रविड़ (घ) भारतीय आर्य

5. **भारत में राष्ट्रीय युवा नीति कब आरंभ की गई ?**

(क) फ़रवरी 2014 (ख) फरवरी 2015
(ग) जनवरी 2014 (घ) फरवरी 2016

6. **भारत के किस राज्य का जनसंख्या घनत्व सबसे अधिक है?**

(क) पश्चिम बंगाल (ख) बिहार
(ग) उत्तर प्रदेश (घ) राजस्थान

7. **दस रुपये के नोट पर कितनी भाषाएँ छपी हुई है ?**

(क) 15 (ख) 14
(ग) 16 (घ) 17

8. **क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य कौन है ?**

(क) झारखण्ड (ख) राजस्थान
(ग) उत्तर प्रदेश (घ) मध्य प्रदेश

9. **जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक कौन सा है ?**

(क) स्थलाकृति (ख) मिट्टी प्राकृतिक
(ग) वनस्पति (घ) जलवायु

10. **वर्ष 2011 के अनुसार भारत में प्रति वर्ग किलोमीटर जनसंख्या घनत्व कितना है ?**

(क) 283 (ख) 382
(ग) 482 (घ) 400

11. **वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत के किस राज्य का जनसंख्या घनत्व सबसे कम है ?**

(क) अरुणाचल प्रदेश (ख) मेघालय
(ग) बिहार (ग) केरल

12. **निम्नलिखित राज्यों में से किस राज्य की जनसंख्या सर्वाधिक है?**

(क) महाराष्ट्र (ख) उत्तर प्रदेश
(ग) पश्चिम बंगाल (घ) बिहार।

13. **वर्तमान में भारत के कुल राज्यों की संख्या कितनी है ?**

(क) 30 (ख) 29
(ग) 38 (घ) 28

14. **भारत का कुल क्षेत्रफल कितना है ?**

(क) 32,87,263 वर्ग किलोमीटर
(ख) 32,87,260 वर्ग किलोमीटर
(ग) 32,85,263 किलोमीटर
(घ) 32,80,263 वर्ग किलोमीटर

15. **भारत में विश्व की कुल कितना प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है ?**

(क) 17.64% (ख) 17.00%
(ग) 15.64% (घ) 26.25%

उत्तर: 1 (घ) 2 (क) 3 (घ) 4 (ख) 5 (क) 6 (ख) 7 (घ) 8 (ख) 9 (घ) 10 (ख) 11 (क) 12 (ख) 13 (घ) 14 (क) 15 (क)।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **विश्व में सबसे अधिक जनसंख्या किस देश में है?**

उत्तर: चीन

2. **विश्व में दूसरा सघनतम बसा हुआ देश कौन है?**

उत्तर: भारत

3. **भारत में पहली संपूर्ण जनगणना कब हुई थी ?**

उत्तर : 1881 ई. में

4. **भारत में सर्वाधिक जनसंख्या कहां केंद्रित है?**

उत्तर: नदी घाटी क्षेत्र में

5. **कृषि जनसंख्या के अंतर्गत सम्मिलत होते हैं?**

उत्तर: कृषि जनसंख्या के अंतर्गत कृषक, कृषि मजदूर और उनके परिवार के सदस्य सम्मिलत होते हैं।

6. **भारत की जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर कितना है**

उत्तर : 1.64%

7 **भारत में 2011 की जनगणना के अनुसार श्रमिकों का प्रतिशत कितना है ?**

उत्तर : 39.8%

8. **कुल श्रमजीवी जनसंख्या का लगभग कितना प्रतिशत कृषक और कृषि मजदूर हैं?**

उत्तर : 54.6%

लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) **भारत के अत्यंत उष्ण एवं शुष्क तथा अत्यंत शीत व आद्र प्रदेशों में जनसंख्या का घनत्व निम्न है। इस कथन के दृष्टिकोण से जनसंख्या के वितरण में जलवायु की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करने में जलवायु की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मानव अति शुष्क, अत्यंत शीत, अति आद्र प्रदेशों में रहना पसंद नहीं करता है, क्योंकि वहां रहने से लोगों के क्रियाकलापों में अधिक दिक्कतें आती है । ऐसे क्षेत्र मानव के स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं होता है। अतः लोग विषम जलवायु में रहना पसंद नहीं करते हैं, फलस्वरुप वहां जनसंख्या घनत्व कम पाया जाता है।

2. **भारत के किन राज्यों में विशाल ग्रामीण जनसंख्या है? इतनी विशाल ग्रामीण जनसंख्या के लिए उत्तरदायी एक कारण को लिखिए।**

उत्तर: भारत के बिहार राज्य में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत बहुत अधिक है । विशाल ग्रामीण जनसंख्या के लिए उतरदायी कारक उपजाऊ कृषि भूमि है।

Jharkhandlab.com

3. भारत के कुछ राज्यों में अन्य राज्यों की अपेक्षा श्रम सहभागिता ऊंची क्यों है?

उत्तरः आर्थिक विकास के निम्न स्तरों वाले राज्यों में श्रम की सहभागिता दर ऊंची है, क्योंकि निर्वाह अथवा लगभग निर्वाह के आर्थिक क्रियाओं के निष्पादन के लिए अनेक कामगारों की जरूरत पड़ती है।

4. "कृषि सेक्टर में भारतीय श्रमिकों का सर्वाधिक अंश संलग्न है।" स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः भारत एक कृषि प्रधान देश है । यहां का जनसंख्या का एक बड़ा भाग अपनी आजीविका के लिए कृषि कार्य करता है । अतः कृषि सेक्टर में भारतीय श्रमिकों की सर्वाधिक लगभग 54 .6 % कृषक एवं कृषि मजदूर है।

5. राष्ट्रीय युवा नीति 2014 के दूरदर्शी प्रस्ताव क्या है?

उत्तरः देश के युवाओं को अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करने के लिए सक्षम बनाना उनके द्वारा भारत को राष्ट्रों के समूह में अपना उचित स्थान प्राप्त करने में सक्षम बनाना, इसका मुख्य उद्देश्य या दूरदर्शी प्रस्ताव है।

6. भारत सरकार की 2015 में कौशल विकास तथा उद्यमिता के लिए बनाई नीति के उद्देश्य बताइए ।

उत्तर भारत सरकार ने 2015 में कौशल विकास तथा उद्यमिता के लिए नीति बनाई है, जिसका उद्देश्य देशभर में हो रही कौशल से संबंधित गतिविधियों के लिए एक रूपरेखा प्रदान करना है । साथ ही साथ इन सभी गतिविधियों को एक मानक के साथ बांधना तथा विभिन्न कौशलों को इनके भाग केंद्रों के साथ जोड़ना है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) भारत में जनसंख्या के घनत्व के स्थानिक वितरण की विवेचना कीजिए।

उत्तरः भारत एक विशाल देश है। यह विश्व का सातवां बड़ा देश है, जिसका क्षेत्रफल 32.8 लाख वर्ग कि.मी. है। इसका जनसंख्या घनत्व 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है इतना लम्बे-चौड़े भूभाग का धरातलीय स्वरूप, मिट्टी की उर्वरता, जलवायु, प्राकृतिक संसाधनों, नगरीकरण आदि में विविधता पाई जाती है ।

सामाजिक, आर्थिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में भी विविधता पायी जाती है। इन विविधताओं का घनिष्ठ संबंध देश के जनसंख्या के स्थानिक वितरण पर पड़ता है। भारत में जनसंख्या का ऐसा ही असमान वितरण प्रदर्शित होता है। इसे निम्नलिखित वर्गों में विभक्त करते हैं।

(क) उच्च घनत्व वाले राज्य (800 व्यक्ति/वर्ग कि. मी. से अधिक)

(ख) मध्यम घनत्व वाले राज्य (400 - 800 व्यक्ति / वर्ग कि.मी.)

(ग) मध्यम से निम्न घनत्व वाले राज्य (100- 400 व्यक्ति/वर्ग कि.मी.)

(घ) अति निम्न घनत्व वाले राज्य (100 व्यक्ति/ वर्ग कि.मी. से कम)

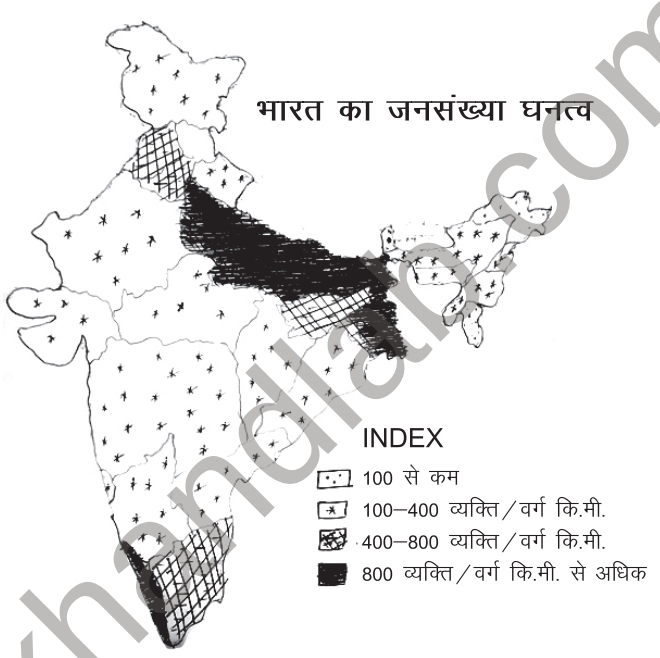

(क) **उच्च घनत्व वाले राज्य :** उच्च घनत्व वाले राज्य के अंतर्गत 800 व्यक्ति / वर्ग कि.मी. से अधिक वाले राज्य आते हैं। जनसंख्या का सर्वाधिक घनत्व बिहार (1102 व्यक्ति /वर्ग कि. मी.), पश्चिम बंगाल (1029 व्यक्ति / वर्ग कि.मी.), केरल 859 व्यक्ति /वर्ग कि.मी. तथा उत्तर प्रदेश 828 व्यक्ति / वर्ग कि.मी है।

बिहार, पश्चिम बंगाल, तथा उत्तर-प्रदेश गंगा का उपजाऊ नदी घाटी क्षेत्र हैं, जहाँ उपजाऊ मिट्टी, सिंचाई के लिए पर्याप्त जल, अनुकूल धरातलीय एवं जलवायवीय दशाएँ गहन कृषि उत्पादकता के लिए बेहतर है केरल तथा तमिलनाडु राज्यों की अधिकांश भाग पर समुद्र तटीय मैदान एवं नदी घाटियों के क्षेत्र हैं। फलस्वरूप इन राज्यों के अधिकांश भाग सघन बसे हुए हैं।

(ख) **मध्यम घनत्व वाले राज्य :** इसके अंतर्गत 400 से 800 व्यक्ति/ वर्ग कि.मी. घनत्व आते हैं। तमिलनाडु 555 व्यक्ति/वर्ग कि.मी., हरियाणा 573 व्यक्ति /वर्ग कि. मी., पंजाब 550 व्यक्ति/वर्ग कि.मी., झारखण्ड 414 व्यक्ति /वर्ग कि .मी आदि राज्य आते हैं। इन राज्यों में समुद्र तटीय मैदान, नदी घाटियों के क्षेत्र तथा पठारी क्षेत्र हैं। नदी घाटियों में अधिक घनत्व मिलता है जबकि पठारी क्षेत्र में अपेक्षाकृत कम पाया जाता है।

(ग) **मध्यम से निम्न घनत्व वाले राज्य :** इसके अंतर्गत 100 से 400 व्यक्ति/वर्ग कि.मी. घनत्व आते हैं। महाराष्ट्र, गुजरात, आंध्र प्रदेश, गोवा, कर्नाटक, असम, त्रिपुरा, राजस्थान आदि राज्य इसके अंतर्गत आते हैं। पर्वतीय, पठारी, मरुस्थलीय, मध्यम वर्षा क्षेत्र होने के कारण यहाँ जनसंख्या घनत्व मध्यम हैं।

(घ) **अति निम्न घनत्व वाले राज्य :** इसके अंतर्गत 100 व्यक्ति / वर्ग कि.मी. घनत्व से कम वाले राज्य आते हैं। सिक्किम, मिजोरम एवं अरुणाचल प्रदेश राज्य तथा अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह केन्द्र शासित प्रदेश आते हैं। अरुणाचल प्रदेश में सबसे कम घनत्व 17 व्यक्ति / वर्ग कि. मी. है। तीनों राज्य उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित पर्वतीय राज्य है, जहाँ सीमित कृषि योग्य भूमि की उपलब्धता प्रमुख कारण हैं।

Jharkhandiam.com

उपयुक्त विवरण को देखने से पता चलता है कि इन अंतर के बावजूद भारत अनेकता में एकता का देश है, जहां प्रत्येक राज्य का एक दूसरे से घनिष्ठ संबंध रखते हैं।

2. भारत की जनसंख्या के व्यावसायिक संघटन का विवरण दीजिए।

उत्तर: किसी व्यक्ति का कृषि, विनिर्माण, व्यापार, सेवा अथवा किसी प्रकार के व्यावसायिक क्रियाओं में कार्यरत होना ही जनसंख्या का व्यावसायिक संघटन कहलाता है। इस वर्ग में मुख्य रूप से 15 से 60 वर्ष के आयु समूह वाले कार्यशील जनसंख्या ही कार्यरत है। वर्ष 2011 की जनगणना में भारत की कार्यशील जनसंख्या को चार प्रमुख वर्गों में विभक्त किया गया है, जो निम्न हैं-

क. कृषक ख. कृषि मजदूर

ग. घरेलू उद्योग श्रमिक घ. अन्य श्रमिक

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहां के अधिकांश लोग कृषि करते हैं। कुल श्रमजीवी जनसंख्या का लगभग 54.6% कृषक और कृषि मजदूर हैं, जबकि केवल 3.8% घरेलू उद्योगों में लगे हैं और 41.6% अन्य श्रमिक हैं, जो गैर घरेलू उद्योगों ,व्यापार, वाणिज्य, विनिर्माण, मरम्मत तथा अन्य सेवाओं में लगे हुए हैं। द्वितीयक और तृतीयक सेक्टर की तुलना में प्राथमिक सेक्टर में श्रमिकों की संख्या अधिक है।

पुरुष श्रमिकों की संख्या स्त्री श्रमिकों की संख्या से तीनों सेक्टरों में अधिक है। महिलाओं की संख्या प्राथमिक सेंटर में अपेक्षाकृत अधिक है, जबकि कुछ वर्षों में महिलाओं की वित्तीय क्षेत्रों में सहभागिता में भी सुधार हुई है।

संवर्ग		जनसंख्या		
	व्यक्ति	कुल श्रमिकों का प्रतिशत	पुरुष	स्त्री
प्राथमिक	26,30,22.473	54.6	165447075	97575398
द्वितीयक	18336307	3.8	9775635	8560672
तृतीयक	200384531	41.6	156643220	43741311

तालिका : भारत में श्रम-शक्ति का सेक्टर-वार संघटन (2011)

पिछले कुछ दशकों में भारत में कृषि सेक्टर के श्रमिकों के अनुपात में कमी आयी है। (2001 में 58.2% से 2011 में 54.6%)। परिणामस्वरूप, द्वितीयक और तृतीयक सेक्टर में सहभागिता दर बढ़ी है यह श्रमिकों को खेत आधारित रोजगारों पर निर्भरता से गैर-खेत आधारित रोजगारों पर निर्भरता को इंगित करता है। यह देश की अर्थव्यवस्था में सेक्टर स्थानांतरण है। यह देश में सीमित कृषि भूमि की उपलब्धता के साथ-साथ बड़े पैमाने पर होने वाले नगरीकरण तथा औद्योगीकरण को भी प्रदर्शित करता है।

देश के विभिन्न सेक्टरों में श्रम सहभागिता दर की स्थानिक भिन्नता है। उदाहरण के तौर पर हिमाचल प्रदेश और नागालैंड जैसे राज्यों में कृषकों की संख्या बहुत अधिक है। दूसरी ओर बिहार, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा, झारखंड, पश्चिम बंगाल और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में कृषि मजदूरों की संख्या अधिक है। दिल्ली, चंडीगढ़ और पुडुचेरी जैसे अत्यधिक नगरीकृत क्षेत्रों में श्रमिकों का बहुत बड़ा अनुपात अन्य सेवाओं में लगा हुआ है। यह न केवल सीमित कृषि भूमि की उपलब्धता को बल्कि वृहद् स्तर पर होने वाले नगरीकरण और औद्योगीकरण द्वारा गैर-कृषि सेक्टरों में और अधिक श्रमिकों की आवश्यकता को भी इंगित करता है।

jharkhandjac.com

अध्याय - 2 प्रवास : प्रकार, कारण एवं परिणाम
MIGRATION : TYPES, CAUSES AND CONSEQUENCES

पाठ के मुख्य बिंदु

- लोगों का एक जगह से दूसरी जगह जाना ही प्रवास कहलाता है। प्रवास स्थायी और अस्थायी दोनों प्रकार के होते हैं।
- प्रवास दिक् और काल के संदर्भ में जनसंख्या के पुनर्वितरण का अभिन्न अंग और एक महत्वपूर्ण कारक है।
- एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाकर बसने की प्रक्रिया उत्प्रवास कहलाती है।
- एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाकर बसने वाला व्यक्ति उत्प्रवासी कहलाता है।
- जब व्यक्ति किसी अन्य क्षेत्र से आकर किसी देश में रहता है, तो उस क्रिया को अप्रवास कहते हैं।
- भारत की जनगणना में प्रवास की गणना दो आधारों पर की जाती है, पहला जन्म का स्थान और दूसरा निवास का स्थान।
- एक ही राज्य में एक स्थान से दूसरे स्थान को होने वाला प्रवास अंत: राज्यीय प्रवास कहलाता है।
- एक राज्य से दूसरे राज्य में होने वाला प्रवास अंतर राज्य प्रवास कहलाता है ।
- देश के भीतर ही एक जगह से दूसरी जगह प्रवास आंतरिक प्रवास कहलाता है।
- एक देश से दूसरे देशों में प्रवास अंतर्राष्ट्रीय प्रवास कहलाता है।
- अंतर्राष्ट्रीय एवं अंतर्देशीय प्रवासियों द्वारा अपने मूल स्थान अथवा निवास स्थान को भेजे जाने वाली धनराशि हुंडी कहलाती है।
- आंतरिक प्रवास की चार धाराएं पहचान की गई हैं :

  ग्रामीण से ग्रामीण,
  ग्रामीण से नगरीय,
  नगरीय से नगरीय,
  नगरीय से ग्रामीण।

- प्रतिकर्ष कारक जो लोगों को निवास स्थान अथवा उद्गम स्थान को प्रतिकूल परिस्थिति में छुड़वाने का कारण बनते हैं।
- अपकर्ष कारक जो विभिन्न स्थानों से लोगों को अनुकूल अवसर देकर आकर्षित करते हैं।
- प्रवास के उद्गम और गंतव्य क्षेत्रों के लिए लाभ और हानि दोनों उत्पन्न करते हैं ।
- प्रवास का आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और जनांकिकीय परिणाम होते हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न

(1) निम्नलिखित में से कौन सा भारत में पुरुष प्रवास का मुख्य कारण है ?

(क) शिक्षा (ख) काम और रोजगार
(ग) व्यवसाय (घ) विवाह

(2) किस राज्य में सर्वाधिक संख्या में अप्रवासी आते हैं?

(क) **उत्तर** प्रदेश (ख) महाराष्ट्र
(ग) दिल्ली (घ) बिहार

(3) भारत में प्रवास की निम्नलिखित धाराओं में से कौन सी धारा पुरुष प्रधान है?

(क) ग्रामीण से ग्रामीण (ख) ग्रामीण से नगरीय
(ग) नगरीय से ग्रामीण (घ) नगरीय से नगरीय

(4) निम्नलिखित में से किस नगरीय समूहन में प्रवासी जनसंख्या का अंश सर्वाधिक है ?

(क) मुंबई नगरीय समूह (ख) बेंगलुरु नगरीय समूह
(ग) दिल्ली नगरीय समूह (घ) चेन्नई नगरीय समूह

(5) जनगणना 2001 के अनुसार भारत में सबसे अधिक प्रवासी किस देश से आए?

(क) पाकिस्तान (ख) नेपाल।
(ग) बांग्लादेश (घ) श्रीलंका

(6) जब लोग अनुकूल अवसरों से आकर्षित होकर प्रवास करते हैं, तब वह प्रवास के कौन से कारक कहलाते हैं ?

(क) प्रतिकर्ष कारक (ख) अपकर्ष कारक
(ग) प्रतिकूल कारक (घ) इनमें से कोई नहीं

(7). किस राज्य में विवाह के बाद पति अपने पत्नी के घर आकर रहता है?

(क) असम (ख) मेघालय
(ग) त्रिपुरा (घ) सिक्किम

(8) भारत में स्त्रियों में सर्वाधिक प्रवास किस कारण से होता है?

(क) रोजगार (ख) शिक्षा
(ग) व्यापार (घ) विवाह

उत्तर: 1 (ख) 2 (ख) 3 (ख) 4 (क) 5 (ग) 6 (ख)7 (ख)8 (घ)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रवास से क्या तात्पर्य है?

उत्तर: लोगों का एक जगह से दूसरी जगह जाकर बस जाना या निवास करना ही प्रवास कहलाता है।

2. उत्प्रवासी किसे कहते हैं?

उत्तर : एक स्थान से दूसरे स्थान पर बसने वाला व्यक्ति उत्प्रवासी कहलाता है

3. किन राज्यों से उत्प्रवासियों की संख्या सर्वाधिक है?

उत्तर: **उत्तर** प्रदेश राज्य से उत्प्रवासियों की संख्या सर्वाधिक लगभग 26 लाख है

4. जनगणना 2001 के अनुसार भारत में अन्य देशों से कितने लोगों का प्रवास हुआ है?

उत्तर: भारत में अन्य देशों से 50 लाख व्यक्तियों का प्रवास हुआ है।

5. उपनिवेश काल में भारत से गए प्रवासी श्रमिक मॉरीशस एवं कैरेबियन द्वीपों में किस कार्य में लगाए गए थे?

उत्तर: भारत से गए प्रवासी श्रमिकों को रोपण कृषि में लगाया गया था।

6. भारत की जनगणना में प्रवास की गणना के दो आधार कौन-कौन थे?

उत्तर: जन्म का स्थान और निवास का स्थान दो आधार थे।

Jharkhandlab.com

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जीवन पर्यंत प्रवासी और पिछले निवास के अनुसार प्रवासी में अंतर स्पष्ट कीजिए

उत्तर : भारत की जनगणना में यदि जन्म का स्थान गणना के स्थान से भिन्न है, तो इसे जीवन पर्यंत प्रवासी के नाम से जाना जाता है। यदि निवास का पिछला स्थान गणना के स्थान से भिन्न है तो इसे पिछले निवास के अनुसार प्रवासी कहा जाता है।

2. पुरुष - स्त्री चयनात्मक प्रवास के मुख्य कारण की पहचान कीजिए

उत्तर : पुरुषों द्वारा चयनात्मक प्रवास मुख्य रूप से आर्थिक कारणों जैसे काम एवं रोजगार की तलाश के कारण होता है, जबकि स्त्री चयनात्मक प्रवास का मुख्य कारण विवाह है, जिसकी वजह से उन्हें एक जगह से दूसरी जगह प्रवास करना पड़ता है।

3. उद्गम और गंतव्य स्थान की आयु एवं लिंग संरचना पर ग्रामीण नगरीय प्रवास का क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर: ग्रामीण नगरीय प्रवास से कार्यशील आयु वर्ग 15 वर्ष से 59 वर्ष के पुरुषों की उद्गम स्थान में संख्या घट जाती है फल स्वरूप स्त्री लिंगानुपात बढ़ जाती है, जबकि गंतव्य स्थान में कार्यशील आयु वर्ग की संख्या बढ़ जाती है फलस्वरूप स्त्री लिंग अनुपात घट जाती है।

4. पर्यावरण पर प्रवास से क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर : ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर जब लोगों का प्रवास होता है, तो नगरीय क्षेत्र अत्यधिक भीड़ भाड़ वाला हो जाता है। वहां नगरीय क्षेत्रों में सामाजिक और भौतिक अवसंरचना पर दबाव पड़ता है। इससे नगरीय बस्तियों की अनियोजित वृद्धि होती है । गंदी बस्तियों तथा गन्दी बस्तियों का निर्माण होता है। प्राकृतिक संसाधनों के अति दोहन के कारण भौम जल स्तर नीचे जाने लगता है, वायु प्रदूषण, वाहित मल के निपटान और कचरे के प्रबंधन जैसे गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

5. ग्रामीण क्षेत्रों से पुरुषों का प्रवास के कारण स्त्रियों का जीवन कैसे प्रभावित होता है?

उत्तर: ग्रामीण क्षेत्रों से पुरुषों का बाह्य प्रवास के कारण स्त्रियां गांव में पीछे छूट जाती है, जिससे उन पर अतिरिक्त शारीरिक और मानसिक दबाव पड़ता है। घर तथा बच्चों की जिम्मेवारी का पूरा दायित्व स्त्रियों को निर्वाह करना पड़ता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारत में अंतरराष्ट्रीय प्रवास के कारणों की विवेचना कीजिए?

उत्तर : एक देश से दूसरे देश में होने वाले प्रवास को अंतरराष्ट्रीय प्रवास कहा जाता है । भारत में अंतरराष्ट्रीय प्रवास के निम्नलिखित कारण है :

(क) **आर्थिक कारण:** भारत एक बड़ा देश है ।जनसंख्या में यह विश्व का दूसरा बड़ा देश है, इतनी बड़ी जनसंख्या को रोजगार उपलब्ध कराना एक चुनौती है। यहां रोजगार की उचित व्यवस्था पर्याप्त नहीं है । अतः भारतीय क्षेत्र में व्याप्त बेरोजगारी, गरीबी एवं उच्च स्तरीय शिक्षण संस्थानों के अभाव के कारण भारतीयों का दूसरे देशों में उत्प्रवास होता है । दूसरी ओर पड़ोसी राष्ट्रों जैसे बांग्लादेश, तिब्बत, भूटान, श्रीलंका के निवासी भारत में अपने व्यापारिक गतिविधियों एवं रोजगार हेतु भारत में आप्रवासन करते हैं।

(ख) **राजनीतिक कारण** : भारत का संविधान व्यापक है। इसकी राजनीतिक व्यवस्था लचीली है। भारत वसुधैव कुटुंबकम में विश्वास रखता है, अतः लाखों लोग पड़ोसी देशों से अवैध रूप से भारत में घुसपैठ कर बस गए हैं ।भारत के पड़ोसी देश बांग्लादेश, भूटान, नेपाल आदि देशों के प्रवासियों की संख्या बहुत अधिक है । भारत के लाखों लोग अच्छा विकल्प या अवसरों की सुविधाओं के कारण प्रतिवर्ष संयुक्त राज्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड आदि देशों में जाते हैं।

(ग) **धार्मिक एवं सामाजिक कारक** : भारत में लाखों व्यक्ति भारत- पाकिस्तान बंटवारा के बाद, हिंदू धर्म वाले भारत में आ गए तथा मुस्लिम संप्रदाय के लोग इस्लामिक देशों में उत्प्रवास कर गए । जहां उन्हें धार्मिक व सामाजिक कारणों से पूर्ण सुरक्षा की अनुभूति होती है। फलस्वरूप बहुत संख्या में लोग उत्प्रवास किए।

(घ) **अन्य कारण** : विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास के बाद लाखों युवाओं ने तकनीकी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त की। बेहतर अवसर के लिए वे पश्चिमी विकसित देशों की ओर उत्प्रवास करने लगे। संयुक्त राज्य अमेरिका, खाड़ी देशों और यूरोपीय देशों में तकनीकी क्षेत्रों में रोजगार के बेहतर विकल्प प्रवास के लिए आकर्षित किए।

2. प्रवास के सामाजिक जनांकिकीय परिणाम क्या- क्या है?

उत्तर : प्रवास में एक जगह से दूसरी जगह के लोगों के साथ सामंजस्य स्थापित होता है। एक संस्कृति का दूसरे संस्कृति के साथ मेल होता है। अतः प्रवास के अच्छे और बुरे दोनों ही प्रभाव दिखाई पड़ते हैं।

(क) **सामाजिक प्रभाव**

प्रवासियों द्वारा सामाजिक रूप से अनेक परिवर्तन होते हैं ।प्रवासी सामाजिक परिवर्तन के अभिकर्ताओं के रूप में कार्य करते हैं। नवीन प्रौद्योगिकियों, परिवार नियोजन, बालिका शिक्षा इत्यादि से संबंधित नई विचारधाराओं का नगरीय क्षेत्रों से ग्रामीण क्षेत्रों की ओर प्रसार इन्हीं के माध्यम से होता है ।प्रवास से विभिन्न संस्कृतियों के लोगों का अंतर मिश्रण होता है, जो समाज के संकीर्ण विचारों को हटाते हुए मिश्रित संस्कृति के उदविकास में सकारात्मक योगदान देता है। नए लोगों के संपर्क से उस स्थान के लोगों की मानसिक सोच विस्तृत होती है। दूसरी ओर निम्न आर्थिक स्तर के कुछ लोग हिंसा से ग्रसित होकर अपराध और नशीले पदार्थों के सेवन जैसा सामाजिक कार्यों में संलिप्त हो जाते हैं।

(ख) **जनांकिकीय परिणाम**

प्रवास से देश के अंदर जनसंख्या का पुर्नवितरण होता है । ग्रामीण से नगरीय प्रवास के द्वारा नगरों में क्रियाशील जनसंख्या 15 से 59 आयु वर्ग में वृद्धि होती है। यह प्रवास पुरुष प्रधान होता है, ग्रामीण क्षेत्रों की युवा, कुशल एवं दक्ष लोगों का बाह्य प्रवास जनांकिकीय संघटन पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। फलस्वरूप वहां का लिंग अनुपात बढ़ जाता है अर्थात महिलाओं की संख्या बढ़ जाती है। दूसरी ओर जब नगरों में लोग जाकर प्रवास करने लगते हैं । तब उस क्षेत्र में पुरुषों की संख्या में वृद्धि हो जाती है, क्रियाशील जनसंख्या बढ़ जाती है तथा वहां का लिंग अनुपात घट जाता है। फलस्वरूप आयु एवं लिंग संरचना में गंभीर असंतुलन पैदा कर देता है, प्रवासियों के उद्गम और गंतव्य स्थानों में लिंग अनुपात असंतुलित हो जाता है।

jharkhandweb.com

अध्याय - 3 मानव विकास HUMAN DEVELOPMENT

पाठ के मुख्य बिंदु

- मानव विकास का तात्पर्य जन कल्याण के लिए सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पक्ष के विकास से है। इन बातों को ध्यान में रखकर संयुक्त राष्ट्र ने मानव विकास की संकल्पना का लक्ष्य राष्ट्रों के सामने प्रस्तुत किया।
- संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (United nation development program, UNDP) के द्वारा मानव विकास से संबंधित रिपोर्ट 1990 में प्रस्तुत किया गया, जिसमें लोगों के सामने विकल्प के विस्तार की प्रक्रिया को समझाया गया। इसके अंतर्गत दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन, शिक्षा और उच्च जीवन स्तर पर विशेष ध्यान दिया गया।
- विकास वास्तव में स्वतंत्रता है, तथा इसका संबंध प्रायः आधुनिकीकरण, अवकाश सुविधा, तथा संपन्नता से जुड़ा हुआ है। वर्तमान समय में विकास के प्रतीकों में कंप्यूटरीकारण, औद्योगिकरण, प्रभावी परिवहन एवं संचार नेटवर्क, बेहतर एवं सुदृढ़ शिक्षा व्यवस्था, आधुनिक एवं उन्नत चिकित्सा सुविधा तथा व्यक्तिगत सुरक्षा जैसे तथ्यों को शामिल किया जाता है।
- भारत जैसे विकासशील राष्ट्रों की बात की जाए तो, वास्तविकता यह है कि अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, भूमिहीन कृषि श्रमिकों, गरीब कृषकों तथा गंदी व मलिन बस्तियों में निवास करने वाली जनसंख्या का एक बड़ा भाग आज भी सर्वाधिक अभावग्रस्त दशाओं में अपना जीवन यापन कर रहा है।
- वर्ष 2021 में विश्व के 191 देशों में 121 करोड़ से अधिक जनसंख्या रखने वाला भारत, मानव विकास सूचकांक में विश्व के 132वें स्थान पर तथा सन् 2011 में 134वें स्थान पर रहा। इस दृष्टिकोण से भारत को मध्यम मानव विकास वाले देशों की श्रेणी में शामिल किया जाता है।
- भारत में गरीब जनसंख्या का सर्वाधिक प्रतिशत रखने वाले राज्यों में क्रमशः ओडीशा, बिहार एवं छत्तीसगढ़ का स्थान मुख्य रूप से है।
- भारत के कुल जनसंख्या में लगभग 29.80% जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे है।
- किसी भी राष्ट्र में स्वस्थ जीवन के प्रमुख सूचकों के अंतर्गत रोग व पीड़ा मुक्त जीवन एवं दीर्घ आयु जैसे तथ्यों को शामिल किया जाता है।
- स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत 2 अक्टूबर 2014 से राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में ग्रामीण तथा शहरी स्तर पर प्रारंभ किया गया। वास्तव में महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ पर यह श्रद्धांजलि के रूप में प्रारंभ किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य स्वच्छ भारत का निर्माण करना है।
- किसी राष्ट्र में सामाजिक सशक्तिकरण के लिए भूख, गरीबी, दासता, अज्ञानता, बंध्याकरण एवं निरक्षरता जैसे बुराइयों को समाज से दूर करना आवश्यक है।
- वर्ष 2011 के अनुसार भारत की कुल साक्षरता दर 74.04% है, जिसमें पुरुष साक्षरता 80.9% तथा महिला साक्षरता 64.5% है।
- भारत के राज्यों में साक्षरता दर में असमानता पाई जाती है। सर्वाधिक साक्षरता वाले राज्यों में केरल व मिजोरम जैसे राज्य है, जिनकी साक्षरता दर क्रमशः 93.9% एवं 91.6% है।
- न्यूनतम साक्षरता दर वाले राज्यों में राजस्थान (52.7%), बिहार (53.3%) झारखंड (56.2%) एवं अरुणाचल प्रदेश (59.6%) को शामिल किया गया है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. मानव विकास के प्रमुख तत्व हैं?
(क) स्वस्थ जीवन (ख) शिक्षा
(ग) उच्च जीवन स्तर (घ) इनमें यह सभी

2. झारखण्ड में साक्षरता दर कितनी है ?
(क) 92.4% (ख) 66.41 %
(ग) 90.92 % (घ) 46.5 3%

3. भारत के निम्नलिखित राज्यों में से किस एक में 0-6 आयु वर्ग के बच्चों में लिंग अनुपात निम्नतम है?
(क) गुजरात (ख) हरियाणा
(ग) पंजाब (घ) हिमाचल प्रदेश

4. मानव विकास सूचकांक में भारत के निम्नलिखित राज्यों में से किस एक की कोटि उच्चतम है?
(क) केरल (ख) तमिलनाडु
(ग) पंजाब (घ) हरियाणा

5 भारत के निम्नलिखित राज्यों में से किस एक में स्त्री साक्षरता निम्नतम है?
(क) जम्मू कश्मीर (ख) अरुणाचल प्रदेश
(ग) झारखंड (घ) बिहार

6. भारत में निम्नलिखित केंद्र शासित प्रदेशों में किस एक की साक्षरता दर उच्चतम है?
(क) लक्षद्वीप
(ख) चंडीगढ़
(ग) दमन और दीव
(घ) अंडमान और निकोबार दीप

7. भारत के किस राज्य में सर्वाधिक जीवन प्रत्याशा पाई जाती है?
(क) केरल (ख) कर्नाटक
(ग) उत्तर प्रदेश (घ) मध्य प्रदेश

8. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) 15 जुलाई 2004, 15वीं मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार मानव विकास के कौन-कौन से सूचकांक बताए गए हैं?
(क) जीवन प्रत्याशा (ख) साक्षरता
(ग) प्रति व्यक्ति आय (घ) इनमें से सभी

9. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) द्वारा प्रथम मानव विकास रिपोर्ट का प्रकाशन कब किया गया है?
(क) 1980 ई. में (ख) 1985 ई. में
(ग) 1990 ई. में (घ) 1995 ई. में

10. निम्न में से किसे मानव विकास सूचकांक के रूप में जाना जाता है?
(क) दीर्घजीविता (ख) ज्ञान आधार
(ग) उच्च जीवन स्तर (घ) उपर्युक्त सभी

11. निम्न में से कौन मानव विकास का सामाजिक सूचक है ?
(क) शिशु मृत्यु दर (ख) साक्षरता
(ग) रोजगार (घ) आय

Jharkhandlab.com

12. **केरल का मानव विकास सूचकांक कितना है?**
(क) 0.532 (ख) 0.533
(ग) 0.790 (घ) 0.523

13. **गांधीजी के अनुसार एक व्यक्ति और एक राष्ट्र के जीवन में उच्चतर लक्ष्य प्राप्त करने की कुंजी क्या है?**
(क) व्यक्तिगत मितव्ययिता
(ख) सामाजिक धन की न्यासधारिता
(ग) अहिंसा
(घ) इनमें से सभी

उत्तर- 1. (घ) इनमें सभी 2. (ख) 66.41% 3. (ख) हरियाणा 4. (क) केरल 5. (घ) बिहार 6. (क) लक्षद्वीप 7. (क) केरल 8. (घ) इनमें से सभी 9. (ग) 1990 ई. में 10. (घ) उपर्युक्त सभी 11. (ख) साक्षरता 12. (ग) 0.790 13. (घ) इनमें से सभी

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **सामाजिक सशक्तिकरण क्या है?**

उत्तर- समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों की सामर्थ्य और विकल्पों के अवसर में वृद्धि तथा भूख, गरीबी, दासता, अज्ञानता तथा निरक्षरता से मुक्त होकर मानव विकास प्राप्त करना सामाजिक सशक्तिकरण कहलाता है।

2. **भारत के बच्चों में घटते लिंगानुपात के दो कारण बताइए ?**

उत्तर- भारत में बच्चों के घटते लिंगानुपात के दो कारण निम्नलिखित हैं

1. सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन

2. लिंग परीक्षण विधियों की सुविधा

3. **मानव विकास क्यों आवश्यक है?**

उत्तर- मानव विकास से गरीबी घटती है, उत्पादन में वृद्धि होती है, राजनीति में स्थिरता आती है, तथा देश का सर्वांगीण विकास होता है इसलिए मानव विकास आवश्यक है।

4. **मानव विकास को परिभाषित कीजिए?**

उत्तर - मानव विकास राजनीतिक स्वतंत्रता, स्वास्थ्य, भौतिक पर्यावरण से लेकर आर्थिक सामाजिक तक सभी प्रकार के विकल्पों को सम्मिलित करते हुए लोगों के विकल्पों में विस्तार जैसे- उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, सेवाओं तथा सशक्तिकरण अवसरों में वृद्धि की प्रक्रिया है। अतः मानव विकास लोगों के विभिन्न प्रकार के विकल्पों का विस्तार, मानव विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है।

5. **मानव विकास के मापन के तीन प्रमुख कारण कौन-कौन से हैं?**

उत्तर- संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने मानव विकास को निर्धारित करने के लिए 3 मापक का निर्माण किया है। सूचकांकों के अंतर्गत अन्य संबंधित सूचकांक भी सम्मिलित है। अतः यह संयुक्त सूचकांक निम्नलिखित हैं -

1. दीर्घजीविता

2. ज्ञान आधार तथा

3. उच्च जीवन स्तर।

6. **उत्तरी भारत के अधिकांश राज्यों में मानव विकास के निम्न स्तरों के दो कारण बताइए?**

उत्तर - भारत के दक्षिणी राज्यों की अपेक्षा उत्तरी राज्यों में मानव विकास का स्तर निम्न पाया जाता है। इसके दो प्रमुख कारण है -

1. उत्तरी भारत के राज्यों में सामाजिक विकास अर्थात साक्षरता दर दक्षिणी राज्यों की अपेक्षा निम्न है जिससे आर्थिक विकास और शैक्षिक उपलब्धि का निम्न स्तर ही मानव विकास के स्तर का प्रमुख कारण है।
2. उत्तर भारत के राज्यों का आर्थिक विकास निम्न है। यहां गरीबी रेखा से नीचे जनसंख्या का अधिक होना है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **भारत में लिंग संरचना का विवरण दीजिए?**

उत्तर- प्रति हजार पुरुषों की संख्या में स्त्रियों की संख्या लिंगानुपात कहलाती है। भारत में स्त्रियों का अनुपात पुरुषों की अपेक्षा निरंतर कम होते जा रहा है। जैसे- 1971 ई. की जनगणना में प्रति 1000 पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या मात्र 930 थी। 1981 ई. की जनगणना में स्त्रियों का यह अनुपात 934 हुआ परंतु 1991 ई. में प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या पुनः घटकर 929 हो गई और 2001 ई. में प्रति हजार पुरुषों की संख्या पर स्त्रियों की संख्या 933 आ गई तथा अंतिम जनगणना 2011 के अनुसार यह संख्या बढ़कर 940 पर आ गई है।

2. **मानव विकास को ध्यान में रखकर विश्व में भारत की स्थिति का मूल्यांकन कीजिए?**

उत्तर - संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत को मध्यम मानव विकास दर्शाने वाले देशों में रखा गया है। विश्व में 188 देशों में भारत का स्थान 130 वां है।स्वतंत्रता के बाद भारत ने काफी प्रगति की है।भारत के विभिन्न राज्यों में केरल का स्थान प्रथम है जिसका संयुक्त सूचकांक 0.790 है। इसके बाद दिल्ली (0.750) का स्थान आता है। जबकि बिहार, असम, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, ओडिशा जैसे राज्य सबसे नीचे क्रम में आने वाले हैं। भारत जैसे देश में मानव विकास की विषमता के उत्तरदायी कारक जैसे -सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक आदि है।

3. **भारत में स्त्री साक्षरता के प्रादेशिक प्रतिरूपों का वर्णन कीजिए?**

उत्तर - भारत में पुरुष एवं स्त्री साक्षरता दर में काफी अंतर है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में कुल पुरुष साक्षर 82.14% है इसके विपरीत स्त्री साक्षरता केवल 65.46% है। देश में स्त्री साक्षरता 1951 में 8.86% थी जो 2011 में बढ़कर 65.46% हो गई जो लगभग 8 गुनी वृद्धि है। देश में राज्य स्तर पर सर्वाधिक साक्षरता केरल में 91.98% है तथा दूसरे एवं तीसरे पर क्रमशः मिजोरम 89.40 तथा गोवा 81.89% है। इसके विपरीत सबसे कम साक्षरता बिहार 53.33% है। केंद्र शासित प्रदेशों में चंडीगढ़ 81.38% दिल्ली 80.93% जैसे उच्च साक्षरता पाई जाती है।

निष्कर्ष के रूप में यह देखा जाता है कि 18 राज्यों में स्त्री साक्षरता राष्ट्रीय औसत से अधिक है तथा 10 राज्यों में राष्ट्रीय औसत से कम है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. **भारत में लिंगानुपात विषमता के प्रमुख कारण बताइए?**

उत्तर- भारत में लिंगानुपात विषमता के प्रमुख कारण निम्न है-

क. सामाजिक कारण एवं सांस्कृतिक कारण
ख. आर्थिक कारक
ग. प्रवास
घ. महामारियाँ एवं युद्ध

क. **सामाजिक कारण एवं सांस्कृतिक कारक** - भारत जैसे विकासशील देश में बहुत सारे क्षेत्रों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक रीति-रिवाजों के कारण स्त्री की अपेक्षा पुरुषों को अधिक महत्त्व दिया जाता है। पुरुष प्रधान समाज होने के कारण स्त्री-पुरुष में भेदभाव किया जाता है अतः

Jharkhandlab.com

लिंगानुपात प्रतिकूल पाया जाता है और भ्रूण हत्या, स्त्री शिशु हत्या, स्त्रियों के प्रति घरेलू हिंसा के कारण हत्या होती है।

ख. **आर्थिक कारक** - सामान्यता यह देखा जाता है कि विकसित देशों में लिंगानुपात अनुकूल होता है, लेकिन भारत जैसे विकासशील देश में लिंग अनुपात प्रतिकूल होते हैं। बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव जिससे प्रसव के कारण स्त्री मृत्यु दर अधिक होता है, साथ ही सामाजिक भेदभाव और आर्थिक कारण से स्त्री मृत्यु दर अधिक देखा जाता है।

ग. **प्रवास** - भारत जैसे विकासशील देश में ग्रामीण क्षेत्रों में लिंगानुपात अधिक पाया जाता है, जबकि नगरीय क्षेत्रों में लिंगानुपात कम पाया जाता है, क्योंकि बहुत सारे ग्रामीण काम की तलाश में नगर की ओर पलायन करते हैं जिससे ग्रामीण क्षेत्रों की लिंगानुपात कम हो जाती है, इसके अलावा लड़कियां का विवाह हो जाने के कारण वह अपने मायके क्षेत्र से ससुराल की ओर प्रवास करती है, जिससे लिंगानुपात में असर पड़ता है।

घ. **महामारियाँ एवं युद्ध** - सामान्यतः पुरुषों में स्त्रियों की अपेक्षा कम प्रतिरोधक क्षमता पाया जाता है। अगर स्थिति सामान्य रही तो महामारियाँ के दौरान पुरुष अधिक लपेटे में आ जाते हैं, जिससे उनकी मृत्यु ज्यादा होती है जिससे लिंगानुपात पर गहरा असर पड़ता है । इसका सबसे अच्छा उदाहरण कोरोना (COVID-19) है।

अगर किसी क्षेत्र में लंबे समय तक युद्ध छिड़ी हुई है तो वहां पुरुषों की संख्या में कमी हो जाती है, क्योंकि प्रायः युद्ध के लिए अधिकतर पुरुष सैनिक ही भाग लेते हैं जिससे पुरुष सैनिक मारे जाते हैं और लिंगानुपात में कमी हो जाती है। इसका अच्छा उदाहरण रूस है, जिसका लिंगानुपात पर प्रतिकूल प्रभाव है।

2. मानव विकास क्या है? क्या साक्षरता मानव विकास के स्तर को परिलक्षित करती है? विवेचना कीजिए।

उत्तर- मानव विकास मानव जाति के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक उत्थान व विकास से जुड़ा हुआ होता है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) के द्वारा 1990 में प्रकाशित पहली मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार, मानव विकास के प्रमुख तत्व- दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन, शिक्षा तथा उच्च जीवन स्तर है राजनीतिक सामाजिक स्वतंत्रता मानव अधिकारों की गारंटी, निर्भरता तथा आत्मसम्मान इसके प्रमुख तत्व है।

साक्षरता मानव विकास के स्तर को परिलक्षित करती है-

साक्षरता मानव विकास को निर्धारित करने वाले सूचकांकों में महत्वपूर्ण है। शिक्षा मानव विकास की कुंजी है, शिक्षा के विकास से मानव का विकास करने का अवसर प्राप्त होता है। शिक्षा से गरीबी, अज्ञानता, बंधुआकरण आदि की बाधाओं से मुक्ति प्राप्त होता है। मानव सोच में सकारात्मक वृद्धि होती है, अपनी समस्याओं से लड़ने की शक्ति आती है तथा समाधान का मार्ग प्राप्त करने में प्रोत्साहन मिलता है।

विश्व के विकसित देशों या भारत के विकसित राज्यों में जहां साक्षरता दर ऊंची है वहां के क्षेत्रों में विकास में साक्षरता अहम भूमिका निभा रही है हम भारत के उच्च एवं निम्न साक्षरता दर वाले राज्य और विकास के प्रादेशिक स्तर के अंतर को देख सकते हैं जैसे -भारत में मानव विकास कोटि में केरल उच्चतम स्थान रखता है यहां साक्षरता दर देश में सबसे अधिक हैं इसके विपरीत बिहार मानव विकास क्रम में सबसे निम्न स्तर रखता है, इसका मुख्य कारण यहां की साक्षरता दर सबसे निम्न है। इससे स्पष्ट होता है कि मानव विकास सूचकांक तथा साक्षरता दर में धनात्मक संबंध है । अतः साक्षरता मानव विकास स्तर को परिलक्षित करती है।

jharkhandlab.com

अध्याय - 4 मानव बस्तियाँ HUMAN SETTLEMENTS

पाठ के मुख्य बिंदु

- किसी भी प्रकार और आकार के घरों के समूह जिनमें मानव निवास करते हैं, मानव बस्ती कहलाता है।
- मानव अपने निवास हेतु जिन आवासों का निर्माण करते हैं, उन आवासों के समूह को अधिवास या बस्ती कहते हैं। मानव आवासों में अस्थायी तंबुओं, झोपड़ियां, कच्चे मकान, पक्के मकान, इमारतें आदि सम्मिलित की जाती है।
- बस्तियों का आकार बदल जाने पर उनकी आर्थिक विशेषता तथा सामाजिक संरचना तो बदलती ही है, साथ ही उसकी पारिस्थितिकी तथा प्रौद्योगिकी में भी पर्याप्त अंतर देखने को मिलते हैं।
- वैसे क्षेत्र जहां की आबादी विरल होती है, यहां बस्तियों का आकार छोटा होता है, गांव कहा जाता है। जिनमें कृषि तथा अन्य प्राथमिक व्यवसायों की प्राथमिकता होती है।
- सघन रूप से अवस्थित बड़े आकार की बस्तियों को नगर कहते हैं, तथा इनमें द्वितीयक तथा तृतीयक व्यवसायों की प्रधानता होती है।
- मानव बस्तियों में निवास करने वाले लोगों के कार्य एवं बस्तियों के आकार के आधार पर इनको दो प्रकार से विभक्त किया गया है - ग्रामीण बस्तियां एवं नगरीय बस्तियां।
- ग्रामीण बस्तियों के निवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि पशुपालन, आखेट, लकड़ी काटना तथा खनन करना होता है।
- नगरीय बस्तियों के निवासी मुख्य रूप से द्वितीयक एवं तृतीयक व्यवसाय में संलग्न रहते हैं। इन व्यवसायों में मुख्यतः निर्माण उद्योग, परिवहन, वाणिज्य एवं व्यापार, उच्च सेवाएं तथा प्रशासनिक सेवाओं को शामिल किया जाता है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या विरल होती है, अतः यहां जन घनत्व कम पाया जाता है। जबकि नगरों में जनसंख्या अधिक होती है, अतः यहां जनसंख्या घनत्व भी अधिक पाया जाता है।
- भारत के ग्रामीण बस्तियों को मुख्यता चार भागों में विभक्त किया गया है :- गुच्छित बस्तियां, अर्द्ध गुच्छित अथवा विखंडित बस्तियां, पल्ली बस्तियां, परिक्षिप्त् बस्तियां या एकाकी बस्तियां।
- भारत में नगरीकरण के स्तर का मापन कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या के प्रतिशत के रूप में किया जाता है।
- वर्ष 2001 के अनुसार भारत में नगरीय जनसंख्या 28.16 करोड़ थी, जो कि 2011 में बढ़कर 37.71 करोड़ हो गई है। अर्थात भारत की कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 31.16% हो गया है।
- भारत की जनगणना 2011 में 1 लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों को निम्नलिखित तीन श्रेणियां में विभक्त किया जाता है :-
- 1 से 10 लाख नगरीय जनसंख्या वाले नगरीय केंद्र को नगर कहा जाता है।
- 10 लाख से 50 लाख की जनसंख्या वाले नगरों को महानगर कहते हैं।
- 50 लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों को मेगानगर के अंतर्गत रखा गया है।
- स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत ऐसे नगरों को विकसित एवं प्रोत्साहित करना है, जिनमें कई उद्देश्यों को लागू किया जा सके जैसे :- आधारभूत सुविधाएं, स्वच्छ व प्रदूषण मुक्त पर्यावरण, बेहतर जीवन सुविधा, प्राकृतिक आपदाओं के कम जोखिम वाले क्षेत्र निर्मित करना, संसाधनों के माध्यम से सस्ती सुविधा तथा समग्र विकास को प्रोत्साहन आदि।
- नगरों को कार्यात्मक वर्गीकरण के आधार पर प्रशासनिक नगर, औद्योगिक नगर, परिवहन नगर, वाणिज्यिक नगर, खनन नगर, छावनी नगर, धार्मिक तथा सांस्कृतिक नगर एवं पर्यटन नगरों के रूप में विभाजित किया जाता है।
- गैरिसन नगर को छावनी नगर भी कहा जाता है, यहां मुख्य रूप से सैन्य संबंधी कार्यों का संपादन किया जाता है।
- कुछ नगरों का विकास वहां की उत्तम जलवायु तथा प्राकृतिक सुंदरता के कारण पर्यटक नगर के रूप में हो जाता है । इन नगरों में प्रमुख आर्थिक क्रियाकलाप पर्यटन व्यवसाय ही होते हैं। जैसे नैनीताल, मसूरी, शिमला, माउंट आबू आदि।
- प्रशासनिक नगर के अंतर्गत प्रत्येक देश और प्रदेश के वैसे नगर एवं राजधानी प्रदेशों को शामिल किया जाता है, जहां मुख्य रूप से प्रशासनिक कार्य किए जाते हैं। जैसे दिल्ली।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. मेगा नगर की जनसंख्या कितनी होती है?
(क) 10 लाख (ख) 50 लाख से अधिक
(ग) 50 लाख से कम (घ) 1 लाख

2. क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से भारत का सबसे बड़ा राज्य कौन सा है?
(क) मध्य प्रदेश (ख) उत्तर प्रदेश
(ग) राजस्थान (घ) महाराष्ट्र

3. इनमें कौन सा नगर सबसे बाद में बसाया गया है?
(क) अदीस अबाबा (ख) चंडीगढ़
(ग) कैनबरा (घ) जोहान्सबर्ग

4. इनमें से कौन औद्योगिक नगर नहीं है?
(क) दुर्गापुर (ख) जमशेदपुर
(ग) रुड़की (घ) सलेम

5. भिलाई किस वर्ग से संबंधित है?
(क) औद्योगिक नगर (ख) व्यापारिक नगर
(ग) खनन नगर (घ) परिवहन नगर

6. ग्रामीण बस्तियों के कितने प्रकार हैं?
(क) चार (ख)पांच
(ग) तीन (घ) छः

7. निम्नलिखित में से कौन-सा पठारी नगर है?
(क) नागपुर (ख) आबू
(ग) मॉस्को (घ) फिलाडेल्फिया

8. निम्नलिखित में से कौन व्यवसायिक नगर है?
(क) जेरूसलम (ख) पिट्सबर्ग
(ग) बीजिंग (घ) एमस्टरडम

Jharkhandlab.com

9. नदी किनारे बसा गांव किस प्रतिरूप में आएगा?

(क) आयताकार (ख) क्रीम

(ग) वृत्ताकार (घ) रेखीय

10. निम्नलिखित बस्तियों के प्रतिरूप में से कौन-सा सड़कों के किनारे विकसित होता है?

(क) आयताकार प्रतिरूप

(ख) टी- आकार प्रतिरूप

(ग) तारे के आकार का प्रतिरूप

(घ) रैखिक प्रतिरूप

11. निम्नलिखित में से कौन सा सांस्कृतिक नगर है?

(क) जेरूसलम (ख) मैंनचेस्टर

(ग) असोका (घ) फ्रेंकफर्ट

12. नदियों की डेल्टाई भाग में कौन सा प्रतिरूप पाया जाता है?

(क) अरीय (ख) तारा

(ग) चैकरबोर्ड (घ) पंखा

13. निम्नलिखित आर्थिक क्रियाओं में कौन ग्रामीण अधिवासो से संबंधित है ?

(क) प्राथमिक (ख) द्वितीयक

(ग) तृतीयक (घ) चतुर्थ

14. किसी झील के चारों ओर बसा गांव किस प्रतिरूप में आएगा?

(क) रेखीय (ख) वृत्ताकार

(ग) नाभिक (घ) तारा

15. पर्वतीय प्रदेशों में किस प्रतिरूप का अधिवास पाया जाता है?

(क) आयताकार (ख) सीढ़ीनुमा

(ग) पंखा (घ) तारा

उत्तर- 1. (ख) 50 लाख से अधिक 2. (ग) राजस्थान 3. (ख) चंडीगढ़ 4. (ग) रुड़की 5. (क) औद्योगिक नगर 6. (क) चार 7. (क) नागपुर 8. (घ) एमस्टरडम 9. (घ) रेखीय 10. (घ) रैखिकप्रतिरूप 11. (क) जेरूसलम 12. (घ) पंखा 13. (क) प्राथमिक 14. (ख) वृत्ताकार 15. (ख) सीढ़ीनुमा

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. नगरीय अधिवास से क्या समझते हैं?

उत्तर- नगरीय अधिवास का तात्पर्य उस बस्ती से होता है, जो अपने क्षेत्र में सबसे बड़ी, सबसे अधिक सुविधा सम्पन्न, जैसे अस्पताल की सुविधा, स्कूल की सुविधा, संस्कृति तथा सभ्यता में उन्नत, और परिवहन-साधनों से युक्त होती है।

2. तारे के आकार का प्रतिरूप का वर्णन करें ?

उत्तर- ग्रामीण बस्तियों में वैसे जगह जहां पर अनेक सड़क मार्ग आकर मिलते हैं तथा सड़क मार्ग के सहारे - सहारे घर बन जाते हैं, जिससे तारे का प्रतिरूप विकसित हो जाता है।

3. ग्रामीण अधिवासो के लोग कौन-कौन से आर्थिक क्रियाओं में संलग्न होते हैं?

उत्तर- ग्रामीण बस्तियों के लोगों का मुख्य आर्थिक कार्य कृषि ,पशुपालन, लकड़ी काटना, तथा मत्स्य पालन जैसे प्राथमिक व्यवसाय हैं।

4. सघन या संहत एकत्रित बस्तियों से क्या समझते हैं?

उत्तर- जिन अधिवासो में बस्तियों के घर आस-पास परस्पर सटे हुए होते हैं । उन्हें सघन या एकत्रित बस्तियां कहा जाता है।

5. रेखिक प्रतिरूप का निर्माण किस प्रकार होता है?

उत्तर- ग्रामीण बस्ती में जब मकान सड़क, नदी, नहर ,घाटी के किनारे अथवा तटबंध पर स्थापित होते हैं, ऐसे जगहों पर रेखिक प्रतिरूप का निर्माण होता है।

6. व्यापारिक एवं व्यवसायिक नगर से क्या समझते है?

उत्तर - इस श्रेणी के नगर में व्यापारिक एवं व्यवसायिक कार्यो की प्रधानता मिलती है। जैसे लाहौर, बगदाद एवं मुंबई कृषि बाजार, विनिपेग एवं कंसांस नगर आदि।

7. सन्नगर से क्या समझते हैं

उत्तर - दो या अधिक नगर के परस्पर मिल कर विशाल नगर में बदल जाते हैं । अतः सन्नगर एक विशाल विकसित नगरीय क्षेत्र होता है। सन्नगर शब्द का प्रयोग सबसे पहले 1915 में पैट्रिक गिडीज नामक विद्वान ने किया था।

8. प्रकीर्ण या एकाकी बस्तियों से क्या समझते हैं?

उत्तर - प्रकीर्ण या एकाकी बस्तियां वे बस्तियां कहलाती है, जिनमें बस्ती के घर दूर-दूर या अलग-अलग होते हैं तथा दो मकानों के बीच प्रायः कृषि भूमि का क्षेत्र मिलता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. ग्रामीण तथा नगरीय बस्तियों में अंतर बताइए?

उत्तर- **ग्रामीण बस्तियां** - ग्रामीण बस्तियों में निवास करने वाले लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि, पशुपालन, आखेट, लकड़ी काटना, खनन करना जैसे प्रमुख प्राथमिक व्यवसाय होते हैं । गांव में सेवाओं का स्तर निम्न होता है।ग्रामीण बस्तियों में जनसंख्या कम निवास करती है तथा जनघनत्व कम पाया जाता है अधिकांश ग्रामीण बस्तियों प्रकीर्ण एवं एकांकी होती है।

नगरीय बस्तियां - नगरीय बस्तियों के निवासी द्वितीय व तृतीय व्यवसाय में जैसे निर्माण उद्योग, परिवहन, वाणिज्य एवं व्यापार सेवाएं तथा प्रशासन आदि से जुड़े होते हैं। नगरीय बस्तियों में उच्च सेवाएं जैसे -उच्च शिक्षा के स्तर, अस्पताल ,पुलिस व्यवस्था आदि पाया जाता है ।नगरों में जनसंख्या घनत्व ज्यादा होती है तथा नगरीय बस्तियां सघन बस्तियां होती है।

2. भारत में स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत नगरों को विकसित करने के लिए कौन-कौन से उद्देश्य हैं?

उत्तर - भारत में स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत नगरों के विकसित करने के लिए निम्नलिखित उद्देश्य को लागू किया जा सकता है-

क. नगरों के निवासियों को स्वच्छ व प्रदूषण मुक्त पर्यावरण प्रदान करना।

ख. नगरों के लोगों के लिए बेहतर जीवन सुविधाएं प्रदान करना।

ग. आधारभूत सुविधाओं एवं अवसंरचनाओं को विकसित करना तथा उनके समाधानों को लागू करना।

घ. नगरों के प्राकृतिक आपदाओं के कम जोखिम वाले क्षेत्रों के रूप में निर्मित करना।

ङ. नगरों में सारी सुविधाएं प्रदान करना नगरों में सतत् तथा समग्र विकास को प्रोत्साहित करना ।

च. नगरों को ऐसे स्मार्ट सिटी के रूप में विकास करना ताकि वह मॉडल के रूप में नगरों के लिए लाइट हाउस के रूप में काम करें।

Jharkhandlab.com

3. भारत की पल्ली और परिक्षिप्त ग्रामीण बस्तियों में अंतर स्पष्ट कीजिए?

उत्तर- भारत में पल्ली बस्तियां और परिक्षिप्त बस्तियां में निम्न अंतर है-

पल्ली बस्तियां- इन बस्तियों का निर्माण जातीय व्यवस्था के कारण उत्पन्न सामाजिक अलगाव से होता है। इन बस्तियों में एक से अधिक जातियों के लोग रहते हैं। भारत में इस प्रकार की बस्तियां मुख्य रूप से मध्य गंगा मैदान, निम्न गंगा मैदान, छत्तीसगढ़ एवं हिमालय की निचली घाटियों में पाए जाते हैं। इन बस्तियों को स्थानीय स्तर पर पुरवा, पान्ना, पाडा, पाली नगला व ढॉणी आदि नाम से जाना जाता है।

परिक्षिप्त या एकाकी बस्तियां - परिक्षिप्त बस्तियां सुदूर वन क्षेत्रों में अथवा छोटी पहाड़ियों के ढालो पर या चरागाहों में एकाकी रूप से दिखाई पड़ती है। भारत में यह बस्तियां मेघालय, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश तथा केरल राज्य के अनेक भागों में पाई जाती हैं इन बस्तियों का विकास भूमि संसाधनों की अत्यधिक विखंडित प्रकृति के कारण होता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कार्यात्मक आधार पर भारत के नगरों का वर्गीकरण कीजिए?

उत्तर: विशेष कार्यों के आधार पर भारतीय नगरों को प्रमुख रूप से निम्नलिखित वर्गों में बांटा गया है:

प्रशासनिक नगर - राष्ट्रों तथा राज्यों की राजधानियाँ जहाँ केंद्रीय सरकार या प्रांतीय सरकार के प्रशासनिक कार्यालय होते हैं, उन्हें प्रशासनिक नगर कहा जाता है जैसे–नई दिल्ली (भारत), केनबेरा (ऑस्ट्रेलिया), बीजिंग (चीन) इत्यादि।

औद्योगिक नगर- वैसे नगर जहां किसी विशेष प्रकार के उद्योगों का विकास किया जाता है , कच्चे माल की प्राप्ति क्षेत्रों में यह उनके निकट ऐसे औद्योगिक नगरों का विकास होता है। उदाहरण स्वरूप जमशेदपुर राउरकेला, दुर्गापु,र भद्रावती, कुल्टी भिलाई में भारत का लौह इस्पात उद्योग है। मुंबई ,कानपुर ,अहमदाबाद मोदीनगर, सोलापुर, कोयंबटूर में वस्त्र उद्योग स्थापित है।

परिवहन नगर- वैसे नगर जो मुख्यतः आयात और निर्यात की गतिविधियों में संलग्न होने के कारण पतन नगर के रूप में विकसित होते हैं उन्हें परिवहन नगर विकास हैं। जैसे- मुंबई, कोलकाता, कांडला, चेन्नई, कोझीकोड, विशाखापट्टनम, कोच्चि, कालीकट आदि।

वाणिज्य नगर- वाणिज्य और व्यापार में विशिष्ट स्थान प्राप्त रखने वाले शहरों और नगरों को वाणिज्य नगर कहा जाता है। जैसे- कोलकाता, सहारनपुर, मुंबई दिल्ली, चेन्नई ,बेंगलुरु आदि।

पर्यटन नगर- उत्तम जलवायु तथा नैसर्गिक प्राकृतिक सुंदरता के कारण कुछ नगरों का विकास पर्यटक नगर के रूप में होता है। इन नगरों का प्रमुख आर्थिक कार्य पर्यटन व्यवसाय होता है। जैसे- नैनीताल, शिमला, मसूरी, पंचमढ़ी, जोधपुर, माउंट आबू, जैसलमेर आदि।

धार्मिक तथा सांस्कृतिक नगर- कुछ नगरों का विकास वहां पर प्राचीन काल से ही नगर मस्जिद, मंदिर चर्च आदि बने होते हैं ऐसे नगर तीर्थ यात्रियों के लिए आकर्षण का केंद्र बन जाते हैं और अपनी सभ्यता संस्कृति धर्म एवं अध्यात्मिक के लिए प्रसिद्ध हो जाते हैं तो ऐसे नगर धार्मिक और सांस्कृतिक नगर के रूप में जाने जाते हैं। जैसे -बनारसी, मथुरा, अमृतसर, पुरी, मदुरै, पुष्कर, तिरुपति, उज्जैन, हरिद्वार आदि।

गैरिसन (छावनी) नगर - जिन नगरों में सैनिकों का आवास, प्रशिक्षण एवं खेलकूद की स्थलों की व्यवस्था होती है तथा उन क्षेत्रों में सैनिकों का बसाव पाया जाता है, वह गैरिसन नगर कहलाता है। जैसे -पठानकोट अंबाला, मऊ, बबीना, उधमपुर आदि।

खनन नगर- जिन क्षेत्रों में खनिजों की अधिकता पाई जाती है उन क्षेत्रों में खनन नगरों का विकास होता है जैसे -रानीगंज, सिंगरौली, झरिया, हजारीबाग, गिरिडीह कोडरमा आदि।

2. भारत में ग्रामीण बस्तियों के प्रकारों का वर्णन करें?

उत्तर- भारत में मोटे तौर पर चार प्रकार के ग्रामीण बस्तियों पायी जाती है-

क. **परिक्षिप्त या एकाकी बस्तियां-** ये बस्तियां भारत के मेघालय, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश तथा केरल राज्य के अनेक भागों में पाई जाती है। इन बस्तियों का विकास मुख्य रूप से सुदूर वन क्षेत्रों या छोटी पहाड़ियों के ढालो में अवस्थित खेतों पर या चरागाहों में एकाकी रूप से मिलता है । इन बस्तियों का विकास भूमि संसाधनों की अत्यधिक विखंडित प्रकृति के कारण होता है।

ख. **पल्ली बस्तियां-** यह बस्तियां भारत में मुख्य रूप से मध्य गंगा मैदान , निम्न गंगा मैदान छत्तीसगढ़ एवं हिमालय की घाटियों में पाई जाती है। बस्तियों के निर्माण का मुख्य कारण इनकी जातीय व्यवस्था के द्वारा उत्पन्न सामाजिक अलगाव से होता है। भारत में इन बस्तियों को पुरवा, पान्ना, पाडा, पाली, नगला, आदि विभिन्न स्थानीय स्तर पर नामों से जाना जाता है।

ग. **गुच्छित बस्तियां-** भारत में इस प्रकार की बस्तियां मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड, नागालैंड, भारत के अत्यंत उपजाऊ जलोढ मैदानों तथा उत्तरी- पूर्वी राज्य में पायी जाती है। इन वस्तुओं की मुख्य विशेषता यह होती है कि ये बस्तियां सघन या घरो के संहत निर्मित क्षेत्र में पायी जाती है तथा उनके रहन-सहन से स्पष्ट होता है कि इसके समीपवर्ती भागों में कृषि भूमि तथा चरागाह भूमि मिलती है। बस्तियां मुख्य रूप से आयताकार तथा रेखिक प्रतिरूप का निर्माण करते हैं। कई बार सुरक्षा के कारणों से भी गांव में गुच्छित बस्तियां पाई जाती है । जैसे भारत में बुंदेलखंड क्षेत्र नागालैंड आदि तथा राजस्थान में जल की कमी के कारण उपलब्ध संसाधनों के अधिकतम उपयोग के लिए बस्तियों का निर्माण अनिवार्य कर दिया है।

घ. **अर्द्ध-गुच्छित या विखंडित बस्तियां-** इन वस्तुओं की मुख्य विशेषता एकांकी बस्ती या किसी बड़े गांव के विखंडन के फलस्वरूप होता है । भारत में यह बस्तियां गुजरात के मैदान एवं राजस्थान के कुछ विभागों में पाई जाती है।

3. क्या एक प्रकार्य वाले नगर की कल्पना की जा सकती है? नगर बहु प्रकार्यात्मक क्यों हो जाते हैं?

उत्तर- उत्तर- कुछ नगरों और शहरों को किसी विशेषीकृत प्रकार्य में विशिष्टता प्राप्त होती है तथा उसे उस विशिष्ट प्रकार्य के लिए जाना जाता है लेकिन नगर को जीवित रखने के लिए उस विशिष्ट प्रकार्य के साथ अन्य कुछ विशिष्ट प्रकार्यों को भी करना पड़ता है। उदाहरण के लिए, एक परिवहन नगर में परिवहन प्रकार्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो सकता है लेकिन परिवहन नगर में परिवहन कार्य के साथ-साथ प्रशासनिक, औद्योगिक, वाणिज्यिक, शैक्षणिक तथा चिकित्सा कार्य भी गौण रूप में अनिवार्य रूप से देखने को मिलते हैं। वस्तुतः एक प्रकार्य वाले नगर की कल्पना नहीं की जा सकती है।

नगर बहु प्रकार्यात्मक हो जाते हैं क्योंकि किसी विशिष्ट नगर के जन्म के लिए कोई एक प्रकार्य उत्तरदायी हो सकता है लेकिन जब एक बार नगर स्थापित हो जाता है, तो उसे अपना अस्तित्व कायम रखने के लिए सार्वजनिक प्रशासन, वित्तीय, चिकित्सा सम्बन्धी, परिवहन सम्बन्धी, शिक्षा सम्बन्धी, जनोपयोगी सेवा सम्बन्धी तथा बाजार व वाणिज्य सेवा सम्बन्धी अनेक प्रकार्यों का संचालन करना होता है। इसी कारण प्रत्येक नगर बहुप्रकार्यात्मक कार्यों का निष्पादन करने लगता है। वस्तुतः नगरों के विकास होते जाने पर उनके प्रकार्य इतने अन्तर्ग्रन्थित हो जाते हैं कि नगर को किसी विशेष प्रकार्य वर्ग में, वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है।

jharkhandlab.com

अध्याय - 5 भू-संसाधन तथा कृषि
LAND RESOURCES AND AGRICULTURE

पाठ के मुख्य बिंदु

- कृषि : कृषि (एग्रीकल्चर) शब्द मुख्यतः दो लैटिन शब्दों से मिल कर बना है। 'एगर' अर्थात भूमि तथा कल्चर अर्थात खेती करना है। दूसरे शब्दों में मृदा को जोतना, फसल उगाना तथा पशुओं के पालन पोषण का विज्ञान एवं कला को कृषि कहते हैं।
- भूमि उपयोग, भूमि के प्रयोग की प्रक्रिया है, जिसमें कृषि का व्यवहारिक उपयोग किसी निश्चित उद्देश्य से किया जाता है।
- भूमि या मृदा प्रकृति का निशुल्क उपहार है, जिसे मनुष्य अनेक प्रकार से उपयोग करता है। जैसे - आवास के रूप में, कारखाना, चारागाह, कृषि, स्कूल, अस्पताल, संस्थाएं, मनोरंजन स्थल आदि।
- भारत में भौगोलिक क्षेत्र का मापन भारत के सर्वेक्षण विभाग द्वारा किया जाता है, जो स्थाई होता है।
- भू राजस्व अभिलेख द्वारा भारत में भूमि उपयोग को कई वर्गों में बांटा गया है। जैसे - वन के अधीन क्षेत्र, गैर कृषि कार्य में प्रयुक्त भूमि, बंजर एवं व्यर्थ भूमि, चारागाह क्षेत्र, विविध तरु फसलों के अंतर्गत क्षेत्र, कृषि योग्य व्यर्थ भूमि, वर्तमान परती भूमि, पुरातन परती भूमि एवं निवल बोया गया क्षेत्र।
- भारत में समय के साथ भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले अर्थव्यवस्था के तीन परिवर्तक हैं :- अर्थव्यवस्था का आकार, अर्थव्यवस्था की संरचना, एवं कृषि भूमि पर बढ़ता दबाव।
- शस्य गहनता का संबंध कृषि भूमि के गहन उपयोग से होता है। एक कृषि वर्ष में एक ही खेत में कई फसलों को लगा कर अधिक उत्पादन प्राप्त करना ही शस्य गहनता कहलाता है। हम कह सकते हैं कि सकल बोये गए क्षेत्र तथा शुद्ध बोये गए क्षेत्र के अनुपात को शस्य गहनता कहा जाता है।
- किसी क्षेत्र में भू-उपयोग, अधिकतर वहाँ की आर्थिक क्रियाओं की प्रकृति पर निर्भर है। यद्यपि समय के साथ आर्थिक क्रियाओं में बदलाव आता रहता है, लेकिन भूमि अन्य बहुत से संसाधनों की भांति क्षेत्रफल की दृष्टि से स्थायी है।
- कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है। देश की लगभग 53 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है।
- हमारे देश के 57 प्रतिशत भू-भाग पर कृषि की जाती है जबकि, विश्व में कुल भूमि में केवल 12 प्रतिशत भू-भाग पर कृषि की जाती है।
- भारत का एक बड़ा भू-भाग कृषि के अन्तर्गत होने के बावजूद यहाँ भूमि पर दबाव अधिक है। यहाँ प्रति व्यक्ति कृषि भूमि का अनुपात केवल 0.31 हेक्टेयर है, जो विश्व औसत (0.59 हैक्टेयर प्रति व्यक्ति) से लगभग आधा है।
- पिछले कुछ दशकों में बदलती हुई भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रभाव भू उपयोग पर पड़ा है।
- भू-संसाधन को इसके स्वामित्व के आधार पर 2 प्रकारों में रख सकते हैं निजी एवं साझा संपत्ति । साझा संपत्ति संसाधन का उपयोग चरागाह एंव ईंधन की जरूरतों को पूरा करने के लिये होता है।
- भूमि की उपलब्धता का सीधा सम्बन्ध ग्रामीण भारत की सम्पन्नता या विपन्नता से होता है क्योंकि भूमि कृषि का आधार है। भूमिहीन लोग अधिकतर गरीबी का शिकार है।
- भारत में धरातलीय एवं जलवायु संबंधी विविधता देखी जाती है, अतः यहाँ कृषीय फसलों की विशाल विविधता पाई जाती है। स्वतंत्रता के पश्चात् कृषि की तमाम समस्याओं का समाधान कर लिया गया है।
- भारत के भूमि उपयोग संबंधी प्रपत्र के विवरण भू - राजस्व द्वारा तैयार किये जाते है ।
- निवल बोये गये क्षेत्र में बढ़ोतरी के लिये "भूमि बचत प्रौद्योगिकी" को अपनाना चाहिये। इसके अन्तर्गत प्रति इकाई भूमि में फसल विशेष की उत्पादकता को बढ़ाना तथा एक कृषि वर्ष में गहन भू उपयोग से सभी फसलों का उत्पादन बढ़ाना सम्मिलित है।
- भारत में कृषि फसलों के अंतर्गत खाद्यान्न फसलें एवं व्यावसायिक फसलों की कृषि की जाती है।
- सतत् कृषि के लिए 12वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान राष्ट्रीय मिशन 2014-15 में भारत सरकार के सहयोग से चालू किया गया, जिसका उद्देश्य है- एकीकृत या समग्र कृषि प्रणालियों को प्रोत्साहन प्रदान करना एवं कृषि को अधिक उपजाऊ टिकाऊ लाभकारी एवं जलवायु के अनुकूल बनाना।
- भारत का किसान पोर्टल भारत सरकार द्वारा देश के किसानों के लिए कृषि से संबंधित अधिकांश जानकारी देने का एक मंच है, जिसके अंतर्गत किसानों का बीमा, कृषि भंडारण, कृषि फसल, कृषि विस्तार गतिविधियां, बीजों, कीटनाशकों तथा मशीनरी आदि से जुड़ी विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई जाती है।
- हरित क्रांति : भारत में हरित क्रान्ति कृषि के क्षेत्र में एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। नवीन कृषि प्रौद्योगिकी तथा सिंचाई के सहयोग से खाद्यान्नों के उत्पादन में होने वाली अभूतपूर्व वृद्धि को हरित क्रांति कहा गया।
- गहन कृषि के अंतर्गत अधिक उपज प्राप्त करने के उद्देश्य से प्रतीक आई क्षेत्र में पूंजी और श्रम की बड़ी मात्रा का प्रयोग किया जाता है।
- खाद्यान्नों के उत्पादन में भारत का विश्व में स्थान तृतीय है। (चीन एंव U.S.A के बाद)
- विश्व के चावल उत्पादक में भारत का उत्पादन :- 22%
- सिंचाई पर निर्भर रहने वाले चावल उत्पादक क्षेत्र है :- पंजाब, हरियाणा, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश।
- रबी एवं खरीफ की मुख्य फसल :- रबी- गेहूँ, खरीफ-चावल।
- गेहूँ उत्पादन में अग्रणी राज्य :- उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान।
- किन फसलों के उत्पादन में विश्व में भारत अग्रणी (प्रथम स्थान) है चाय, दालें।
- हरित क्रान्ति का आधार :- नवीन प्रौद्योगिकी, अच्छे बीज, उर्वरक एवं सिंचाई।
- चावल का प्रमुख उत्पादक राज्य :- पश्चिम बंगाल।
- मूंगफली का प्रमुख उत्पादक राज्य :- गुजरात।
- जूट उत्पादन का प्रमुख राज्य :- पश्चिम बंगाल।
- सरसों उत्पादन का प्रमुख राज्य-राजस्थान ।
- कुल तिलहन उत्पादन का प्रमुख राज्य-मध्यप्रदेश ।
- गन्ना का प्रमुख उत्पादक राज्य - उत्तरप्रदेश ।
- मसाले में अग्रणी राज्य- केरल।

Jharkhandlab.com

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **निम्नलिखित में से कौन सा भू - उपयोग संवर्ग नहीं है?**
   (क) परती भूमि। (ख) सीमांत भूमि।
   (ग) निवल बोया क्षेत्र। (घ) कृषि योग्य व्यर्थ भूमि।

2. **पिछले 40 वर्षों में वनों का अनुपात बढ़ने का निम्नलिखित में से कौन सा कारण है?**
   (क) वनीकरण के विस्तृत व सक्षम प्रयास।
   (ख) सामुदायिक वनों के अध्ययन क्षेत्र में वृद्धि।
   (ग) वन बढ़ोतरी हेतु निर्धारित अधिसूचित क्षेत्र में वृद्धि।
   (घ) वन क्षेत्र प्रबंधन में लोगों की बेहतर भागीदारी।

3. **निम्नलिखित में से कौन-सा सिंचित क्षेत्रों में भू- निम्नीकरण का मुख्य प्रकार है?**
   (क) अवनालिका अपरदन।
   (ख) वायु अपरदन।
   (ग) मृदा लवणता।
   (घ) भूमि पर सिल्ट का जमाव।

4. **शुष्क कृषि में निम्नलिखित में से कौन सी फसल नहीं बोयी जाती है।**
   (क) रागी। (ख) ज्वार।
   (ग) मूंगफली। (घ) गन्ना।

5. **निम्नलिखित में से कौन से देशों में गेहूं व चावल की अधिक उत्पादकता की किस्में विकसित की गई थी?**
   (क) जापान तथा ऑस्ट्रेलिया।
   (ख) संयुक्त राज्य अमेरिका तथा जापान।
   (ग) मेक्सिको तथा फिलिपिंस।
   (घ) मेक्सिको तथा सिंगापुर।

6. **गन्ना का उत्पादन सबसे अधिक कहां किया जाता है?**
   (क) बिहार। (ख) उत्तर प्रदेश।
   (ग) तमिलनाडु। (घ) महाराष्ट्र।

7. **निम्नलिखित में से कौन रेशेदार फसल है?**
   (क) कॉफी (ख) चाय
   (ग) गेहूं (घ) कपास।

8. **झूमिंग कृषि कहां की जाती है?**
   (क) उत्तर प्रदेश (ख) पंजाब।
   (ग) बिहार (घ) असम।

9. **भारत में हरित क्रांति कब शुरू हुई थी?**
   (क) 1950 के दशक में। (ख) 1960 के दशक में।
   (ग) 1970 के दशक में। (घ) 1980 के दशक में।

10. **निम्नलिखित में नकदी फसल कौन सा है?**
    (क) कपास (ख) जूट
    (ग) चाय (घ) इनमें से सभी।

11. **खरीफ फसल की कृषि ऋतु क्या है?**
    (क) अक्टूबर से मार्च (ख) अप्रैल से जून
    (ग) सितंबर से जनवरी (घ) जून से सितंबर।

12. **भारत में गेहूं उत्पादन में अग्रणी राज्य कौन है?**
    (क) मध्य प्रदेश (ख) पंजाब
    (ग) हरियाणा (घ) उत्तर प्रदेश।

13. **निम्नलिखित में से कौन पेय फसल है?**
    (क) चाय (ख) कॉफी
    (ग) चाय तथा कॉफी (घ) इनमें से कोई नहीं।

14. **निम्नलिखित में से कौन एक व्यापारिक फसल नहीं है?**
    (क) चाय (ख) जूट
    (ग) गेहूं (घ) कपास

15. **निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र धान का कटोरा कहलाता है ?**
    (क) कृष्ण गोदावरी डेल्टा क्षेत्र। (ख) गंगा सिंधु मैदानी क्षेत्र।
    (ग) उत्तर पूर्वी क्षेत्र। (घ) केरल तथा तमिलनाडु।

16. **गेहूं की खेती के लिए आदर्श तापमान कितना होना चाहिए?**
    (क) 5 से 10 डिग्री सेंटीग्रेड। (ख) 10 से 20 डिग्री सेंटीग्रेड।
    (ग) 20 से 30 डिग्री सेंटीग्रेड। (घ) 30 से 40 डिग्री सेंटीग्रेड।

17. **चॉकलेट में कौन सा पदार्थ उपयोग किया जाता है?**
    (क) कहवा (ख) चुकंदर
    (ग) कोको (घ) गन्ना।

18. **भारत में चावल का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य कौन सा है?**
    (क) बिहार (ख) उड़ीसा
    (ग) पश्चिम बंगाल (घ) आंध्र प्रदेश।

19. **रबी की फसल किस ऋतु में पैदा होती है?**
    (क) शीत ऋतु में (ख) वर्षा ऋतु में
    (ग) ग्रीष्म ऋतु में (घ) सभी ऋतु में।

20. **निम्नलिखित में से कौन बागानी फसल नहीं है**
    (क) काफी (ख) चाय
    (ग) रबड़ (घ) मक्का।

21. **निम्नलिखित में से कौन सा रोपण फसल नहीं है?**
    (क) कॉफी (ख) गेहूं
    (ग) गन्ना (घ) रबड़।

22. **निम्नलिखित में कौन सी खाद्य फसल है?**
    (क) गन्ना (ख) कॉफी
    (ग) मक्का (घ) चुकंदर।

उत्तर : 1. (ख) 2. (ग) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग) 6. (ख) 7. (घ) 8. (घ) 9. (ख) 10. (घ) 11. (घ) 12. (घ) 13. (ग) 14. (ग) 15. (क) 16. (ख) 17. (ग) 18. (ग) 19. (क) 20. (घ) 21. (ख) 22. (ग) ।

अति लघु उतरीय प्रश्न

1. **फसल गहनता की गणना किस प्रकार की जाती है या शस्य गहनता से क्या तात्पर्य है ?**

उत्तर : एक ही क्षेत्र में एक कृषि वर्ष में उगाई गई फसलों की संख्या को शस्य गहनता कहा जाता है। उसे ज्ञात करने का सूत्र है -

$$\text{फसल गहनता} = \frac{\text{सकल बोया गया क्षेत्र}}{\text{निवल बोया गया क्षेत्र।}} \times 100$$

2. **रबी की फसलों से आपका क्या तात्पर्य है?**

उत्तर : रबी की फसलों को शरद ऋतु में लगाया जाता है। अर्थात इसकी कृषि ऋतु अक्टूबर से मार्च माह में होती है। मुख्य फसल है - गेहूं, चना, सरसों, जो आदि।

3. **दालें मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता को बढानें में कैसे मददगार साबित हुई है ?**

उत्तर : ये फलीदार फसलें है जो नाईट्रोजन योगीकरण के द्वारा मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता को बढ़ाती हैं।

Jharkhandiah.com

4. दक्षिणी राज्यों तथा पश्चिम बंगाल में एक कृषि वर्ष में चावल की दो या तीन फसलें बोई जाती हैं। इसका प्रमुख कारण क्या है ?

उत्तर : उष्ण व आर्द्र जलवायु। अर्थात फसल उत्पादन के अनुकूल जलवायु।

5. शुष्क कृषि किसे कहते हैं?

उत्तर : वैसे क्षेत्र जहां वार्षिक वर्षा 75 सेंटीमीटर से कम होती है शुष्क कृषि की जाती है। इसमें फसलों को शुष्कता सहने की क्षमता होती है। जैसे रागी, बाजरा, मूंग, चना आदि।

6. अमेरिकन कपास देश के किस भाग में उगाया जाता है तथा वहाँ इसे किस नाम से जाना जाता है ?

उत्तर : भारत के उत्तर पश्चिमी भाग में अमेरिकन कपास की कृषि की जाती है। वहाँ इसे नरमा' के नाम से जाना जाता है।

7. अल्प बेरोजगारी से आपका क्या तात्पर्य है ?

उत्तर : भारतीय कृषि ऋतु में वर्ष भर रोजगार उपलब्ध नहीं होता क्योंकि कृषि कार्य लगातार गहन श्रम वाले नहीं है। इसी को अल्प बेरोजगारी कहतें हैं

8. सबसे अधिक एवं सबसे कम शस्य गहनता वाले राज्यों के नाम लिखें।

उत्तर : सर्वाधिक शस्य गहनता पंजाब में एंव सबसे कम शस्य गहनता मिजोरम में है।

9. कॉफी की तीन किस्मों के नाम लिखें।

उत्तर : अरेबिका, रोबस्ता व लिवेरिका ये तीनों कॉफी की किस्में हैं।

10. पश्चिम बंगाल में चावल की कितनी फसलें उगाई जाती हैं ?

उत्तर : पश्चिम बंगाल में चावल की तीन फसले उगाई जाती हैं औंस, अमन तथा बोरों।

11. विश्व में चावल के उत्पादन में भारत का कौन सा स्थान है ?

उत्तर : विश्व में चावल के उत्पादन में भारत का स्थान चीन के बाद दूसरा है। यहां विश्व का लगभग 21.2% चावल उत्पादन किया जाता है।

12. साझा संपत्ति संसाधन का क्या अर्थ है ?

उत्तर : साझा संपत्ति संसाधन पर राज्यों का स्वामित्व होता है। इसके अंतर्गत चरागाह, जलीय संसाधन,घरेलू उपयोग हेतु ईंधन, लकड़ी तथा वन उत्पाद उपलब्ध कराये जाते हैं।

13. खरीफ फसल से आप क्या समझते हैं?

उत्तर: खरीफ फसल भारत में दक्षिण पश्चिम मानसून के आरंभ के साथ बोयी जाने वाली एवं शरद ऋतु में काटी जाने वाली फसल है। जैसे चावल, बाजरा, जूट, गन्ना कपास आदि प्रमुख खरीफ फसलें हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बंजर भूमि तथा कृषि योग्य व्यर्थ भूमि में अंतर स्पष्ट करें।

उत्तर : बंजर भूमि वैसी भूमि को कहते हैं, जो प्रौद्योगिकी की सहायता से कृषि योग्य उपजाऊ नहीं बनाई जा सकती है। जैसे - बंजर पहाड़ी भूभाग, मरुस्थल आदि।

कृषि योग्य भूमि जो पिछले पांच वर्षों तक या उससे अधिक समय तक परती छोड़ दिया जाता है जिसमें कृषि कार्य नहीं किए जाते हैं, लेकिन नवीन तकनीकी द्वारा इसे सुधार कर कृषि योग्य बनाया जा सकता है।

2. निवल बोए क्षेत्र तथा सकल बोए गए क्षेत्र में अंतर बताएं।

उत्तर : निवल बोए गए क्षेत्र में ऐसी भूमि सम्मिलित की जाती है, जिस पर फसलें उगाई जाती हैं एवं काटी जाती है। इसे शुद्ध बोया गया क्षेत्र भी कहा जाता है।

जबकि सकल बोए क्षेत्र में एक कृषि वर्ष में विभिन्न फसलों के अंतर्गत बोए गए कुल क्षेत्र को सम्मिलित किया जाता है।

3. भारत जैसे देश में गहन कृषि नीति अपनाने की आवश्यकता क्यों है?

उत्तर : भारत एक कृषि प्रधान देश है लेकिन यहां कृषि भूमि मानवीय श्रम की अपेक्षा कम है। ऐसी स्थिति में गहन कृषि नीति की आवश्यकता पड़ती है, जिससे भूमि उपयोग के साथ-साथ देश के ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी को कम किया जा सकता है एवं कृषि उत्पादन भी बढ़ाया जा सकता है।

4. वर्तमान परती एवं पुरातन परती भूमि में क्या अंतर है ?

उत्तर : **वर्तमान परती भूमि** :- यह वह भूमि जिस पर एक वर्ष या उससे कम समय के लिये खेती नहीं की जाती। यह भूमि की उर्वरता बढ़ाने का प्राकृतिक तरीका होता है।

पुरातन परती भूमि :- वह भूमि जिसे एक वर्ष से अधिक किन्तु पाँच वर्ष से कम के लिये खेती हेतु प्रयोग नहीं किया जाता।

5. शुष्क कृषि तथा आर्द्र कृषि में क्या अंतर है?

उत्तर : **शुष्क कृषि** :- वैसे क्षेत्रों में की जाती है, जहां वार्षिक वर्षा 75 सेंटीमीटर से कम होता है तथा वैसे फसलों को इसमें लगाया जाता है जिसमें शुष्कता सहने की क्षमता होती है। जैसे रागी, बाजरा, चना, ज्वार आदि।

आर्द्र कृषि :- वैसे क्षेत्रों में लगाई जाती है, जहां 75 सेंटीमीटर से अधिक वर्षा होती है। इन क्षेत्रों में की जाने वाली कृषि के अंतर्गत जो फसल लगाए जाते हैं, उसमें पानी की आवश्यकता अधिक होती है। जैसे - गन्ना, चावल, जूट आदि।

6. फसलों के लिए आर्द्रता के प्रमुख स्रोत के आधार पर भारत में कृषि को कितने समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है? नाम लिखिए एवं प्रत्येक की दो विशेषताएँ बताइये

उत्तर :

क) **सिंचित कृषि** :- इसका उद्देश्य वर्षा के अतिरिक्त जल की कमी को सिंचाई द्वारा पूरा किया जाता है। अधिकतम क्षेत्र को पर्याप्त आर्द्रता उपलब्ध कराना है। अधिकतम फसलों को पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध कराकर उत्पादकता प्राप्त कराना तथा उत्पादन योग्य क्षेत्र को बढ़ाना

ख) **वर्षा निर्भर कृषि** :- यह पूर्णतया वर्षा पर निर्भर होती है। उपलब्ध आर्द्रता की मात्रा के आधार पर इसे शुष्क भूमि कृषि व आर्द्र भूमि कृषि में बाँटते हैं।

7. भारत के तीनों भिन्न फसल ऋतुओं की किन्हीं दो-दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिये ।

उत्तर : भारत में निम्नलिखित तीन कृषि ऋतु होती है :-

क. **खरीफ ऋतु**:- यह ऋतु जून माह में प्रारम्भ होकर सितम्बर माह तक रहती है। इस ऋतु में चावल, कपास, जूट, ज्वार, बाजरा व अरहर आदि की कृषि की जाती है। खरीफ की फसल दक्षिण-पश्चिम मानसून के साथ संबंध है। दक्षिण-पश्चिम मानसून के साथ चावल की फसल शुरू होती है।

ख. **रबी ऋतु** :- रबी की ऋतु अक्टूबर-नवम्बर में शरद ऋतु से प्रारम्भ होती है। गेहूँ, चना, तोराई, सरसो, जौ आदि फसलों की कृषि इसके अन्तर्गत की जाती है।

ग. **जायद ऋतु** :- जायद एक अल्पकालिक ग्रीष्मकालीन फसल ऋतु हैं जो रबी की कटाई के बाद प्रारम्भ होती है। इस ऋतु में तरबूज, खीरा, सब्जियां व चारे की फसलों की कृषि होती है।

Jharkhandlab.com

8. हरित क्रांति क्या है?

उत्तर : 1960-70 के दशक में खाद्यान्नों विशेष रूप से गेहूँ के उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि की गयी। इसे ही हरित क्रान्ति कहा जाता है। खाद्यान्नों के उत्पादन में वृद्धि के लिये निम्न उपायों को अपनाया गया।

क. उच्च उत्पादकता वाले बीज।

ख. रासायनिक उर्वरकों का उपयोग।

ग. सिंचाई की सुविधा

पंजाब, हरियाणा एवं प. उत्तर प्रदेश में हरित क्रान्ति के कारण गेहूँ के उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि हुई।

9. अंतर स्पष्ट करें :-

क. बंजर भूमि तथा कृषि योग्य व्यर्थ भूमि।

उत्तर :

बंजर भूमि	कृषि योग्य व्यर्थ भूमि
वह भूमि जो भौतिक दृष्टि से कृषि के अयोग्य है। जैसे वन, ऊंबड़-खाबड़ भूमि एवं पहाड़ी भूमि, रेगिस्तान एवं अपरदित खड्ड भूमि आदि।	यह वह भूमि है जो पिछले पाँच वर्षों या उससे अधिक समय तक व्यर्थ पड़ी है। इस भूमि को कृषि तकनीकी के जरिये कृषि क्षेत्र के योग्य बनाया जा सकता है।

ख. शुद्ध बोया गया क्षेत्र एंव सकल बोया गया क्षेत्र।

उत्तर :

शुद्ध बोया गया	सकल बोया गया क्षेत्र
किसी कृषि वर्ष में बोया गया कुल फसल क्षेत्र शुद्ध बुआई क्षेत्र कहलाता है।	जोते एंव बोये गये क्षेत्र में शुद्ध बुआई क्षेत्र तथा शुद्ध क्षेत्र का वह भाग शामिल किया जाता है जिसका उपयोग एक से अधिक बार किया गया हो।

10. भारत में कृषि योग्य भूमि का निम्नीकरण किस प्रकार कृषि की गंभीर समस्याओं में से एक है ? कारण एवं परिणाम लिखिये।

उत्तर : **भूमि संसाधनों के निम्नीकरण के कारण :-**

(क) नहर द्वारा अत्यधिक सिंचाई जिसके कारण लवणता एवं क्षारीयता में वृद्धि होती है।

(ख) कीटनाशकों का अत्याधिक प्रयोग।

(ग) जलाक्रांतता (पानी का भराव होना)

(घ) फसलों को हेर-फेर करके न बोना, दलहन फसलों को कम बोना।

(ड.) सिंचाई पर अत्याधिक निर्भर फसलों को उगाना।

परिणाम :-

(क) मिट्टी की उर्वरता शक्ति कम होना।

(ख) मिट्टी का अपरदन।

11. "किसी क्षेत्र के भू-उपयोग अधिकतर उस क्षेत्र की आर्थिक क्रियाओं एवं भूमि की प्रकृति पर निर्भर करता है। भारत में तीन उदाहरण देकर कथन की पुष्टि करें।

उत्तर: (क) **अर्थव्यवस्था का आकार** :- इसे उत्पादित वस्तुओं तथा सेवाओं के मूल्य के संदर्भ में समझा जाता है। समय के साथ जनसंख्या बढ़ने के कारण भूमि पर दबाव पड़ता है तथा सीमांत भूमि को भी प्रयोग में लाया जाता है।

(ख) **अर्थव्यवस्था की संरचना** :- द्वितीयक तथा तृतीयक सेक्टरों में प्राथमिक सेक्टर की अपेक्षा अधिक तीव्रता से वृद्धि होती है। इस प्रक्रिया में धीरे-धीरे कृषि भूमि गैर कृषि संबंधित कार्यों में प्रयुक्त होती है।

(ग) **कृषि कलापों का योगदान** :- समय के साथ कृषि क्रिया कलापों का अर्थव्यवस्था में योगदान कम होता जाता है, परंतु भूमि पर कृषि कलापों का दबाव कम नहीं होता।

12. भारत में भू-संसाधनों का महत्व उन लोगों के लिए अधिक है जिनकी आजीविका कृषि पर निर्भर है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : क) द्वितीयक एवं तृतीयक क्रियाओं की अपेक्षा कृषि पूर्णतया भूमि पर आधारित है। भूमिहीनता का ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी से प्रत्यक्ष संबंध है।

ख) भूमि की गुणवत्ता कृषि उत्पादकता को प्रभावित करती है अन्य कार्यों की नहीं।

ग) ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि का स्वामित्व आर्थिक मूल्य के साथ - 2 सामाजिक सम्मान से भी जुडा है।

13. 1990 के दशक की उदारीकरण नीति तथा उन्मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था ने भारतीय कृषि विकास को प्रभावित किया हैं स्पष्ट कीजिए

उत्तर : क) उदारीकरण नीति तथा उन्मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था ने ग्रामीण कृषि अवसंरचना के विकास में कमी तथा किसानों को मिलने वाले समर्थन मूल्य में कमी पैदा की हैं।

ख) इस नीति के कारण सरकार ने कृषि क्षेत्र की योजनाओं को पीछे कर दिया है। राष्ट्रीय आय का बहुत कम भाग कृषि विकास पर खर्च किया जाता है।

ग) किसानों को बीजों उर्वरकों तथा कीटनाशकों पर मिलने वाली छूट में कमी आयी है।

घ) ग्रामीण ऋण उपलब्धता में रूकावटें पैदा हुई है।

ङ) अंतर प्रादेशिक व अंतवैयक्तिक विषमता पैदा हुई है।

14. भारत की दो प्रमुख पेय फसलों के नाम लिखिए। प्रत्येक फसल के दो महत्वपूर्ण उत्पादक राज्यों के नाम बताइए।

उत्तर: भरत की दो प्रमुख पेय फसलें चाय और कहवा।

क) चाय के महत्वपूर्ण उत्पादक राज्य असम, पश्चिम बंगाल व तमिलनाडु।

ख) कहवा के महत्वपूर्ण उत्पादक राज्य-कर्नाटक, केरल व तमिलनाडु।

15. साझा संपत्ति संसाधन का छोटे कृषकों तथा महिलाओं के लिए विशेष महत्व है। इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: क) ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीन छोटे कृषकों तथा अन्य आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के व्यक्तियों के जीवन यापन में इनका महत्व है क्योंकि भूमिहीन होने के कारण पशुपालन से प्राप्त आजीविका पर निर्भर है।

ख) ग्रामीण इलाकों में महिलाओं की जिम्मेदारी चारा व ईंधन एकत्रित करने की होती है।

ग) साझा संपत्ति संसाधन वन उत्पाद जैसे-फल, रेशे, गिरी, औषधीय पौधे आदि उपलब्ध कराती है।

16. छोटी कृषि जोत और कृषि योग्य भूमि का निम्नीकरण भारतीय कृषि को दो प्रमुख समस्याएँ किस प्रकार है। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर: **भारतीय कृषि की प्रमुख दो समस्याएँ :-**

क. **छोटी कृषि जोत** :- बढ़ती जनसंख्या के कारण भूमि जोतों का आकार लगातार सिकुड़ रहा है। लगभग 60 प्रतिशत किसानों की जोतो का आकार तो एक हेक्टेयर से भी कम है और अगली पीढ़ी के लिए इसके और भी हिस्से हो जाते हैं जो कि आर्थिक दृष्टि से लाभकारी नहीं है। ऐसी कृषि जोतो पर केवल निर्वाह कृषि की जा सकती है।

jharkhandlab.com

ख. **कृषि योग्य भूमि का निम्नीकरण** :- कृषि योग्य भूमि की निम्नीकरण कृषि की एक अन्य गंभीर समस्या है इससे लगातार भूमि का उपजाऊपन कम हो जाता है। यह समस्या उन क्षेत्रों में ज्यादा गंभीर है जहां अधिक सिंचाई की जाती है। कृषि भूमि का एक बहुत बड़ा भाग लवणता, क्षारता व जलाक्रांतता के कारण बंजर हो चुका है। कीटनाशक रसायनों के कारण भी उर्वरता शक्ति कम हो जाती है।

17. भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का क्या महत्व है ?

उत्तर: भारत एक कृषि प्रधान देश है। इसलिए भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का अत्याधिक महत्व है।

क. देश की कुल श्रमिक शक्ति का 80 प्रतिशत भाग कृषि का है।

ख. देश के कुल राष्ट्रीय उत्पाद में 26 प्रतिशत योगदान कृषि का है।

ग. कृषि से कई कृषि प्रधान उद्योगों को कच्चा माल मिलता है। जैसे कपड़ा उद्योग, जूट उद्योग, चीनी उद्योग आदि।

घ. कृषि से ही पशुओं को चारा प्राप्त होता है।

ङ. कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की आधारशिला ही नहीं बल्कि जीवन यापन की एक विधि है।

18. साझा संपत्ति संसाधन का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसकी मुख्य विशेषताएं बताइए ?

उत्तर: भूमि के स्वामित्व के आधार पर भूमि संसाधनों को दो भागों में बांटा जाता है-

क) निजी भू-संपति। ख) साझा संपत्ति संसाधन

निजी संपत्ति पर व्यक्तियों का निजी स्वामित्व या कुछ व्यक्तियों का सम्मिलित निजी स्वामित्व होता है जबकि साझा संपत्ति सामुदायिक उपयोग हेतु राज्यों के स्वामित्व में होती है इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं-

क) पशुओं के लिए चारा, घरेलू उपयोग हेतु ईंधन, लकड़ी तथा साथ ही अन्य वन उत्पाद जैसे फल, रेशे, गिरी, औषधीय पौधे आदि साझा संपति संसाधन में आते हैं।

ख) आर्थिक रूप में कमजोर वर्ग के व्यक्तियों के जीवन-यापन में इन भूमियों का विशेष महत्व है क्योंकि इनमें से अधिकतर भूमिहीन होने के कारण पशुपालन से प्राप्त अजीविका पर निर्भर हैं।

ग) महिलाओं के लिए भी इनका विशेष महत्व है क्योंकि ग्रामीण इलाकों में चारा व ईंधन लकड़ी के एकत्रीकरण की जिम्मेदारी उन्हीं की होती है।

घ) सामुदायिक वन, चारागाह, ग्रामीण जलीय क्षेत्र तथा अन्य सार्वजनिक स्थान साझा संपत्ति संसाधन के उदाहरण है।

19. 1990 के दशक की उदारीकरण नीति तथा उन्मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था ने भारतीय कृषि विकास को प्रभावित किया हैं स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: क) उदारीकरण नीति तथा उन्मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था ने ग्रामीण कृषि अवसंरचना के विकास में कमी तथा किसानों को मिलने वाले समर्थन मूल्य में कमी पैदा की है।

ख) इस नीति के कारण सरकार ने कृषि क्षेत्र की योजनाओं को पीछे कर दिया है। राष्ट्रीय आय का बहुत कम भाग कृषि विकास पर खर्च किया जाता है।

ग) किसानों को बीजों उर्वरकों तथा कीटनाशकों पर मिलने वाली छूट में कमी आयी है।

घ) ग्रामीण ऋण उपलब्धता में रूकावटें पैदा हुई है।

ङ) अंतर प्रादेशिक व अंतवैयक्तिक विषमता पैदा हुई है।

20. "पिछले पचास वर्षों में कृषि उत्पादन व प्रौद्योगिकी में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है" इस कथन की पुष्टि उपयुक्त तथ्यों द्वारा किजिए ।

उत्तर : बहुत सी फसलों जैसे चावल तथा गेहूँ के उत्पादन तथा पैदावार में प्रभावशाली वृद्धि हुई है। दालों व जूट के उत्पादन में प्रथम व चावल, गेहूँ, गन्ना, मूंगफली में भारत दूसरा बड़ा उत्पादक देश है।

सिंचाई के प्रसार ने देश में कृषि उत्पादन बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी बीजों की उत्तम किस्में रासायनिक खादों, कीटनाशकों तथा मशीनरी के प्रयोग के लिए आधार प्रदान किया है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी का प्रसार तीव्रता से हुआ है। रासायनिक उर्वरकों की खपत में भी कई गुना वृद्धि हुई है । उत्तम बीज के किस्मों में कीट प्रतिरोधकता कम है अतः कीटनाशकों की खपत में भी महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारत के भूसंसाधनों की विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय समस्याएँ कौन-सी हैं? उनका निदान कैसे किया जाए ?
उत्तर- भारत के भूसंसाधनों पर बढ़ते दबाव के कारण अनेक पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं जिनमें निम्नलिखित पर्यावरणीय समस्याएँ उल्लेखनीय हैं-

(क) **मृदा उर्वरकता में ह्रास**- कृषि भूमि पर तेजी से बढ़ते जनसंख्या के बढ़ते दबाव से कृषि उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से जहाँ एक ओर दहलनों के कृषि क्षेत्र में कमी आ रही है, वहीं दूसरी ओर बहु-फसलीकरण में बढ़ोतरी होने से परती भूमि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कमी आई है। इससे भूमि में पुनः उर्वरता पाने की प्राकृतिक प्रक्रिया अवरुद्ध हुई है जैसे नाइट्रोजनीकरण। साथ ही पर्याप्त मात्रा में रासायनिक उर्वरक तथा कीटनाशक रसायनों का प्रयोग भी भारतीय कृषकों द्वारा किया जा रहा है। उक्त कारणों के भारत के विभिन्न क्षेत्रों की मृदा उत्पादकता में ह्रास अनुभव किया जा रहा है। सिंचाई तथा कृषि विकास की दोषपूर्ण नीतियों के कारण यह समस्या और भी गम्भीर हो गई है।

(ख) **मृदा अपरदन** - भारत में समुचित रख-रखाव व प्रबन्धन के अभाव में प्रतिवर्ष लाखों हेक्टेअर भूमि मृदा अपरदन की समस्या से ग्रस्त हो रही है। शुष्क क्षेत्रों, पर्याप्त वर्षा प्राप्त करने वाले वनस्पति विहीन क्षेत्रों, जलोढ़ मिट्टी वाले भागों, कटे-फटे पठारी भागों में तथा तीव्र ढाल रखने वाले धरातलीय भू-भागों में मृदा अपरदन प्रमुख रूप से प्रभावी मिलता है।

(ग) **लवणता, मृदा क्षारता तथा जलाक्रांतता**- अभी तक भारत की लगभग 80 लाख हेक्टेअर भूमि लवणता व क्षारता से प्रभावित हो चुकी है।

2. भारतीय कृषि की प्रमुख समस्याओं एवं कृषि के विकास में हरित क्रांति की भूमिका का वर्णन करें।

उत्तर: भारतीय कृषि की प्रमुख समस्याएँ

क) अनियमित मानसून पर निर्भरता
ख) निम्न उत्पादकता
ग) वित्तीय संसाधनों की बाधाएँ तथा ऋणग्रस्तता
घ) भूमि सुधारों की कमी
ङ) छोटे खेत तथा विखंडित जोतें
च) अत्याधिक रसायनों व उर्वरकों का प्रयोग
छ) सिंचाई साधनों की कमी।

भारत में 1960 के दशक में खाद्यान फसलों के उत्पादन में वृद्धि करने के लिए अधिक उत्पादन देने वाली नई किस्मों के बीज किसानों को उपलब्ध कराये गये। किसानों को अन्य कृषि निवेश भी उपलब्ध कराये गए, जिसे पैकेज प्रौद्योगिकी के नाम से जाना जाता है। जिसके फलस्वरूप पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, गुजरात, राज्यों में खाद्यान्नों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। इसे हरित क्रान्ति के नाम से जाना जाता है। हरित क्रान्ति की निम्नलिखित विशेषताएं है :-

क) उन्नत किस्म के बीज
ख) सिंचाई की सुविधा
ग) रासायनिक उर्वरक
घ) कीटनाशक दवाईयां
ङ) कृषि मशीनें

Jharkhandlab.com

अध्याय - 6 जल संसाधन WATER RESOURCES

पाठ के मुख्य बिंदु

- जैसा कि हम जानते हैं, जल ही जीवन है। जल एक नवीकरणीय संसाधन है, जिसकी पुनः पूर्ति जल चक्र के माध्यम से धरातल पर हो जाती है।
- जल एक नवीकरणीय संसाधन है। पृथ्वी के लगभग 71% भाग पर जल की उपस्थिति मिलती है।
- संपूर्ण विश्व में भारत का क्षेत्रफल 2.45 प्रतिशत है, जबकि यहां 17.6 प्रतिशत लोग निवास करते हैं और यदि बात करें जलीय संसाधनों का तो यह 4 प्रतिशत भारत में पाया जाता है।
- भारत में जल संसाधनों को दो भागों में विभाजित किया जाता है :- धरातलीय सतही जल संसाधन एवं भौम या भूमिगत जल संसाधन।
- नदियों, झीलों, तालाबों एवं अन्य छोटे जलाशयों के रूप में मिलने वाला जल धरातलीय जल कहलाता है।
- भारत में गंगा नदी का कुल पुनः पूर्ति योग्य भौम जल संसाधन सर्वाधिक है।
- किसी समुद्र या महासागर के किनारे पर बनने वाला एक उथला क्षेत्र जो किसी पतली स्थलीय पेटी द्वारा समुद्र या महासागर से थोड़ा या पूरा अलग हो जाता है तथा जिसमें पानी भरा होता है, लैगून कहलाता है।
- भारत में जल का उपयोग मुख्य रूप से 3 सेक्टरों में किया जाता है:- घरेलू क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र एवं कृषि क्षेत्र।
- चूँकि भारत एक कृषि प्रधान देश है अतः भारत में जल का सर्वाधिक उपयोग कृषि कार्य में सिंचाई हेतु किया जाता है।
- बढ़ती जनसंख्या के कारण प्रतिव्यक्ति जल की उपलब्धता दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है। इसके साथ ही औद्योगीकरण से धरातलीय एवं भूमिगत जल प्रदूषित हो रहे हैं।
- वर्तमान समय में जल से संबंधित कई समस्याएं उभर रही हैं। जैसे:- जल का अधिक दोहन, जल प्रदूषण, जल के पुनः चक्रण में कमी आदि।
- गंगा तथा इसकी सहायक नदियों पर बसे नगर तथा उनके घरेलू सीवेज के साथ-साथ कार्यरत उद्योग से निकलने वाले कूड़े - कचरे नदियों के जल को प्रदूषित करने में मुख्य भूमिका निभा रही है। गंगा तथा यमुना देश की सर्वाधिक प्रदूषित नदियां हैं।
- गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी बेसिन में उपयोग योग्य भूमिगत जल संसाधन का लगभग 46% पाया जाता है।
- उत्तर - पूर्वी भारत में अधिक वर्षा होने के बावजूद भूमि का ढाल अधिक होने के कारण भूमि में जल का प्रवेश कम होता है, इसलिए भूमिगत जल की मात्रा कम हो जाती है तथा जल अधिक गहराई मिलता है।
- पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, तमिलनाडु राज्यों में भौम जल का उपयोग सर्वाधिक है, जबकि छत्तीसगढ़, ओडीशा, केरल आदि राज्यों में भौम जल का कम उपयोग होता है।
- धरातलीय और भोम जल का सर्वाधिक उपयोग कृषि क्षेत्र में होता है। कृषि में धरातलीय जल का 89% और भौम जल का 92% उपयोग किया जाता है। घरेलू सेक्टर में धरातलीय जल का 9% उपयोग किया जाता है।
- बाह्य पदार्थों जैसे सूक्ष्म जीव, रासायनिक पदार्थों, औद्योगिक एवं घरेलू अपशिष्ट पदार्थों के कारण जल की गुणवत्ता समाप्त हो जाती है और जल प्रदूषित हो जाता है।
- जल संभर प्रबंधन के लिए केंद्र एवं राज्य सरकार के द्वारा कई कार्यक्रम चलाए गए हैं। जैसे :- हरियाली परियोजना, नीरू - मीरू परियोजना, अरबारी पानी संसद परियोजना आदि।
- प्राचीन काल से ग्रामीण क्षेत्रों में परंपरागत तरीके से विभिन्न जलाशयों जैसे तालाब, झील, डोबा आदि में वर्षा जल संग्रहण किया जाता रहा है, इसके अतिरिक्त छत पर वर्षा जल संग्रहण विधि के द्वारा भी जल संग्रहण किया जाता है। राजस्थान में वर्षा जल संग्रहण के लिए कुंड अथवा टांका का निर्माण किया जाता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. समस्त पृथ्वी पर कितना प्रतिशत जल पाया जाता है?
(क) 70 % (ख) 71%
(ग) 72 % (घ) 73%

2. जल किस प्रकार का संसाधन है?
(क) अनवीकरणीय (ख) अजैव संसाधन
(ग) चक्रीय (घ) जैव संसाधन

3. विश्व में भारत का जल संसाधन कितने प्रतिशत भाग में पाया जाता है?
(क) 4 % (ख) 5%
(ग) 6 % (घ) 7%

4. नीरू मीरू या जल और आप परियोजना भारत में कौन से राज्य में चलाया जा रहा है?
(क आंध्र प्रदेश (ख) कर्नाटक
(ग) उड़ीसा (घ) छत्तीसगढ़

5. भारत का प्रथम राज्य कौन- सा है जिसने प्रत्येक घर में जल संग्रहण संरचना का निर्माण अनिवार्य कर दिया है ?
(क) तमिलनाडु (ख) कर्नाटक
(ग) केरल (घ) आंध्र प्रदेश

6. राजस्थान के अर्द्ध- शुष्क तथा शुष्क क्षेत्रों में अवस्थित बस्तियों में परंपरागत रूप से एक वर्षा जल संग्रहण ढांचे का उपयोग किया जाता है जिससे क्या कहा जाता ?
(क) जल संभर (ख) नीरू- मीरू
(ग) टांका या कुंड (घ) कूप

7. भारत की राष्ट्रीय जल नीति कब अंगीकृत किया गया?
(क) 2010 ई. (ख) 2015 ई.
(ग) 2012 ई (घ) 2014ई.

8. निम्नलिखित नदियों में से, देश में किस नदी में सबसे ज्यादा पुनः पूर्तियोग्य भौमजल संसाधन हैं?
(क) सिंधु (ख) ब्रह्मपुत्र
(ग) गंगा (घ) गोदावरी

9 घन कि०मी० में दी गई निम्नलिखित संख्याओं में से कौन-सी संख्या भारत में कुल वार्षिक वर्षा दर्शाती है?
(क) 2,000 (ख) 3,000
(ग) 4,000 (घ) 5,000

Jharkhandlib.com

10 **निम्नलिखित दक्षिण भारतीय राज्यों में से किस राज्य में भौमजल उपयोग (% में) इसके कुल भौमजल संभाव्य से ज्यादा है ?**

(क) तमिलनाडु (ख) कर्नाटक

(ग) आंध्र प्रदेश (घ) केरल

11 **देश में प्रयुक्त कुल जल का सबसे अधिक समानुपात निम्नलिखित सेक्टरों में से किस सेक्टर में है?**

(क) सिंचाई (ख) उद्योग

(ग) घरेलू उपयोग (घ) इनमें से कोई नहीं ।

12 **कौन-सी दक्षिण भारतीय नदी का वार्षिक जल प्रवाह का अधिकतर भाग काम में लाया जाता है?**

(क) गोदावरी (ख) कृष्णा

(ग) कावेरी (घ) सभी

13. **कुछ राज्यों में जैसे राजस्थान और महाराष्ट्र में अधिक जल निकालने के कारण भूमिगत जल में क्या हो गया?**

(क) फ्लुओराइड का संकेंद्रण बढ़ गया

(ख) पानी सूख गया

(ग) मृदा अपरदन हो गया

(घ) सभी कार्य हो गए

14. **जल संसाधनों का संरक्षण क्यों जरूरी है?**

(क) जल की कमी के लिए

(ख) बढ़ती मांग और तेजी से फैलते प्रदूषण की दृष्टि से

(ग) स्थानिक और ऋतुवत् असमानता

(घ) सभी (क, ख, और ग)

15. **वह क्षेत्र जिसका जल एक बिन्दु की ओर प्रवाहित होता है, क्या कहलाता है?**

(क) जल संरक्षण (ख) जल संभर विकास

(ग) विकास परियोजना (घ) वर्षा जल संग्रहण

16. **1999-2000 में कुल सिंचित क्षेत्र कितना था ?**

(क) 84.7 करोड़ (ख) 847 करोड़

(ग) 8.47 करोड़ (घ) 7.84 करोड़

17. **हीराकुंड बाँध किस प्रदेश में है?**

(क) उड़ीसा (ख) तमिलनाडु

(ग) कर्नाटक (घ) महाराष्ट्र

उत्तर- 1. (ख) 71% 2. (ग) चक्रीय 3. (क) 4% 4. (क) आंध्र प्रदेश 5. (क) तमिलनाडु 6. (ग) टांका या कुंड 7. (ग) 2012 ई. 8. (ग) गंगा 9. (ग) 4000 10. (क) तमिलनाडु 11. (क) सिंचाई 12. (घ) सभी 13. (क) फ्लुओराइड का संकेंद्रण बढ़ गया 14. (घ) सभी (क, ख, और ग) 15. (घ) जल संभर विकास 16. (ग) 8.47 करोड़ 17. (क) उड़ीसा

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1 'जल संभर' क्षेत्र से आप क्या समझते हैं?

उत्तर: जल संभर एक ऐसा क्षेत्र है जिसका पानी एक बिन्दु की ओर प्रवाहित होता है, जो इसे मृदा और जल संरक्षण की आदर्श नियोजन इकाई बना देता है।

प्रश्न 2. यमुना नदी किन-किन स्थानों पर सबसे अधिक प्रदूषित नदी है?

उत्तर: दिल्ली और इटावा के बीच यमुना नदी सबसे अधिक प्रदूषित नदी है।

3. **उत्तर भारत की प्रमुख नदियों के नाम बताओ।**

उत्तर: गंगा, ब्रह्मपुत्र, सिन्धु, यमुना आदि उत्तरी भारत में बहने वाली प्रमुख नदियाँ हैं।

4. **भारत के किस भाग में नहरों द्वारा सिंचाई अधिक भाग पर की जाती है?**

उत्तर: **उत्तर** भारत के विशाल मैदानों में नहरों का एक जाल-सा बिछा हुआ है। पंजाब की अपेक्षा राजस्थान में नहरों द्वारा सिंचित क्षेत्र अधिक है।

5. **'जल' मानव के लिए क्यों अनिवार्य है?**

उत्तर: क्योंकि मानव के जीवन की सभी क्रियाएँ जल पर आधारित है।

6. **अलवणीय जल किसे कहते हैं?**

उत्तर: अलवणीय जल, प्राकृतिक जल है, जिसमें लवण, खनिज इत्यादि नहीं पाए जाते हैं। वर्षा का जल अलवणीय जल कहलाता है।

7. **जल के मुख्य स्रोत कौन-कौन से हैं?**

उत्तर: जल के मुख्य रूप से चार स्रोत हैं पृष्ठीय जल, भौम जल, वायुमण्डलीय जल और महासागरीय जल ।

8. **पृष्ठीय जल कहाँ से प्राप्त होता है?**

उत्तर: पृष्ठीय जल ताल-तलैयों, नदियों, सरिताओं और जलाशयों में पाया जाता है।

9. **भारत की सबसे बड़ी नदियाँ कौन-सी हैं ?**

उत्तर: भारत में बहने वाली सबसे बड़ी नदी गंगा है। संसार में ब्रह्मपुत्र और गंगा 10 बड़ी नदियों में मानी जाती है।

10. **जल के मुख्य उपयोग क्या हैं?**

उत्तर: जल का मुख्य उपयोग पेय जल के रूप में होता है। इसके बाद, सिंचाई के लिए, जल शक्ति, औद्योगिक क्रियाकलापों आदि में किया जाता है।

11. **भारत में सिंचाई के मुख्य स्रोत क्या हैं?**

उत्तर: भारत में सिंचाई के तीन प्रमुख साधन है - नहरें, कुएँ, नलकूप तथा तालाब ।

12. **वर्षा जल संग्रहण करने के क्या लाभ हो सकते हैं?**

उत्तर: वर्षा जल संग्रहण पानी की उपलब्धता को बढ़ाता है, भूमिगत जल स्तर को नीचा होने से रोकता है, फ्लोराइड और नाइट्रेट्स जैसे संदुषक को कम करके भूमिगत जल की गुणवत्ता बढ़ाता है, मृदा अपरदन और बाढ़ को रोकता है।

13. **जल संभर प्रबंधन से आपका क्या तात्पर्य है?**

उत्तर: जल संभर प्रबंधन का तात्पर्य - धरातलीय और भौम जल संसाधनों के दक्ष प्रबंधन से है। इसके अंतर्गत बहते जल को रोकना और विभिन्न विधियों द्वारा भौम जल का संचयन और पुनर्भरण शामिल है।

14. **हम कितने घन कि.मी. धरातलीय जल का उपयोग कर पाते हैं?**

उत्तर: धरातलीय जल का लगभग 690 घन कि.मी. (32%) जल का ही उपयोग हम कर पाते हैं।

15. **जल-संभर विकास का एक उदाहरण कहाँ पर स्थित है?**

उत्तर: महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में रालेगन सिद्धि नामक एक छोटा-सा गाँव है। यह पूरे देश में जल-संभर विकास का एक उदाहरण है

Jharkhandlab.com

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **'भौम-जल' किसे कहते हैं? भारत में भौम जल क्षमता कितनी है?**

उत्तर: पृष्ठीय जल की थोड़ी-सी मात्रा मृदा में प्रवेश कर जाती है इसे भौम-जल कहते हैं। जलोढ़ मृदाओं में जल आसानी से रिस जाता है। भारत के उत्तरी विशाल मैदानों में भौम-जल के विकास की संभावनाएँ अधिक हैं। भारत में कुल अपूरणीय भौम-जल क्षमता 433.9 अरब घन मीटर है। अकेले उत्तर प्रदेश में ही भौम जल की क्षमता 19.0 प्रतिशत है। महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और तमिलनाडु में भूमिगत जल संसाधनों की संभावित क्षमता बहुत कम है।

2. **जल का प्रमुख उपयोग कहाँ होता है? वर्णन कीजिए।**

उत्तर: जल का प्रमुख उपयोग सिंचाई में होता है। सिंचाई के लिए जल कई प्रकार से उपयोग में लाया जाता है। आधुनिक सिंचाई का प्रारम्भ 1831 माना जाता है जब उत्तर प्रदेश में पूर्वी यमुना नहर बन कर तैयार हुई थी। स्वतंत्रता के बाद सिंचाई की क्षमता में काफी वृद्धि हुई है। भारत का अधिकतर भाग उष्ण कटिबंध और उपोष्ण कटिबंध में स्थित है अतः यहाँ वाष्पोत्सर्जन बहुत अधिक होता है। परिणामस्वरूप सिंचाई के लिए जल की बहुत माँग है। अतः जल के आर्थिक उपयोगों में सिंचाई का बहुत अधिक महत्व है।

3. **अलवण जल की महत्ता पर प्रकाश डालिए।**

उत्तर: अलवण जल एक आधारभूत प्राकृतिक संसाधन है। यह मानव, कृषिगत और औद्योगिक क्रियाकलापों के लिए अनिवार्य है। बाँधों के पीछे बने जलाशयों में संग्रहीत वर्षा जल की आपूर्ति गाँवों और नगरों को की जाती है। विशाल नदियों से नहरें निकाल कर शुष्क क्षेत्रों के अत्यंत उपजाऊ मैदानों में सिंचाई की जाती है। जल के अन्य उपयोग हैं- जल विद्युत उत्पादन तथा आंतरिक नौ-परिवहन।

4. **पृथ्वी के धरातल पर जल कहाँ से प्राप्त होता है?**

उत्तर: पृथ्वी के तल पर जल वर्षा से प्राप्त होता है। वर्षा से प्राप्त जल अलवणीय होता है। वर्षा से प्राप्त संपूर्ण जल का उपयोग नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसका बहुत-सा भाग वाष्पीकृत हो जाता है तथा बहुत-सा जल बहकर नदियों, झीलों और तालाबों में चला जाता है। इसे पृष्ठीय जल कहते हैं। वर्षा का जल ताल-तलैयों, नदियों, सरिताओं आदि जलाशयों में चला जाता है।

5. **मझगाँव जल संभर विकास कार्यक्रम की विवेचना कीजिए।**

उत्तर: मझगाँव मध्य प्रदेश के सतना जिले का एक गाँव है। यह गाँव निम्न उत्पादकता, सिंचाई के अभाव, नीचे जाते जलस्तर, पेय जल की कमी और मृदा अपरदन के लिए जाना जाता हैं। 1996 से पूर्व ही ग्रीष्म ऋतु में जल की बेहद कमी हो जाती थी कृषि को प्रायः नुकसान हो जाता था। लोग और पशु परेशानी में जीते थे। गाँव में एक भी नलकूप नहीं था। इस गाँव ने जल संभर योजना को अपनाया, खेतों के चारों ओर गड्ढे बनाएँ। बहते पानी को रोकने के लिए बांध बनाकर नियंत्रित किया। इससे, वर्षाजल रिस कर जमीन के अन्दर चला गया तथा भौम जल के भंडार बढ़ गए और जल स्तर ऊँचा उठ गया। मिट्टी के बाँधों के पीछे एकत्रित जल अब 1504 हेक्टेयर भूमि की सिंचाई करता है तथा लोगों को पूरे साल पेयजल मिलता रहता है। धान की फसल की उत्पादकता में 52 से 60% तक की तथा गेहूँ में 40 प्रतिशत तक की वृद्धि हो गई।

6. **जल के औद्योगिक उपयोगों की विवेचना कीजिए।**

उत्तर: औद्योगिक क्षेत्र में जल का उपयोग महत्वपूर्ण है। औद्योगिक विकास के लिए पर्याप्त जल की आपूर्ति पहली आवश्यकता है। द्वितीय सिंचाई आयोग ने अपनी 1972 की रिपोर्ट में औद्योगिक उद्देश्यों के लिए 50 अरब घन मीटर जल के प्रावधान की सिफारिश की थी। लेकिन एक नए आंकलन के अनुसार सन् 2000 में उद्योगों को केवल 30 अरब घन मीटर जल की आवश्यकता थी, जिसके सन् 2025 तक बढ़ने का अनुमान है।

7 **यह कहा जाता है कि भारत में जल-संसाधनों में तेजी से कमी आ रही है। जल संसाधनों की कमी के लिए उत्तरदायी कारकों की विवेचना कीजिए।**

उत्तर: भारत में तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण जल की प्रतिव्यक्ति उपलब्धता दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही है। साथ ही उपलब्ध जल संसाधन औद्योगिक, कृषि और घरेलू प्रदूषकों से प्रदूषित होता जा रहा है। इस कारण उपयोगी जल संसाधनों की उपलब्धता कम होती जा रही है।

8. **पंजाब, हरियाणा और तमिलनाडु राज्यों में सबसे अधिक भौमजल विकास के लिए कौन-से कारक उत्तरदायी हैं?**

उत्तर: पंजाब, हरियाणा तथा तमिलनाडु राज्यों में भौमजल विकास सबसे अधिक इसलिए संभव हुआ है क्योंकि इन प्रदेशों में कृषि के अंतर्गत उगाई जाने वाली फसलों को सिंचाई की आवश्यकता होती है। हरित क्रांति का शुभारंभ भी इन्हीं राज्यों से हुआ था साथ ही भौमजल की मात्रा भी इन राज्यों में सर्वाधिक है।

9. **देश में कुल उपयोग किए गए जल में कृषि का हिस्सा कम होने की संभावना क्यों है?**

उत्तर: धीरे-धीरे ही सही भारत में औद्योगिकीकरण का स्तर बढ़ रहा है तथा कृषि क्षेत्र कम हो रहा है। नगरों के समीप की भूमि पर कृषि के अलावा अनेक आर्थिक गतिविधियों में भूमि उपयोग बढ़ने से कृषि भूमि सिकुड़ती जा रही है। अतः भविष्य में जल का उपयोग भी कृषि की अपेक्षा अन्य आर्थिक गतिविधियों में बढ़ने की संभावना है।

10. **लोगों पर संदूषित जल/गंदे पानी के उपयोग के क्या संभव प्रभाव हो सकते हैं?**

उत्तर: विश्व बैंक और विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि भारत में एक-चौथाई संक्रामक रोग जल से होते हैं। संदूषित जल से उत्पन्न होने वाली बीमारियाँ हैं अतिसार, पीलिया, हैजा, रोहा, आंतों के कृमि आदि।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. **देश में जल संसाधनों की उपलब्धता की विवेचना कीजिए और इसके स्थानिक वितरण के लिए उत्तरदायी निर्धारित करने वाले कारक बताइए।**

उत्तर: भारत में जल संसाधनों की उपलब्धता के चार मुख्य स्रोत हैं-

(i) नदियाँ (ii) झीलें (iii) तलैया (iv) तालाब। यह जलवर्षण के विविध रूपों से प्राप्त होता है। देश में एक वर्ष में वर्षण से प्राप्त कुल जलराशि की मात्रा लगभग 4,000 घन कि०मी० है। धरातलीय जल और पुनः पूर्तियोग्य भौमजल से 1,869 घन कि०मी० जल की उपलब्धता है। जिसका केवल 60% अर्थात् 1,122 घन कि०मी० का ही लाभदायक उपयोग किया जा सकता है। भारत में होने वाली वर्षा में अत्यधिक सामयिक व स्थानिक विभिन्नता पायी जाती है। कुल वर्षा का अधिकांश भाग मानसूनी मौसम तक संकेद्रित है। गंगा, ब्रह्मपुत्र व बराक नदियों के जल ग्रहण क्षेत्रों में अपेक्षाकृत अधिक वर्षा होती है जोकि भारत का एक-तिहाई क्षेत्रफल है। किंतु यहाँ। कुल धरातलीय जल-संसाधनों का 60% जल पाया जाता है। दक्षिण भारतीय नदियाँ जैसे- गोदावरी, कृष्णा व कावेरी में जल प्रवाह का अधिकतर भाग उपयोग में लाया जा रहा है जबकि गंगा व ब्रह्मपुत्र नदी घाटियों में यह अभी तक संभव नहीं हो पाया है। नदियों में जल प्रवाह उनके जल ग्रहण क्षेत्र के आकार तथा उनके जल ग्रहण क्षेत्र में हुई वर्षा पर निर्भर करता है। भारत में नदियों व उनकी सहायक नदियों की कुल संख्या 10,360 है। इनमें 1,869 घन कि०मी० वार्षिक जल प्रवाह होने का अनुमान है जिसका केवल 32% अर्थात् 690 घन कि०मी० जल का उपयोग किया जा सकता है।

2. **जल संसाधनों का ह्रास सामाजिक द्वंद्वों और विवादों को जन्म देते हैं। इसे उपयुक्त उदाहरणों सहित समझाइए।**

उत्तर: जल एक नवीकरणीय चक्रीय प्राकृतिक संसाधन है जो कि पृथ्वी पर प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है किंतु पृथ्वी पर उपलब्ध कुल जल का केवल 3% ही अलवणीय अर्थात् मानव के लिए उपयोगी है,

jharkhandlab.com

शेष 97% जल लवणयुक्त अथवा खारा है, जो केवल नौ संचालन व मछली पकड़ने के अलावा मानव के लिए प्रत्यक्ष उपयोग में नहीं आता। अलवणीय जल की उपलब्धता भी स्थान और समय के अनुसार भिन्न-भिन्न है। इसलिए इस दुर्लभ संसाधन के आवंटन और नियंत्रण को लेकर समुदायों, राज्यों तथा देशों के बीच द्वंद्व, तनाव व लड़ाई-झगड़े तथा विवाद होते रहे हैं। जैसे।।

क. पंजाब, हरियाणा व हिमाचल प्रदेश में बहने वाली नदियों के जल बँटवारे को लेकर विवाद ।

ख. नर्मदा नदी के जल को लेकर महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश व गुजरात राज्यों में विवाद ।

ग. कावेरी नदी के जल बँटवारे को लेकर केरल, तमिलनाडु व कर्नाटक राज्यों में विवाद । जनसंख्या के बढ़ने के साथ-साथ जल की प्रतिव्यक्ति उपलब्धता दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही है। उपलब्ध जल औद्योगिक, कृषि व घरेलू निस्सरणों से प्रदूषित होता जा रहा है अतः उपयोगी, शुद्ध जल संसाधनों की उपलब्धता और सीमित होती जा रही है।

3. जल-संभर प्रबंधन क्या है? क्या आप सोचते हैं कि यह सतत पोषणीय विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है?

उत्तरः जल-संभर प्रबंधन का संबंध, मुख्य रूप से धरातलीय तथा भौमजल संसाधनों के कुशल व दक्ष प्रबंधन से है। इसके अंतर्गत बहते वर्षा जल को विभिन्न विधियों द्वारा रोककर अंतःस्रवण, तालाब, पुनर्भरण तथा कुओं आदि के द्वारा भौमजल का संचयन और पुनर्भरण करना शामिल है। जल संभर प्रबंधन का उद्देश्य प्राकृतिक जल संसाधनों और समाज की आवश्यकताओं के बीच संतुलन स्थापित करना है। कुछ क्षेत्रों में जल-संभर विकास परियोजनाएँ पर्यावरण और अर्थव्यवस्था का कायाकल्प करने में सफल हुई हैं। जैसे :-

क. **हरियाली**- केंद्र सरकार द्वारा प्रवर्तित जल-संभर विकास परियोजना है जिसका उद्देश्य ग्रामीण जनसंख्या को पीने,सिंचाई, मत्स्यपालन और वन रोपण के लिए जल-संभर विधि से जल का संरक्षण करना है। यह परियोजना लोगों के सहयोग से ग्राम पंचायतों द्वारा निष्पादित की जा रही है।

ख. **नीरू-मीरू (जल और आप)** - यह कार्यक्रम आंध्रप्रदेश में तथा अरवारी पानी संसद (अलवर राजस्थान में) लोगों के सहयोग से चलाई जा रहे हैं जिनमें जल संग्रहण के लिए संरचनाएँ जैसे अंतःस्रवण, तालाब, ताल (जोहड़) की खुदाई की गई हैं तथा रोक बाँध बनाए गए हैं।

ग. तमिलनाडु में घरों में जल संग्रहण संरचना का निर्माण आवश्यक बना दिया गया है।

घ. महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में स्थित रालेगॅन सिद्धि एक छोटा-सा गाँव है। यह पूरे देश में जल-संभर विकास का एक जीवंत उदाहरण है। देश में लोगों को जल-संभर विकास प्रबंधन के लाभों को बताकर उनमें जागरूकता पैदा करके जल की उपलब्धता को सतत पोषणीय विकास से जोड़ा जा सकता है।

Jharkhandstudy.com

अध्याय - 7

खनिज तथा ऊर्जा संसाधन
MINERALS AND ENERGY RESOURCES

पाठ के मुख्य बिंदु

- भूमि के अंदर से निकाले गये पदार्थ को खनिज पदार्थ कहा जाता है। किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास में खनिज संसाधनों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। खनिज संसाधनों को किसी राष्ट्र के औद्योगिक विकास की कुंजी माना जाता है।
- भारत अपनी विविधतापूर्ण भूगर्भिक संरचना के कारण विविध प्रकार के खनिज संसाधनों में धनी है।
- खनिज पदार्थों का एक निश्चित रासायनिक एवं भौतिक गुण होता है तथा ये कार्बनिक और अकार्बनिक उत्पत्ति के प्राकृतिक पदार्थ होते हैं।
- भारी मात्रा में बहुमूल्य खनिज पूर्व पूराजीवी काल या प्री पैलाइजोइक युग की चट्टानों में निक्षेपित हैं।
- खनिजों की गुणवत्ता एवं मात्रा के बीच प्रतिलोभी संबंध पाया जाता है अर्थात् मूल्यवान खनिज कम मात्रा में उपलब्ध होते हैं जैसे सोना, यूरेनियम आदि। - अधिकांश धात्विक खनिज हमारे देश के प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र की प्राचीन क्रिस्टलीय शैलों में पाए जाते हैं।
- भारत में खनिज मुख्यतः तीन विस्तृत पट्टियों में संकेन्द्रित है।
    1) उत्तर पूर्वी पठार
    2) दक्षिण पश्चिमी पठार
    3) उत्तर पश्चिमी प्रदेश
- भारत में पर्याप्त मात्रा में लौह भंडार है। यह लगभग 2000 करोड़ टन के भंडार हैं। लौह के कुल आरक्षित भंडारो का लगभग 96% भाग उड़ीसा झारखंड, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश व तमिलनाडु में है।
- मैगनीज बहुउपयोगी खनिज है भारत विश्व में इसके उत्पादन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसका उपयोग मिश्र धातु बनाने व विनिर्माण में किया जाता है।
- भारत में ईधन खनिज जैसे कोयला, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैसे भी प्रचुर मात्रा में है। पेट्रोलियम का आयात करना पड़ता है। कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस व परमाणु उर्जा, उर्जा के परंपरागत स्रोत है। ये समाप्य संसाधन है।
- परमाणु ऊर्जा के लिये कच्चे माल के रूप में यूरेनियम एवं थोरियम भी भारत में पाया है।
- भारत में 6 प्रमुख परमाणु शक्ति केन्द्र हैं। सतत पोषणीय विकास के लिए खनिज संसाधनों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है ।
- इसी प्रकार के खनिज भूगर्भ में एक निश्चित मात्रा में ही है अतः उनका उपयोग बुद्धिमत्ता से करना चाहिये।
- ऊर्जा के परंपरागत साधनों जैसे कोयले, गैस एवं प्राकृतिक तेल के संरक्षण के साथ-साथ गैर परंपरागत साधनों का विकास आवश्यक है जैसे .सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जैव ऊर्जा आदि।

मुख्य खनिजों का संक्षिप्त वितरण

क्रमसं	खनिज	उपयोग	प्रमुख क्षेत्र जहाँ पाया जाता है
1..	लौह-अयस्क	सभी उद्योगों का आधार।	उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु
2.	मैंगनीज	मिश्र धातु बनाने में सहायक एवं लौह धातु की गलन भट्टी में प्रयोग।	उड़ीसा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश
3.	बॉक्साइट	अल्यूमीनियम उद्योग में सहायक।	उड़ीसा, गुजरात, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक
4.	ताँबा	विद्युत संबंधी कार्यों में।	आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु
5.	माइका / अभ्रक	विद्युत एवं इलेक्ट्रॉनिक मशीनरी में।	झारखंड, आंध्र प्रदेश, राजस्थान

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. बॉम्बे हाई क्यों प्रसिद्ध है?
क. खनिज तेल के लिए ख. कोयले के लिए
ग. मैंगनीज के लिए घ. तांबा उत्पादन के लिए।

2. अंकलेश्वर तेल क्षेत्र किस राज्य में स्थित है?
क. गुजरात ख. आंध्र प्रदेश
ग. राजस्थान घ. झारखंड।

3. निम्नलिखित में किस राज्य में प्रमुख तेल क्षेत्र स्थित है?
क. असम ख. बिहार
ग. राजस्थान घ. तमिलनाडु।

4. निम्नलिखित में कौन भारत का पहला परमाणु ऊर्जा संयंत्र है?
क. कलपक्कम ख. नरोरा
ग. राणा प्रताप सागर घ. तारापुर।

5. निम्नलिखित में कौन सा ऊर्जा का अनवीकरणीय संसाधन है?
क. जल ख. सौर
ग. ताप घ. पवन

6. निम्नलिखित में से कौन-सा एक ऊर्जा का गैर परंपरागत स्रोत है?
क. कोयला ख. खनिज तेल
ग. सौर ऊर्जा घ. जलविद्युत।

7. निम्नलिखित किस क्षेत्र में खनिज तेल का सबसे बड़ा भंडार पाया जाता है?
क. ईरान ख. इराक
ग. चीन घ. सऊदी अरब

8. मैंगनीज का सबसे बड़ा भंडार किस राज्य में है?
क. झारखंड ख. उड़ीसा
ग. मध्य प्रदेश घ. आंध्र प्रदेश

Jharkhandlab.com

9. **अंकलेश्वर क्षेत्र कहां है?**
- क. असम में
- ख. राजस्थान में
- ग. आंध्र प्रदेश में
- घ. गुजरात में

10. **हजीरा - विजयपुर - जगदीशपुर गैस पाइपलाइन किस राज्य से होकर नहीं गुजरती है?**
- क. महाराष्ट्र
- ख. गुजरात
- ग. मध्य प्रदेश
- घ. **उत्तर** प्रदेश

11. **बाबा बुदन की पहाड़ी कहां स्थित है?**
- क. कर्नाटक में
- ख. गोवा में
- ग. झारखंड में
- घ. ओडिशा में

12. **रावतभाटा परमाणु ऊर्जा संयंत्र किस राज्य में है?**
- क. **उत्तर** प्रदेश
- ख. आंध्र प्रदेश
- ग. कर्नाटक
- घ. राजस्थान।

13. **झरिया कोयला क्षेत्र किस राज्य में स्थित है?**
- क. बिहार
- ख. उड़ीसा
- ग. झारखंड
- घ. आंध्र प्रदेश।

14. **नोआमुंडी लौह अयस्क खान किस क्षेत्र में स्थित है?**
- क. महाराष्ट्र में
- ख. झारखंड में
- ग. मध्यप्रदेश में
- घ. छत्तीसगढ़ में

15. **तारापुर नाभिकीय ऊर्जा संयंत्र कहां स्थित है?**
- क. **उत्तर** प्रदेश में
- ख. महाराष्ट्र में
- ग. कर्नाटक में
- घ. गुजरात में

16. **भारत में निम्नलिखित में से कौन सा राज्य अभ्रक का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है?**
- क. गुजरात
- ख. झारखंड
- ग. छत्तीसगढ़
- घ. बिहार

17. **कैगा नाभिकीय ऊर्जा केंद्र कहां अवस्थित है?**
- क .कर्नाटक
- ख. **उत्तर** प्रदेश
- ग. महाराष्ट्र
- घ. गुजरात

18. **हीराकुंड किस राज्य में स्थित है?**
- क. ओडिशा में
- ख. छत्तीसगढ़ में
- ग. झारखंड में
- घ. मध्यप्रदेश में

19. **काकरापारा परमाणु शक्ति केंद्र किस राज्य में स्थित है?**
- क. कर्नाटक
- ख. तमिलनाडु
- ग. गुजरात
- घ. महाराष्ट्र

20. **निम्नलिखित में कौन लौह युक्त खनिज है?**
- क. निकिल
- ख. तांबा
- ग. सोना
- घ. बॉक्साइट

21. **नरोरा नाभिकीय ऊर्जा संयंत्र किस राज्य में स्थित है?**
- क. महाराष्ट्र
- ख. गुजरात
- ग. कर्नाटक
- घ. **उत्तर** प्रदेश

22. **खेतड़ी क्यों प्रसिद्ध है?**
- क. तांबा के लिए
- ख. कोयला के लिए
- ग. बॉक्साइट के लिए
- घ. लौह अयस्क के लिए

23. **शिवसमुद्रम जल विद्युत परियोजना किस राज्य में स्थित है?**
- क. महाराष्ट्र
- ख. कर्नाटक
- ग. तमिलनाडु
- घ. आंध्र प्रदेश।

24. **कोडरमा किस खनिज के लिए प्रसिद्ध है?**
- क. तांबा
- ख. लोहा अयस्क
- ग. बॉक्साइट
- घ. अभ्रक

25. **उद्योगों की जननी किस खनिज को कहा जाता है?**
- क. लौह अयस्क
- ख. मैंगनीज
- ग. कोयला
- घ. तांबा

उत्तर : 1. (क) 2. (क) 3. (क) 4. (घ) 5. (ग) 6. (ग) 7. (घ) 8. (ग) 9.(घ) 10. (क)11. (क)12.(घ) 13.(ग) 14.(ख) 15.(ख) 16. (ख)17.(क) 18.(क) 19.(ग) 20. (क) 21. (घ) 22. (क) 23. (ख) 24.(घ) 25.(क)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **खनिज की परिभाषा दीजिये।**

उत्तर: खनिज वह प्राकृतिक पदार्थ है, जिसमें निश्चित रासायनिक व भौतिक गुण होते हैं। इनकी उत्पत्ति का आधार अजैविक, कार्बनिक या अकार्बनिक हो सकता है।

2. **लौह अयस्क के कौन से दो मुख्य प्रकार भारत में पाये जाते हैं?**

उत्तर: हेमेटाइट एवं मैग्नेटाइट।

3. **खनिजों की गुणवत्ता एवं मात्रा के बीच कैसा संबंध पाया जाता है?**

उत्तर : खनिजों की गुणवत्ता एवं मात्रा के बीच प्रतिलोमी संबंध पाया जाता है।

4. **रासायनिक तथा भौतिक विशेषताओं के आधार पर खनिजों को वर्गीकृत करें।**

उत्तर : रासायनिक तत्वों की विशेषताओं के आधार पर खनिजों को दो वर्गों में बांटा जाता है:-

क. धात्विक खनिज

ख. अधात्विक खनिज।

5. **देश में सर्वाधिक खनिज तेल का भंडार कहां स्थित है?**

उत्तर : देश का अधिकांश खनिज तेल असम, गुजरात तथा मुंबई हाई अपतटीय क्षेत्र (अरब सागर) की अवसादी चट्टानों में संचित है।

6. **लौह धात्विक खनिज किसे कहते हैं**

उत्तर : वैसे खनिज जिनमें लौह अंश मौजूद रहते हैं, लौह धात्विक खनिज कहलाते हैं। जैसे - लोहा एवं मैंगनीज।

7. **दो जीवाश्म ईंधन के नाम लिखें।**

उत्तर : कोयला तथा पेट्रोलियम। (जीवाश्म इंधन कार्बनिक उत्पत्ति के होते हैं।

8. **लौह खनिज के दो उदाहरण लिखें।**

उत्तर : लोहा एवं मैंग्नीज।

9. **ONGC का विस्तारित रूप लिखें।**

उत्तर : तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग। (OIL AND NATURAL GAS CORPORATION)

10. **भारत में खनिज संपन्न क्षेत्र के अंतर्गत किसे सम्मिलित कर सकते हैं।**

उत्तर : भारत में खनिज संपन्न क्षेत्र के अंतर्गत प्रायद्वीपीय पठारी भाग को सम्मिलित किया जाता है।

11. **भारत में सर्वाधिक कोयले के संचित भंडार कहां स्थित हैं?**

उत्तर : भारत के लगभग 97% कोयले के संचित भंडार दामोदर, सोन, महानदी, तथा गोदावरी घाटियों में संचित हैं।

Jharkhandlab.com

12. भारत के प्रमुख लौह अयस्क उत्पादक राज्यों के नाम लिखें।

उत्तर : उड़ीसा, छत्तीसगढ़, झारखंड तथा कर्नाटक भारत के प्रमुख अयस्क उत्पादक राज्य हैं।

13. झारखंड राज्य में लौह अयस्क मुख्यत: किस जिले में पाया जाता है?

उत्तर : झारखंड के पूर्वी एवं पश्चिमी सिंहभूम जिले में नोआमुंडी तथा गोवा खानों से लौह अयस्क निकाला जाता है।

14. भारत में मैगनीज का निक्षेप मुख्य रूप से किस क्रम की चट्टानों में मिलता है?

उत्तर : धारवाड़ क्रम की चट्टानों में।

15. भारत का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कोयला क्षेत्र गोंडवाना कोयला क्षेत्र है। यह क्षेत्र किस नदी की घाटी में स्थित है। गोठंडवाना कोयला क्षेत्र तथा इस क्षेत्र के सबसे बड़े कोयला क्षेत्र का क्या नाम है।

उत्तर: दामोदर नदी की घाटी में स्थित है। इस क्षेत्र का सबसे बड़ा कोयला क्षेत्र झरिया है।

15. कूपों से निकाला गया खनिज तेल सीधे प्रयोग में नहीं लाया जा सकता। क्यों?

उत्तर: कूपों से निकाला गया खनिज तेल अपरिष्कृत तथा अनेक अशुद्धियों से परिपूर्ण होता है।

16. भारत के उत्तरी पश्चिमी प्रदेश की खनिज पट्टी किन खनिजों के लिये प्रसिद्ध है?

उत्तर: तांबा, जिंक, बलुआ पत्थर, ग्रेनाइट, संगमरमर जिप्सम आदि।

17. गेल (GAIL) की स्थापना क्यों की गई?

उत्तर: गेल की स्थापना प्राकृतिक गैस के परिवहन एवं विपणन के लिए का गई। GAIL का विस्तारित रूप Gas Authority of India Ltd. है।

18. एल्युमिनियम उद्योग का कच्चा माल कौन सा है?

उत्तर : बॉक्साइट एलमुनियम उद्योग का कच्चा माल है।

19. भारत में कोयला निक्षेप मुख्यत: किन शैल क्रमों में पाया जाता है?

उत्तर: कोयला मुख्यत: दो भूगर्भिक कालों की शैल क्रमों में पाया जाता है। गोंडवाना और टर्शियरी निक्षेप।

20. भारत में कोयले का निक्षेप किस क्रम की चट्टानों में मिलता है?

उत्तर : भारत में कोयले का निक्षेप गोंडवाना क्रम की चट्टानों में मिलता है।

21. भारत में पाए जाने वाले कोयला के दो प्रमुख प्रकार का नाम लिखिए।

उत्तर : एंथ्रेसाइट एवं बिटूमिनट।

22. झारखंड के प्रमुख कोयला क्षेत्रों के नाम लिखें।

उत्तर : झरिया, गिरिडीह, बोकारो एवं कर्णपुरा।

23. "पेट्रोलियम" शब्द का क्या अर्थ होता है?

उत्तर : पेट्रोलियम लैटिन भाषा के दो शब्द पेट्रा तथा ओलियम से मिलकर बना है जिसका अर्थ होता है चट्टानी तेल।

24. भारत में पर्याप्त मात्रा में पाए जाने वाले दो परमाणु खनिज के नाम लिखें।

उत्तर : यूरेनियम और थोरियम।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1 भारत में अभ्रक के वितरण का विवरण दें।

उत्तर : भारत में अभ्रक के जमाव प्रमुख रूप से झारखण्ड, आन्ध्र प्रदेश तथा राजस्थान राज्यों में मिलते हैं। झारखण्ड राज्य में उच्च गुणवत्ता वाला अभ्रक निचले हजारीबाग पठार की 150 किमी. लम्बी व 22 किमी चौड़ी पट्टी में पाया जाता है। आन्ध्र प्रदेश में नेल्लोर तथा राजस्थान में जयपुर-भीलवाड़ा पेटी व उदयपुर क्षेत्र में भी अभ्रक मिलता है।

2. नाभिकीय ऊर्जा क्या है? भारत के प्रमुख नाभिकीय ऊर्जा केन्द्रों के नाम लिखिए।

उत्तर- यूरेनियम तथा थोरियम आदि परमाणु खनिजों के अणुओं के नियन्त्रित दशाओं में विखण्डन से प्राप्त ऊर्जा को नाभिकीय ऊर्जा कहा जाता है। तारापुर (महाराष्ट्र), रावतभाटा (राजस्थान), कलपक्कम (तमिलनाडु), नरौरा (उत्तर प्रदेश), कैगा (कर्नाटक) तथा काकरापारा (गुजरात) भारत के प्रमुख नाभिकीय ऊर्जा केन्द्र हैं।

3. अलौह धातुओं के नाम बताएँ। इनके स्थानिक वितरण की विवेचना कीजिए।

उत्तर- लौह धातु रहित धातु खनिजों को अलौह खनिज कहा जाता है। बॉक्साइट तथा ताँबा प्रमुख अलौह धातु हैं। बॉक्साइट का उत्पादन प्रमुख रूप से ओडिशा, झारखण्ड, गुजरात, छत्तीसगढ़ तथा मध्य प्रदेश राज्यों से प्राप्त होता है, जबकि ताँबा खनिज के निक्षेप मुख्यतया झारखण्ड, मध्य प्रदेश तथा राजस्थान राज्यों में मिलते हैं।

4. ऊर्जा के अपारम्परिक स्रोत कौन-से हैं?

उत्तर- नाभिकीय ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, तरंग ऊर्जा, भूतापीय ऊर्जा तथा जैव ऊर्जा भारत में ऊर्जा के प्रमुख अपारम्परिक स्रोत हैं। ये सभी ऊर्जा स्रोत नवीनीकरण के योग्य होने के साथ-साथ पर्यावरण अनुकूल भी हैं।

5. अन्य सभी अनवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की अपेक्षा सौर तापीय प्रौद्योगिकी अधिक लाभ प्रद है क्यों?

उत्तर: ऊर्जा के अन्य गैर-परम्परागत साधनों की अपेक्षा सौर ऊर्जा उत्पादन में कम लागत आती है। सौर ताप हर जगह प्राप्त होती है तथा पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता।

6. खनिजों का संरक्षण एवं प्रबंधन क्यों आवश्यक है?

उत्तर : खनिज पदार्थ समापन संसाधन है अर्थात कुछ समय के बाद यह समाप्त हो जाते हैं और इनकी पुनः पूर्ति संभव नहीं होती है खनिजों को पुनः निर्मित नहीं किया जा सकता है क्योंकि खनिजों का निर्माण दीर्घकालीन प्रक्रिया है, अतः इनका समुचित संरक्षण और प्रबंधन आवश्यक है।

7. तांबे के दो लाभ बताइए। भारत के चार मुख्य तांबा क्षेत्रों का उल्लेख करो।

उत्तर: तांबे के लाभ :

क. बिजली की मोटर ट्रांसफार्मर, जनरेटर आदि के बनाने तथा विद्युत उद्योग के लिए ताँबा अपरिहार्य धातु है।

ख. यह एक आघातवर्धनीय तथा तन्य धातु हैं।

ग. आभूषणों को मजबूती प्रदान करने के लिए इसे सोने के साथ मिलाया जाता है।

खनन क्षेत्र - झारखंड का सिंहभूम जिला, मध्यप्रदेश में बालाघाट, कर्नाटक में चित्रदुर्ग, राजस्थान में झुंझुनू, अलवर व खेतड़ी जिले ।

Jharkhandlab.com

8. मैंगनीज के दो लाभ बताओ तथा चार उत्पादक राज्यों का उल्लेख करो ।

उत्तर : मैंगनीज के लाभ :-

क. लौह अयस्क के प्रगलन के लिए महत्वपूर्ण कच्चा माल है।

ख. इसका उपयोग लौह मिश्र धातु तथा विनिर्माण में भी किया जाता है।

खनन क्षेत्र:- उड़ीसा, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश व झारखण्ड ।

9. अपतट वेधन क्या है? भारत से उदाहरण देकर समझाइये।

उत्तर: समुद्र तट से दूर समुद्र की तली में मौजूद प्राकृतिक तेल को वेधन करके प्राप्त करना अपतट वेधन कहलाता है।

खम्भात की खाड़ी के निकट अरब सागर में खनिज तेल के भंडार प्राप्त हुए हैं। सागर तट से दूर 'बाम्बे हाई' नामक तेल क्षेत्र में सागर सम्राट नामक जहाज के द्वारा खुदाई से 1947 में तेल प्राप्त हुआ। यह क्षेत्र भारत में सबसे अधिक तेल उत्पादन करता है।

10. भूतापीय ऊर्जा किसे कहते हैं? इसका क्या महत्व है?

उत्तर: जब पृथ्वी के गर्भ से मैग्मा निकलता है तो अत्यधिक ऊष्मा निर्मुक्त होती है। इसे भूतापीय ऊर्जा कहते हैं। इसे विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त गीजर कूपों से निकलते गर्म पानी से ताप ऊर्जा पैदा की जा सकती है। जैसे भारत में हिमाचल प्रदेश के मनीकरण में भूतापीय ऊर्जा संयंत्र अधिकृत किया जा चुका है।

11. जैव ऊर्जा, ऊर्जा का संभावित स्रोत है। भारत जैसे विकासशील देश में यह ग्रामीण एवं शहरी जीवन को बेहतर बना सकता है। स्पष्ट कीजिए। या जैव ऊर्जा की परिभाषा देते हुये इसके लाभ बताइये।

उत्तर: क. जैव ऊर्जा उस ऊर्जा को कहा जाता है, जिसे जैविक उत्पादों से प्राप्त किया जाता है। इसमें कृषि अवशेष, सीवेज का अवशेष व औद्योगिक अपशिष्ट शामिल होते हैं।

ख. जैव ऊर्जा पर्यावरण अनुकूल है। यह ग्रामीण जीवन में लोगों की आत्मनिर्भरता को बढ़ाकर उनके आर्थिक जीवन को बेहतर बनाएगा तथा जलाऊ लकड़ी पर निर्भरता को कम करेगा।

शहरी क्षेत्रों के विशाल मात्रा में निकलने वाले अपशिष्टों के उचित निपटान की समस्या का समाधान व उनकी ऊर्जा की आपूर्ति को सुनिश्चित करेगा।

12. पवन ऊर्जा पर संक्षिप्त टिप्पणी दें। अथवा पवन ऊर्जा पूर्ण रूपेण प्रदूषण मुक्त और ऊर्जा का असमाप्य स्रोत है। इसकी भारत में अपार संभावनाएं है। स्पष्ट करें।

उत्तर: पवन ऊर्जा प्रदूषण मुक्त ऊर्जा का असमाप्य स्रोत है। पवन की गतिज ऊर्जा को टरबाइन के माध्यम से विद्युत ऊर्जा में बदला जाता है। संभावित स्थानीय पवन, पछुआ पवन तथा मानसूनी पवनों को ऊर्जा के स्रोत के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। भारत में पवन ऊर्जा के लिए राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र तथा कर्नाटक में अनुकूल परिस्थिति विद्यमान हैं। गुजरात के कच्छ में लाम्बा का पवन ऊर्जा संयंत्र एशिया का सबसे बड़ा संयंत्र है। तमिलनाडु के तूतीकोरिन में भी पवन ऊर्जा का एक अन्य संयंत्र है।

13. विशेषताओं के आधार पर ऊर्जा के परंपरागत एवं गैर परंपरागत साधनों में अन्तर स्पष्ट करें।

उत्तर : ऊर्जा के परंपरागत एवं गैर परंपरागत साधनों में अंतर

ऊर्जा के परम्परागत साधन/ स्रोत	गैर परम्परागत साधन/ स्रोत
कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस तथा नाभिकीय ऊर्जा हैं।	सौर, पवन, जल, भूतापीय ऊर्जा असमाप्य है।
इन संसाधनों का वितरण बहुत असमान है।	ये साधन अपेक्षाकृत अधिक समान रूप से वितरित है।
ये साधन पर्यावरण अनुकूल नही है अर्थात पर्यावरण प्रदूषण में इनकी बड़ी भूमिका है।	ये ऊर्जा के स्वच्छ साधन और पर्यावरण हितैषी है।

14. नाभिकीय ऊर्जा के उत्पादन में प्रयुक्त होने वाले खनिज कौन से हैं, भारत में ये कहाँ पाये जाते हैं?

उत्तर: नाभिकीय ऊर्जा के उत्पादन में प्रयुक्त होने वाले महत्वपूर्ण खनिज यूरेनियम और थोरियम है। यूरेनियम निक्षेप धारवाड़ शैलों में पाये जाते हैं। राजस्थान के उदयपुर, अलवर, झुंझुनू, मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महाराष्ट्र के भंडारा जिलों में यूरेनियम पाया जाता है। थोरियम केरल के तटीय क्षेत्र की बालू में मोनाजाइट और इल्मेनाइट से प्राप्त किया जाता है। मोनाजाइट निक्षेप केरल के पालाक्कड़ तथा कोलाम जिलों आंध्र प्रदेश के विशाखापटनम् तथा महानदी के डेल्टा भी पाये जाते हैं।

15. भारत में पाए जाने वाले खनिजों की तीन विशेषताओं का वर्णन कीजिए?

उत्तर : भारत में पाए जाने वाली खनिजों की विशेषताएँ :-

क. खनिज, असमान रूप में वितरित होते हैं। सब जगह सभी खनिज नहीं मिलते।

ख. अधिक गुणवत्ता वाले खनिज, कम गुणवत्ता वाले खनिजों की तुलना में कम मात्रा में पाए जाते हैं खनिजों की गुणवत्ता व मात्रा में प्रतिलोमी संबंध पाया जाता है।

ग. सभी खनिज समय के साथ समाप्त हो जाते हैं। भूगार्भिक दृष्टि से इन्हें बनने में लम्बा समय लगता है और आवश्यकता के समय इनका तुरन्त पुनर्भरण नहीं किया जा सकता है।

16. भारत में खनिज तथा ऊर्जा संसाधनों के असमान वितरण का वर्णन उपयुक्त उदाहरण देकर कीजिए।

उत्तर: क. भारत में अधिकांश धात्विक खनिज प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र की प्राचीन क्रिस्टलीय शैलों में पाए जाते है।

ख. कोयले का लगभग 97.10 भाग दामोदर, सोन, महानदी और गोदावरी नदियों की घाटियों में पाया जाता है।

ग. पैट्रोलियम के आरक्षित भंडार असम, गुजरात तथा मुंबई हाई में पाए जाते है। नए आरक्षित क्षेत्र कृष्णा गोदावरी तथा कावेरी - बेसिन में पाए गए है।

17. रासायनिक और भौतिक गुणों के आधार पर खनिजों को दो वर्गों में वर्गीकृत कीजिए तथा भारत के प्रमुख खनिज पेटियों के नाम लिखें।

उत्तर: रासायनिक व भौतिक गुणों के आधार पर खनिज दो प्रकार के होते है-

क. **धात्विक खनिज**- लौह अयस्क, तांबा व सोना, मैंगनीज और बॉक्साइट आदि।

धात्विक खनिजों में धातु अंश पाया जाता है तथा ये ताप एवं विद्युत के सुचालक होते हैं।

Jharkhandhan.com

ख. **अधात्विक खनिज**- ये खनिज दो प्रकार के होते है। इसमें कुछ खनिज, कार्बनिक उत्पत्ति के होते हैं, जैसे जीवाश्म ईंधन, जिन्हें खनिज ईंधन भी कहते है।

ग. कोयला और पेट्रोलियम अन्य अकार्बनिक उत्पत्ति के खनिज होते है जैसे अभ्रक, चूना पत्थर और ग्रेफाइट आदि।

कुचालक कार्बनिक (कोयला, पेट्रोलियम) एवं अकार्बनिक (अभ्रक, चूना)

भारत में खनिज की पेटियां निम्नलिखित है-

- उत्तर पूर्वी पठारी पट्टी।
- दक्षिण पश्चिमी पठारी पट्टी।
- उत्तरी पश्चिमी पट्टी।

18. अलौह खनिजों के नाम बताइए। बॉक्साइट के वितरण की चार बिंदुओं में विवेचना कीजिए ।

उत्तरः अलौह खनिज जिनमें लौहांश नहीं होते। जैसे-तांबा, बॉक्साइट ।

बॉक्साइट के वितरण -

क. बॉक्साइट मुख्यत : टर्शियरी निक्षेपों में पाया जाता है। यह विस्तृत रूप से प्रायद्वीपीय भारत के पठारी क्षेत्रों अथवा पर्वत श्रेणियों के साथ-साथ देश के तटीय भागों में भी पाया जाता है।

ख. उड़ीसा बॉक्साइट का सबसे बड़ा उत्पादक है। कालाहांडी तथा संभलपुर अग्रणी उत्पादक है।

ग. झारखंड में लोहरदगा जिले की पैटलैंडस (पाट प्रदेश) में भी इसके समृद्ध निक्षेप है।

घ. गुजरात के भावनगर और जामनगर, छत्तीसगढ़ में अमरकंटक के पठार, मध्य प्रदेश में कटनी, महाराष्ट्र में कोलाबा, थाणे, कोतहापुर महत्वपूर्ण उत्पादक है।

19. भारत में खनिजों की तीन प्रमुख विस्तृत पट्टियों का वर्णन कीजिए।

उत्तरः क. **उत्तर पूर्वी पठारी पट्टी** : इस पट्टी के अंतर्गत छोटा, नागपुर, पठार (झारखंड), उड़ीसा का पठार, पं. बंगाल तथा छत्तीसगढ़ के कुछ भाग सम्मिलित है यहां पर विभिन्न प्रकार के खनिज उपलब्ध है। इनमें लोह अयस्क, कोयला, मैंगनीज आदि प्रमुख है।

ख. **दक्षिणी पश्चिमी पठारी पट्टी** : यह पट्टी कर्नाटक, गोआ, तमिलनाडु की उच्च भूमि और केरल में विस्तृत है। यह पट्टी लौह धातुओं तथा बॉक्साइट में समृद्ध है।

ग. **उत्तर पश्चिमी पट्टी** : यह पट्टी राजस्थान में अरावली और गुजराज के कुछ भाग पर विस्तृत है। यहां खनिज धारवाड़ क्रम की शैलों में पाये जाते है। जिनमें तांबा, जिंक, आदि प्रमुख खनिज है। गुजरात में पेट्रोलियम के निक्षेप है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारत के पेट्रोलियम संसाधनों पर विस्तृत टिपणी लिखिए।

उत्तर- आधुनिक युग में पेट्रोलियम ऊर्जा का एक सबसे महत्त्वपूर्ण स्रोत है। पेट्रोलियम तथा पेट्रोलियम उत्पाद विभिन्न प्रकार के उद्देश्यों से प्रयोग किए जाते हैं जैसे कि ऊर्जा, लुब्रिकेन्ट (स्नेहक) तथा कृत्रिम डेरिवेटिब्स के निर्माण के लिए कच्चे माल के रूप में तथा सहायक रासायनिक उद्योगों को रसायनों की प्राप्ति हेतु प्रयुक्त होते हैं। GSI द्वारा हाइड्रोकार्बनों के कुल भंडारों का अनुमान 17 अरब टन अनुमानित किया गया है, जिनमें से 75 प्रतिशत अब तक स्थापित किए गए हैं। 1886 में, पहली बार पेट्रोलियम का अन्वेषण किया गया तथा कुएँ खोदे गए। चार प्रमुख क्षेत्रों में पेट्रोलियम के प्रमुख तेल क्षेत्रों का वितरण प्रतिरूप :

- **उत्तर-पूर्वी क्षेत्र** : डिग्बोई, नहरकटिया, मोरन, रुद्रसागर, गालेकि तथा असम में हुगरिजन इस क्षेत्र के प्रमुख तेल क्षेत्र हैं । अरुणाचल प्रदेश के तिरप जिले तथा असम-नागालैंड सीमा के पास बोरहोल्ला तेल क्षेत्र भी इस क्षेत्र में आते हैं।
- **गुजरात क्षेत्र** : अंकलेश्वर, कालोल, मेहसाना, सानंद तथा लुनेज इस क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण तेल क्षेत्र हैं। सौराष्ट्र में भावनगर से 45 किमी. दूर पश्चिम में स्थित अलियाबेत द्वीप में भी तेल पाया जाता है।
- **मुंबई हाई** : मुंबई से 176 किमी0 दूर अरब सागर में स्थित एक अपतटीय तेल क्षेत्र। यह भारत के सबसे महत्त्वपूर्ण तेल क्षेत्रों में से एक है। बसई, मुंबई हाई के दक्षिण में स्थित एक अन्य महत्त्वपूर्ण तेल क्षेत्र है। यह भारत के कुल तेल उत्पादन का दो-तिहाई भाग उत्पन्न करता है।
- **पूर्वी तटीय क्षेत्र** : यह कृष्णा-गोदावरी तथा कावेरी बेसिनों पर फैला है। ऑयल नेचुरल गैस कमीशन तथा ऑयल इंडिया लिमिटेड ने 1980 में विस्तृत अन्वेषण कार्य किया।

2. भारत में जल विद्युत् पर एक निबन्ध लिखिए।

उत्तर- शक्ति संसाधनों में जल विद्युत का महत्व अन्य संसाधनों की अपेक्षा सर्वाधिक है। इसका सबसे प्रमुख कारण यह है कि जल विद्युत, शक्ति का स्थायी तथा कभी समाप्त न होने वाला स्रोत है। जल-विद्युत् के उत्पादन में अन्य शक्ति संसाधनों की अपेक्षा सबसे कम खर्च करना पड़ता है, साथ ही इसको सुदूर स्थानों तक ले जाने में विशेष परिश्रम तथा व्यय की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

जलविद्युत् को श्वेत कोयला (White Coal) भी कहा जाता है, क्योंकि बहता हुआ जल श्वेत दिखाई पड़ता है और इससे कोयले की तरह शक्ति उत्पादित की जाती है। वर्ष 2015-16 में भारत में कुल 12134 करोड़ यूनिट जल विद्युत् (कुल विद्युत् उत्पादन का 11%) उत्पादित की गई। वर्ष 2013 में भारत में जल विद्युत् की प्रतिस्थापित विद्युत् क्षमता लगभग 40 हजार मेगावाट थी जो देश के कुल प्रतिस्थापित विद्युत् क्षमता का लगभग 17.4 प्रतिशत भाग था।

भारत की लगभग 60 प्रतिशत सम्भावित जल शक्ति के स्रोत हिमालय पर्वत से उद्गमित होने वाली नदियों में हैं। इन प्रमुख नदियों में ब्रह्मपुत्र, गंगा, सिन्ध तथा इनकी सहायक नदियाँ हैं। दक्षिण भारत में उत्तर-पश्चिम व पश्चिम से दक्षिण-पूर्व व पूर्व की ओर बहने वाली नदियों में भारत की सम्भावित जल शक्ति का 20 प्रतिशत भाग निहित है तथा शेष 20 प्रतिशत सम्भावित जल शक्ति पश्चिमी घाट तथा मध्य भारत से उद्गमित होकर पूर्व से पश्चिम की ओर प्रवाहित नदियों में निहित है।

भारत में जल विद्युत् उत्पादन के लिए अनुकूल दशाएँ :-

क. **अनुकूल जल प्रवाह**- जल-विद्युत् के विकास के लिए नदियों में सतत् जल प्रवाह, जल प्रवाह में वेग तथा पर्याप्त जल का होना आवश्यक है। हिमालय से निकलने वाली सिन्धु, गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र तथा इनकी सहायक नदियों में वर्ष के अधिकांश समय में ये तीनों विशेषताएँ रहती हैं, केवल ग्रीष्म काल के2-3 महीने की शुष्क अवधि में जल की उपलब्धता में कमी हो जाती है। इस कमी को नदियों पर बाँध बनाकर पूरा किया जाता है।

ख. **धरातल**- जिन भागों में प्राकृतिक जल प्रपात होते हैं वहाँ जलविद्युत उत्पादन आसानी से हो जाता है। जिन क्षेत्रों में प्राकृतिक जल-प्रपात नहीं होते, वहाँ कृत्रिम जल प्रपात बनाने में काफी व्यय करना पड़ता है। पर्वतीय तथा अधिक ढाल वाले धरातल प्राकृतिक जल प्रपातों के लिए अनुकूल होते हैं। पर्वतीय तथा अधिक ढलवाँ क्षेत्रों में कृत्रिम जल प्रपात भी आसानी के साथ बनाये जा सकते हैं। हिमालय पर्वत के सहारे सहारे पश्चिमी कश्मीर से लेकर पूर्व में असम के पर्वतीय क्षेत्रों तक का भाग जल-विद्युत् उत्पादन के लिए अनुकूल हैं। इसी प्रकार दक्षिणी भारत में पश्चिमी घाट के पर्वतीय भागों के सहारे सहारे तथा सतपुड़ा, विध्याचल,

Jharkhandlab.com

महादेव और मैकाल की पहाड़ियों के सहारे सहारे भी जल-विद्युत् उत्पादन के लिए अनुकूल दशाएँ हैं।

ग. **शक्ति के अन्य साधनों का अभाव**- भारत में कोयला, पेट्रोलियम तथा परमाणु संसाधनों की कमी है। दूसरे राष्ट्रों से इन्हें आयात करना काफी व्यय साध्य होता है। देश की आर्थिक व्यवस्था पर इनके आयात से प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अतः भारत जैसे विकासशील राष्ट्र में जल-विद्युत् उत्पादन बहुत ही आवश्यक है।

घ. **अधिक पूँजी की आवश्यकता** - जल विद्युत् शक्ति गृहों के निर्माण एवं विकास में भारी पूँजी की आवश्यकता पड़ती है। एक बार जल-विद्युत् शक्तिगृह के निर्माण के बाद एक लम्बे समय तक बिना किसी अतिरिक्त व्यय के विद्युत प्राप्त की जा सकती है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के पास पूँजी की कमी होने के कारण यहाँ पर्याप्त जल-विद्युत का विकास नहीं हो पाया है। देश को लगभग 75 प्रतिशत जल-विद्युत् उत्पादन क्षमता का उपयोग अभी तक नहीं हो पाया है। देश में जैसे-जैसे पर्याप्त पूँजी की सुविधा होती जायेगी, भारत अपनी अप्रयुक्त जल-विद्युत् उत्पादन क्षमता का विकास करता जायेगा।

ङ. वर्षा की मौसमी प्रवृत्ति तथा हिम-जल के न मिलने के परिणामस्वरूप प्रायद्वीपीय भारत की नदियों से सम्भावित जल-शक्ति का उपयोग बहुत कम हो पाया है। दूसरी ओर भारत मुख्यतः अपनी मानसूनी वर्षा के कारण भी जल-शक्ति पर पूर्णतया निर्भर नहीं रह सकता, इसलिए भारत को विद्युत् के विकास के लिए जल-विद्युत् तथा ताप विद्युत् दोनों की ही मिली-जुली विद्युत् की राष्ट्रीय ग्रिड (National Grid) पर निर्भर रहना पड़ता है। भारत की अग्रणी जल-विद्युत् उत्पादक राज्य - हिमाचल प्रदेश, जम्मू- कश्मीर, उत्तराखण्ड, कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश।

3. भारत में खनिजों का संरक्षण क्यों आवश्यक है? हम उनका संरक्षण किस प्रकार कर सकते हैं।

उत्तर: खनिज समय के साथ समाप्त हो जाते हैं। भूगर्मिक दृष्टि से इन्हें बनने में लम्बा समय लगता है और आवश्यकता के समय तुरन्त इनका पुनर्भरण नहीं किया जा सकता। इसलिए सतत् पोषणीय विकास तथा आर्थिक विकास के लिए खनिजों का संरक्षण करना आवश्यक हो जाता है।

संरक्षण की विधियाँ :

क. इसके लिए ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों जैसे सौर ऊर्जा, पवन, तरंग व भूतापीय ऊर्जा के असमाप्य स्रोतों का प्रयोग करना चाहिए।

ख. धात्विक खनिजों में छाजन धातुओं के उपयोग तथा धातुओं के पुर्नचक्रण पर बल देना चाहिए।

ग. अत्यल्प खनिजों के लिए प्रतिस्थापनों का उपयोग भी खनिजों के संरक्षण में सहायक है।

घ. सामरिक व अति अल्प खनिजों के निर्यात को भी घटाना चाहिए।

ङ सबसे उचित तरीका है, खनिजों का सूझ-बूझ से तथा मितव्यतता से प्रयोग कराना है ताकि वर्तमान आरक्षित भण्डारों का लंबे समय तक प्रयोग किया जा सके।

4. सतत पोषणीय विकास की चुनौती के लिए आर्थिक विकास की चाह का पर्यावरणीय मुद्दों से समन्वय आवश्यक हैं। इन कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर: क. भारत में संसाधनों के उपयोग के परंपरागत तरीकों के कारण बड़ी मात्रा में संसाधनों का अपव्यय हुआ है। अतः विकास को न रोकते हुये ऊर्जा के गैर परंपरागत साधनों का उपयोग हो।

ख. भारत में संसाधनों के वर्तमान उपयोग ने गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं को जन्म दिया है। जीवाश्म ईंधनों का उपयोग सीमित हो प्रदूषण से निपटने के उपाय अपनाये जायें।

ग. संसाधनों के अतिशोषण व अविवेक पूर्ण उपयोग ने समाज में असमानता व तनाव को बढ़ाया है। संसाधनों को बचाया जाय।

घ. संतत पोषणीय विकास भावी पीढ़ी के लिए संसाधनों के संरक्षण का आह्वान करता है।

ङ. सतत पोषणीय विकास के लिए आर्थिक विकास के तरीकों व पर्यावरण की सुरक्षा के मुद्दों के साथ समन्वय आवश्यक है। धात्विक खनिजों का पुनर्चक्रण हो। खनिजों के स्थानापन्न वस्तुओं का उपयोग हो।

5. भारत में खनिजों का संरक्षण क्यों आवश्यक है? हम उनका संरक्षण किस प्रकार कर सकते है? महत्वपूर्ण बिंदुओं में व्याख्या कीजिए।

उत्तर: खनिज समय के साथ समाप्त हो जाते हैं। भूगर्भिक दृष्टि से इन्हें बनने में लम्बा समय लगता है और आवश्यकता के समय इसका तुरंत पुनर्भरण नहीं किया जा सकता है। इसलिए इनका संरक्षण अति आवश्यक है।

क. अति अल्प धात्विक खनिजों के स्थान पर प्रतिस्थापकों का उपयोग खनिजों की पूर्ति को घटा सकता है।

ख. धात्विक खनिजों का पुनर्चक्रण करके तथा छाजन धातुओं का उपयोग करके खनिज धातुओं को संरक्षित कर सकते हैं। सामरिक और अति अल्प खनिजों का निर्यात घटाकर उनके भंडारो को भविष्य के लिए सुरक्षित किया जा सकता है।

ग. सामरिक और अति अल्प खनिजों के निर्यात घटाकर उनके भण्डारो को भविष्य के लिए सुरक्षित किया जा सकता है।

6. भारत में अपरंपरागत ऊर्जा के पांच स्त्रोतो के नाम बताइए और प्रत्येक स्त्रोत का एक संभावित क्षेत्र भी बताइए।

उत्तर: अपरम्परागत ऊर्जा स्त्रोत-

क. सौर ऊर्जा ख. पवन ऊर्जा ग. ज्वारीय ऊर्जा घ. भूतापीय ऊर्जा (v) जैव ऊर्जा

प्रत्येक स्रोत का एक संभावित क्षेत्र-

क. सौर ऊर्जा भारत के पश्चिमी भागों गुजरात व राजस्थान में और - ऊर्जा के विकास की अधिक संभावनाएं है।

ख. पवन ऊर्जा पवन ऊर्जा के लिए राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र तथा कर्नाटक में अनुकूल परिस्थितियाँ विद्यमान है।

ग. ज्वारीय ऊर्जा भारत के पश्चिमी तट के साथ ज्वारीय ऊर्जा विकसित होने की व्यापक संभावनाएं है।

घ. भूतापीय ऊर्जा इसके लिए हिमालय प्रदेश में विकसित होने की व्यापक संभावनाएं है।

ङ. जैव ऊर्जा ग्रामीण क्षेत्रों में जैव ऊर्जा विकसित होने की व्यापक - संभावनाएं है।

7. "ऊर्जा के अपरंपरागत स्रोत अधिक आरंभिक लागत के बावजूद अधिक टिकाऊ, पर्यावरण अनुकूल तथा सस्ती ऊर्जा उपलब्ध कराते है" कथन की जाँच कीजिए।

उत्तर: सौर, पवन, जल, भूतापीय ऊर्जा तथा जैव ऊर्जा के अपरंपरागत स्त्रोत है। ये सभी साधन पर्यावरण अनुकूल है।

- ये समान रूप से वितरित है।
- ये अधिक आरंभिक लागत से प्रभावित होते है।

Jharkhandlab.com

- ये साधन पारिस्थितिक अनुकूल होते है।
- पवन ऊर्जा पूर्ण रूप से प्रदूषण मुक्त है।
- महासागरीय धाराएं ऊर्जा का अपरिमित भंडार गृह है।
- जैव ऊर्जा ग्रामीण लोगों की आत्मनिर्भरता बढ़ाएगा तथा जलाऊ लकड़ी पर दबाव कम करेगा।

8. भारत में कोयले के उत्पादन तथा वितरण का वर्णन कीजिए।

उत्तर- कोयला ऊर्जा का वह स्रोत है जो उद्योगों में अधिकतम योगदान देता है। ऊर्जा के अन्य स्रोत कम होने के कारण, कोयला ऊर्जा का प्रमुख स्रोत रहेगा। विद्युत, गैस तथा तेल जैसे ऊर्जा के अन्य रूपों में इसकी परिवर्तनीयता, एक अतिरिक्त लाभ प्रदान करती है।

उत्पादन : भारत के कुल कोयला भंडार 213,905.51 मि० टन आँके गए हैं तथा 1998-99 के दौरान भारत में कोयले का कुल उत्पादन 293.56 मि० टन था।

वितरण : कुल 113 कोयला क्षेत्रों में से 80 क्षेत्र निचले गोंडवाना। निर्माण में पाए जाते हैं जोकि 200 मिलियन वर्ष पुराना है और जो देश का 99 प्रतिशत कोयला उत्पन्न करता है तथा बाकी क्षेत्र टर्शियरी निर्माण में हैं।

गोंडवाना कोयला क्षेत्र मुख्यतः चार नदी घाटियों में हैं :

क. दामोदर घाटी : झारखंड तथा पश्चिम बंगाल

ख. सोन घाटी मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़

ग. महानदी घाटी : छत्तीसगढ़ तथा उड़ीसा

घ. वर्धा-गोदावरी घाटी : मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश, टर्शियरी कोयला क्षेत्र असम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय तथा नागालैंड में पाए जाते हैं। यह 55 मि० वर्ष पुराने हैं।

- मध्य प्रदेश : यह भारत का 30 प्रतिशत कोयला उत्पन्न करता है। सिंगरौलि, कोरबा, तालपानि, झिलमिल तथा रामपुर (अब छत्तीसगढ़ में) आदि कोयला के प्रमुख क्षेत्र हैं।
- झारखंड : जहाँ तक कोयले के भंडारों का संबंध है बिहार अन्य सभी राज्यों में अग्रणी है, किंतु उत्पादन में इसका स्थान द्वितीय है। झरिया, बोकारो, रानीगंज, करनपुरा तथा चंदरपुर झारखंड के प्रमुख कोयला क्षेत्र हैं।
- पश्चिम बंगाल : इसमें भारत के कोयला भंडारों का 18 प्रतिशत भाग है तथा कोयला उत्पादन का 13 प्रतिशत भाग है। रानीगंज पश्चिम बंगाल का सबसे महत्त्वपूर्ण कोयला क्षेत्र है।

  आंध्र प्रदेश : गोदावरी घाटी सबसे महत्त्वपूर्ण कोयला क्षेत्र है। आंध्र प्रदेश में कोयले का 6.2 प्रतिशत भंडार है तथा यह भारत के कोयले का लगभग 9.09 प्रतिशत भाग उत्पन्न करता है।
- उड़ीसा : यद्यपि इसमें 23.27 प्रतिशत भंडार है, लेकिन यह हमारे कुल उत्पाद का केवल 9.17 प्रतिशत भाग ही उत्पादित करता है। तलचर अत्यधिक महत्त्वूर्ण कोयला क्षेत्र है।
- महाराष्ट्र : इसमें केवल 33 प्रतिशत कोयला भंडार है और यह भारत के कोयला उत्पादन का लगभग 8.36 प्रतिशत उत्पन्न करता है। चंदा-वर्धा अत्यधिक महत्त्वपूर्ण कोयला क्षेत्र है।

9. ऊर्जा के अपारंपरिक स्रोतों पर भौगोलिक निबंध लिखिए। या ऊर्जा के अपारंपरिक स्रोतों का विकास तथा उपयोग महत्त्वपूर्ण क्यों होता जा रहा है ? उपयुक्त उदाहरणों से अपने उत्तर को मूल्यांकित कीजिए।

उत्तर : कोयला, खनिज तेल तथा नाभिकीय स्रोत सीमित संसाधन हैं। उनके भंडार समाप्त हो जाएँगे। इस प्रकार, ऊर्जा के अपारंपरिक नवीनीकृत स्रोतों के अन्वेषण तथा विकास के प्रयास पहले ही आरंभ हो चुके हैं।

सूर्य की रोशनी, जल तरंगे/लहरें, पवन, भूतापीय ऊर्जा, ऊर्जा के अपारंपरिक स्रोत हैं। अपारंपरिक स्रोत सस्ते होते हैं तथा आसानी से तैयार किये जा सकते है। ये प्रदूषण मुक्त होते हैं, क्योंकि इनका प्रयोग करने पर यह धुआँ या राख नहीं छोड़ते। इनका कोई पर्यावरणिक नुकसान नहीं है।

- **सौर ऊर्जा** : भारत उष्णकटिबंधीय देश है, अतः देश के उत्तर-पूर्वी भागों को छोड़कर, अन्य सभी भागों में सूर्य की रोशनी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। सौर ऊर्जा का प्रयोग खाना पकाने तथा जल गर्म करने के लिए किया जाता है। सौर कुकर, जल पंप, सड़क की लाइटें, टेलीफोन आदि सौर ऊर्जा द्वारा संचालित किए जा रहे हैं।
- **पवन ऊर्जा** : तमिलनाडु, गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, पवन ऊर्जा का प्रयोग कर रहे हैं। पवन जनित, पवन चक्कियाँ, बैटरी चार्जिंग प्रणाली बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। 10 मेगावाट का एशिया का सबसे बड़ा पवन रूप गुजरात के खंभात में शुरू किया गया। पीने के पानी तथा सिंचाई के लिए कई पवन पंप लगाए गए हैं।
- **भूतापीय ऊर्जा** : मनिकरन (हिमाचल प्रदेश) में भूतापीय ऊर्जा पर आधारित कोल्ड स्टोरेज इकाई तथा 5 किलोवाट शक्ति वाले संयंत्र से संबंधित विकास की गतिविधियाँ पूर्ण प्रगति पर हैं।
- **बायो गैस** : यह ग्रामीण क्षेत्रों में ऊर्जा के नवीनीकृत स्रोत का अत्यधिक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। बायोगैस का उप-उत्पाद होने के कारण यह समृद्ध उर्वरक उत्पन्न करता है। इसे खाना पकाने के ईंधन के रूप में तथा लाइट जलाने व ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

Jharkhandlab.com

अध्याय - 8

निर्माण उद्योग
MANUFACTURING INDUSTRIES

पाठ के मुख्य बिंदु

- विनिर्माण उद्योग-एक प्रक्रम जिसके अन्तर्गत कच्चे माल को मशीनों की सहायता से उच्च मूल्य की वस्तुओं में परिवर्तित कर दिया जाता है।
- हल्के उद्योग- वे उद्योग जिनका कच्चा माल व तैयार माल दोनों ही वजन में हल्के होते हैं।
- भारी उद्योग-ऐसे उद्योग जो भारी कच्चे मालों का उपयोग कर भारी तैयार माल उत्पादित करते हैं।
- बहुराष्ट्रीय कम्पनी-ऐसी कम्पनी जो किसी देश में स्थित मुख्यालय से अनेक देशों में उत्पाद और सेवाओं का नियन्त्रण करती है।
- कृषि आधारित उद्योग-ऐसे उद्योग जिनका कच्चा माल कृषि उत्पाद होते हैं। जैसे चीनी उद्योग व सूती वस्त्र उद्योग ।
- आधारभूत उद्योग-ऐसे उद्योग जिन पर अन्य उद्योग, अपने कच्चे माल की आपूर्ति के लिए निर्भर रहते हैं, जैसे- लौह-इस्पात उद्योग ।
- सार्वजनिक क्षेत्र- जब किसी उद्योग की पूँजी और सम्पत्ति के अधिकार जनता अथवा समुदाय के हाथ में होते हैं तो उसे सार्वजनिक क्षेत्र कहा जाता है। उस सम्पत्ति का स्वामित्व सम्पूर्ण समुदाय का होता है। जैसे-राजकीय भवन, विद्यालय, भिलाई, दुर्गापुर स्थित लौह-इस्पात कारखाना आदि् ।
- व्यक्तिगत या निजी क्षेत्र-जब किसी उद्योग की समस्त पूँजी, लाभ, हानि व सम्पत्ति पर एक ही व्यक्ति का स्वामित्व होता है तो उसे व्यक्तिगत क्षेत्र कहा जाता है। भारत में कई पूँजीपतियों द्वारा चलाए जा रहे संगठन या उद्योग व्यक्तिगत क्षेत्र में गिने जाते हैं।
- मिश्रित अथवा सहकारी क्षेत्र-जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों या किसी सहकारी समिति द्वारा किसी उद्योग की स्थापना की जाती है तो संयुक्त सहकारी क्षेत्र कहा जाता है, जैसे- डेयरी उद्योग।
- पेट्रो रसायन उद्योग- अशोधित पेट्रोल से अनेक प्रकार की वस्तुएँ तैयार की जाती हैं जो अनेक उद्योगों को कच्चा माल उपलब्ध कराती हैं, उन्हें सामूहिक रूप से पेट्रो रसायन उद्योग के नाम से जाना जाता है।
- पॉलीमर - एथलीन व प्रोपलीन से निर्मित। इसका उपयोग प्लास्टिक उद्योग में कच्चे माल के रूप में किया जाता है।
- कृत्रिम रेशे (संश्लिष्ट तन्तु) - लकड़ी की लुग्दी, बेकार रूई तथा रासायनिक पदार्थों के मिश्रण से निर्मित धागे-इनका उपयोग विभिन्न प्रकार के वस्त्रों के निर्माण में किया जाता है।
- उदारीकरण - उद्योग और व्यापार को आवश्यक प्रतिबन्धों तथा विनियमों से मुक्त कर अधिक प्रतियोगी बनाना ।
- निजीकरण- देश के अधिकांश उद्योगों के स्वामित्व, नियन्त्रण तथा प्रबन्धन को निजी क्षेत्र के अन्तर्गत किया जाना जिससे अर्थव्यवस्था पर सरकारी एकाधिकार कम या समाप्त हो जाता है।
- वैश्वीकरण - मुक्त व्यापार पूँजी तथा श्रम की मुक्त गतिशीलता द्वारा देश की अर्थव्यवस्था को अन्य देशों की अर्थव्यवस्था से जोड़ना।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कौन सा औद्योगिक अवस्थापना का एक कारण नहीं है?
(क) बाजार (ख) पूंजी
(ग) जनसंख्या घनत्व (घ) ऊर्जा

2. भारत में सबसे पहले स्थापित की गई लौह इस्पात कंपनी निम्नलिखित में से कौन-सी है?
(क) भारतीय लौह एवं इस्पात कंपनी
(ख) टाटा लौह एवं इस्पात कंपनी
(ग) विश्वेश्वरैया लौह तथा इस्पात कारखाना
(घ) मैसूर लौह तथा इस्पात कारखाना

3. मुंबई में सबसे पहला सूती वस्त्र कारखाना स्थापित किया गया क्योंकि
(क) मुंबई एक पतन है
(ख) यह कपास उत्पादक क्षेत्र के निकट स्थित है
(ग) मुंबई एक वित्तीय केंद्र है
(घ) उपर्युक्त सभी

4. हुगली औद्योगिक प्रदेश का केंद्र है
(क) कोलकाता हावड़ा (ख) कोलकाता रिश्रा
(ग) कोलकाता मेदिनीपुर (घ) कोलकाता कॉलनगर

5. निम्नलिखित में से कौन सा चीनी का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है?
(क) महाराष्ट्र (ख) **उत्तर** प्रदेश
(ग) पंजाब (घ) तमिलनाडु

6. किस औद्योगिक नीति में उदारीकरण निजीकरण और वैश्वीकरण को बढ़ावा दिया गया
(क) 1991 (ख) 1952
(ग) 1948 (घ) 1989

7. विजयनगर इस्पात संयंत्र कहां स्थित है?
(क) बोकारो (ख) भिलाई
(ग) दुर्गापुर (घ) हॉस्पेट

8. झारखंड में सार्वजनिक क्षेत्र का लौह इस्पात कारखाना कहां स्थित है?
(क) रांची (ख) जमशेदपुर
(ग) बोकारो (घ) धनबाद

9. रूस के सहयोग से बने भारतीय लौह इस्पात उद्योग के नाम लिखिए
(क) भिलाई इस्पात संयंत्र
(ख) बोकारो इस्पात संयंत्र
(ग) टाटा लौह इस्पात संयंत्र
(घ) क और ख दोनों

10. राउरकेला इस्पात संयंत्र की स्थापना किस देश के सहयोग से हुई ?
(क) जर्मनी (ख) यूके
(ग) यूएसए (घ) रूस

Jharkhandlab.com

11. निम्न में से कौन एक मौसमी उद्योग के रूप में जाना जाता है?

(क) लौह इस्पात उद्योग (ख) चीनी उद्योग

(ग) पेट्रो रसायन उद्योग (घ) खाद्य प्रसंस्करण उद्योग

12. निम्न में से कौन से उद्योग की अवस्थिति ऊर्जा स्रोतों की उपलब्धता पर निर्भर करती है?

(क) तांबा उद्योग

(ख कागज उद्योग

(ग) सूती वस्त्र उद्योग

(घ) एल्यूमीनियम निर्माण उद्योग

उत्तर:- 1. (ग) जनसंख्या घनत्व 2. (ख) टाटा लौह एवं इस्पात कंपनी 3. (घ) उपर्युक्त सभी 4. (क) कोलकाता हावड़ा, 5. (ख) उत्तर प्रदेश 6. (क) 1991 7. (घ) हॉस्पेट 8. (ग) बोकारो 9. (घ) क और ख दोनों, 10. (क) जर्मनी 11. (ख) चीनी उद्योग 12. (घ) एल्यूमीनियम निर्माण उद्योग।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अपनाई गई औद्योगिक नीति का मुख्य उद्देश्य क्या था?

उत्तर:- प्रादेशिक आर्थिक असमानता को दूर करना।

2. उद्योगों में उदारीकरण की नीति कब और किस पंचवर्षीय योजना में लागू की गई?

उत्तर:- 1991 में आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान।

3. द्वितीय पंचवर्षीय योजना के दौरान स्थापित सार्वजनिक क्षेत्र के लौह इस्पात कारखाने कौन-कौन है?

उत्तर:- राउरकेला इस्पात संयंत्र भिलाई इस्पात संयंत्र दुर्गापुर इस्पात संयंत्र।

4. ज्ञान आधारित उद्योगों का उदाहरण दीजिए

उत्तर:- सॉफ्टवेयर उद्योग

5. टाटा लोहा एवं इस्पात कंपनी को जल की उपलब्धता किन नदियों से होती है?

उत्तर:- स्वर्णरेखा और खरकई।

6. भारत में चीनी का उत्पादक राज्य कौन है?

उत्तर:- महाराष्ट्र।

7. किस लौह इस्पात उद्योग को DVC से विद्युत शक्ति एवं जल की प्राप्ति होती है?

उत्तर:- दुर्गापुर इस्पात संयंत्र।

8. उत्तर प्रदेश में सूती वस्त्र उद्योग का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र कौन है?

उत्तर:- कानपुर।

9. भारत को कितने मुख्य औद्योगिक प्रदेशों में बांटा गया है?

उत्तर:- 8।

10. आई पी सी एल का पूरा नाम लिखें।

उत्तर:- भारतीय पेट्रो रसायन कॉरपोरेशन लिमिटेड।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लोहा इस्पात उद्योग किसी देश के औद्योगिक विकास का आधार है ऐसा क्यों?

उत्तर:- लोहा इस्पात उद्योग किसी देश के औद्योगिक विकास का आधार है क्योंकि :

- लौह इस्पात उद्योग आधारभूत उद्योग का उदाहरण है जिनके निर्मित उत्पाद को अन्य उद्योग कच्चे माल के रूप में प्रयोग करते हैं।
- लौह इस्पात उद्योग अपने आसपास कई प्रकार के मध्यम एवं लघु उद्योगों को भी प्रोत्साहित करते हैं।
- किसी देश में औद्योगिक विकास के लिए लौह इस्पात उद्योग बुनियादी है।
- लौह इस्पात उद्योग के अभाव में अन्य मशीनरी एवं ऑटोमोबाइल उद्योगों का विकास भी असंभव है।

2. सूती वस्त्र उद्योग के 2 सेक्टरों के नाम बताइए। वे किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर:- भारत में सूती वस्त्र उद्योगों को 2 सेक्टर्स में बांटा जाता है।

क. संगठित सेक्टर एवं

ख. असंगठित सेक्टर।

- संगठित सेक्टर में कपास से धागा बनाने से लेकर कपड़ा तैयार करने तक सभी कार्य के कारखाने में किया जाता है।सेक्टर के उत्पादन में तेजी से गिरावट आई है।
- असंगठित सेक्टर इसमें सूट काटने वाह कपड़ा बुनने का कार्य अलग-अलग इकाइयों द्वारा किया जाता है इसमें हथकरघा एवं विद्युत कर्मों का प्रयोग होता है। वर्तमान में असंगठित सेक्टर के उत्पादन में तेजी आई है।

3. चीनी उद्योग एक मौसमी उद्योग क्यों है?

उत्तर:- यह एक कृषि आधारित मौसमी उद्योग है, जिसमें कच्चा माल के रूप में गन्ने का प्रयोग किया जाता है। गन्ना वास्तव में एक बारहमासी फसल है, जिसे साल में दो बार बोया जाता है शरद काल में तथा बसंत काल में।

गन्ना की कटाई के साथ ही चीनी उद्योगों को कच्चा माल प्राप्त होने लगता है और मिल का संचालन प्रारंभ होता है, परंतु साल के बाकी दिनों में यह उद्योग अपनी क्षमता अनुसार कार्यशील नहीं रहता इसलिए इसे मौसमी उद्योग भी कहा जाता है।

4. पेट्रो रासायनिक उद्योग के लिए कच्चा माल क्या है? इस उद्योग के कुछ उत्पादों के नाम बताइए।

उत्तर:- पेट्रो रसायन उद्योगों के लिए कच्चा माल प्राकृतिक खनिज तेल के रिफाइनरी से प्राप्त उप उत्पाद है।

खनिज तेल रिफाइनरियों के उप उत्पाद का कच्चे माल के रूप में उपयोग करने वाले उद्योगों को सामूहिक रूप से पेट्रोकेमिकल उद्योग कहा जाता है।

पेट्रो रसायन उद्योग द्वारा उर्वरक प्लास्टिक सिंथेटिक रबड़ सिंथेटिक रेशे डिटर्जेंट कॉस्मेटिक आदि उत्पादों को तैयार किया जाता है।

5. भारत में सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति के प्रमुख प्रभाव क्या है?

उत्तर:- भारत में सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति के प्रमुख प्रभाव निम्नलिखित हैं-

- भारत में सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति में अभूतपूर्व परिवर्तन लाया है।

Jharkhandlab.com

- भारत में सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति के प्रभाव का सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू है।
- सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति के सकारात्मक पहलुओं की सूची बहुत लंबी है जिनमें से कुछ निम्न है:-
- आज सूचना प्रौद्योगिकी आम जन जीवन का हिस्सा बन चुके हैं।
- आज देश के अधिकांश सरकारी कार्य डिजिटलीकृत हो चुके हैं।
- आज प्राथमिक से लेकर सेवा सेक्टर का कोई भी वर्ग सूचना प्रौद्योगिकी से अछूता नहीं रह गया है।
- स्वास्थ्य शिक्षा बैंकिंग रेलवे अनुसंधान सामान्य दुकानों और रेडियो तक सभी में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रवेश सामान्य हो चुका है।
- सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति के नकारात्मक पहलुओं में साइबर क्राइम निजता में सेल ऑनलाइन धोखाधड़ी लोगों के सामान्य दिनचर्या में सूचना प्रौद्योगिकी का अत्यधिक प्रवेश आदि प्रमुख है।

6. नई औद्योगिक नीति की घोषणा कब हुई? इस नीति के प्रमुख उद्देश्यों का वर्णन करें।

उत्तरः- नई औद्योगिक नीति की घोषणा 1991 में की गई। इस नीति में उदारीकरण निजीकरण और वैश्वीकरण की नीति अपनाई गई।

- इस औद्योगिक नीति में आर्थिक विकास की गति में तीव्रता लाने के लिए विदेशी निवेश को प्रोत्साहित किया गया साथ ही कई अन्य उपाय अपनाए गए।
- 1991 की औद्योगिक नीति के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है
- वर्तमान लाभ के स्तर को बरकरार रखना।
- पुरानी औद्योगिक नीति की कमियों को दूर करना।
- उत्पादन में वृद्धि और निरंतरता लाना।
- रोजगार के अवसर को बढ़ाना।
- अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में शामिल होना।

7. भारत में सूती वस्त्र उद्योग की क्या समस्याएँ हैं?

उत्तरः- भारत में सूती वस्त्र उद्योग की निम्नलिखित समस्याएँ हैं-

- भारत में अंतरराष्ट्रीय मानक के उन्नत रेशों का उत्पादन कम होता है जिस कारण लंबे रेशे वाली कपास का आयात करना पड़ता है।
- पर्याप्त पूंजी के अभाव में सूती वस्त्र उद्योगों का आधुनिकीकरण नहीं हो पा रहा है जिस कारण उत्पादकता में वृद्धि नहीं हो रही है।
- भारत में कुशल एवं दक्ष श्रमिकों का अभाव है जिस कारण अन्य देशों जैसे जापान चीन के मुकाबले प्रति श्रमिक उत्पादकता भारत में कम है।
- विदेशी वस्तुओं से बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण भारतीय सूती वस्त्र उद्योग के लाभ का स्तर कम होता जा रहा है।

8. पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र में निर्मित चार प्रमुख लौह इस्पात संयंत्र एवं निर्माण में सहयोगी देशों के नाम बताइए।

उत्तरः-

- राउरकेला इस्पात संयंत्र जर्मनी के सहयोग से उड़ीसा में स्थापित हुआ।
- भिलाई इस्पात संयंत्र छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में रूस के सहयोग से बना।
- दुर्गापुर इस्पात संयंत्र पश्चिम बंगाल में ब्रिटेन के सहयोग से स्थापित हुआ।
- बोकारो इस्पात संयंत्र झारखंड में रूस के सहयोग से स्थापित हुआ।

9. निजी उद्योग एवं सार्वजनिक उद्योग में अंतर स्पष्ट करें।

उत्तरः-

निजी उद्योग	सार्वजनिक उद्योग
• इस प्रकार के उद्योगों का स्वामित्व किसी व्यक्ति विशेष अथवा कुछ व्यक्तियों या कंपनी के पास होता है।	• सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों का स्वामित्व सरकार अथवा किसी सरकारी संगठन के पास होता है।
• इसमें उत्पादन एवं व्यापार पर नियंत्रण व्यक्ति विशेष या कंपनी के पास होता है।	• इसमें उत्पादन एवं व्यापार का नियंत्रण सरकार के पास होता है।
• यह वृहद मध्यम एवं अलग हो सकते हैं तथा पूंजी निवेश निजी होता है।	• यह अधिकांश वृहद उद्योग या आधारभूत उद्योग होते हैं जिसमें अत्यधिक पूंजी की आवश्यकता होती है।
• टाटा लौह इस्पात कंपनी, रिलायंस कंपनी, बाटा शू कंपनी, आदि।	• भिलाई लौह इस्पात उद्योग, एचएमटी, भारतीय रेल, आदि।

10. उद्योगों का विभिन्न आधारों पर वर्गीकरण करें।

उत्तरः- उद्योगो का वर्गीकरण -

- **आकार तथा पूंजी निवेश के आधार पर** वृहद उद्योग मध्यम उद्योग लघु उद्योग।
- **स्वामित्व के आधार पर** सार्वजनिक उद्यमों व्यक्तिगत अथवा निजी उद्योग मिश्रित सहकारी उद्योग।
- **कच्चे माल के आधार पर** कृषि आधारित उद्योग भवन आधारित उद्योग खनिज आधारित उद्योग उद्योगों से प्राप्त निर्मित माल पर आधारित उद्योग।
- **उत्पादन एवं उत्पाद के आधार पर** आधारभूत उद्योग उपभोक्ता उद्योग।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'स्वदेशी' आन्दोलन ने सूती वस्त्र उद्योग को किस प्रकार विशेष प्रोत्साहन दिया?

उत्तरः सूती वस्त्र उद्योग भारत का एक महत्त्वपूर्ण परम्परागत उद्योग रहा है। ब्रिटिश शासन काल की प्रारम्भिक अवधि में अंग्रेजों ने सूती वस्त्र उद्योग को प्रोत्साहित नहीं किया। अंग्रेज भारत में उत्पादित कच्ची कपास को ब्रिटेन में स्थित मानचेस्टर तथा लिवरपूल नगरों में कार्यरत सूती मिलों को निर्यात कर देते थे। उन मिलों में तैयार सूती वस्त्र को भारत में विक्रय किया जाता था। ब्रिटेन का यह कपड़ा वृहद स्तर पर मिलों में निर्मित होने के कारण भारत के कुटीर उद्योगों में निर्मित सूती वस्त्रों की तुलना में सस्ता होता था।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सर्वप्रथम मुम्बई और अहमदाबाद नगरों में सूती वस्त्र मिलों को स्थापना की गई तथा देश में सूती वस्त्र उद्योग का तेजी से विस्तार होने लगा। उसी समय ब्रिटेन में निर्मित सामान का बहिष्कार करने तथा भारत में निर्मित सामान को उपयोग में लाने के लिए भारत में एक देशव्यापी आन्दोलन चलाया गया। स्वदेशी नामक इस आन्दोलन में विदेशी सामान के बहिष्कार के आह्वान ने भारत के सूती वस्त्र उद्योग को प्रमुख रूप से प्रोत्साहित किया।

Jharkhandlab.com

देश में निर्मित सूती वस्त्र की तेजी से बढ़ती माँग के कारण देश के विभिन्न भागों में सूती मिलों की स्थापना की जाने लगी। भारत के मध्यवर्ती पश्चिमी भाग में कपास की स्थानीय रूप से पर्याप्त उपलब्धता होने के कारण इन्दौर, नागपुर, शोलापुर, बड़ोदरा तथा अहमदाबाद में सूती मिलों की सफल स्थापना हुई। कोलकाता में पत्तन की सुविधा, तमिलनाडु में जल-विद्युत के विकास तथा कानपुर में स्थानिक निवेश के कारण सूती मिलों की स्थापना की गई। इस प्रकार स्वदेशी आन्दोलन की भारत के सूती वस्त्र उद्योग के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

2. आप उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण से क्या समझते हैं ? इन्होंने भारत के औद्योगिक विकास में किस प्रकार से सहायता की है?

उत्तर: भारत में औद्योगिक नीति की घोषणा सन् 1991 में की गई। इस नीति के तीन प्रमुख उद्देश्य हैं।

क. उदारीकरण

ख. निजीकरण

ग. वैश्वीकरण।

क. **उदारीकरण से आशय-** आर्थिक विकास को गति प्रदान करने के लिए भारत सरकार द्वारा पूर्व आर्थिक नियमों व कानूनों में लचीलापन, लाइसेंस प्रणाली को समाप्त करना, विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करना, उद्योग स्थापना, वाणिज्य व व्यापार क्षेत्रों में छूट सम्बन्धी समस्त प्रयासों को उदारीकरण के नाम से जाना जाता है।

ख. **निजीकरण से आशय-** उदारीकरण नीति निजीकरण को आधार प्रदान करने के लिए बनाई गई है। सार्वजनिक क्षेत्र से निजी क्षेत्र की ओर स्वामित्व हस्तान्तरित करने की प्रक्रिया को निजीकरण कहा जाता है। निजीकरण घरेलू तथा बहुराष्ट्रीय दोनों पूँजी निवेशकों को आकर्षित करने के लिए किया गया है।

ग. **वैश्वीकरण से आशय-** वैश्वीकरण का अर्थ है देश की अर्थव्यवस्था को विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करना। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत सामान व पूँजी सहित सेवाएँ, श्रम और संसाधन एक देश से दूसरे देश को स्वतन्त्रतापूर्वक पहुँचाए जा सकते हैं। उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण का भारत के औद्योगिक विकास में सहयोग- उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण भारत की औद्योगिक नीति 1991 के प्रमुख लक्ष्य रहे। इन लक्ष्यों के क्रियान्वयन से भारत के औद्योगिक विकास को पर्याप्त प्रोत्साहन मिला।

इसके प्रमुख कारण निम्नवत् रहे:-

- सुरक्षा, सामरिक अथवा पर्यावरण से सम्बन्धित छह उद्योगों को छोड़कर भारत सरकार ने सभी उद्योगों को लाइसेंस व्यवस्था से मुक्त कर दिया।
- सन् 1956 से सार्वजनिक सेक्टर के लिए सुरक्षित उद्योगों की संख्या को 17 से घटाकर 4 कर दिया। इस प्रकार 13 उद्योगों के लिये निजी क्षेत्र के दरवाजे सरकार द्वारा खोल दिए गये। केवल परमाणु-शक्ति तथा रेलवे से सम्बन्धित उद्योग ही सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत बने रहे।
- भारत सरकार द्वारा सार्वजनिक उद्योगों के शेयरों में से कुछ को सामान्य जनता, कामगारों तथा वित्तीय संस्थाओं के लिए आवंटित करने का निश्चय किया।
- किसी भी उद्योग में पूँजी निवेश की सीमा को समाप्त कर दिया गया तथा इसके लिए लाइसेन्स व पूर्व अनुमति की व्यवस्था को भी समाप्त कर दिया गया।
- उद्योगों में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (Foreign Direct Investment) को घरेलू निवेश के रूप में मान्यता प्रदान की गई। इससे भारतीय उद्योगों में विदेशी निवेश के दरवाजे खुल गए जिसके परिणामस्वरूप उद्योगों में उन्नत तकनीक, वैश्विक कुशल प्रबन्धन व व्यावहारिकता का अभिगमन तथा प्राकृतिक व मानवीय संसाधनों के सर्वोत्तम उपयोग का समावेश होने से उनके विकास को एक नवीन दिशा प्राप्त हुई।
- भारत की औद्योगिक नीति में घरेलू तथा बहुराष्ट्रीय दोनों व्यक्तिगत पूँजी निवेशकों को आकर्षित करने के लिए उदारता दिखाई गई। खनन, दूर-संचार, राजमार्ग निर्माण व व्यवस्था को निजी क्षेत्र की कम्पनियों के लिए खोल दिया गया।
- इन सभी छूटों के बाद प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भारत सरकार की आशाओं के अनुरूप नहीं रहा लेकिन विदेशी निवेश का एक बड़ा भाग घरेलू उपकरणों, वित्त, सेवा, इलेक्ट्रॉनिक, विद्युत उपकरण, खाद्य व दुग्ध जैसे उद्योगों में लगाए जाने से इन उद्योगों के विकास को पर्याप्त प्रोत्साहन मिला है।

Jharkhandlibrary.com

अध्याय - 9 भारत के संदर्भ में नियोजन और सततपोषणीय विकास
PLANNING AND SUSTAINABLE DEVELOPMENT IN INDIA CONTEXT

पाठ के मुख्य बिंदु

- विकास एक बहुआयामी संकल्पना है जो शिक्षा, स्वास्थ्य, कल्याण, अवसर की समानता, संसाधनों तक पहुंच, सतत पोषणीय विकास आदि विभिन्न बिंदुओं पर निर्भर करता है।
- नियोजन का अर्थ है कार्यक्रम के क्रियान्वयन से पूर्व उसकी सफलता सुनिश्चित करने हेतु किए जाने वाले गतिविधियों से है।
- नियोजन के सामान्यतः दो उपागम है
  1) खंडीय नियोजन
  2) प्रादेशिक नियोजन
- खंडीय नियोजन अर्थव्यवस्था के विभिन्न सेक्टरों जैसे कृषि, विनिर्माण, परिवहन, संचार, ऊर्जा आदि के संदर्भ में विकास योजनाओं से संबंधित है।
- प्रादेशिक नियोजन किसी क्षेत्र विशेष के विकास योजनाओं से संबंधित है।
- सतत पोषणीय विकास- विकास का एक ऐसा स्वरूप है, जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भावी पीढ़ियो हेतु संसाधनों की पूर्ति को सुनिश्चित करता है।
- भारत में नियोजन संबंधी कार्यभार नीति आयोग को सौंपा गया है। नीति आयोग के अध्यक्ष प्रधानमंत्री होते हैं।
- ऋतुप्रवास - मौसमी प्रवास का प्रचलन है जिसके अन्तर्गत ग्रीष्म ऋतु में चरवाहे समुदाय दूसरे चरागाहों में प्रवास कर जाते हैं। शीत ऋतु में यह समुदाय अपने स्थायी निवास पर लौट आते हैं।
- कमान क्षेत्र - वह क्षेत्र जिसमें सिंचाई व अन्य कार्यों के लिए जल आपूर्ति नहर तन्त्र द्वारा होती है।
- कृषि योग्य कमान क्षेत्र - नहर तन्त्र द्वारा सिंचित कृषि योग्य भूमि। यह सकल कमान क्षेत्र से भिन्न होता है। सकल कमान क्षेत्र में अकृषि योग्य भूमि सहित नहर तन्त्र द्वारा सिंचित सम्पूर्ण क्षेत्र सम्मिलित होता है।
- वारबन्दी पद्धति - यह नहर निकास क्षेत्र के कमान क्षेत्र में जल के एक समान वितरण की पद्धति है।
- प्रवाह तन्त्र अथवा प्रणाल- एक नहर प्रणाल जिसमें गुरुत्व के प्रभाव से जल प्रवाहित होता है।
- लिफ्ट तन्त्र अथवा प्रणाल- एक नहर प्रणाली जिसके अन्तर्गत उत्थापन पद्धति द्वारा जल भूमि के ढाल के विपरीत प्रवाहित किया जाता है।
- गहन सिंचाई - सिंचाई विकास की एक रणनीति जिसके अन्तर्गत प्रति इकाई जल का उपयोग अधिक होता है।
- विस्तृत सिंचाई- सिंचाई विकास की एक रणनीति जिसके अन्तर्गत एक बड़े क्षेत्र के लिए सिंचाई जल उपलब्ध कराने पर बल दिया जाता है। इसके अन्तर्गत प्रति इकाई जल का उपयोग कम होता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. प्रादेशिक नियोजन का संबंध है
(क) आर्थिक व्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों का विकास
(ख) परिवहन जाल तंत्र में क्षेत्रीय अंतर
(ग) क्षेत्र विशेष के विकास का उपागम
(घ) ग्रामीण क्षेत्रों का विकास

2. आई टी डी पी निम्नलिखित में से किस संदर्भ में वर्णित है?
(क) समन्वित पर्यटन विकास प्रोग्राम
(ख) समन्वित यात्रा विकास प्रोग्राम
(ग) समन्वित जनजातीय विकास प्रोग्राम
(घ) समन्वित परिवहन विकास प्रोग्राम

3. इंदिरा गांधी नहर कमांड क्षेत्र में सतत पोषणीय विकास के लिए इनमें से कौन सा सबसे महत्वपूर्ण कारक है?
(क) कृषि विकास (ख) परितंत्र विकास
(ग) परिवहन विकास (घ) भूमि उपनिवेशन

4. प्रथम पंचवर्षीय योजना की अवधि थी
(क) 1951 से 56 (ख) 1956 से 61
(ग) 1947 से 52 (घ) 1950 से 55

5. किस पंचवर्षीय योजना में समाजवादी समाज की स्थापना का प्रतिरूप प्रस्तुत किया गया?
(क) प्रथम पंचवर्षीय योजना (ख) द्वितीय पंचवर्षीय योजना
(ग) तृतीय पंचवर्षीय योजना (घ) चतुर्थ पंचवर्षीय योजना

6. रोलिंग प्लान लागू रही
(क) 1947 से 50 के बीच (ख) 1966 से 69 के बीच
(ग) 1974 से 77 के बीच (घ) 2009 से 12 के बीच

7. जिन क्षेत्रों में 50% से अधिक आबादी जनजातियां थी वहां कौन सा विकास कार्यक्रम लागू किया गया?
(क) जनजातीय विकास कार्यक्रम
(ख) पहाड़ी क्षेत्र विकास कार्यक्रम
(ग) गहन कृषि विकास कार्यक्रम
(घ) सामुदायिक विकास कार्यक्रम

8. गहन कृषि विकास कार्यक्रम किस पंचवर्षीय योजना में शुरू किया गया?
(क) प्रथम पंचवर्षीय योजना (ख) चौथी पंचवर्षीय योजना
(ग) छठी पंचवर्षीय योजना (घ) तीसरी पंचवर्षीय योजना

9. सामुदायिक विकास कार्यक्रम किस पंचवर्षीय योजना में शुरू की गई?
(क) प्रथम पंचवर्षीय योजना (ख) तृतीय पंचवर्षीय योजना
(ग) चौथी पंचवर्षीय योजना (घ) पांचवी पंचवर्षीय योजना

10. पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम किस पंचवर्षीय योजना में लागू की गई?

Jharkhandlab.com

(क) प्रथम पंचवर्षीय योजना (ख) चौथी पंचवर्षीय योजना
(ग) पांचवी पंचवर्षीय योजना (घ) 11वीं पंचवर्षीय योजना

11. योजना आयोग की स्थापना कब की गई थी?
(क) 1947 (ख) 1952
(ग) 1950 (घ) 1951

12. द लिमिट टू ग्रोथ के लेखक कौन है?
(क) एहरलिच (ख) मीडोज
(ग) महात्मा गांधी (घ) फ्रेडरिक रेटजेल

उत्तरः- 1. (ग) क्षेत्र विशेष के विकास का उपागम, 2. (ग) समन्वित जनजातीय विकास प्रोग्राम, 3. (ख) परितंत्र विकास, 4. (क)1951 से 56, 5.(ख)द्वितीय पंचवर्षीय योजना, 6. (ख) 1966 से 69 के बीच, 7. (क) जनजातीय विकास कार्यक्रम, 8. (घ) तीसरी पंचवर्षीय योजना, 9. (क) प्रथम पंचवर्षीय योजना, 10. (ग) पांचवी पंचवर्षीय योजना, 11. (ग)1950, 12. (ख) मीडोज।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. नियोजन को परिभाषित करें।
उत्तरः- वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए किसी लक्ष्य विशेष की प्राप्ति हेतु आवश्यक क्रियाकलापों का चिंतन एवं कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करना नियोजन कहलाता है।

2. नियोजन के दो उपागम कौन-कौन है?
उत्तरः- खंड्या नियोजन एवं प्रादेशिक नियोजन ।

3. सतत पोषणीय विकास किसे कहते हैं?
उत्तरः- सतत पोषणीय विकास, विकास की एक ऐसी संकल्पना है जिसमें वर्तमान पीढ़ी द्वारा संसाधनों का विवेकपूर्ण उपभोग सम्मिलित है जिससे आने वाली पीढ़ियों को उन संसाधनों के उपभोग का अवसर प्राप्त हो सके।

4. इंदिरा गांधी नहर निकलती है?
उत्तरः- हरीके बांध से।

5. सूखा संभावित क्षेत्र विकास कार्यक्रम किस पंचवर्षीय योजना में लागू की गई?
उत्तरः- चौथी पंचवर्षीय योजना में।

6. भरमौर क्षेत्र में किस जनजाति समुदाय का निवास है?
उत्तरः- गद्दी जनजाति।

7. विश्व पर्यावरण और विकास आयोग की स्थापना की गई थी?
उत्तरः- संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा।

8. योजना आयोग के स्थान में कौन सी संस्था का निर्माण किया गया?
उत्तरः- नीति आयोग।

9. नीति आयोग की स्थापना कब की गई?
उत्तरः- 1 जनवरी 2015।

10. विकास से आप क्या समझते हैं?
उत्तरः- विकास एक बहुआयामी संकल्पना है जिसमें समाज के सभी लोगों के सामाजिक और भौतिक कल्याण पर बल दिया जाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भरमौर जनजातीय क्षेत्र में संबंधित जनजातीय विकास कार्यक्रम के सामाजिक लाभ क्या है?
उत्तरः-

- भरमौर जनजातीय क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले की दो तहसीलें भरमौर और होली शामिल है जहां गद्दी जनजाति समुदाय का निवास है।
- पांचवी पंचवर्षीय योजना के दौरान भरमौर जनजाति क्षेत्र में संबंधित जनजातीय विकास कार्यक्रम लागू किया गया।
- समन्वित जनजातीय विकास कार्यक्रम के लागू होने से इस क्षेत्र में साक्षरता लिंगानुपात एवं आर्थिक स्तर में काफी सुधार हुआ।
- सामाजिक और आर्थिक दशा में सुधार के बावजूद गद्दी जनजाति के लोग अत्यधिक गतिशील है, ऋतु प्रवास एवं रोजगार हेतु मजदूरी के लिए आसपास के शहरों में जाते हैं।

2. सतत पोषणीयता संकल्पना को परिभाषित करें।
उत्तरः- पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर बढ़ती चिंता को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने विश्व पर्यावरण और विकास आयोग की स्थापना की। पर्यावरण और विकास आयोग ने 1987 में आवर फ्यूचर नामक रिपोर्ट में सतत पोषणीय विकास को किस प्रकार परिभाषित किया था -

- एक ऐसा विकास जिसमें भविष्य में आने वाली पीढ़ियों की आवश्यकता पूर्ति को प्रभावित किए बिना वर्तमान पीढ़ी द्वारा अपनी आवश्यकता की पूर्ति करना।
- वास्तव में सतत पोषणीय विकास एक ऐसी संकल्पना है जिसमें वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करना सुनिश्चित किया जाता है।

3. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र का सिंचाई पर क्या सकारात्मक प्रभाव पड़ा?
उत्तरः-

- इंदिरा गांधी नहर पहले राजस्थान नहर के नाम से भी जाना जाता था जो राजस्थान के थार मरुस्थल में पाकिस्तान की सीमा के समांतर 40 किलोमीटर की औसत दूरी पर बहता है
- इस बार के विकास में राजस्थान के पश्चिमी भाग को नया जीवन दिया है।
- इंदिरा गांधी नहर कमांड क्षेत्र में सिंचित बोए गए क्षेत्र में बढ़ोतरी हुई है साथ ही पशुओं की सघनता में वृद्धि आई है।
- सिंचाई के माध्यम से विभिन्न फसलों की उत्पादकता में बढ़ोतरी हुई है।
- वर्तमान में इन क्षेत्रों की पारंपरिक फसलों जैसे चना बाजरा ज्वार के स्थान पर गेहूं चावल कपास मूंगफली आदि उगाया जाने लगा है जो सघन सिंचाई का परिणाम है।

4. खंडीय नियोजन एवं प्रादेशिक नियोजन में अंतर स्पष्ट करें।
उत्तरः-

- **खंडीय नियोजन** - अर्थव्यवस्था के विभिन्न सेक्टरों जैसे- कृषि, सिंचाई, विनिर्माण ऊर्जा, परिवहन संचार, सामाजिक अवसंरचना और सेवाओं के विकास के लिए कार्यक्रम बनाना और उन्हें लागू करना खंडीय नियोजन कहलाता है।

JharkhandLab.com

- **प्रादेशिक नियोजन** - विकास के प्रादेशिक असंतुलन को कम करने एवं विकास का लाभ सभी को समान रुप से पहुंचाने के उद्देश्य से किए गए नियोजन को प्रादेशिक नियोजन कहते हैं।

5. सूखा संभावित क्षेत्र विकास कार्यक्रम की प्रमुख विशेषताएं क्या है?

उत्तर:-

- सूखा संभावित क्षेत्र विकास कार्यक्रम की शुरुआत चौथी पंचवर्षीय योजना में हुई।
- इस कार्यक्रम का उद्देश्य सूखा प्रवण क्षेत्रों में लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाना।
- सूखे के प्रभाव को कम करने के लिए उत्पादन के साधनों को विकसित करना।
- भूमि की उत्पादकता को बढ़ाना।
- समन्वित विकास पर जोर देना।

6. विकास एवं सतत पोषणीय विकास में अंतर बताइए।

उत्तर:-

विकास	सतत पोषणीय विकास
यह एक वृहद बहुआयामी संकल्पना है जिसमें समाज के सभी लोगों के सामाजिक एवं आर्थिक कल्याण पर बल दिया जाता है।	इसके अंतर्गत वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं की पूर्ति सुनिश्चित करना सम्मिलित है।
इसमें संसाधनों के संरक्षण पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता।	इसमें संसाधनों की गुणवत्ता और सतत उपलब्धता बनाए रखने पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
यह एक परंपरागत संकल्पना है।	यह संसाधन की पर्यावरण हितैषी एवं नवीन संकल्पना है।
इसके अंतर्गत संसाधनों के वैज्ञानिक प्रबंधन पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है।	इसमें संसाधनों के वैज्ञानिक प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

7. भारत में विकास की प्रादेशिक विषमताओं की प्रमुख विशेषताओं का विवरण लिखिए।

उत्तर:- भारत के विकास में स्पष्ट प्रादेशिक भिन्नता दिखाई देती है जिनमें से कुछ निम्न है -

- भारत के आंतरिक प्रदेश पटिया प्रदेशों की तुलना में कम विकसित है।
- देश के व्यापारिक कृषि प्रधान प्रदेशों में विकास का स्तर जीवन निर्वाह कृषि क्षेत्रों की तुलना में कहीं अधिक है।
- देश के जनजातीय प्रधान प्रदेशों में विकास आज भी निम्न स्तर पर बना हुआ है।
- पर्वतीय पठारी एवं भार्गव प्रदेश अन्य क्षेत्रों की तुलना में पिछड़े हुए हैं।

8. पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम का संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर:- पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम -

- पांचवी पंचवर्षीय योजना के दौरान पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम प्रारंभ किया गया।
- इस योजना के तहत पिछड़े पर्वतीय क्षेत्रों में विकास की विभिन्न योजनाएं लागू की गई।
- योजनाओं को सफल बनाने हेतु इन पर्वतीय एवं पहाड़ी क्षेत्रों के स्थलाकृति पारिस्थितिकी सामाजिक एवं आर्थिक दशाओं को ध्यान में रखा गया।
- इस योजना के तहत बागवानी रोपण कृषि कृषि पशुपालन वानिकी लघु एवं ग्रामीण उद्योगों के विकास आदि पर बल दिया गया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. सूखा संभावी क्षेत्र कार्यक्रम पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। यह कार्यक्रम देश में शुष्क भूमि भारत में सूखा संभावित क्षेत्र कार्यक्रम कृषि विकास में कैसे सहायक है?

उत्तर: भारत में सूखा संभावित क्षेत्र विकास कार्यक्रम का प्रारंभ चौथी पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत हुआ जिसका,उद्देश्य सूखा संभावित क्षेत्र में रोजगार के अवसरों का सृजन करना तथा सूखे के प्रभाव से निपटने के लिए उत्पादन के साधनों को विकसित करना था।

- पांचवी पंचवर्षीय योजना में इस कार्यक्रम में कार्य क्षेत्र को और अधिक विस्तृत कर दिया गया इस कार्यक्रम में प्रारंभ में स्थानीय स्तर पर श्रमिकों को रोजगार के अवसर प्रदान करने पर बल प्रदान किया गया लेकिन बाद में इसमें सिंचाई परियोजनाओं, भूमि विकास कार्यक्रमों, वनीकरण, चारागाह विकास तथा आधारभूत संरचनाओं जैसे विद्युत, सड़क, बाजार व वित्तीय सुविधाएं के विकास को भी प्राथमिकता दी गई।
- सूखा संभावित क्षेत्र के विकास की अन्य रणनीतियों में सूक्ष्म स्तर पर समन्वित जल संभर विकास कार्यक्रम का विकास भी सम्मिलित है।
- भारत में सूखा संभावित क्षेत्र प्रमुख रूप से राजस्थान, गुजरात, पश्चिम मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के रायलसीमा तेलंगाना पठार, कर्नाटक पठार और तमिलनाडु के शुष्क और अर्धशुष्क क्षेत्र में विस्तृत मिलते हैं।

सूखा संभावित क्षेत्र कार्यक्रम का शुष्क भूमि विकास में योगदान :

- सूखा संभावित क्षेत्र कार्यक्रम का शुष्क भूमि विकास में निम्नलिखित योगदान है:
- शुष्क भूमि क्षेत्रों में सूखे की समस्या के प्रभाव को कम किया गया जिससे कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- रोजगार के नवीन अवसरों का सृजन कर बेरोजगारी की समस्या को बहुत कम किया गया।
- जनता के पलायन को रोका गया।
- पर्यावरण असंतुलन से उत्पन्न समस्याओं को काफी हद तक कम किया गया क्षेत्र के समन्वित विकास में सहयोग मिला।

2. इन्दिरा गाँधी नहर कमान क्षेत्र में सतत् पोषणीय विकास को बढ़ावा देने के लिए उपाय सुझाएँ।

उत्तर: इन्दिरा गाँधी नहर भारत में सबसे लम्बे नहर तन्त्रों में से एक है। 9060 किमी. नियोजित लम्बाई रखने वाले इस नहर तन्त्र की सिंचाई क्षमता कृषि योग्य कमान क्षेत्र के 19.63 लाख हेक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई सुविधाएँ उपलब्ध कराने की है। इन्दिरा गाँधी नहर कमान क्षेत्र में सतत पोषणीय विकास के प्रमुख उपाय। पिछले चार दशकों में जिस प्रकार से इन्दिरा गाँधी नहर कमान क्षेत्र में विकास हुआ है, उससे वहाँ के भौतिक पर्यावरण को काफी क्षति

jharkhandlab.com

पहुँची है। वस्तुतः नहर कमान क्षेत्र में सतत् पोषणीय विकास का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रमुख रूप से पारिस्थितिकी विकास को महत्व प्रदान करना आवश्यक है। इस हेतु निम्नलिखित सात उपायों को कार्यान्वित करना आवश्यक है।

क. **जल प्रबन्धन नीतिः** कमान क्षेत्र के सतत् पोषणीय विकास के लिए जल प्रबन्धन नीति को कठोरता से क्रियान्वित करना अति आवश्यक है। इसके लिए परियोजना के प्रथम चरण में कमान क्षेत्र में फसल रक्षण सिंचाई तथा दूसरे चरण में फसल उगाने व चारागाह विकास के लिए विस्तारित सिंचाई का प्रावधान रखा गया है।

ख. **जल सघन फसलों पर प्रतिबन्धः** कमान क्षेत्र के शस्य प्रतिरूप में सामान्यतया जल सघन फसलों के बोने पर प्रतिबन्ध लगाना आवश्यक है। इसके स्थान पर बागाती कृषि के अन्तर्गत खट्टे फलों की खेती को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

ग. **प्रवाहित जल की क्षति को न्यूनतम करनाः** कमान क्षेत्र के विकास कार्यक्रमों में नालों को पर्वका करना, भूमि विकास तथा समतलन, वारबंदी (ओसरा) पद्धति जैसे उपायों को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए जिससे प्रवाहित जल की क्षति को कम किया जा सके।

घ. **जलाक्रांत तथा लवणीय भूमि का पुनरुद्धारः** कमान क्षेत्र में मिलने वाली जलाक्रान्त व लवणीय भूमि के पुनरुद्धार के लिए प्रभावी कदम उठाए जाएँ।

ङ. **वनीकरण एवं चारागाह विकासः** कमान क्षेत्र में पारितन्त्र-विकास के लिए यह आवश्यक है कि इस क्षेत्र में वनीकरण, वृक्षों की रक्षण मेखला का निर्माण तथा चारागाह विकास के कार्यों को वरीयता प्रदान की जाए।

च. **वित्तीय एवं संस्थागत सुविधाएँः** सतत् पोषणीय विकास के लिए आवश्यक है कि कमान क्षेत्र में कार्यरत निर्धन वर्ग के कृषकों को पर्याप्त मात्रा में वित्तीय एवं संस्थागत सुविधाएं उपलब्ध करायी जाएँ।

छ. **अर्थव्यवस्था के विविध सेक्टरों का विकासः** सतत् पोषणीय विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए यह भी आवश्यक है कि कृषि के साथ - साथ अर्थव्यवस्था में अन्य सेक्टरों के विकास पर भी पर्याप्त ध्यान दिया जाए। ऐसा करने से कमान क्षेत्र में आर्थिक विविधीकरण तो होगा ही साथ ही मूल ग्रामीण जनसंख्या, कृषि सेवा केन्द्र (सुविधा ग्राम) तथा विपणन केन्द्रों (मंडी कस्बों) के मध्य एक कार्यात्मक सम्बन्ध स्थापित होगा।

Jharkhandlan.com

अध्याय - 10 परिवहन एवं संचार TRANSPORT AND COMMUNICATION

पाठ के मुख्य बिंदु

- परिवहन (Transport) :- एक स्थान से दूसरे स्थान को माल का लाना व ले जाना अथवा सवारियों का आना-जाना परिवहन कहलाता है।
- संचार (Communication):- समाचार अथवा विचारों का एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजना संचार कहलाता है।
- राष्ट्रीय महामार्ग (National Highways): केन्द्र सरकार द्वारा निर्मित व अनुरक्षित ऐसे महामार्ग राज्यों की राजधानियों, प्रमुख नगरों, महत्वपूर्ण पतनो तथा रेलवे जंक्शनों को जोड़ते हैं।
- राज्य महामार्ग (State Highways): -राज्य सरकारों द्वारा निर्मित व अनुरक्षित ऐसे महामार्ग जो राज्य की राजधानी से जिला मुख्यालयों तथा अन्य महत्वपूर्ण नगरों को जोड़ते हैं।
- सड़कों का घनत्व (Density of Roads) : प्रति 100 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल के अनुपात में सड़क मार्ग की लंबाई को सड़क का घनत्व कहते।
- अन्तः स्थलीय जलमार्ग या आन्तरिक जलमार्ग- देश में स्थित वे नदियाँ, नहर जल तथा संकरी खाड़ियाँ जिनका उपयोग जल परिवहन के रूप में किया जाता है।
- पत्तन (Port) पत्तन से तात्पर्य उन तटीय स्थलों से है जहाँ जलयान अपनी यात्रा आरंभ करते हैं तथा जहाँ आकर अपनी यात्रा समाप्त करते हैं।
- केरल राज्य के पश्च जल को कडल कहा जाता है। अंतः स्थलीय जल मार्गों में कडल का अपना एक विशिष्ट महत्व है। यह सस्ता जल परिवहन उपलब्ध कराने के साथ साथ भारी संख्या में पर्यटकों को भी आकर्षित करते हैं।
- उपग्रह- दूरसंवेद के ऐसे प्लेटफार्म जहाँ से वायुमण्डलीय दशाओं एवं भू-संसाधनों का ग्लोबीय स्तर पर लगातार प्रेक्षण एवं मॉनीटरिंग किया जाता है।
- संचार के लिए इलेक्ट्रॉनिक माध्यम (रेडियो, दूरदर्शन)का उपयोग किया जा सकता है। जन सुधारतंत्र सूचना प्रदान करके लोगों में राष्ट्रीय नीति और कार्यक्रमों के विषय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। (Radio): देश में रेडियो जनसंचार का सस्ता साधन है। भारत में 1927 में रेडियो प्रसारण का प्रारंभ हुआ था। इंडिया का नाम दिया गया। स्वतंत्रता के समय छ रेडियो स्टेशन थे। इस समय 208 स्टेशन तथा 327 प्रसारण
- (Television) दूरदर्शन भारत का राष्ट्रीय टेलीविजन है। यह संसार के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रीय प्रसारण संगठनों में से एक है। दूरदर्शन का पहला कार्यक्रम 15 दिसंबर को प्रसारित किया गया था। दूरदर्शन तीन स्तरों वाली बुनियादी कार्यक्रम प्रसारण सेवा राष्ट्रीय, प्रादेशिक और स्थानीय उपग्रड (Satellites) कृत्रिम उपग्रहों के विकास और उपयोग के द्वारा संसार और भारत के संचार तंत्र में एक क्रांति आ गई और उद्देश्यों के आधार पर भारत की उपग्रह प्रणालियों को दो वर्गों में रखा जा सकता है भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली सुदूर संवेदन उपग्रह प्रणाली (आई.आर.एस)।
- कम्प्यूटर (Computer) कंप्यूटर का अनेक प्रकार से उपयोग किया जाता है। मूलतः कंप्यूटर चार प्रकार से कार्य करते हैं।
- यह अभीष्ट सूचना के निर्देशानुसार आँकड़ों का प्रसारण करता है।
- यह सूचना को निर्गम के रूप संचारित करता है। कंप्यूटर की विशिष्ट क्षमताएँ हैं। गति, शुद्धता, संगति, भंडारण क्षमता, शिक्षा और ज्ञान के प्रसार में कंप्यूटर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
- पृष्ठ प्रदेश (Hinterland) : पत्तन के आस-पास का वह स्थल क्षेत्र जहाँ से उत्पादित वस्तुएँ उस पतन से निर्यात की जाती है तथा आयातित वस्तुएँ उस क्षेत्र में वितरित की जाती हैं।
- वेबसाइट (Website) : कंप्यूटर के विश्वव्यापी जाल (वेब) में किसी भी वांछित सूचना को प्राप्त करना।।
- स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना (Golden Quadrangle Super High-ways):- भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने देश में चार महानगरों दिल्ली, कोलकाता, मुंबई और चेन्नई को चार लेन वाली द्रुतगामी सड़क मार्ग से जोड़ने के लिए स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना का शुभारंभ 2 जनवरी 1999 को किया। इस योजना में स्वर्णिम चतुर्भुज जो दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता चार महानगरों को जोड़ती है।
- परिवहन तंत्र की एकीकृत भूमिका : एकीकृत और समन्वित परिवहन का जाल सामाजिक दूरियों, राजनीतिक विखंडन और आर्थिक अलगाव को कम करता है। यह समाज, राज्यतंत्र और अर्थव्यवस्था को अभिकेन्द्रीय शक्तियों को मजबूत करता है, और अपकेंद्री शक्तियों को कमजोर करने में सहायता करता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. भारतीय रेल प्रणाली को कितने मंडलों में विभाजित किया गया है?
(क) 9 (ख) 12
(ग) 16 (घ) 14

2. राष्ट्रीय जल मार्ग संख्या- 1 किस नदी पर तथा किन दो स्थानों के बीच पड़ता है?
(क) ब्रह्मपुत्र- सादिया -धुबरी
(ख) गंगा- हल्दिया - इलाहाबाद
(ग) पश्चिमी तट तहर - कोट्टापुरम से कोल्लाम
(घ) काकीनाडा - पुडुचेरी नहर

3. निम्नलिखित में से किस वर्ष में पहला रेडियो कार्यक्रम प्रसारित हुआ था?
(क) 1911 ई. (ख) 1927 ई.
(ग) 1936 ई (घ) 1923 ई.

4. भारतीय राष्ट्रीय महामार्ग प्राधिकरण की स्थापना कब हुई है ?
(क) 1990 ई. (ख) 1992 ई.
(ग) 1995 ई. (घ) 1996 ई.

5. भारत में सीमा सड़क संगठन कब बनाया गया?
(क) 1950 ई . (ख) 1960 ई.
(ग) 1970 ई. (घ) 1980 ई.

6. स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना मार्ग की लंबाई कितनी है?
(क) 5820 ई. (ख) 5846 ई.
(ग) 4846 ई. (घ) 4820 ई.

7. भारत में विश्व की सर्वोच्च सड़क कहां है ?
(क) लेह एवं श्रीनगर में (ख) लेह एवं मनाली में
(ग) श्रीनगर एवं जम्मू में (घ) जम्मू एवं शिमला में

Jharkhandlab.com

8. **कौन सा सस्ता परिवहन साधन है जो भारी सामान ढोने और लंबी दूरी के लिए उपयुक्त है ?**
(क) सड़क परिवहन (ख) रेल परिवहन
(ग) वायु परिवहन (घ) पाइपलाइन परिवहन

9. **किस वर्ष भारत में रेल परिवहन की शुरुआत हुई?**
(क) 1853 ई. (ख) 1854 ई.
(ग) 1851 ई. (घ) 1852 ई.

10. **भारतीय रेल जाल की कुल लंबाई कितनी है?**
(क) 66010कि .मी. (ख) 66030 कि .मी.
(ग) 66020 कि .मी. (घ) 66040 कि .मी.

11. **कोंकण रेल किन राज्यों से गुजरती है?**
(क) महाराष्ट्र -कर्नाटक- केरल
(ख)महाराष्ट्र- केरल -गोवा
(ग)महाराष्ट्र- गोवा -कर्नाटक
(घ)महाराष्ट्र- गोवा -कर्नाटक -केरल

12. **भारत की प्रथम रेलवे लाइन कहां से कहां तक चलाई गई थी?**
(क) मुंबई से गोवा (ख) मुंबई से पुणे
(ग) मुंबई से थाने (घ) मुंबई से अहमदाबाद

13. **दक्षिणी पूर्वी रेलवे का मुख्यालय है।**
(क) बिलासपुर (ख)नागपुर
(ग) कोलकाता (घ) भुनेश्वर

14. **पूर्व मध्य रेलवे रेल मंडल का मुख्यालय है।**
(क) गोरखपुर (ख) प्रयागराज
(ग) भुवनेश्वर (घ) हाजीपुर

15. **किस मीटर लाइन में दो रेल पटरियों के बीच की दूरी 1 मीटर होती है ?**
(क) बड़ी लाइन (ख) छोटी लाइन
(ग) मीटर लाइन (घ) इनमें से कोई नहीं

16. **उत्तर दक्षिण गलियारा जोड़ता है।**
(क) श्रीनगर से कन्याकुमारी (ख) श्रीनगर से गोवा
(ग) असम से सिलचर (घ) असम से त्रिपुरा

17. **भारत में टेलीविजन का प्रसारण कब प्रारंभ हुआ?**
(क) 1940 ई. (ख) 1910 ई.
(ग) 1959 ई. (घ) 1951 ई.

18. **भारत में वायु परिवहन की शुरुआत कब हुई थी ?**
(क) 1911 ई. (ख) 1915 ई.
(ग) 1906 ई. (घ) 1909 ई.

19. **किस वर्ष भारत को इंटरनेट की सुविधा प्राप्त हुई थी ?**
(क)2000 ई. (ख) 1998 ई.
(ग)1978 ई (घ) 1988 ई.

उत्तर 1 (ग), 2 (ख), 3 (घ), 4 (ग), 5 (ख), 6 (ख), 7 (ख), 8 (ख), 9 (क), 10 (ख), 11 (ग), 12 (ग), 13 (ग), 14 (क), 15 (ग), 16 (क), 17 (ग), 18 (क), 19 (घ)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **परिवहन को परिभाषित करें?**
उत्तर: एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्री तथा वस्तुओं को ले.जाने वाले साधन को परिवहन कहते हैं।

2. **भारत में परिवहन के मुख्य साधन क्या हैं?**
उत्तर: भारत में परिवहन के मुख्य साधन सड़क, रेलवे वायु मार्ग और जलमार्ग हैं।

3. **भारत में 'सीमा सड़क संगठन' की स्थापना कब हुई है ?**
उत्तर: 1960ई.

4. **यात्रियों से सर्वाधिक आय प्राप्त करने वाले भारतीय रेल मण्डल का नाम बताइए।**
उत्तर: उत्तरी रेलवे मंडल यात्रियों से सर्वाधिक आय प्राप्त करने वाला भारतीय रेल मंडल है।

5. **भारत के राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या 1 के सिरों के स्टेशनों के नाम बताइए।**
उत्तर: राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या वन इलाहाबाद से हल्दिया तक गंगा नदी पर स्थित है।

6. **भारत में सेन्ट्रल रेलवे का मुख्यालय कहाँ स्थित है?**
उत्तर: मुंबई (CST)

7. **इण्डियन नेशनल सैटेलाइट सिस्टम (INSAT) का स्थापना वर्ष बताइए।**
उत्तर: इंडियन नेशनल सेटेलाइट सिस्टम की स्थापना 1983 में हुई थी।

8. **पाइप लाइन तरल पदार्थों एवं गैसों के परिवहन का सर्वोत्तम साधन है। व्याख्या कीजिए।**
उत्तर: पाइपलाइन परिवहन तरल पदार्थों को तरल एवं गैसों के परिवहन का सर्वोत्तम साधन है क्योंकि पाइप लाइन का एक बार निर्माण के बाद यह बिना उर्जा या अन्य शक्ति के साधनों के ही एक जगह से दूसरी जगह परिवहित करता है।

9. **स्वतन्त्रता के बाद भारत में सड़कों को सुधारने के लिए कौन-सी सड़क योजना प्रारम्भ की गई?**
उत्तर: स्वतंत्रता के बाद भारत की सड़कों को सुधारने के लिए 20 वर्षीय सड़क योजना आरंभ की गई।

10. **पवन हंस क्या है? यह किन दो क्षेत्रों में सेवा प्रदान करती है?**
उत्तर: पवन हंस एक हेलीकॉप्टर सेवा है, जो पर्वतीय क्षेत्रों में सेवारत है। यह उत्तर-पूर्व सेक्टर में व्यापक रूप से पर्यटकों के द्वारा उपयोग में लाया जाता है।

11. **भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में ग्रामीण सड़कों का घनत्व कम क्यों है?**
उत्तर: पर्वतीय क्षेत्रों में चट्टानों को काटकर सड़क बनाना अत्यंत खर्चीला और कठिन होता है। अतः सड़कों का घनत्व कम पाया जाता है।

12. **भारत में दक्षिणी रेलवे के मुख्यालय का नाम बताइए।**
उत्तर: दक्षिण रेलवे का मुख्यालय चेन्नई है।

13. **भारत में पाइप लाइन परिवहन के दो प्रमुख नेटवकों के नाम बताएं।**
उत्तर: पाइपलाइन के दो प्रमुख नेटवर्क

(क) असम के नहरकटिया -नूनमति- बरौनी के तेल शोधन कारखाने तक, (ख)हजीरा- विजयपुर -जगदीशपुर गैस पाइपलाइन।

14. **इंटरनेट क्या है?**
उत्तर: इंटरनेट कंप्यूटर का एक विश्वव्यापी नेटवर्क है जो संपूर्ण देश अथवा महादेशों के पार फैला होता है यह लाखों उद्यमी, सरकारी एजेंसियां ,शैक्षणिक- संस्थानों एवं व्यक्तियों को परस्पर जोड़ता है।

Jharkhandlab.com

15. परिवहन किन क्रियाकलापों को अभिव्यक्त करता है? परिवहन के तीन प्रमुख प्रकारों के नाम बताएँ।

उत्तर : परिवहन तृतीयक क्रियाकलाप को अभिव्यक्त करता है।परिवहन के तीन प्रकार- स्थल परिवहन, जल परिवहन और वायु परिवहन है।

16. 'संचार' से आपका क्या तात्पर्य है?

उत्तर: एक स्थान से दूसरे स्थान तक विचारों, मतों तथा बातचीत का आदान-प्रदान संचार कहलाता है। जिन माध्यमों से संदेश या समाचार पहुंचाए जाते हैं, उन्हें संचार के साधन कहते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारत में वायु परिवहन के क्षेत्र में 'एयरइंडिया' तथा 'इंडियन एयरलाइंस ' के योगदान की विवेचना करें।

उत्तर: वायु परिवहन का राष्ट्रीयकरण करके दो निगम एयर इंडिया लिमिटेड तथा इंडियन एयरलाइंस का गठन किया गया अब इंडियन एयरलाइंस का एयर इंडिया में विलय हो गया। यात्रियों तथा नौभार यातायात दोनों के लिए अंतरराष्ट्रीय हवाई सेवाएं उपलब्ध कराता है। यह अपनी सेवाओं द्वारा विश्व के सभी महाद्वीपों को जोड़ता है।

2. भारत में आंतरिक जलमार्ग के उचित विकास न होने के कारण बताएं।

उत्तर- भारत में आंतरिक जलमार्गों के उचित विकास न होने हेतु उत्तरदायी कारण निम्नलिखित हैं :

(क) भारत की नदियों तथा नहरों में जल का नियमित प्रवाह नहीं है। वर्षा समाप्त होने के बाद जल स्तर कम हो जाता है।

(ख) नदी मार्ग में झरनों तथा तीक्ष्ण घुमाव की उपस्थिति जलमार्गों के विकास को अवरुद्ध करती है।

(ग) नदियाँ जल स्तर नहीं बनाए रखतीं, क्योंकि नदियों का अधिकतम जल सिंचाई के लिए प्रयुक्त होता है। अतः नदियों में जल की मात्रा कम हो जाती है, जो उन्हें नौपरिवहन के लिए अनुपयुक्त बनाती है।

3. भारत में रेलतंत्र के असमान विकास क्यों है ? इसके कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- भारत में असमान रेलतंत्र के विकास के कारण इस प्रकार हैं : • उत्तरी मैदानों में समतल भूमि के साथ उच्च जनसंख्या घनत्व व उच्च कृषीय तथा औद्योगिक क्षेत्रों में, रेलवे के विकास के लिए अत्यधिक उपयुक्त स्थितियाँ हैं। फलस्वरुप रेलवे का विकास अधिक हुआ है । पर्वतीय, वन एवं बर्फीले क्षेत्रों में रेल तंत्र का विकास कम पाया जाता है।

4. भारत में सड़क तथा रेल परिवहन एक-दूसरे के पूरक हैं स्पष्ट करें।

उत्तर- सड़क तथा रेल परिवहन एक-दूसरे के पूरक है:

(क) सड़क परिवहन घर तथा रेलवे स्टेशन के बीच एक जोड़ है, क्योंकि यह घर-घर सेवाएँ उपलब्ध कराता है।

(ख) सड़क परिवहन खेतों तथा कारखानों को रेलवे स्टेशन से जोड़ता है। दूरवर्ती स्थानों पर से जायी जाने वाली वस्तुएँ स्टेशन तक ट्रकों में लाई जाती है।

(ग) रेल परिवहन भारी वस्तुओं के परिवहन के लिए महत्वपूर्ण है, जबकि सड़क परिवहन ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी बाज़ार तक शीघ्र नष्ट हो जाने वाले उत्पादों (फल, सब्जियी, दूध तथा डेरी उत्पाद के परिवहन के लिए महत्त्वपूर्ण है।

5. राष्ट्रीय महामागों की विशेषताओं को बताएं।

उत्तर- **राष्ट्रीय महामार्ग की निम्नलिखित विशेषताएं हैं:**

(क) राष्ट्रीय महामार्ग देश के सभी प्रमुख शहरों को जोड़ते हैं।

(ख) इन सड़कों का अनुरक्षण तथा निर्माण केंद्रीय सरकार द्वारा किया जाता है।

(ग) राष्ट्रीय महामागों की कुल लंबाई 100475 कि०मी० है।

6. 'स्वर्णिम चतुर्भुज महामार्ग' क्या हैं? इन महामार्गों की चार विशेषताएँ अभिव्यक्त कीजिए।

उत्तर- स्वर्णिम चतुर्भुज महामार्ग देश के चार विशाल महानगरों दिल्ली-मुंबई-चेन्नई- कोलकाता को जोड़ने वाली प्रमुख सड़क परियोजना है। इसकी लंबाई 5846 किलोमीटर 4/6 लेन वाली है। इसकी चार मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं:

- 'स्वर्णिम चतुर्भुज' महामागों के पूरा हो जाने के बाद शहरों के बीच यात्रा के दौरान लगने वाला समय तथा इनके बीच की दूरी काफ़ी कम हो गई।
- वाहनों की तीव्र तथा अवरोध मुक्त गतिविधि ईंधन की बचत करती है। ये महामार्ग देश के विभिन्न भागों तक वस्तुओं को सहज परिवहन में मदद करते हैं।
- 'स्वर्णिम चतुर्भुज' का निर्माण सड़क परिवहन प्रणाली के तथा लिए वरदान है।

7. राज्य महामार्ग के गुणों को बताएं। राज्य महामार्ग के निम्नलिखित गुण है:

उत्तर: राज्य महामार्ग के निम्नलिखित गुण है:

(क) राज्य महामार्ग राज्य की राजधानी से जिला मुख्यालय तथा अन्य महत्वपूर्ण शहरों को जोड़ते हैं राष्ट्रीय महामार्ग और से जुड़े होते हैं के प्रमुख शहरों को जोड़तेहैं।

(ख) इन महामागों का निर्माण तथा अनुरक्षण राज्य सरकार द्वारा किया जाता है।

(ग) राज्य महामार्ग की कुल लंबाई 1,54522 कि०मी०है।

8. भारत में उपग्रह प्रणाली के महत्व का वर्णन करें।

उत्तर: उपग्रह संचार का नवीनतम माध्यम है, इसके माध्यम से दूर संचार तथा दूरदर्शन के कार्यक्रमों में सहायता मिलती है। उपग्रह के माध्यम से छात्रों को जानकारी मिल सकती है जहां मानव नहीं पहुंच सकता है। भारत के उपग्रह प्रणाली को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है ।

(क) भारतीय राष्ट्रीय सुदूर संवेदन उपग्रह प्रणाली (INSAT)- इसकी स्थापना 1983 में हुई थी । यह एशिया प्रशांत क्षेत्र में सबसे बड़ी घरेलू संचार उपग्रह प्रणालियों में से एक है । यह एक बहुद्देशीय उपग्रह प्रणाली है, जो दूरसंचार मौसम विज्ञान संबंधी तथा विभिन्न कार्यक्रमों के लिए उपयोगी है।

(ख) भारतीय सुदूर संवेदन उपग्रह प्रणाली- इसका मार्च 1988 में रूस के वैकानूर से आई आर एस -वन एक (IRS -1A) बनने के प्रक्षेपण के साथ आरंभ हो गई थी ।भारत ने भी अपना स्वयं का प्रक्षेपण वाहन पीएसएलवी विकसित किया । उपग्रह अनेक वर्ण क्रम में स्पेक्ट्रेल बैंड समूह को एकत्रित करते हैं तथा विभिन्न उपयोगों हेतु स्टेशनों पर संप्रेषित करते हैं। हैदराबाद स्थित नेशनल रिमोट सेंसिंग सेंटर आंकड़ों के अधिग्रहण एवं परिक्रमण की सुविधा उपलब्ध कराती है । प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन के लिए यह बहुत ही उपयोगी है।

9. यातायात तथा संचार के साधन किसी देश की जीवन रेखाएँ क्यों कहे जाते हैं?

उत्तर : यातायात और संचार के साधन किसी देश तथा वहाँ की अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ कहे जाते हैं। जिस प्रकार हमारे शरीर में रक्त नलिकाओं से रक्त का परिसंचरण पूरे शरीर में होता रहता है, तभी शरीर स्वस्थ रहता है,जिस भाग में रक्त नहीं पहुँचता शरीर का वही अंग बेकार हो जाता है। उसी प्रकार देश के जिस भाग में यातायात या संचार के साधन नहीं पहुँचते। वे प्रदेश अन्य प्रदेशों से पिछड़े रह जाते हैं। देश के अन्य भागों की अपेक्षा वहाँ

Jharkhandgab.com

राजनैतिक और आर्थिक प्रगति नहीं हो पाती है। इसलिए देश के प्रत्येक क्षेत्र में समुचित परिवहन तथा संचार व्यवस्था होनी चाहिए। यातायात और संचार साधन इसलिए आवश्यक हैं ,कि इनसे देश का विकास होता है। यात्री और माल एक स्थान से दूसरे स्थान पर तेजी से आ-जा सकते हैं। शिक्षा, संस्कृति, व्यापार तथा आर्थिक, सामाजिक विकास के लिए परिवहन तथा संचार साधन अति आवश्यक हैं। इसीलिए इन साधनों को देश की अर्थव्यवस्था की जीवनरेखाएँ कहा जाता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारत में परिवहन के प्रमुख साधन कौन-कौन से हैं? इनके विकास को प्रभावित करने वाले कारकों की विवेचना करें।

उत्तर: व्यक्ति और वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने वाली सेवा या सुविधा को परिवहन कहते हैं। इससे देश का सांस्कृतिक सामाजिक और नैतिक विकास का प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है। परिवहन के प्रमुख साधन के अंतर्गत स्थल परिवहन , जल परिवहन और वायु परिवहन आते हैं । स्थल परिवहन के अंतर्गत सड़क, रेलवे और पाइपलाइन आते हैं । जल परिवहन के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय जलमार्ग और महासागरीय मार्ग आते हैं। वायु में चलने वाले यान, वायु परिवहन के अंतर्गत आते हैं।

परिवहन के विकास को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं

(क) **भौतिक कारक**

भारत में प्राकृतिक विविधता पाई जाती है ।देश के समतल भागो में सड़क और रेल मार्ग का विकास अधिक हुआ है ,जबकि पर्वतीय दलदली, बाढ़ प्रभावित, भूमि अपरदित क्षेत्रों में परिवहन का विकास कठिन एवं चुनौतीपूर्ण है । अतः इन क्षेत्रों में सीमित विकास ही संभव हुआ है । सुदूर दुर्गम क्षेत्रों में परिवहन का अल्प विकास हुआ है।

(ख) **जलवायु**

भारत का पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्रों में तथा अधिक वर्षा वाले पूर्वोत्तर क्षेत्रों तथा पश्चिमी घाट के असमतल व पर्वतीय क्षेत्रों में सीमित स्तर पर ही स्थल यह परिवहन मार्गों का विकास हो पाया है।

(ग) **आर्थिक कारक**

देश में आर्थिक रूप से संपन्न क्षेत्रों में सड़क व रेल मार्ग का उच्च घनत्व पाया जाता है ,जबकि आर्थिक दृष्टि से पिछड़े क्षेत्रों में स्थलीय परिवहन मार्गों का घनत्व न्यूनतम है ।नगरीय और औद्योगिक विकसित क्षेत्रों में परिवहन की बेहतर सुविधा पाई जाती है, जबकि पिछड़े क्षेत्रों में परिवहन का विकास बहुत कम दिखाई पड़ता है।

(घ) **प्रशासनिक कारक**

अच्छी प्रशासनिक सुविधाओं वाले राज्य में परिवहन के तंत्र का विकास अधिक एवं बेहतर गुणों वाली पाई जाती है ।

परिवहन को प्रभावित करने वाले कुछ अन्य कारकों के अंतर्गत जनसंख्या घनत्व, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक तथा राजनीतिक कारक का भी प्रभाव पड़ता है।

2. पाइप लाइन परिवहन से लाभ एवं हानि की विवेचना करें।

उत्तर: पाइपलाइन परिवहन देश में आधुनिक परिवहन की एक सस्ती एवं सुगम प्रणाली है। पाइपलाइन गैस तरल पदार्थों के लंबी दूरी तक परिवहन हेतु अत्यधिक सुविधाजनक और सक्षम परिवहन प्रणाली है। यहां तक कि इनके द्वारा ठोस पदार्थों को भी तरल में बदलकर वाहित किया जा सकता है। पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय के प्रशासन के अधीन स्थापित ऑल इंडिया लिमिटेड कच्चे तेल एवं प्राकृतिक गैस के अन्वेषण उत्पादन और परिवहन में संलग्न है ।एशिया की पहली 1157 किलोमीटर लंबी पाइपलाइन असंगठित क्षेत्र से बरौनी कितने तक का निर्माण किया था।

लाभ:

(क) इसके निर्माण में केवल आरंभिक लागत ही आती है, बाद में किसी प्रकार के निवेश की आवश्यकता नहीं होती है । (ख) इसके संचालन तथा रखरखाव में बहुत कम खर्च पड़ता है ।

(ग) यह परिवहन माध्यम, अन्य सभी माध्यमों से सस्ता है। परिवहन के अन्य साधनों के कार्यान्वयन में ऊर्जा की आवश्यकता होती है, पाइपलाइन परिवहन में ऊर्जा की बचत होती है।

(घ) किसी भी भूभाग में बिछाया जा सकता है, दुर्गम स्थानों तक भी पाइपलाइन के द्वारा परिवहन हो सकता है।

(ङ) इसमें समय की बचत होती है ।

(च) परिवहन से प्रदूषण की संभावनाएं नहीं होती है,यह पर्यावरण के अनुकूल होता है।

हानि :

(क) यह लचीला नहीं है,पाइपलाइन परिवहन द्वारा केवल तरल पदार्थ का एक निर्धारित स्थानों तक ही परिवहन किया जा सकता है।

(ख) एक बार स्थापित क्षमता को बढ़ाया या घटाया नहीं जा सकता।

(ग) पाइप लाइनों की सुरक्षा तथा मरम्मत कार्य भी कठिन है।

(घ) इसमें किसी भी प्रकार की बड़ी दुर्घटना की संभावना बनी रहती है , रिसाव का पता लगाना कठिन होता है ,प्रारंभ में पाइप लाइन का निर्माण काफी चुनौतीपूर्ण तथा लागतपूर्ण होती है।

3. भारत के आर्थिक विकास में सड़कों की भूमिका का वर्णन करें।

उत्तर: द्वितीय विश्व युद्ध से पहले तक आधुनिक प्रकार के सड़क परिवहन अत्यंत सीमित थे ।इसके विकास का प्रयास 1943 ई. में नागपुर योजना बनाकर किया गया। स्वतंत्रता के पश्चात भारत में सड़कों के विकास के लिए एक विस्तृत 20 वर्षीय सड़क परियोजना 1961ई. में आरंभ की गई ,जिसका उद्देश्य सड़कों की दशा के सुधार के साथ-साथ इसकी लंबाई को विस्तृत करना था।

भारत की सड़क प्रणाली विश्व का तीसरा विशालतम प्रणाली मे से एक है । इसकी कुल लंबाई 54. 8 लाख किलोमीटर है। विश्व में सबसे बड़ा एवं लंबा सड़क जाल संयुक्त राज्य अमेरिका का लगभग 65 . 8 लाख किलोमीटर है । तत्पश्चात दूसरे स्थान पर यूरोप का विस्तृत सड़क जाल है ।

आर्थिक विकास में सड़कों का महत्व

भारत के आर्थिक विकास में सड़कों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सड़क मार्गों द्वारा भारत का प्रतिवर्ष लगभग 85 प्रतिशत यात्री तथा 70 प्रतिशत भार- यातायात का परिवहन किया जाता है। सड़क मार्ग सीधे उत्पादक एवं उपभोक्ता को जोड़ता है, यह दरवाजे से दरवाजे तक (Door to Door) परिवहन सेवा उपलब्ध कराने वाला महत्वपूर्ण साधन है। इसके अतिरिक्त यह अन्य परिवहन प्रकारों का संयोजक भी होता है। रेलवेस्टेशन, हवाई अड्डों तथा बन्दरगाहों को उनके पृष्ठ प्रदेशों से जोड़ता है। भारत के आर्थिक विकास में सड़कों को भूमिका निम्नांकित हैं

क. भारत कृषि प्रधान देश है । यहां कृषि उत्पादकों को बाजारों तक पहुंचाने का काम सड़कों के द्वारा ही होता है। सड़कों के विकास ने गहन व विस्तृत कृषि को सम्भव बनाया है।

ख. भारत में खनिजों का भंडार है । खनिजों को उद्योगों में ले जाने के लिए तथा तैयार माल को बाजार तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सड़कों के विकास से देश में औद्योगिक विकास को पर्याप्त प्रोत्साहन मिला है।

ग. सड़कों के विकास ने देशभर में विभिन्न वस्तुओं के मूल्यों में मिलने वाले अन्तर को कम किया है।

घ. समय व धन की बचत हुई है।

ङ. श्रम को गतिशील बनाकर बेरोजगारी की समस्या को कम किया है।

च. सड़कों के माध्यम से माल ढोने में समय तथा व्यय में बचत होती है।

छ. परिवहन के अन्य साधनों की सफलता सड़क पर निर्भर करती हैं।

ज. भारत जैसे विकासशील देशों में सड़क लोगों के लिए सुलभ साधन है,यह लोगों के लिए आसानी से पहुंच तक है।

Jharkhandlab.com

अध्याय - 11 अंतरराष्ट्रीय व्यापार INTERNATIONAL TRADE

पाठ के मुख्य बिंदु

- व्यापार अर्थव्यवस्था का आधार तथा आधुनिक मानव समाज का बुनियादी आर्थिक क्रिया है किसी भी देश का विदेशी व्यापार वहां के आर्थिक विकास का प्रमुख मापदंड होता है।
- व्यापार का तात्पर्य वस्तुओं और सेवाओं के स्वैच्छिक आदान-प्रदान से होता है, व्यापार के दो पक्ष होते हैं, बेचने वाला एवं खरीदने वाला।
- व्यापार के दो स्तर होते हैं, अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं राष्ट्रीय व्यापार। जब सेवाओं का आदान-प्रदान अर्थात व्यापार दो देशों के मध्य होता है, तो उसे अंतरराष्ट्रीय व्यापार कहा जाता है। जब किसी देश के अंदर व्यापार होता है तो उसे राष्ट्रीय व्यापार कहा जाता है।
- आयात- जब वस्तुओं को दूसरे देशों या जगहों से मंगाई जाती है तो उसे आयात कहते हैं।
- निर्यात- जब वस्तुओं को दूसरे देशों या जगहों में भेजी जाती है तो उसे निर्यात कहते हैं।
- वस्तु विनिमय- दो पक्षों के मध्य परस्पर लाभ के लिए मुद्रा के जगह पर ,वस्तुओं का ही एक दूसरे से आदान-प्रदान करते हैं तो उसे वस्तु विनिमय कहते हैं।
- विश्व युद्ध के बाद के समय के दौरान 'व्यापार व शुल्क हेतु सामान्य समझौता' (GATT) जैसे संस्थाओं ने (जो कि बाद में विश्व व्यापार संगठन WTO बना) शुल्क को घटाने में सहायता की।
- विश्व व्यापार संगठन : एक अंतरराष्ट्रीय संगठन, जो विश्वव्यापी व्यापार तंत्र के नियमों का निर्धारण करता है।
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में अपनी भागीदारी बढ़ाने के लिए भारत ने आयात उदारीकरण, आयात करो में कमी, डि-लाइसेंसिंग (विअनुज्ञाकरण) तथा प्रक्रिया से उत्पादन के (एकस्व) पेटेंट में बदलाव आदि अनुकूल उपाय अपनाना शुरू किया।
- व्यापार का उदारीकरण : व्यापार हेतु अर्थव्यवस्था को खोलने का कार्य मुक्त व्यापार या व्यापार उदारीकरण कहलाता है।
- व्यापार संघ : व्यापार संघ ऐसे देशों का समूह होता है जिनके भीतर व्यापारिक अनुबंधों की समान्यीकृत प्रणाली कार्य करती है।
- व्यापार संतुलन : देश के निर्यात और आयात के कुल मूल्यों के बीच अंतर जब आयात की तुलना में निर्यात की अधिकता होती है तो इसे अनुकूल व्यापार संतुलन और यदि निर्यात कम और आयात अधिक होते हैं तो उसे प्रतिकूल व्यापार संतुलन कहा जाता है।
- पतन : जलयानों पर यात्रियों को चढ़ाने व उतारने ,माल लादने और चढ़ाने के साथ, नौभार के भंडारण की सुविधाओं से युक्त पोताश्रय का एक वाणिज्यिक भाग पतन या बंदरगाह कहलाता है।
- पोताश्रय : जल का एक विस्तृत क्षेत्र जहां जलयान, सागर और प्राकृतिक लक्षणों अथवा कृत्रिम कार्यों से उत्पन्न सागर की महातरंगों से सुरक्षा प्राप्त करने के लिए लंगर डालते हैं अर्थात पोताश्रय वह स्थान होता है जहां जलयानों को आश्रय दिया जाता है।
- लुब्रिकेंट का अर्थ तेल जैसा चिकना पदार्थ है ,जो मशीन में लगाने से मशीन आसानी से बिना रुके काम करता है।
- डंप करना : लागत की दृष्टि से नहीं वरन भिन्न-भिन्न कारणों से अलग-अलग कीमत की किसी वस्तु को दो देशों में विक्रय करने की प्रथा डंप करना कहलाती है।
- पृष्ठ प्रदेश: जिन क्षेत्र का संसाधनों या बाजारों का व्यापार उस पतन से होता है, उसे पृष्ठ प्रदेश कहते हैं। पृष्ठ प्रदेश की सीमाओं का चिन्हांकन मुश्किल होता है, क्योंकि यह क्षेत्र पर सुस्थिर नहीं होता। अधिकतर मामलों में एक पतन का पृष्ठ प्रदेश दूसरे पतन के पृष्ठ प्रदेश का अतिव्यापन कर सकता है।
- आसियान देश : इसमें ब्रूनेई, कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओस ,मलेशिया, म्यांमार, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड, वियतनाम 10 देश के सदस्य हैं। इसका मुख्यालय इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता में स्थित है।
- विश्व व्यापार संगठन का मुख्यालय जिनेवा (स्विट्जरलैंड) में स्थित है।
- विश्राम पतन या मार्ग पतन : ऐसे पतन , जो मूल रूप से मुख्य समुद्री मार्गों पर विश्राम केंद्र के रूप में विकसित हुए । जहां पर जहाज पुनः ईंधन भरने, जल भरने तथा खाद्य सामग्री लेने के लिए लंगर डालने का काम करते थे । बाद में वे वाणिज्यिक पतनों के रूप में विकसित हुए । अदन, होनोलूलू तथा सिंगापुर इसके अच्छे उदाहरण है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. दो देशों के मध्य व्यापार कहलाता है?
(क) अंतर्देशीय व्यापार (ख) बाह्य व्यापार
(ग) अंतरराष्ट्रीय व्यापार (घ) स्थानीय व्यापार

2. निम्नलिखित में से कौन-सा एक स्थलबद्ध पोताश्रय है?
(क) विशाखापट्टनम (ख) मुंबई
(ग) एन्नोर (घ) हल्दिया

3. भारत का अधिकांश विदेशी व्यापार वाहन होता है?
(क) स्थल और समुद्र द्वारा (ख) स्थल और वायु द्वारा
(ग) समुद्र और वायु द्वारा (घ) समुद्र द्वारा

4. निम्न में से कौन एक पूर्वी तक का पतन है?
(क) कोच्चि (ख) मंगलोर
(ग) तूतीकोरिन (घ) न्हावाशेवा

5. कोलकाता पतन किस नदी पर स्थित है?
(क) गंगा (ख) गोदावरी
(ग) हुगली (घ) ब्रह्मपुत्र

6. जवाहरलाल नेहरू (न्हावाशेवा) पतन किस राज्य में है?
(क) महाराष्ट्र (ख) पश्चिम बंगाल
(ग) गोवा (घ) तमिलनाडु

7. अरब सागर की रानी के नाम से प्रसिद्ध है?
(क) वेंबनाड कायाल (ख) खंभात की खाड़ी
(ग) कोच्चि (घ) चेन्नई

8. वर्तमान में भारत में कितने प्रमुख एवं मझौले पतन है?
(क) 12 प्रमुख 185 मझौले (ख) 18 प्रमुख एवं 205 मझौले
(ग) आठ प्रमुख 185 मझौले (घ) 20 प्रमुख एवं 205 मझौले

Jharkhandlab.com

9. भारत के निर्यात में सबसे बड़ा वर्ग है?

(क) कृषि उत्पादों का (ख) अयस्क एवं खनिजों का
(ग) विनिर्मित वस्तुओं का (घ) पेट्रोलियम उत्पादों का

10. भारत में आयात की गई वस्तुओं में सबसे बड़ा वर्ग है?

(क) पेट्रोलियम (ख) खनिज अयस्क
(ग) बहुमूल्य रत्न (घ) रासायनिक उत्पाद

11. भारत के निर्यात का सर्वाधिक महत्वपूर्ण गंतव्य स्थान है?

(क) संयुक्त राज्य अमेरिका (ख) ब्रिटेन
(ग) बेल्जियम (घ) जर्मनी

12. निम्न में से कौन सा क्षेत्र भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है?

(क) एशिया व ओशनिया (ख) यूरोप
(ग) उत्तरी अमेरिका (घ) अफ्रीका

13. देश में कितने अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे कार्यरत हैं?

(क) 300 (ख) 200
(ग) 50 (घ) 25

14. जुआरी नदी मुख के मुहाने पर स्थित प्राकृतिक बंदरगाह कौन सा है?

(क) न्यू मंगलौर (ख) मार्मागोवा
(ग) न्हावाशेवा (घ) हल्दिया

15. भारत में व्यापार संतुलन की स्थिति है?

(क) धनात्मक (ख) ऋणात्मक
(ग) दोनों (घ) कोई नहीं

उत्तरः- 1. (ग) अंतरराष्ट्रीय व्यापार, 2. (क) विशाखापट्टनम, 3. (ग) समुद्र और वायु द्वारा, 4. (ग) तूतीकोरिन, 5. (ग) हुगली, 6. (क) महाराष्ट्र, 7 (क) वेंबनाड कायाल, 8. (क) 12 प्रमुख 185 मझौले, 9. (ग) विनिर्मित वस्तुओं का, 10. (क) पेट्रोलियम, 11. (क) संयुक्त राज्य अमेरिका, 12. (क) एशिया व ओशनिया, 13. (घ) 25, 14. (ख)मार्मागोवा, 15. (ख) ऋणात्मक।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारत का सबसे बड़ा समुद्री पतन है?

उत्तरः- मुंबई।

2. भारत के पूर्वी तट पर स्थित प्रमुख पतन कौन से हैं?

उत्तरः- कोलकाता, हल्दिया, चेन्नई, तूतीकोरिन, पारादीप, विशाखापट्टनम आदि।

3. भारत से किन देशों में अंतरराष्ट्रीय व्यापार स्थल माध्यम से संपन्न होता है?

उत्तरः- भूटान, नेपाल, पाकिस्तान आदि।

4. कोलकाता पतन के व्यापारिक दबाव को कम करने के लिए विकसित किए गए पतन का नाम क्या है?

उत्तरः- हल्दिया पतन।

5. देश के विभाजन के दौरान कौन से दो महत्वपूर्ण पतन अलग हो गए?

उत्तरः- कराची पतन (पाकिस्तान) और (चिटगांव पतन) बांग्लादेश।

6. अंतरराष्ट्रीय व्यापार से क्या समझते हैं?

उत्तरः- दो या दो से अधिक देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं के क्रय विक्रय को अंतरराष्ट्रीय व्यापार कहते हैं।

7. पृष्ठ प्रदेश (Hinterland) से आप क्या समझते हैं?

उत्तरः- पृष्ठ प्रदेश वास्तव में तट पर स्थित बस्ती अथवा पतन के पीछे का प्रदेश होता है जो पतन को अपनी सेवाएं प्रदान एवं सेवाएं ग्रहण करता है।

8. ऐसे पांच अफ्रीकी देशों के नाम बताइए जिनसे भारत के व्यापारिक संबंध है।

उत्तरः- नाइजीरिया, अंगोला, अल्जीरिया, घाना, दक्षिण अफ्रीका बोत्सवाना आदि।

9. अफ्रीकी संघ में भारत का शीर्ष व्यापारिक साझेदार है?

उत्तरः- नाइजीरिया।

10. भारत से निर्यात किए गए शीर्ष चार मदों को लिखें।

उत्तरः- विनिर्मित वस्तुओं खनिज ईंधन व लुब्रिकेंट कृषि उत्पाद खनिज अयस्क।

11. भारत में आयातित वस्तुओं को उनके आयातित मूल्य के आधार पर आरोही क्रम में लिखें।

उत्तरः- पेट्रोलियम अलौह धातुएं मोती व बहुमूल्य रत्न रासायनिक उत्पाद।

12. नौसैन्य पतन के उपयोग बताएं।

उत्तरः- नौसैन्य पत्तन सामरिक महत्व के पतन होते हैं तथा व्यापारिक गतिविधियां अत्यंत सीमित होती है। यहां सैन्य उद्देश्यों से लड़ाकू जहाज रखे जाते हैं साथ ही उनकी मरम्मत एवं लंगर डालने की व्यवस्था होती है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारत के विदेशी व्यापार की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तरः भारत के विदेशी व्यापार की प्रमुख विशेषताएँ :

- भारत का कुल विदेशी व्यापार निरन्तर बढ़ रहा है।
- भारत का अधिकांश विदेशी व्यापार समुद्री एवं वायु मार्गों द्वारा होता है।
- भारत में विदेशी व्यापार घाटा तेजी से बढ़ रहा है।
- विश्व व्यापार में भारत के विदेशी व्यापार का योगदान केवल 1% है।

2. पत्तन और पोताश्रय में अन्तर बताइए।

उत्तरः

- किसी जलमार्ग पर अवस्थित वह स्थान जहाँ व्यापारिक माल चढ़ाने व उतारने के लिए जलयान ठहर सकते हैं, पत्तन कहलाता है।
- पोताश्रय ऐसा सागरीय जलक्षेत्र होता है जहाँ जलयानों के ठहरने के लिए लंगर डाले जाते हैं तथा जलयानों को सागरीय तूफानों से सुरक्षा प्रदान की जाती है साथ ही इनमें जलयानों की मरम्मत, ईंधन भरने, गोदाम व माल वितरण की सुविधा होती है।

3. पृष्ठ प्रदेश के अर्थ को स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः एक बन्दरगाह के प्रभाव क्षेत्र को उसका पृष्ठ प्रदेश कहा जाता है। यह एक बन्दरगाह की भूमि की ओर विस्तृत वह भाग होता है जिसमें निर्यात की जाने वाली वस्तुओं का संग्रह होता है तथा आयात की जाने वाली वस्तुओं का वितरण होता है।

4. उन महत्त्वपूर्ण मदों के नाम बताइए जिन्हें भारत विभिन्न देशों से आयात करता है?

उत्तरः भारत विभिन्न देशों से निम्नलिखित वस्तुओं का आयात करता है: अशोधित पेट्रोलियम तथा अन्य उत्पाद

Jharkhandlab.com

- पूँजीगत सामान
- मोती तथा अल्प मूल्य रत्न
- सोना व चाँदी
- रसायन व सम्बन्धित उत्पाद
- खाद्य व सम्बन्धित वस्तुएँ
- वस्त्र, धागे तथा कपड़े आदि ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारत में निर्यात और आयात व्यापार के संयोजन का वर्णन कीजिए।

उत्तरः भारत में निर्यात व्यापार का संयोजन-सन् 2016-17 में भारत से 1852340 करोड़ रुपये मूल्य की वस्तुओं का विदेशों को निर्यात किया गया। सन् 2016-17 में भारत से जिन महत्त्वपूर्ण मदों से सम्बन्धित वस्तुओं का निर्यात किया गया उनमें कृषि व समवर्गी उत्पाद, अयस्क एवं खनिज, विनिर्मित वस्तुएँ, पेट्रोलियम व अपरिष्कृत उत्पाद प्रमुख हैं। भारत द्वारा निर्यात मुख्यतः संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, बेल्जियम, जर्मनी, जापान, स्विट्जरलैंड, हांगकांग, संयुक्त अरब अमीरात, चीन, सिंगापुर एवं मलेशिया आदि देशों को किया जाता है। इन देशों में से संयुक्त राज्य अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार देश है। भारत में आयात व्यापार का संयोजन-सन् 2016-17 में भारत में 2577422 करोड़ रुपये मूल्य की वस्तुओं का आयात किया गया जिनमें अपरिष्कृत पेट्रोलियम एवं अन्य उत्पाद सर्वाधिक महत्वपूर्ण थे। जिनका देश के कुल आयात मूल्य में योगदान 5,82,762 करोड़ का रहा। स्वर्ण-चाँदी, मशीनरी, व्यावसायिक उपस्कर, मोती, बहुमूल्य एवं अल्प मूल्य रत्न तथा गैर-धात्विक खनिज विनिर्माण आदि महत्वपूर्ण आयातित वस्तुएँ हैं। अन्य आयातित वस्तुओं में दालें, खाद्य तेल, लोहा व स्टील धातुमयी अयस्क तथा धातु छीजन, चिकित्सीय एवं फार्मा उत्पाद, उर्वरक, अलौह धातुएँ, लुगदी व अपशिष्ट कागज, गत्ता व विनिर्मितियों, न्यूज प्रिन्ट, वस्त्र, धागे व कपड़े तथा रासायनिक उत्पाद सम्मिलित हैं। भारत के आयात में एशिया व ओशेनिया की सर्वाधिक हिस्सेदारी है तत्पश्चात् यूरोप एवं उत्तरी अमेरिका का स्थान आता है।

2. भारत के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की बदलती प्रकृति पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तरः समय के साथ-साथ भारत के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की प्रकृति में भी उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिल रहे हैं। इसमें सन्देह नहीं है कि भारत के निर्यात मूल्य व आयात मूल्य में सन् 1950-51 के बाद से सतत् रूप से वृद्धि होती जा रही है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में इस तीव्रता के प्रमुख कारणों में विनिर्माण के क्षेत्र में सतत् वृद्धि, सरकार की उदार नीतियाँ तथा बाजारों की विविधता सम्मिलित हैं। भारत के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की बदलती प्रकृति का अध्ययन निम्नलिखित दो वर्गों के रूप में किया जा सकता है।

क. भारत के निर्यात संघटन के बदलते प्रारूप।

ख. भारत के आयात संघटन के बदलते प्रारूप।

क. भारत के निर्यात संघटन का बदलता प्रारूप - सन् 2009 - 10 से 2016-17 के बीच भारत के निर्यात संघटन में निम्नलिखित बदलाव अनुभव किये गये।

- भारत के कुल निर्यात मूल्य में पेट्रोलियम व अपरिष्कृत उत्पाद का प्रतिशत 16.2 से घटकर 11.7 हो गया। इसका प्रमुख कारण पेट्रोलियम तथा अपरिष्कृत उत्पादों के मूल्यों में वृद्धि होना रहा है।
- भारत के कुल निर्यात मूल्य में अयस्क एवं खनिजों का प्रतिशत 4.9 से घटकर 1.9 हो गया।
- भारत के कुल निर्यात मूल्य में अन्य वस्तुओं का प्रतिशत 1.5 से घटकर 0.5 हो गया।
- दूसरी ओर भारत के कुल निर्यात मूल्य में कृषि एवं समवर्गी उत्पादों का प्रतिशत योगदान 10.0 से बढ़कर 12.3 प्रतिशत हो गया जिसका प्रमुख कारण उक्त उत्पादों के निर्यात में वृद्धि रही है।
- यद्यपि भारत के कुल निर्यात मूल्य में उक्त अवधि में विनिर्मित वस्तुओं का प्रतिशत 67.4 से 73.6 हो गया।

ख. भारत के आयातः संघटन का बदलता प्रारूप - सन 2009-10 से 2016-17 के मध्य भारत के आयात संघटन में निम्नलिखित बदलाव अनुभव किये गये।

- भारत के कुल आयात मूल्य में पेट्रोलियम एवं अपरिष्कृत उत्पाद तथा अन्य उत्पाद वर्ग का प्रतिशत 33.2 से घटकर 26.7 हो गया। पेट्रोलियम व इसके उत्पादों के आयात में होने वाली इस कमी का कारण भारत में बढ़ता औद्योगीकरण तथा अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में पेट्रोलियम उत्पादों के मूल्य में हुई वृद्धि है।
- भारत के कुल आयात मूल्य में पूँजीगत सामान का प्रतिशत 15.0 से घटकर 13.6 तथा रसायन तथा सम्बन्धित उत्पादों का प्रतिशत 2.3 से घटकर 1.3 रह गया।
- भारत के कुल आयात संगठन में खाद्य व सम्बन्धी वस्तुओं का अंश 3.7 की तुलना में बढ़कर 5.6 प्रतिशत हो गया है।
- सन् 1970 के दशक के बाद हरित क्रान्ति में सफलता मिलने के कारण भारत में खाद्यान्नों का आयात रोक दिया गया तथा खाद्यान्नों के आयात का स्थान पेट्रोलियम व उर्वरकों ने ले लिया।

jharkhandlab.com

अध्याय - 12 भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में चयनित कुछ मुद्दे एवं समस्याएँ
GEORAPHICAL PERSPECTIVE ON SELECTED ISSUES AND PROBLEMS

पाठ के मुख्य बिंदु

- **प्रदूषण :** पर्यावरण में जीव जंतुओं और पेड़ पौधों के लिए हानिकारक परिवर्तन ही प्रदूषण कहलाता है। पर्यावरण प्रदूषण मानवीय क्रियाकलापों के अपशिष्ट उत्पादों से मुक्त द्रव्य एवं ऊर्जा का परिणाम है। वातावरण में अवांछित पदार्थों की मात्रा का अधिक हो जाना प्रदूषण की स्थिति पैदा करता है। प्रदूषण को हम इस आधार पर वर्गीकृत कर सकते हैं कि वातावरण का कौन सा अंग उससे प्रभावित हो रहा है। जैसे- वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, मृदा प्रदूषण जल प्रदुषण।
- **प्रदूषक :** पदार्थ का ऐसा रूप जो जैविक तंत्र के प्राकृतिक संतुलन में अवनति तथा प्रदूषण उत्पन्न करता है। अथवा भूमि या पर्यावरणीय तत्वों में परिवर्तन करने वाले अवांछनीय पदार्थों को प्रदूषक कहते हैं। प्रदूषण उत्पन्न करने वाले पदार्थ प्रदूषक कहलाते हैं।
- **पर्यावरण प्रदूषण :** प्रदूषण का वह कोई भी परिवर्तन जो पर्यावरण की गिरावट में योगदान देता है, पर्यावरण प्रदूषण कहलाता है।
- **मृदा प्रदूषणं :** मृदा की गुणवत्ता में गिरावट भूमि प्रदूषण कहलाता है,अधिक उपज की लालच में रासायनिक खादों, कीटनाशकों तथा खरपतवार नाशकों का अविवेकपूर्ण प्रयोग एवं अपशिष्टों का उचित निपटान न होना, प्लास्टिक का प्रयोग, मृदा प्रदूषण के लिए जिम्मेदार है।
- **वायु प्रदूषण :** वायु की संरचना में जीवाश्म ईंधनों के जलने से उत्पन्न धुआँ, धूलकण आदि मिलने से वायु प्रदूषण होता है।
- **जल प्रदूषण :** धरातल पर पाये जाने एवं भूमिगत जल में मानवकृत (घरेलू एवं औद्योगिक) अपशिष्टों के मिलने से जल प्रदूषण होता है।
- **ध्वनि प्रदूषण :** वाहनों, उद्योगों लाउड स्पीकरों एवं मशीनों का शोर ध्वनि प्रदूषण उत्पन्न करता है। । भारत के कई शहरों में ध्वनि प्रदूषण बहुत खतरनाक है।
- **गंदी बस्तियां :** ये न्यूनतम वांछित आवासीय क्षेत्र होते हैं, जहाँ जीर्ण शीर्ण मकान, स्वास्थ्य की निम्न सुविधाएँ व आवश्यक आधारभूत चीजों का अभाव पाया जाता है। नगरों में मलिन बस्तियों की समस्या इस समय देश के समक्ष चुनौती बनी हुई है।
- **धूम्र-कोहरा :** महानगरों में उद्योगों या वाहनों से निष्कासित धुंआ पर्याप्त मात्रा में वायु में मिल जाता है। इन नगरीय क्षेत्रों में जब शीतकाल में कोहरा पड़ता है तो कुहरा और धुंए के मिश्रण से यह और घना हो जाता है जिसे धूम्र-कोहरा कहा जाता है।
- **भू निम्नीकरण :** इसका अभिप्राय स्थायी या अस्थायी तौर पर भूमि की उत्पादकता की कमी है।
- **व्यर्थ भूमि :** यद्यपि सभी निम्न कोटि भूमियां व्यर्थ भूमि नहीं है। लेकिन वनों के नाश एवं अधिक सिंचाई जैसी प्रक्रियाएं इसे व्यर्थ भूमि में परिवर्तित कर देती है।
- **निम्नीकृत भूमि :** दूर संवेदन तकनीक की सहायता से निम्नीकृत भूमि की पहचान की गई है, जो प्राकृतिक खड्ड, मरुस्थलीय या तटीय रेतीली भूमि, बंजर चट्टानी क्षेत्र, तीव्र ढाल वाली भूमि तथा हिमानी क्षेत्र के रूप में पायी जाती है। मानव जनित निम्न कोटि भूमियों में जलाक्रांत व दलदली क्षेत्र लवणता व क्षारता से प्रभावित क्षेत्र, झाड़ी सहित व झाड़ियों सहित क्षेत्र प्रमुख रूप से सम्मिलित है।
- **ग्रामीण-शहरी प्रवास :** नगरीय क्षेत्रों में रोजगार के अधिक अवसर होने के कारण ग्रामीण क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोगों का नगरों में आकर बस जाना।
- **प्रवास :** विशिष्ट उद्देश्य से देश के अन्दर एक स्थान से दूसरे स्थान पर अथवा विदेश को किसी प्राणी का गमन।
- **अम्लीय वर्षा :** औद्योगिक एवं नगरीकृत क्षेत्रों में जीवाश्म ईंधन जलाने से भारी मात्रा में वायुमंडल में सल्फर तथा नाइट्रोजन के ऑक्साइड छोड़े जाते हैं। वर्षा होने पर वर्षा जल जब इन ऑक्साइडों के साथ क्रिया कर क्रमशः सल्फ्यूरिक अम्ल तथा नाइट्रिक अम्ल के साथ भूपटल पर बरसता है, तो इस प्रकार की वर्षा को अम्लीय वर्षा कहा जाता है।
- **धूम्र कोहरा :** नगरों के ऊपर फैला कुहरा जिसे शहरी धूम्र कोहरा कहा जाता है। यह वायुमंडलीय प्रदूषण के कारण होता है।
- भारत में नगरीय अपशिष्ट निपटान एक गंभीर समस्या है, मुंबई, बेंगलुरु, कोलकाता, चेन्नई आदि शहरों में ठोस अपशिष्ट के 90% को एकत्रित करके उसका निपटान किया जाता है, परन्तु देश के अन्य शहरों में ऐसा नहीं है।
- छोटे व मध्यम नगरों में रोजगार कम होने के कारण लोग सीधे अपनी जीविका के लिए महानगरों में पहुँचते है। जिस कारण वहाँ जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **निम्नलिखित में से सर्वाधिक प्रदूषित नदी कौन-सी है?**
   (क) ब्रह्मपुत्र (ख) सतलुज
   (ग) यमुना (घ) गोदावरी
2. **निम्नलिखित में से कौन-सा रोग जल जन्य है?**
   (क) नेत्रश्लेष्मला शोध (ख) अतिसार
   (ग) श्वसन संक्रमण (घ) श्वसन नली शोथ
3. **निम्नलिखित में से कौन-सा अम्ल वर्षा का एक कारण है?**
   (क) जल प्रदूषण (ख) शोर प्रदूषण
   (ग) भूमि प्रदूषण (घ) वायु प्रदूषण
4. **प्रतिकर्ष और अपकर्ष कारक उत्तरदायी है-**
   (क) प्रवास के लिए (ख) गन्दी बस्तियों के लिए
   (ग) भू निम्नीकरण के लिए (घ) वायु प्रदूषण के लिए
5. **औद्योगीकरण से कौन-सा प्रदूषण होता है?**
   (क) जल प्रदूषण (ग) ध्वनि प्रदूषण
   (ख) वायु प्रदूषण (घ) इनमें से सभी
6. **निम्नलिखित में से कौन-सा कारण जल प्रदूषण के लिए सर्वाधिक रूप से उत्तरदायी है?**
   (क) वन विनाश (ख) घरेलू अपमार्जक
   (ग) कृषि बहिःस्राव (घ) औद्योगिक अपशिष्ट
7. **सिंचित क्षेत्रों में मृदा निम्नीकरण का मुख्य कारण है-**
   (क) वायु अपरदन (ख) सिल्ट का जमाव
   (ग) अवनालिका अपरदन (घ) मृदा लवणता
8. **पर्यावरणीय ह्रास के क्या कारण हो सकते हैं ?**
   (क) प्राकृतिक प्रकोप से (ख) प्राकृतिक आपदा से
   (ग) पर्यावरण आघात से (घ) इनमें से सभी से
9. **ध्वनि की माप की इकाई क्या है?**
   (क) जूल (ख) प्रतिशत
   (ग) डेसीबल (घ) मीटर

jharkhandlab.com

10. निम्नलिखित में से किस प्रदूषण द्वारा सर्वाधिक बीमारियां होती है?

(क) वायु प्रदूषण (ख) भूमि प्रदूषण
(ग) जल प्रदूषण (घ) ध्वनि प्रदूषण

11. विशालतम गन्दी बस्ती 'धारावी' कहां अवस्थित है?

(क) मुम्बई में (ख) कोलकाता में
(ग) दिल्ली में (घ) हैदराबाद में

12. ध्वनि प्रदूषण के प्रमुख स्रोत हैं-

(क) मोटर वाहन (ख) उद्योग
(ग) लाउडस्पीकर (घ) उपरोक्त सभी

13. अम्लीय वर्षा का मुख्य कारण कौन है?

(क) भूमि प्रदूषण (ख) वायु प्रदूषण
(ग) जल प्रदूषण (घ) ध्वनि प्रदूषण

14. निम्नलिखित रोगों में से कौन वायु जनित नहीं है?

(क) श्वसन संक्रमण (ख) अतिसार
(ग) नेत्रश्लेष्मला शोथ (घ) श्वासनली शोथ

उत्तर : 1. (ग) 2. (ख) 3. (घ) 4. (क) 5. (घ) 6. (घ) 7. (घ) 8. (घ) 9. (ग) 10. (ग) 11. (क) 12. (घ) 13. (ग) 14. (ख)।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रदूषण क्या है?

उत्तर : पर्यावरण का वह कोई परिवर्तन जो पर्यावरण की गिरावट का कारक होता है, प्रदूषण कहलाता है।

2. प्रदूषक किसे कहते हैं?

उत्तर: प्रदूषण उत्पन्न करने वाले पदार्थों को प्रदूषक कहा जाता है। प्रदूषक ठोस, द्रव या गैस के रूप में होते हैं।

3. वायु प्रदूषण के प्रमुख स्रोतों को लिखिए।

उत्तर: जीवाश्म ईंधन जैसे कोयला, पेट्रोल व डीजल का दहन, खनन, औद्योगिक प्रक्रम, ठोस कचरा निपटान, वाहित मल निपटान आदि वायु प्रदूषण के प्रमुख स्रोत हैं।

4. मानव स्वास्थ्य पर वायु प्रदूषण के क्या प्रभाव पड़ते हैं?

उत्तर : वायु प्रदूषण के कारण मानव को श्वसन तन्त्रीय, तन्त्रिका रक्त संचार तन्त्र सम्बन्धी विभिन्न बीमारियों का गंभीर खतरा उत्पन्न हो जाता है।

5. भारत में गांवों से आए प्रवासियों की तीन सामाजिक समस्याएँ बताइए ।

उत्तर : (क)सामाजिक अकेलापन

(ख) शोषण

(ग) नशे की लत।

6. प्रदूषण के वर्गीकरण की कसौटी क्या है?

उत्तर : प्रदूषकों के परिवहित एवं विसरित होने के माध्यम के आधार पर प्रदूषण को वर्गीकृत किया जाता है।

7. वायु प्रदूषण के लिये मुख्य रूप से कौन सा कारक जिम्मेदार है?

उत्तर : जीवाश्म ईंधनों के जलने से निकला धुआं ।

8. वायु को प्रदूषित करने वाले प्रमुख प्रदूषक तत्व कौन से हैं?

उत्तर : सल्फर ऑक्साइड, कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, शीशा, एस्बेस्टस, धूलकण आदि ।

9. वायु प्रदूषण जनित प्रमुख बीमारियां कौन सी है?

उत्तर : श्वास सम्बन्धी बीमारी जैसे दमा, अस्थमा तंत्रिका तंत्र सम्बन्धी बीमारी।

10. अम्लीय वर्षा से क्या तात्पर्य है? इसका मुख्य कारण क्या है?

उत्तर : वायु प्रदूषण के कारण वातावरण में मौजूद अवांछित तत्व वर्षा के जल में मिलकर नीचे आते हैं। इसमें अम्लीय पदार्थ अधिक होते हैं, इसे अम्लीय वर्षा कहते हैं।

11. धूम्र कोहरा से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : वातावरण में मौजूद धुआँ एवं धूल के कण जब सामान्य रूप में बनने वाले कोहरे में मिल जाते हैं तो इसे धूम्र कोहरा कहते हैं यह स्वास्थ्य के लिए बहुत नुकसानदायक होता है।

12. भारत में नगरीय अपशिष्ट निपटान से जुड़ी प्रमुख समस्याओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- भारत में अधिकांश नगरों में नगरीय अपशिष्ट का 30 से 50 प्रतिशत कचरा बिना समुचित निपटान के छोड़ दिया जाता है जो गलियों में, घरों के पीछे खुली जगहों पर तथा परती भूमि पर जमा हो जाता है। इससे उन क्षेत्रों में निवासित व्यक्तियों के स्वास्थ्य को गंभीर खतरा पैदा होते हैं।

13. भारत में जल की गुणवत्ता के निम्नीकरण का मुख्य कारण क्या है?

उत्तर- भारत में जल की गुणवत्ता के निम्नीकरण का मुख्य कारण रासायनिक पदार्थों, औद्योगिक और अन्य अवशिष्ट पदार्थों को पानी में बहाना है।

14. 'ध्वनि प्रदूषण' शब्द की परिभाषा दीजिए।

उत्तर- कोई भी ऐसी अनचाही आवाज़ जो मानव मस्तिष्क को प्रभावित करती हो, असहनीय हो, बेचैनी बढ़ाती हो तथा मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो, ध्वनि प्रदूषण कहलाती है।

15. भारत में उपलब्ध कितना प्रतिशत जल प्रदूषित है ?

उत्तर- भारत में उपलब्ध जल का 70 प्रतिशत भाग प्रदूषित है।

16. जल प्रदूषण के कारण होने वाली चार बीमारियों के नाम बताइए।

उत्तर- हैजा, पीलिया, टाइफाइड तथा पेचिश इत्यादि बीमारियाँ जल प्रदूषण के कारण फैलती हैं।

17. ध्वनि को मापने की इकाई क्या है ?

उत्तर- ध्वनि को मापने की इकाई 'डेसिबल' है।

18. जल प्रदूषण के शहरी स्रोत क्या हैं ?

उत्तर- सीवेज, नगरपालिका व घरेलू कूड़ा-करकट, औद्योगिक अवशिष्ट, मोटरकार का धुँआ / निष्कासन आदि जल प्रदूषण के शहरी स्रोत हैं।

19. उन तीन शहरों के नाम बताइए जो यमुना नदी के जल को प्रदूषित करने के लिए उत्तरदायी हैं।

उत्तर- दिल्ली, आगरा तथा मथुरा यमुना नदी के जल को प्रदूषित करने के लिए उत्तरदायी हैं।

20. CFCs का क्या अर्थ है?

उत्तर : CFCs का तात्पर्य क्लोरोफ्लोरोकार्बन से है यह ओजोन परत को क्षतिग्रस्त करता है।

21. जल की गुणवत्ता में ह्रास के लिये जिम्मेदार तीन प्रमुख कारण बताइए ।

उत्तर : (क) बढ़ती हुई जनसंख्या

(ख) औद्योगिक निस्तारण,

(ग) जल का अविवेक पूर्ण उपयोग।

Jharkhandiah.com

22. नदियों के प्रदूषण के लिए जिम्मेदार प्रमुख उद्योग कौन-कौन से हैं।

उत्तर : चमड़ा उद्योग, कागज एवं लुग्दी उद्योग, वस्त्र उद्योग, रसायन उद्योग।

23. जल प्रदूषण से होने वाली प्रमुख बीमारियों के नाम लिखो।

उत्तर : डायरिया, हेपेटाइटिस, आंतों के कृमि आदि।

24. ध्वनि प्रदूषण के प्रमुख स्रोतों के नाम लिखिए।

उत्तर : विविध उद्योग, मशीनीकृत निर्माण, तोड़-फोड़ कार्य मोटर वाहन तथा वायुयान ध्वनि प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं।

25. सतत पोषणीय विकास की संकल्पना को परिभाषित करें।

उत्तर : सतत पोषणीय विकास एक ऐसा विकास है, जिसके अंतर्गत भविष्य में आने वाली पीढ़ियों की आवश्यकताओं की पूर्ति को ध्यान में रखकर पर्यावरण को बिना प्रभावित किए वर्तमान पीढ़ी द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति पर बल दिया गया है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. नगरों में अपशिष्ट निपटान सम्बन्धी समस्या विकराल रूप लेती जा रही है। इस समस्या से सम्बन्धित प्रमुख तीन तत्वों का वर्णन कीजिए ?

उत्तर : नगरों में अपशिष्ट निपटान संबंधी प्रमुख समस्याएं निम्न प्रकार से हैं :-

(क) **अपशिष्ट के पृथक्करण की समस्या:-** नगरों में अभी भी सभी प्रकार के ठोस अपशिष्ट एक साथ इकट्ठे किये जाते हैं जैसे कि धातु - सीसा, सब्जियों के छिलके कागज आदि। जिससे उनको उचित तरीके से निपटने में बाधा आती है।

(ख) **भराव स्थल की समस्या:-** महानगरों में कूड़ा डालने के लिये स्थान की कमी महसूस की जाने लगी है। पर्याप्त स्थान उपलब्ध नहीं है। सड़कों पर कूड़ा डाला जाता है।

(ग) **पुनर्चक्रण की समस्या:-** पृथक्करण न होने एवं पर्याप्त जागरूकता के अभाव में अपशिष्ट का पुनर्चक्रण नहीं हो पाता।

2. कौन-सी धार्मिक व सांस्कृतिक गतिविधियां प्रदूषण के लिये उत्तरदायी है?

उत्तर : निम्नलिखित धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियां प्रदूषण के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी हैं:

(क) तीर्थ यात्राएं व धार्मिक कर्मकाण्ड

(ख) धार्मिक मेलें

(ग) पर्यटन

(घ) पर्वतारोहण एवं खोज अभियान

(ड.) मृत शरीर को जलाना / जल में बहाना

(च) घर के धार्मिक अपशिष्टों को फेंकना / बहाना

3. भू-निम्नीकरण से क्या तात्पर्य है? इसके लिए उत्तरदायी कारण क्या है?

उत्तर : भू- निम्नीकरण से तात्पर्य भूमि की उत्पादकता में अल्प समय के लिये या स्थायी रूप से कमी आ जाना है। इसके निम्नलिखित कारण हैं:

(क) वृक्षोन्मूलन के कारण मृदा अपरदन होता है मिट्टी की ऊपरी उपजाऊ परत हट जाती है।

(ख) भूमि पर लगातार कृषि उपज लेते रहने से भी भूमि की उत्पादकता में कमी आ जाता है। इससे निपटने के लिये प्राकृतिक उर्वरक डालते रहना चाहिये।

(ग) लगातार जल भराव एवं नहरी सिंचाई भी भू- निम्नीकरण के लिए भू-नि उत्तरदायी है।

4. आधुनिक समय में पर्यावरण प्रदूषण की बढ़ती समस्या वर्तमान ही नहीं भविष्य की पीढ़ी के लिए भी एक समस्या बन रही है। स्पष्ट करे।

उत्तर : आधुनिक समय में पर्यावरण प्रदूषण मानव के लिए एक गंभीर समस्या बन गई है। इससे पृथ्वी पर मानव जीवन खतरे में है। प्राकृतिक वातावरण पर हो रहे इस प्रदूषण का प्रभाव धीरे-धीरे इतना बढ़ता जा रहा है कि सभी मण्डल (जल, स्थल, वायु व जैव) इससे प्रभावित हो रहे हैं। जब से गाँवों, कस्बों व नगरों तथा औद्योगीकरण का विकास हुआ है तब से परिस्थिति धीरे-धीरे और भी अधिक बिगड़ने लगी है। हर प्रकार की अशुद्धियाँ वातावरण में बढ़ती जा रही है। न केवल वर्तमान बल्कि आने वाली पीढ़ी के लिए भी गंभीर समस्या बन रही है।

5. वायु प्रदूषण क्या है? इसके प्रमुख स्रोत क्या है? मानव स्वास्थ्य पर वायु प्रदूषण का क्या प्रभाव पड़ता है?

अथवा

'वायु प्रदूषण' शब्द की परिभाषा लिखिए। वायु प्रदूषण के किन्हीं दो हानिकारक प्रभावों की व्याख्या कीजिए

उत्तर : धूल, धुआ, जहरीली गैसें, दुर्गंध व वाष्प की वायु में वृद्धि जो जीव जन्तुओं व सम्पत्ति के लिए हानिकारक होती है, वायु प्रदूषण कहलाता है।

वायु प्रदूषण के स्रोत : जीवाश्म ईंधन का दहन, खनन, औद्योगिक ठोस कचरा निपटान इसके प्रमुख स्त्रोत हैं ये स्त्रोत वायु में सल्फर, नाइट्रोजन आक्साइड, हाइड्रोजन कार्बन व कार्बन-डाइ-ऑक्साइड व कार्बन मोनोऑक्साइड, सीसा व एस्बेस्टस छोड़ते हैं। जिससे वायु प्रदूषण होता है।

मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव : इसके कारण श्वसन तन्त्र, तंत्रिका तंत्र तथा रक्त संचार सम्बन्धी विभिन्न बिमारियाँ होती है। नगरों के ऊपर धूम्र कोहरा छाया रहता है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता। इसके कारण अम्लीय वर्षा भी हो सकती। जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

6. भारत में ग्रामीण क्षेत्रों से जनसंख्या का प्रवाह शहरों की ओर बढ़ता जा रहा है। इसके लिए उत्तरदायी कारणों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : (क) भारत में नगरीय क्षेत्रों में मजदूरों की मांग अधिक रहती है। इसलिए नियमित व अच्छी मजदूरी की आस लिए गांवों से शहरों की ओर पलायन करते हैं।

(ख) भारत में ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शहरों में शिक्षा स्वास्थ्य व रोजगार के अच्छे अवसर लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

(ग) गांवों में गरीब व भूमिहीन लोगों के साथ सामाजिक भेदभाव व जातीय संघर्ष भी इन लोगों को शहरों की ओर पलायन के लिए मजबूर करता है।

7. भू-निम्नीकरण की प्रक्रिया के आधार पर निम्नीकृत भूमि को कितने वर्गों में रखा जा सकता है? प्रत्येक के बारे में बताइये।

उत्तर : भू-निम्नीकरण प्रक्रिया को दो वर्गों में रखा जा सकता है:-

(क) **मानवीय क्रियाओं द्वारा भू-निम्नीकरण:-** इसके अन्तर्गत कृषि के अंतर्गत जमीन का अधिक दोहन, वनों को काटना, अत्यधिक चराई एवं अविवेकपूर्ण खनन कार्य व निर्माण कार्य शामिल है।

(ख) **प्राकृतिक कारण द्वारा निम्नीकृत भूमि:-** अवनालिका अपरदन, जलभराव, खड़ी ढाल पर अपरदन, भूस्खलन आदि।

jharkhandlab.com

8. **भारत के जलाशयों को उद्योग किस प्रकार प्रदूषित करते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर : भारत के जलाशयों को उद्योग निम्नलिखित प्रकार से प्रदर्शित करते हैं:

(क) उद्योग अनेक अवांछित उत्पाद पैदा करते हैं। जिनमें औद्योगिक कचरा, प्रदूषित अपशिष्ट जल, जहरीली गैसें, रासायनिक अवशेष अनेक भारी धातुएँ, धुल धुआँ आदि शामिल है।

(ख) अधिकतर औद्योगिक कचरे को बहते जल में या झीलों आदि में विसर्जित कर दिया जाता है। परिणाम स्वरूप रासायनिक तत्व जलाशयों, नदियों आदि में पहुँच जाते हैं।

(ग) सर्वाधिक जल प्रदूषण उद्योग जैसे- चमड़ा, लुगदी व कागज, वस्त्र तथा रसायन है।

9. **यद्यपि जल प्रदूषण प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त प्रदूषकों से भी प्रदूषित होता है। परंतु मानव स्रोतों से उत्पन्न होने वाले प्रदूषक चिंता का वास्तविक कारण है क्यों?**

उत्तर : जल प्रदूषण प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त प्रदूषकों से भी प्रदूषित होता है, लेकिन मानव की भूमिका इसमें महत्वपूर्ण होती है क्योंकि-

(क) मानव जल को औद्योगिक, कृषि एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से प्रदूषित करता है।

(ख) औद्योगिक कचरा जहरीली गैस, रासायनिक अवशेष व भारी धातुएँ बिना उपचार के जल स्रोतों में विसर्जित कर दी जाती है।

(ग) आधुनिक कृषि की पद्धतियाँ, रासायनिक पदार्थ कीटनाशक आदि भी जल स्रोतों को प्रदूषित कर रहे हैं।

(घ) भारत में तीर्थ-यात्राओं, धार्मिक मेले, पर्यटन व अन्य सांस्कृतिक गतिविधियां जल स्रोतों को प्रदूषित कर रही है।

10. **प्रदूषण और प्रदूषक को में क्या अंतर है?**

उत्तर : प्रदूषण और प्रदूषण को में निम्नलिखित अंतर है:

प्रदूषण	प्रदूषक
प्रदूषण का तात्पर्य मानव गतिविधियों द्वारा पर्यावरण का दूषित होना है।	यह ऊर्जा या पदार्थ का एक रूप है जो इकोसिस्टम के प्राकृतिक संतुलन को घटाता तथा प्रदूषित करता है।
प्रदूषण, अपशिष्ट उत्पादों के निपटारे के द्वारा हो सकता है।	यह गैसीय, द्रवीय तथा ठोस स्थिति में हो सकता है।
प्रदूषण के कई प्रकार हो सकते हैं, जैसे कि वायु, जल, भूमि, ध्वनि प्रदूषण आदि।	प्रदूषकों की विद्यमान मात्रा के आधार पर उच्च प्रदूषण का वर्गीकरण किया जाता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. **भारत में जल प्रदूषण की प्रवृत्ति का वर्णन कीजिए।**

उत्तर : भारत में तीव्र गति से जनसंख्या वृद्धि हो रही है तथा बढ़ते औद्योगीकरण के कारण जल प्रदूषण की समस्या गम्भीर रूप धारण कर चुकी है। भारत जल प्रदूषण की प्रवृत्ति को निम्न बिंदुओं से स्पष्ट किया जा सकता है:-

(क) भारत में नदियों के किनारे बसे सभी नगर व महानगर अपने यहाँ के सीवेज को इन नदियों में बिना किसी प्रतिबंध के डाल रहे हैं।

(ख) नदियों के समीप अवस्थित उद्योग भी अपने औद्योगिक कचरे तथा प्रदूषित अपशिष्ट जल को इन नदियों के प्रवाहित जल में डाल रहे हैं।

(ग) उद्योगों में चमड़ा, लुगदी कागज, वस्त्र तथा रसायन उद्योगों के औद्योगिक अपशिष्ट नदियों के जल को गंभीर रूप से प्रदूषित कर रहे हैं।

(घ) भारत के कृषि क्षेत्रों में कृषि उत्पादन में सतत वृद्धि के उद्देश्य से रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों तथा खरपतवार नाशकों का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इन खतरनाक रसायनों का कुछ भाग वर्षा जल के साथ घुल कर नदियों या जलाशयों के जल में मिलकर उसे प्रदूषित कर देता है जबकि कुछ भाग भूमिगत जल स्रोतों से मिलकर भी इसे प्रदूषित कर देता है।

(ड.) भारत की प्रमुख नदियों में शव-दहन के पश्चात राख को नदी जल में विसर्जित करने में भी नदियों का जल प्रदूषित होता है। दुर्गा पूजा तथा गणेश उत्सव जैसे धार्मिक पर्वों पर विषैले रसायनों से रंगी मूर्तियों का विसर्जन नदियों में किया जाता है। नदियों के किनारे पर बसे नगरों में आयोजित धार्मिक मेले तथा सांस्कृतिक उत्सव भी नदियों के जल को प्रदूषित करते हैं।

(च) प्रदूषित जल पीने से डायरिया, आँतों के कृमि तथा हेपेटाइटिस जैसी बीमारियां होती हैं। भारत में केवल कुछ ही क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ पीने का स्वच्छ पानी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। इसी कारण भारत की एक बड़ी जनसंख्या जल जनित बीमारियों से पीड़ित रहती है।

(छ) विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट यह स्पष्ट करती है कि भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 25 प्रतिशत भाग जल जनित बीमारियों से ग्रस्त है।

2. **भारत में गन्दी बस्तियों की समस्याओं का वर्णन कीजिए।**

उत्तर : वर्ष 2011 में भारत की कुल नगरीय जनसंख्या लगभग 37.71 करोड़ थी जिसमें से लगभग 9.3 करोड़ (24.7 प्रतिशत) जनसंख्या गन्दी बस्तियों में निवास कर रही थी। इन बस्तियों में निवास करने वाली जनसंख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में प्रथम स्थान है।

भारत में गन्दी बस्तियों की निम्नलिखित समस्याएँ उल्लेखनीय हैं-

(क) गन्दी बस्तियों में पर्यावरण प्रदूषण की गम्भीर समस्या मिलती है।

(ख) ये बस्तियाँ न्यूनतम वांछित आवासीय सुविधाओं वाले क्षेत्र होते हैं जहाँ- घटिया किस्म के जीर्ण-शीर्ण मकान मिलते हैं जिनमें प्रकाश, पेयजल तथा शौचालय जैसी मूलभूत आवश्यकताओं का अभाव मिलता है। मुम्बई की धारावी नामक गन्दी बस्ती जो कचरा भराव क्षेत्र पर बसी है, 1440 व्यक्तियों पर एक शौचालय की उपलब्धता है। पीने के स्वच्छ जल की उपलब्धता का सामान्यतया अभाव मिलता है।

(ग) यहाँ निवासित अधिकांश व्यक्ति कम वेतन पर अधिक जोखिम भरे कार्य करते हैं जिसके कारण इन बस्तियों में कुपोषण की गंभीर समस्या बनी रहती है।

(घ) गन्दी बस्तियाँ बहुत अधिक भीड़-भाड़, पतली- संकरी गलियों तथा आग जैसे गंभीर खतरों के जोखिम से युक्त क्षेत्र होते हैं।

(ड.) नशीले पदार्थों का उपभोग, गुंडागर्दी, अपराध, जुआ, वेश्यावृत्ति, चोरी जैसी सामाजिक बुराइयां यहाँ प्रमुखता से मिलती हैं।

(च) इन बस्तियों के लोग अपने बच्चों की पढ़ाई पर गरीबी के कारण समुचित ध्यान नहीं दे पाते हैं।

(छ) पर्यावरण प्रदूषण, मूलभूत आवश्यकताओं का अभाव तथा कुपोषण के कारण यहाँ के लोग विभिन्न बीमारियों से ग्रसित रहते हैं। इन बीमारियों में डायरिया, श्वसन सम्बन्धी, मलेरिया, खसरा तथा एच. आई. वी. एड्स सबसे प्रमुख हैं।

jharkhandlab.com

3. भू-निम्नीकरण को कम करने के उपाय सुझाइए।

उत्तर- कृषि योग्य भूमि पर दबाव के कारण केवल न्यून उपलब्धता ही नहीं वरन् इसकी गुणवत्ता में कमी भी इसका कारण है। मृदा अपरदन, लवणता तथा अतिरिक्त बोझ से भू-निम्नीकरण होता है। भू-निम्नीकरण का अभिप्राय स्थायी या अस्थायी तौर पर भूमि की उत्पादकता में कमी है।

भू-निम्नीकरण दो प्रक्रियाओं द्वारा तीव्रता से होता है। ये प्रक्रियाएँ प्राकृतिक तथा मानव जनित हैं।

जैसे प्राकृतिक खड्ड, मरुस्थलीय या तटीय रेतीली भूमि बंजर चट्टानी क्षेत्र तीव्र ढाल वाली भूमि तथा हिमानी क्षेत्र। ये मुख्यतः प्राकृतिक कारकों द्वारा घटित हुई है। मानव जनित प्रक्रियाओं से निम्न कोटि भूमियों में जलाक्रान्त व दलदली क्षेत्र, लवणता तथा क्षारीयता से प्रभावित भूमियाँ, झाड़ी सहित व झाड़ियाँ रहित भूमि सम्मिलित है।

भू-निम्नीकरण को कम करने के निम्न उपाय हैं-

(क) किसानों को उर्वरकों व रसायनों के उपयोग की पूरी जानकारी देनी चाहिए ताकि भू-उर्वरता को बनाए रखा जा सके।

(ख) औद्योगिक अपशिष्टों को संसाधन के रूप में उपचारित कर इनकी ऊर्जा पैदा करने व कम्पोस्ट खाद बनाने में इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

(ग) प्लास्टिक जैसे अपशिष्ट के उपयोग पर रोक लगाई जानी चाहिए।

(घ) कृषि जनित कचरे व मानवीय मल का कम्पोस्ट खाद के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए

(ङ) जल संभर प्रबंधन कार्यक्रम जल, जंगल तथा जमीन के मध्य संबंधों को महत्व प्रदान करता है, अतः जल सम्भरण प्रबंधन द्वारा भूमि निम्नीकरण को न्यूनतम स्तर पर लाया जा सकता है।

(च) इसी प्रकार जल संरक्षण एवं प्रबंधन के लिए जल संग्रहण की विभिन्न विधियों का उपयोग किया जा सकता है साथ ही नदियों व जलाशयों के जल को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए सरकारी व गैर-सरकारी संगठनों के अतिरिक्त हर व्यक्ति द्वारा अपना सक्रिय योगदान दिया जा सकता है।

(छ) प्राकृतिक तथा मानव जनित क्रियाकलापों से जलाक्रान्त व दलदली क्षेत्र, लवणता व क्षारीय क्षेत्र झाड़ी सहित तथा झाड़ी रहित, खनन व भूमि तथा औद्योगिक व्यर्थ भूमि जैसी निम्न कोटि की भूमियों का निर्माण हुआ है। ऐसे क्षेत्रों में भू-निम्नीकरण के लिए उत्तरदायी मानवीय क्रियाओं पर कानूनी रूप से प्रतिबन्ध लगाना आवश्यक है।

4. भूमि निम्नीकरण की समस्या के कारणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर : मृदा अपरदन, लवणता तथा अतिरिक्त बोझ से भू-निम्नीकरण होता है। भू-निम्नीकरण का अभिप्राय स्थायी या अस्थायी तौर पर भूमि की उत्पादकता में कमी है।

भूमि निम्नीकरण के समस्याओं के प्रमुख कारण हैं:-

(क) **अति सिंचाई :-** इसके कारण देश में उत्तरी मैदानों में लवणीय व क्षारीय क्षेत्रों में वृद्धि हुई है। सिंचाई मृदा की संरचना को बदल देती है। इनके अतिरिक्ति उर्वरक कीटनाशी भी मृदा के प्राकृतिक, भौतिक रासायनिक व जैविक गुणों को नष्ट करके मृदा को बेकार कर देते हैं।

(ख) **औद्योगिक अपशिष्टः-** उद्योगों द्वारा निकला अपशिष्ट जल को दूषित कर देता है और फिर दूषित जल से की गई सिंचाई मृदा के गुणों को नष्ट कर देती है।

(ग) **नगरीय अपशिष्टः-** नगरों से निकला कूड़ा-करकट भूमि का निम्नीकरण करता है और नगरों से निकला जलमल व अपशिष्ट के विषैले रासायनिक पदार्थ आस-पास के क्षेत्रों की मृदा में मिलकर उसे प्रदूषित कर देते हैं।

(घ) **चिमनियों का धुआं :-** कारखानों व अन्य स्रोतों की चिमनियों से निकलने वाली गैसीय व कणिकीय प्रदूषकों को हवा दूर तक उड़ा ले जाती है और ये प्रदूषक मृदा में मिलकर उसे प्रदूषित करते हैं।

(ङ) **अम्ल वर्षा :-** कारखानों से निकलने वाली गंधक अम्लीय वर्षा का कारण है। इससे मृदा में अम्लता बढ़ती है। कोयले की खानो, मोटर वाहनो, ताप बिजली घरों से भारी मात्रा में निकले प्रदूषण मृदा व वायु प्रदूषित करते हैं।

5. भारत में गंदी बस्तियों की समस्याएँ क्या है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : (क) इन बस्तियों में रहने वाले लोग ग्रामीण पिछड़े इलाकों से प्रवासित होकर रोजगार की तलाश में आते हैं।

(ख) यहाँ अच्छे मकानों का मिलना कठिन है।

(ग) ये बस्तियाँ रेलवे लाइन, सड़क के साथ, पार्क या अन्य खाली पड़ी सरकारी भूमि पर अवैध कब्जा करके बसायी जाती है।

(घ) खुली हवा, स्वच्छ पेयजल, शौच सुविधाओं, प्रकाश का सर्वथा अभाव होता है।

(ङ) कम वेतन / मजदूरी प्राप्त करने के कारण जीवन स्तर अति निम्न होता है।

(च) कुपोषण के कारण बीमारियों की संभावना बनी रहती है।

(छ) नशा व अपराध के कार्यों में लिप्त हो जाते हैं।

(ज) चिकित्सा सुविधाओं का अभाव।

6. भूमि निम्नीकरण को रोकने / कम करने के उपाय बताओ।

उत्तर : (क) किसान रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग उचित मात्रा में करें।

(ख) नगरीय / औद्योगिक गंदे पानी को उपचारित करके पुनः उपयोग में लाया जाये।

(ग) सड़ी-गली सब्जी व फल, पशु मल मूत्र को उचित प्रौद्योगिकी द्वारा बहुमूल्य खाद में परिवर्तित किया जाये।

(घ) बस्तियों के आस-पास खुले में शौच पर प्रतिबंध लगे

(ङ) प्लास्टिक से बनी वस्तुओं पर प्रतिबंध लगे।

(च) कूड़ा-कचरा निश्चित स्थान पर ही डाला जाए ताकि उसका यथासंभव निपटारा हो सके।

(छ) वृक्षारोपण को बढ़ावा दिया जाये।

jharkhandlab.com

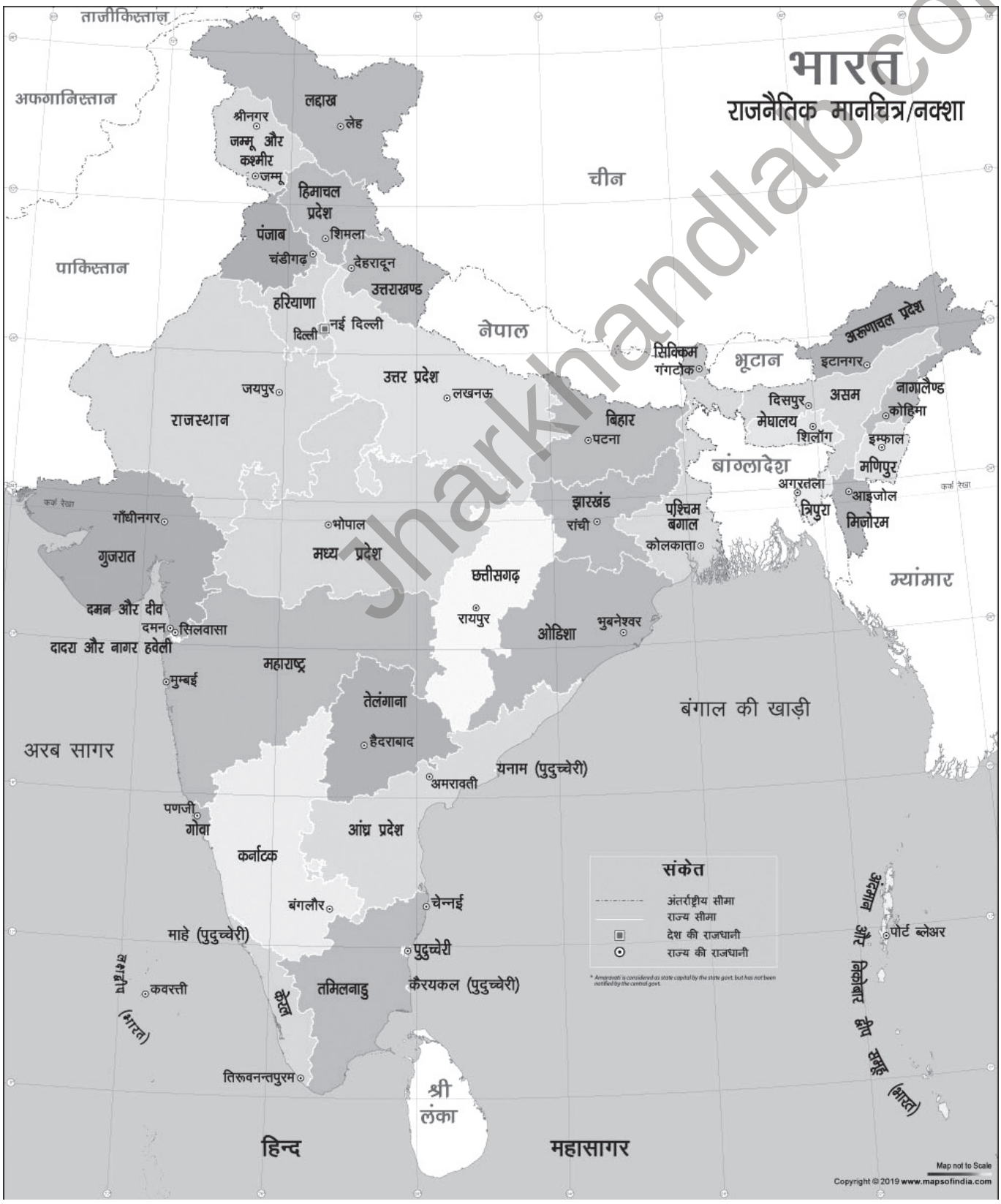

Jharkhandlab.com

झारखंड अधिविद्य परिषद्
ANNUAL INTERMEDIATE EXAMINATION 2023

GEOGRAPHY (OPTIONAL)

SOLVED PAPER

भूगोल (वैकल्पिक)

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

भाग A (35 अंक)

1. ग्रिफिथ टेलर द्वारा कौन सी विचारधारा दी गई थी ?

(1) नियतिवाद (2) संभववाद
(3) नव नियतिवाद (4) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (3) नव नियतिवाद।

2. विश्व में सबसे अधिक जनसंख्या वाला महादेश है ?

(1) ऑस्ट्रेलिया (2) उत्तरी अमेरिका
(3) एशिया (4) अफ्रीका

उत्तर (3) एशिया।

3. मानव विकास सूचकांक का मापक निम्नलिखित में से कौन सा है ?

(1) स्वास्थ्य (2) शिक्षा
(3) संसाधनों तक पहुंच (4) इनमें से सभी

उत्तर (4) इनमें से सभी।

4. निम्नलिखित में से किस प्रकार की कृषि में खट्टे रसदार फलों की कृषि की जाती है ?

(1) बाजारीय सब्जी कृषि। (2) रोपण कृषि
(3) भूमध्यसागरीय कृषि (4) सहकारी कृषि

उत्तर (3) भूमध्यसागरीय कृषि।

5. निम्नलिखित में से कौन सा एक प्रकार का उद्योग अन्य उद्योगों के लिए कच्चे माल का उत्पादन करता है ?

(1) कुटीर उद्योग (2) छोटे पैमाने के उद्योग
(3) आधारभूत उद्योग (4) स्वच्छंद उद्योग

उत्तर (3) आधारभूत उद्योग।

6. निम्नलिखित में से कौन-सा एक तृतीयक क्रियाकलाप है ?

(1) खेती (2) व्यापार
(3) बुनाई (4) आखेट

उत्तर (2) व्यापार।

7. किस देश में रेल मार्गों के जाल का सघनत्तम घनत्व पाया जाता है?

(1) ब्राजील (2) संयुक्त राज्य अमेरिका
(3) कनाडा (4) रूस

उत्तर (2) संयुक्त राज्य अमेरिका

8. विश्व व्यापार संगठन का मुख्यालय कहां है ?

(1) जिनेवा में (2) वियना में
(3) न्यूयॉर्क में (4) वाशिंगटन में

उत्तर (1) जिनेवा में।

9. निम्नलिखित आर्थिक क्रियाओं में कौन सा ग्रामीण अधिवासों से संबंधित है?

(1) प्राथमिक क्रियाएं (2) द्वितीयक क्रियाएं
(3) तृतीयक क्रियाएं (4) में से कोई नहीं

उत्तर (1) प्राथमिक क्रियाएं।

10. निम्नलिखित में कौन सा धार्मिक नगर है?

(1) जमशेदपुर (2) वाराणसी
(3) भिलाई (4) राउरकेला

उत्तर (2) वाराणसी।

11. भारत में सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य कौन सा है ?

(1) बिहार (2) पश्चिम बंगाल
(3) उत्तर प्रदेश (4) महाराष्ट्र

उत्तर (3) उत्तर प्रदेश

12. भारत में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत है-

(1) 31% (2) 41%
(3) 51% (4) 61%

उत्तर (1) 31%

13. प्रवास के कारण जो विभिन्न स्थानों से लोगों को आकर्षित करते हैं -

(1) आप्रवास (2) उत्प्रवास
(3) अपकर्ष कारक (4) प्रतिवर्ष कारक

उत्तर (3) अपकर्ष कारक।

14. वर्ष 2011 में भारत में किस राज्य में स्त्री साक्षरता उच्चतम रही थी?

(1) तमिलनाडु (2) बिहार
(3) केरल (4) हिमाचल प्रदेश

उत्तर (3) केरल।

15. भारत का सबसे बड़ा नगर है-

(1) कोलकाता (2) दिल्ली
(3) मुंबई (4) चेन्नई

उत्तर (2) दिल्ली।

16. भारत में हरित क्रांति की शुरुआत हुई -

(1) 1950 के दशक में (2) 1960 के दशक में
(3) 1970 के दशक में (4) 1980 के दशक में

उत्तर (2) 1960 के दशक में।

17. निम्नलिखित में से कौन - सी रोपण फसल नहीं है?

(1) रबड़ (2) चाय
(3) कॉफी (4) मक्का

उत्तर (4) मक्का।

Jharkhandlab.com

18. भारत की दो अत्यधिक प्रदूषित नदियां हैं -

(1) नर्मदा व ताप्ती (2) महानदी व गोदावरी
(3) गंगा व यमुना (4) कृष्णा व कावेरी

उत्तर (3) गंगा व यमुना।

19. हल्दिया तेल शोधन कारखाना अवस्थित है-

(1) उड़ीसा में (2) पश्चिम बंगाल में
(3) झारखंड में (4) बिहार में

उत्तर (2) पश्चिम बंगाल में।

20. झरिया क्षेत्र किसके लिए प्रसिद्ध है ?

(1) कोयला (2) तांबा
(3) बॉक्साइट (4) अभ्रक

उत्तर (1) कोयला।

21. बोकारो इस्पात केंद्र है

(1) निजी क्षेत्र (2) सार्वजनिक क्षेत्र
(3) संयुक्त क्षेत्र (4) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (2) सार्वजनिक क्षेत्र।

22. निम्नलिखित में से किस शहर को 'भारत का मैनचेस्टर' कहा जाता है ?

(1) चेन्नई (2) अहमदाबाद
(3) पंजाब (4) महाराष्ट्र

उत्तर (2) अहमदाबाद।

23. भारत का सबसे लंबा राष्ट्रीय राजमार्ग है -

(1) NH 19 (2) NH 44
(3) NH 22 (4) NH 26

उत्तर (2) NH 44

24. उत्तर दक्षिण गलियारा जोड़ता है -

(1) जम्मू को चेन्नई से
(2) वाराणसी को चेन्नई से
(3) श्रीनगर को कन्याकुमारी से
(4) वाराणसी को कन्याकुमारी से

उत्तर (3) श्रीनगर को कन्याकुमारी से।

25. भारत की प्रथम रेलवे लाइन किन नगरों के मध्य निर्मित की गई थी ?

(1) मुंबई - गोवा (2) मुंबई - पुणे
(3) मुंबई - थाणे (4) मुंबई - अहमदाबाद

उत्तर (3) मुंबई - थाणे।

26. कोलकाता बंदरगाह स्थित है -

(1) केरल में (2) पश्चिम बंगाल में
(3) उड़ीसा में (4) मुंबई में

उत्तर (2) पश्चिम बंगाल में।

27. 'धारावी बस्ती' कहां अवस्थित है ?

(1) मुंबई में (2) कोलकाता में
(3) दिल्ली में (4) चेन्नई में

उत्तर (1) मुंबई में।

28. निम्नलिखित में से कौन सा अम्ल वर्षा का एक कारण है?

(1) जल प्रदूषण (2) भूमि प्रदूषण
(3) ध्वनि प्रदूषण (4) वायु प्रदूषण

उत्तर (4) वायु प्रदूषण।

29. 'ज्योग्राफिया जेनररिस' किसने लिखी ?

(1) विडाल डी ला ब्लाश (2) बर्नहार्डस वेरेनियस
(3) फ्रांसिस बेकन (4) चार्ल्स डार्विन

उत्तर (2) बर्नहार्डस वेरेनियस।

30. निम्नलिखित में से जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारक कौन से हैं ?

(1) जलवायु (2) मृदा
(3) जल की उपलब्धता (4) इनमें से सभी

उत्तर (4) इनमें से सभी।

31. विश्व में निम्नलिखित में से किस देश का न्यूनतम लिंग - अनुपात है ?

(1) ईरान (2) पाकिस्तान
(3) सऊदी अरब (4) इराक

उत्तर (3) सऊदी अरब।

32. पर्वतीय प्रदेशों में किस प्रतिरूप के अधिवास पाए जाते हैं ?

(1) आयताकार (2) सीढ़ीनुमा
(3) पंखानुमा (4) तारा नुमा

उत्तर (2) सीढ़ीनुमा।

33. बुशमैन प्रजाति समूह कहां पाए जाते हैं ?

(1) अमेरिका (2) अफ्रीका
(3) यूरोप (4) एशिया

उत्तर (2) अफ्रीका।

34. दामोदर घाटी परियोजना स्थित है -

(1) महाराष्ट्र में (2) झारखंड में
(3) उड़ीसा में (4) उत्तराखंड में

उत्तर (2) झारखंड में।

35. बिटुमिनस किस खनिज का प्रकार है ?

(1) लोहा (2) अभ्रक
(3) कोयला (4) बॉक्साइट

उत्तर (3) कोयला।

Jharkhandlab.com

झारखंड अधिविद्य परिषद्
ANNUAL INTERMEDIATE EXAMINATION 2023

GEOGRAPHY (OPTIONAL)
SOLVED PAPER
भूगोल (वैकल्पिक)

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

भाग B (35 अंक)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (1×5 = 5)

किन्ही पांच प्रश्नों के उत्तर दें।

1. 'प्रवास' को परिभाषित करें ।

उत्तर : किसी एक व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह का एक स्थान से दूसरे स्थान में जाकर बसने की प्रक्रिया को प्रवास कहते हैं। इसके पीछे सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनैतिक या अन्य कारण उत्तरदायी हो सकते हैं।

2. 'कर्तन और दहन' कृषि को परिभाषित करें।

उत्तर : आदिकालीन जीविका निर्वाह कृषि को ही कर्तन दहन खेती कहते हैं। इस कृषि में सबसे पहले जमीन के झाड़ियों एवं पेड़ों को काटा जाता और फिर उसे जला दिया जाता है। वनस्पति को जलाने से राख बनती है, उसे मिट्टी में मिला दिया जाता है। उसके बाद फसल उगाई जाती है।

3. द्वितीयक क्रियाकलाप से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर : ऐसे क्रियाकलाप जो कच्चे माल या पदार्थ को परिवर्तन या संशोधन कर उसके मूल्य में बढ़ोतरी कर देते हैं, द्वितीयक क्रियाकलाप कहलाते हैं। जैसे - कपास से सूती वस्त्र का निर्माण करना।

4. पर्यटन क्या है ?

उत्तर : पर्यटन एक प्रकार की यात्रा है, जो मनोरंजन या फुरसत के पलो का आनंद उठाने के उद्देश्यों से की जाती है। छुट्टियों के दौरान भ्रमण, व्यापार या व्यावसायिक दौरा करना पर्यटन का ही एक हिस्सा होता है।

5. परिवहन से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर : वस्तुओं तथा यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने की प्रक्रिया को परिवहन कहते हैं। परिवहन के लिए मनुष्य, पशुओं तथा विभिन्न प्रकार के वाहनों का प्रयोग किया जाता है। आधुनिक युग में परिवहन किसी राष्ट्र के आर्थिक विकास को सुदृढ़ आधार प्रदान करते हैं।

6. ग्रामीण बस्तियाँ क्या हैं ?

उत्तर : ग्रामीण बस्तियाँ, जिनकी अधिकांश आबादी कृषि, पशुपालन, मछली पकड़ने, खनन आदि जैसे प्राथमिक गतिविधियों में शामिल होती है। ग्रामीण बस्तियाँ में जनसंख्या का आकार, जनसंख्या घनत्व एवं भौगोलिक क्षेत्र अपेक्षाकृत छोटा होता है।

7. कोई भी एक लौह खनिज का नाम लिखें।

उत्तर : वैसे धात्विक खनिज जिनमें लोहा होता है, लौह खनिज कहलाते हैं। उदाहरण: लौह अयस्क।

लघु उत्तरीय प्रश्न (3×5 = 15)

किन्ही पांच प्रश्नों के उत्तर दें।

8. कुटीर उद्योगों के किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख करें।

उत्तर : वैसे उद्योग जिनमें उत्पाद एवं सेवाओं का सृजन अपने घर में ही किया जाता है, न कि किसी कारखाने में कुटीर उद्योग कहलाता है।

कुटीर उद्योगों की तीन विशेषताएँ निम्न हैं :-

- कुटीर उद्योगों की स्थापना में न्यूनतम पूंजी निवेश होता है, एवं कम कीमत की मशीनों व उपकरणों का उपयोग किया जाता है।
- वस्तुओं के निर्माण में प्रायः पूरा परिवार का सहयोग होता है।
- कुटीर उद्योगों में प्रायः स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है तथा वस्तु के उत्पादन में स्थानीय तकनीकों का प्रयोग किया जाता है।

9. सड़क परिवहन के तीन लाभ लिखिए।

उत्तर : वैसा परिवहन जो लोगों एवं माल को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाने के लिए सड़क का उपयोग करता है, सड़क परिवहन कहलाता है।

सड़क परिवहन के तीन लाभ निम्नलिखित हैं :-

- सड़कों के लिए रेलवे की अपेक्षा पूँजी निवेश की आवश्यकता कम होती है। अर्थात रेल परिवहन से ये सस्ते होते हैं।
- इनका निर्माण बहुत ऊँचे स्थानों या दुर्गम क्षेत्रों में भी किया जा सकता है।
- सड़क परिवहन में देखभाल की लागत कम होती है एवं यह सुविधाजनक तथा साधारण व्यक्ति की पहुँच के अन्दर होता है।

10. गैर परंपरागत ऊर्जा स्रोतों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

- **सौर ऊर्जा :** यह नवीकरणीय ऊर्जा का एक आवश्यक स्रोत है। वास्तव में यह सूर्य से ऊर्जा प्राप्त होने वाली ऊर्जा है। यह प्रकाश की किरणों तथा धूप के रूप में अर्जित की जाती हैं। यह पर्यावरण का सबसे अनुकूल ऊर्जा स्रोत हैं।
- **पवन ऊर्जा :** पवन ऊर्जा नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है। यह स्वच्छ एवं सुरक्षित होता है। पृथ्वी के जिन क्षेत्रों में अधिकांश दिनों में तीव्र गति से हवाएँ चलती हैं, वहां पवन चक्किकयों को लगाकर पवन ऊर्जा का उत्पादन किया जाता है।
- **बायोगैस :** यह मानव एवं पशुओं के मल, घरेलू कार्बनिक अपशिष्ट पदार्थों, खरपतवारों, जंगल के कच्चे माल, लकड़ी उद्योग के गौण उत्पादन आदि से प्राप्त किया जाता है।

Jharkhandlab.com

- **बायोडीजल :** बायोडीजल पारंपरिक या 'जीवाश्म' डीजल के स्थान पर एक वैकल्पिक ईंधन है। शहरों में बढ़ते वायु प्रदूषण को कम करने के लिए बायोडीजल का प्रयोग बढ़ाना बहुत जरूरी है। बायोडीजल सीधे वनस्पति तेल, पशुओं के वसा आदि से उत्पादित किया जा सकता है।
- **ज्वारीय तथा तरंग ऊर्जा :** इस प्रकार की ऊर्जा ज्वारीय तरंगों तथा महासागरीय धाराओं से उत्पन्न किया जाता है। इस ऊर्जा का उत्पादन प्रायः ज्वारनदमुख अथवा सक्रिय सागरीय कार्यों पर किया जाता है। जहां जल को टरबाइन पर तीव्र गति से डालकर विद्युत उत्पन्न की जाती है।
- **भूतापीय ऊर्जा :** पृथ्वी के आंतरिक भागों में मैग्मा या रेडियोधर्मी तत्वों के विखंडन से जब वहां का तापक्रम अधिक बढ़ जाता है तो वह सत्तह के ठीक नीचे स्थित चट्टानें भी गर्म हो जाती हैं।इन चट्टानों द्वारा जो ऊर्जा निकलता है उसे भूतापीय ऊर्जा कहा जाता है।
- **जैव ऊर्जा :** जैव पदार्थों जैसे कृषि अवशेष, नगरपालिका औद्योगिक व अन्य अपशिष्ट से प्राप्त उर्जा को जैव ऊर्जा कहा जाता है। इन जैविक ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा, ताप ऊर्जा तथा खाना पकाने वाली गैसों के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है।

11. वर्षा जल संरक्षण की किन्हीं तीन विधियां बताइए।

उत्तर : वर्षा के बाद जल का उत्पादक कामों में इस्तेमाल के लिए इकट्ठा करने को वर्षा जल संग्रहण कहा जाता है।

वर्षा जल संरक्षण की तीन विधियां निम्नलिखित हैं:-

- **टांका :** यह वास्तव में वर्षा जल को संग्रहण करने के लिए एक ढकी हुई भूमिगत टंकी होती है, जिसका निर्माण घर में या घर के पास वर्षा जल को एकत्रित करने के उद्देश्य से किया जाता है।
- **तालाब एवं झील :** ग्रामीण क्षेत्रों में परंपरागत रूप से वर्षा जल संग्रहण के लिए धरातलीय संरचनाएं जैसे तालाब एवं झील का उपयोग किया जाता है, इसके अतिरिक्त कुआं एवं चेक डैम, तथा सर्विस कूपों को निर्मित कर वर्षा जल संग्रहण किया जाता है।
- **रिचार्ज पिट एवं रिचार्ज ट्रेंच द्वारा वर्षा जल का संग्रहण :** रिचार्ज पिट का निर्माण जलोढ़ मिट्टी वाले क्षेत्रों में उपयोगी होता है। इस विधि में घर से 8 से10 मीटर की दूरी पर धरातल के समीप 1 से 2 मीटर चौड़ा तथा 2 से 3 मीटर गहरा गड्ढा या रिचार्ज पिट बना दिया जाता है और घर की छत से पाइप का संपर्क रिचार्ज पिट से कर दिया जाता है।

12. भारत में हरित क्रांति के तीन मुख्य उपलब्धियों का वर्णन कीजिए।

उत्तरः 1960 के दशक में खाद्यान्न के उत्पादन में वृद्धि के लिए जो क्रांति हुई, उसे हरित क्रांति के नाम से जानते हैं।

इसकी तीन प्रमुख उपलब्धियां निम्न है:-

1. **उन्नत किस्म के बीज :** भारत में 1960 के दशक में खाद्यान्न फसलों के उत्पादन में वृद्धि करने के लिए अधिक उत्पादन देने वाली नई किस्मों के बीज किसानों को उपलब्ध कराये गये। किसानों को अन्य कृषि निवेश भी उपलब्ध कराये गए, जिसे पैकेज प्रौद्योगिकी के नाम से जाना जाता है। जिसके फलस्वरूप पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, गुजरात, राज्यों में खाद्यान्नों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।
2. **सिंचाई की सुविधा :** हरित क्रांति की महत्वपूर्ण उपलब्धि के अंतर्गत सिंचाई की व्यवस्था बड़े बांधों के अतिरिक्त छोटे नहरों तथा तालाबों से भी की गई । इस कार्यक्रम के अंतर्गत नलकूप, छोटी नहरे तथा तालाब आदि बनाने का कार्य किया गया। लोगों को भी सिंचाई के साधनों के निर्माण में सहायता दी गई। प्रथम योजना काल से लेकर वर्ष 1993 -1994 तक 3000 लाख हेक्टेयर भूमि को लघु सिंचाई योजनाओं से जल प्राप्त हुआ । वर्तमान में भारत की कुल क्षमता 140 मिलियन हेक्टेयर है।
3. **आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी का विकास :** भारत में फसल उत्पादन की मात्रा में वृद्धि करने के लिए रासायनिक उर्वरकों एवं उन्नत प्रौद्योगिकी की आवश्यकता पड़ी, जिसके कारण देश के विभिन्न क्षेत्रों में आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी का तीव्रता से प्रसार हुआ। कीटों के द्वारा अत्यधिक मात्रा में फसल बर्बाद हो जाते थे। पिछले 40 वर्षों में रासायनिक उर्वरकों की खपत में 15 गुना वृद्धि हुए क्योंकि उत्तम बीज की किस्मों में कीट प्रतिरोधक क्षमता कम होती है अतः उस में कीटनाशक दवाओं का भी प्रयोग महत्वपूर्ण हो गया।

13. गुच्छित बस्तियों की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर : गुच्छित बस्तियाँ वे होती हैं, जिनमें मकान एक दूसरे के समीप बनाए जाते हैं। इस तरह की बस्तियों का विकास नदी घाटियों के सहारे या उपजाऊ मैदानों में होता है। यहां रहने वाला समुदाय आपस में मिलकर रहता है एवं उनके व्यवसाय भी समान होते हैं।

गुच्छित बस्तियों की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

- ये बस्तियाँ प्रायः खेतों के मध्य किसी ऊँचे और बाढ़ आदि से सुरक्षित स्थानों पर बसी होती हैं।
- इनमें सभी मकान एक-दूसरे के समीप बनाए जाते हैं।
- गुच्छित बस्तियाँ एक स्थान पर संकेन्द्रित होती हैं।
- इन बस्तियों में रहने वालों लोग सुख-दुःख में एक-दूसरे की सहायता करते हैं एवं कृषि कार्यों में एक दूसरे की मदद करते हैं।

14. वाणिज्यिक पशुधन पालन की किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर : आधुनिक वैज्ञानिक तरीके से किया जाने वाला व्यवस्थित एवं पूंजी प्रधान पशुपालन ही वाणिज्यक पशुपालन कहलाता है। वाणिज्यिक पशुधन पालन की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैः-

1. **बड़े आकार का फार्मः** वाणिज्य पशुधन पालन एक निश्चित स्थान पर विस्तृत फार्म पर किया जाता है और उनके चारे की व्यवस्था स्थानीय रूप से की जाती है। वाणिज्य पशुधन पालन अधिक व्यवस्थित एवं पूँजी प्रधान है।
2. **पशुपालन के वैज्ञानिक तरीके :** वाणिज्य पशुधन पालन में पशुओं की देखभाल वैज्ञानिक तरीके से किया जाता है। इसके अंतर्गत उन विशेष पशुओं को पाला जाता है, जिसके लिए वह क्षेत्र अत्यधिक अनुकूल होता है। इसमें पशुओं के प्रजनन, जनांकिकी सुधार, बीमारियों पर नियंत्रण तथा स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
3. **वाणिज्यिक पशुधन के क्षेत्र :** वाणिज्यिक पशुधन के क्षेत्र मुख्यतः नई दुनिया में प्रचलित है। विश्व में न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया, अर्जेंटाइना, युरुग्वे, संयुक्त राज्य अमेरिका में वाणिज्य पशुधन पालन किया जाता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (5x3=15)

किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दें।

15. विश्व में जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करने वाले भौगोलिक कारकों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर : किसी भी देश का वास्तविक धन, जन अर्थात लोग होते है। यह देश का महत्वपूर्ण संसाधन है तथा देश के अन्य संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग कर राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करता

है। 21 वीं शताब्दी में विश्व की जनसंख्या 6 अरब से अधिक दर्ज की गई है। इस विशाल जनसंख्या का विश्व में असमान वितरण पाया जाता है। असमान वितरण के संदर्भ में जार्ज बी. क्रेसी की टिप्पणी है। "एशिया में बहुत अधिक स्थान पर कम लोग और कम स्थान पर बहुत अधिक लोग रहते हैं।" मोटे तौर पर विश्व की 90% जनसंख्या, केवल 10% स्थल भाग में निवास करते हैं। इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि विश्व में जनसंख्या का वितरण और घनत्व असमान है।

जनसंख्या के असमान वितरण और घनत्व को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं-

(क) **जल की उपलब्धता**- मानव के लिए जल जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण संसाधन है। मानव के विभिन्न क्रियाओं में जल की आवश्यकता पड़ती है। जैसे- घरेलू उपयोग, पेयजल, कृषि में सिंचाई, पशुओं तथा औद्योगिक कार्यों के लिए जल की आवश्यकता होती है। शुष्क प्रदेशों एवं जल की कमी वाले क्षेत्रों में जनसंख्या विरल होती है अतः जिन क्षेत्रों में जल आसानी से उपलब्ध होते हैं, उन क्षेत्रों में लोगों का घना बसाव पाया जाता है। प्राचीन काल से ही नदी घाटियों में सघन बसाव मिलते हैं। गंगा नदी घाटी ,ब्रह्मपुत्र नदी घाटी और सिंधु नदी घाटी में जनसंख्या के सघन बसाव पाए जाते हैं।

(ख) **भू-आकृति**:- हमारे पृथ्वी के धरातल पर पर्वत, पठार, मैदान पाए जाते हैं। विश्व की जनसंख्या का 1 / 10 भाग ही उच्च पर्वतीय एवं पठारी भागों में निवास करता है । पर्वत एवं पठारी क्षेत्रों में मैदानी क्षेत्रों की अपेक्षा कृषि कार्यों, परिवहन आदि में दिक्कते होती हैं अतः इन क्षेत्रों में एकाकी बस्तियां दिखाई पड़ती है। हिमालय, आल्प्स ,रॉकीज, एंडीज पर्वत तथा मध्य एशिया के पहाड़ी भाग जनशून्य है । विश्व के बहुत ही थोड़े नगर पहाड़ी भागों में बसे हैं। विश्व की 90% जनसंख्या एवं प्रायः सभी बड़े-बड़े नगर औद्योगिक एवं व्यापारिक केंद्र जो वास्तव में घनी जनसंख्या के जमाव मैदानी क्षेत्रों में स्थित हैं। मैदानी क्षेत्रों में कृषि उत्पादन, सड़क निर्माण, बस्तियों के निर्माण कार्य सहज होते हैं, फलस्वरूप मैदानी क्षेत्रों में घने बसाव पाये जाते हैं। गंगा का मैदान , राइन और सेंट लॉरेंस के मैदान मानव आवास से परिपूर्ण है।

(ग) **जलवायु** :- जनसंख्या के वितरण पर जलवायु का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है । मनुष्य उन्हीं भागों में रहना पसंद करते हैं, जहां की जलवायु उनके स्वास्थ्य तथा कृषि एवं उद्योग के लिए अनुकूल होते हैं। यही कारण है कि सबसे पहले मानव मध्य अक्षांशीय क्षेत्रों अर्थात 20 डिग्री से 40 डिग्री अक्षांशों के बीच में बसा । विषम जलवायु अर्थात अत्यधिक ठंड एवं अत्यधिक गर्म दोनों ही क्षेत्रों में निवास करना अत्यंत कठिन है ऐसे क्षेत्रों में कृषि एवं वानिकी भी बहुत मुश्किल होती है, फलस्वरूप ध्रुवीय क्षेत्रों एवं विषुवत रेखीय प्रदेशों में जनसंख्या का बसाव निम्न है। समकारी जलवायु क्षेत्रों में अर्थात मध्य अक्षांशीय क्षेत्रों में घना बसाव पाया जाता है।

(घ) **मृदा / मिट्टी**:- उपजाऊ मिट्टी वाले क्षेत्रों में व्यक्ति सघन कृषि एवं विकसित पशुपालन करके अपना जीवन निर्वाह करते हैं। कृषि के द्वारा परिश्रम से सफलतापूर्वक जीवन निर्वाह हो सकता है। उपजाऊ मिट्टी वाले क्षेत्रों में फसल की अधिक उत्पादकता लोगों को आकर्षित करती है। किसान कृषि कार्य के लिए उपजाऊ, समतल मैदानी क्षेत्रों का चुनाव करते हैं, अतः ऐसे क्षेत्र सघन बसे होते हैं। विश्व के नदी घाटी क्षेत्र में घने बसाव पाए जाते हैं। जैसे - भारत में गंगा का मैदान।

उपयुक्त भौगोलिक दशाएँ विश्व में जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करती हैं।

16. ग्रामीण अधिवास के किन्ही पांच प्रतिरूपों की विवेचना कीजिए।

उत्तर : वैसे अधिवास जहां के लोग प्राथमिक आर्थिक क्रियाकलापों में अत्यधिक संलग्न होते हैं ग्रामीण अधिवास कहलाता है।

ग्रामीण अधिवास अथवा बस्तियों को उनकी आकृति के आधार पर निम्नलिखित प्रतिरूपों में विभक्त किया जाता है:-

(क) **रैखिक प्रतिरूप** : ऐसी बस्तियों का विकास सड़को, नदियो, नहरों, रेल लाइनों के किनारे अथवा तटबंधों के साथ-साथ होता है। इस प्रकार के ग्राम भारत में उड़ीसा व आंध्र प्रदेश के तटीय भागों में गुजरात के कक्ष सौराष्ट्र सूरत जिलों में तथा दक्षिणी राजस्थान और तमिलनाडु में मिलते हैं ।उत्तराखंड के देहरादून जिले में नहरों के किनारे इस प्रतिरूप में गांव बसे हैं, इन्हें फीता या डोरी प्रतिरूप भी कहते हैं।

(ख) **आयताकार प्रतिरूप** : ऐसी बस्तियों का विकास ऐसे स्थानों पर होता है, जहां सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती है। इस प्रकार के गांव सामान्यता मरुस्थलीय क्षेत्रों में तथा मैदानी भागों में पाए जाते हैं। तालाब या किसी अन्य जल स्रोत के सहारे चौकोर गांव बसे होते हैं, इनकी गलियां एक दूसरे को समकोण पर काटती है।

(ग) **तारक प्रतिरूप** : कभी-कभी कई सड़क मार्ग विभिन्न दिशाओं से आकर एक बिंदु पर मिलते हैं, ऐसे स्थानों पर बसे गांव सभी दिशाओं से आने वाली सड़कों के किनारे बने होते हैं, वहां तारे के आकार की बस्तियां विकसित हो जाती है।

(घ) **वृत्ताकार प्रतिरूप** : ऐसी बस्तियां मुख्य रूप से किसी तालाब या झील के चारों और विकसित हो जाते हैं। इसके दो उपविभाग होते हैं :-

- नाभिक जिसका केंद्र बसा होता है और इसके चारों ओर का गांव खुला होता है, जैसे मुखिया का घर या कोई धार्मिक स्थान नाभिक के समान होता है।
- निहारिकीय इसका केंद्र खाली होता है और उसके चारों और गांव बसा होता है।

(ङ) **टी-आकृति प्रतिरूप** : ऐसी बस्तियां वहां विकसित होती है, जहां कोई सड़क मुख्य सड़क से आकर मिलती है और वहीं समाप्त हो जाती है। ऐसे स्थानों पर सड़कों के किनारे बने मकानों से टी आकृति की बस्ती विकसित हो जाती है।

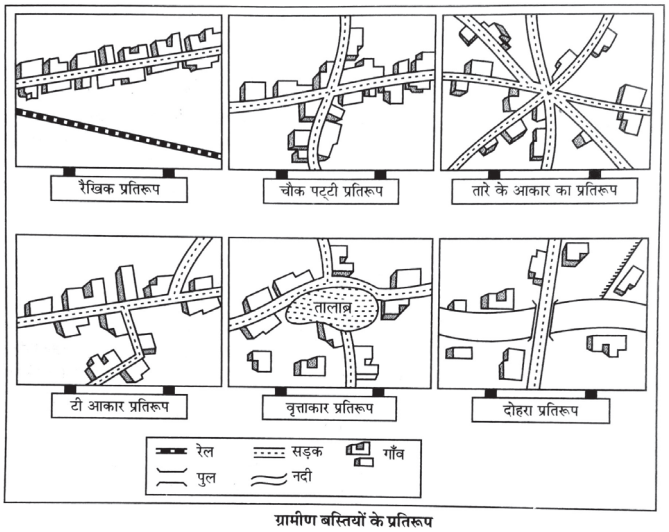

ग्रामीण बस्तियों के प्रतिरूप

jharkhandlab.com

17. किसी उद्योग की अवस्थित को प्रभावित करने वाले कारकों की व्याख्या कीजिए।

उत्तरः किसी उद्योगों के स्थानीयकरण को प्रभावित करने वाले निम्नलिखित कारक हैं:-

- **कच्चे माल की निकटता** : निर्माण उद्योग की सबसे पहली आवश्यकता कच्चे माल की उपलब्धता होती है, जिसे परिष्कृत एवं संश्लेषित कर विनिर्मित किया जाता है। विनिर्माण की प्रक्रिया द्वारा वस्तुएं अधिक मूल्यवान हो जाती हैं। अतः जहां पर कच्चे माल की निकटता होगी विनिर्माण उद्योगों का स्थानीयकरण भी वहीं पर होगा।

- **पूंजी की सुलभता** : किसी भी उद्योग को चलाने के लिए पर्याप्त पूंजी की आवश्यकता होती है अतः पूंजी की सुलभता विनिर्माण उद्योगों के स्थानीयकरण में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

- **शक्ति के साधनों की निकटता** : वर्तमान समय में समस्त निर्माण उद्योग किसी न किसी शक्ति के साधन पर निर्भर रहते हैं। जैसे -कोयला ,खनिज तेल, प्राकृतिक गैस, जल विद्युत, आदि शक्ति के साधन है क्योंकि ऊर्जा के बिना किसी भी उद्योग को संचालित नहीं किया जा सकता है। अतः शक्ति के साधनों की निकटता आवश्यक है।

- **परिवहन के साधनों की उपलब्धता**: कच्चे माल को फैक्ट्री तक लाने के लिए और निर्मित माल को बाजार तक पहुंचाने के लिए सस्ते और तीव्र परिवहन औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक है। अतः वर्तमान समय में उद्योगों के स्थानीयकरण में परिवहन के साधनों की उपलब्धता अनिवार्य है। जैसे - औद्योगिक क्षेत्रों का रेल ,सड़क ,हवाई मार्ग से जुड़ा होना आवश्यक है।

- **बाजार की निकटता** : बाजार से निकटता वाले औद्योगिक क्षेत्रों में उत्पादित वस्तुओं की खपत अधिक होती है, क्योंकि वैसे क्षेत्रों में अधिक संख्या में उपभोक्ता आसानी से उपलब्ध होते हैं। अतः निर्मित वस्तुओं के खपत हेतु बाजार की निकटता होनी आवश्यक है।

- **अनुकूल जलवायु** : किसी भी उद्योग की स्थापना के लिए अनुकूल जलवायु का होना एक महत्वपूर्ण कारक है। अतः उद्योग ऐसे स्थानों पर स्थापित किए जाते हैं, जहां की जलवायु अनुकूल हो। किसी उद्योग को विशेष जलवायु की आवश्यकता होती है। जैसे -सूती वस्त्र उद्योग के लिए आर्द जलवायु। क्योंकि इस जलवायु में धागा महीन तथा कम टूटता है। अतः सूती वस्त्र उद्योग को आर्द जलवायु में ही स्थापित किया जाता है।

- **कुशल और सस्ते श्रमिक** : कुशल एवं सस्ते श्रमिकों की उपलब्धता वाले क्षेत्र उद्योगों की अवस्थिति के लिए अनुकूल होते हैं। जैसे -

  अलीगढ़ में ताला निर्माण उद्योग एवं महाराष्ट्र में सूती वस्त्र उद्योग का विकास।

- **सरकारी संरक्षण** : देश में उद्योग को प्रोत्साहन देने के लिए संरक्षण प्रदान किया जाता है। सरकार की ओर से अधिक प्रोत्साहन दिए जाते हैं, जिससे अनेक उद्योगों के स्थानीयकरण में सहायता मिलती है। जैसे-

  भारत में चीनी उद्योग, लोहा इस्पात और सूती कपड़ों के विकास के लिए तत्कालीन सरकार ने संरक्षण की नीति अपनाई थी।

18. भारतीय कृषि की समस्याओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तरः भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां के अधिकांश जनसंख्या कृषि कार्यों पर ही निर्भर करती है। कृषि पारिस्थितिकी और विभिन्न प्रदेशों की ऐतिहासिक अनुभवों के अनुसार भारतीय कृषि की समस्याएं भी विभिन्न प्रकार की हैं।

भारतीय कृषि की समस्याएं मुख्यतःनिम्नलिखित प्रकार की है-

- **अनियमित मानसून पर निर्भरता** - भारत में कृषि क्षेत्र का केवल एक तिहाई भाग ही सिंचित है , शेष कृषि क्षेत्र मानसून पर निर्भर है। भारत में दक्षिण -पश्चिम मॉनसून की अनिश्चितता और अनियमितता से कृषि के उत्पादन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। भारत का उत्तर - पूर्वी भाग और पश्चिमी घाट अधिक मानसून प्राप्त करता है अर्थात अधिक वर्षा वाला क्षेत्र है। इन क्षेत्रों में कभी-कभी अत्यधिक वर्षा से बाढ़ भी आ जाते हैं तथा फसल डूब कर बर्बाद हो जाते हैं। वहीं दूसरी ओर राजस्थान जैसे उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में वर्षा काफी कम प्राप्त होती है, यहां फसल को पर्याप्त जल ना मिलने से फसल नष्ट हो जाते हैं। इस तरह अनिश्चित और अनियमित वर्षा की आपूर्ति होने से कृषि में काफी अधिक समस्या होती है, इससे फसल उत्पादन बेहतर नहीं हो पाता है।

- फसलों की निम्न उत्पादकता अंतरराष्ट्रीय स्तर की अपेक्षा भारत में फसलों की उत्पादकता कम है। संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस तथा जापान जैसे विकसित राष्ट्रों की तुलना में भारत में उत्पादित की जाने वाली अधिकांश कृषि फसलों का उत्पादन प्रति हेक्टेयर कम है। इसका प्रमुख कारण देश के शुष्क तथा अन्य क्षेत्रों में वर्षा पर निर्भर रहने वाली कृषि फसल है। देश के विस्तृत शुष्क क्षेत्रों में अधिकतर मोटे अनाज, दाले तथा तिलहन की खेती की जाती है तथा यहां इनकी उत्पादकता बहुत कम है।

- **वित्तीय संसाधनों की बाध्यता तथा ऋणग्रस्तता** : आधुनिक कृषि कार्य में लागत अधिक आती है ,जिससे सीमांत और छोटे किसानों को कृषि कार्य में कठिनाइयां का सामना करना पड़ता है। भारत में सीमांत और छोटे कृषक पूंजी की कमी के कारण कृषि कार्यों में उन्नत तकनीकी तथा वैज्ञानिक पद्धति पर पर्याप्त निवेश नहीं कर पाते हैं। कभी-कभी विविध वित्तीय संस्थाओं तथा महाजनों से ऋण लेकर वे कृषि कार्य करते हैं , परंतु पर्याप्त लाभ नहीं होने के कारण वे ऋण ग्रस्त हो जाते हैं।

- **भूमि सुधार व्यवस्था का अभाव** : भूमि के असमान वितरण के कारण भारतीय किसान लंबे समय से शोषित रहे हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भूमि सुधार को प्राथमिकता दी गई, लेकिन कुछ कारणों से यह सुधार पूर्णतः फलीभूत नहीं हो पाए। अधिकतर राज्य सरकारों के द्वारा राजनीतिक रूप से शक्तिशाली जमींदारों के खिलाफ कठोर निर्णय नहीं लिया गया। भूमि सुधार नियम के लागू ना होने के परिणाम स्वरूप कृषि योग्य भूमि का असमान वितरण आज भी जारी है, जिससे कृषि कार्य के विकास में बाधा आती है।

- **छोटे- खेत तथा विखंडित जोत** : बढ़ती जनसंख्या के कारण भू-जोतों का औसत आकार और भी सिकुड़ रहा है। इसके अतिरिक्त भारत में अधिकतर भू-जोत छोटे और बिखरे हुए हैं। कई राज्यों में एक बार भी चकबंदी नहीं हुई है, वहां पुनः चकबंदी की आवश्यकता है ,क्योंकि अगली पीढ़ी में भूमि बंटवारे की प्रक्रिया से भूजोतों का दुबारा विखंडन हो गया है। विखंडित तथा छोटे भु- जोत आर्थिक दृष्टि से हानिकारक है।

- **वाणिज्यीकरण का अभाव** : भारत में अधिकतर किसानों के पास कृषि भूमि कम है। वे अपने जरूरत एवं स्वयं उपभोग की फसल उगाते हैं। कृषक अपने परिवार के भरण पोषण के लिए खाद्यान्नों के उत्पादन पर प्राथमिकता देते हैं। इन किसानों के पास अपनी जरूरत से अधिक उत्पादन के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं होते हैं। वर्तमान में देश के कुछ सिंचित भागों में कृषि का आधुनिकीकरण होने से वाणिज्यीकरण भी हो रही है।

- **कृषि भूमि का निम्नीकरण**: वर्तमान समय में भू -संसाधनों का निम्नीकरण एक गंभीर समस्या है, जो सिंचाई और कृषि विकास की दोषपूर्ण नीतियों के कारण उत्पन्न हुई है। भारत के सिंचित क्षेत्रों में कृषि भूमि का एक बड़ा भाग जलाक्रांतता, लवणता तथा मृदा क्षारयीता के कारण

jharkhandlab.com

बंजर हो गई है। कीटनाशक दवाओं के प्रयोग से मिट्टी में जहरीले तत्वों का जमाव हो गया है ।भूमि की उर्वरता प्राप्त करने की जो प्राकृतिक पद्धति, परती भूमि व्यवस्था थी, वह बहुफसलीकरण में बढ़ोतरी के कारण प्रभावित हुई है। उष्णकटिबंधीय तथा अर्ध शुष्क कृषि क्षेत्र में मानवीय क्रियाकलापों के कारण मृदा तथा वायु अपरदन की समस्या बढ़ रही है, जिसके कारण भूमि निम्नीकरण की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा हैं।

- **अल्प बेरोजगारी की समस्या** : भारतीय कृषि मॉनसून आधारित होती है ,असिंचित क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर अल्प रोजगारी पाई जाती है। वर्ष के कुछ महीने ही कृषक कृषि कार्यों में संलग्न होते हैं। भारत के अधिकांश भागों में होने वाले कृषि कार्यक्रम में गहन श्रम की आवश्यकता नहीं पड़ने के कारण, कृषि में कार्यरत किसान को वर्ष पर्यंत कार्य करने के अवसर प्राप्त नहीं होते हैं, अतः उनमें अल्प बेरोजगार की समस्या होती है।

19. प्रदत संसार के मानचित्र में निम्नलिखित को दर्शाए :-

(a) कनाडा (b) चीन
(c) रूस (d) सऊदी अरब
(e) कोलकाता।

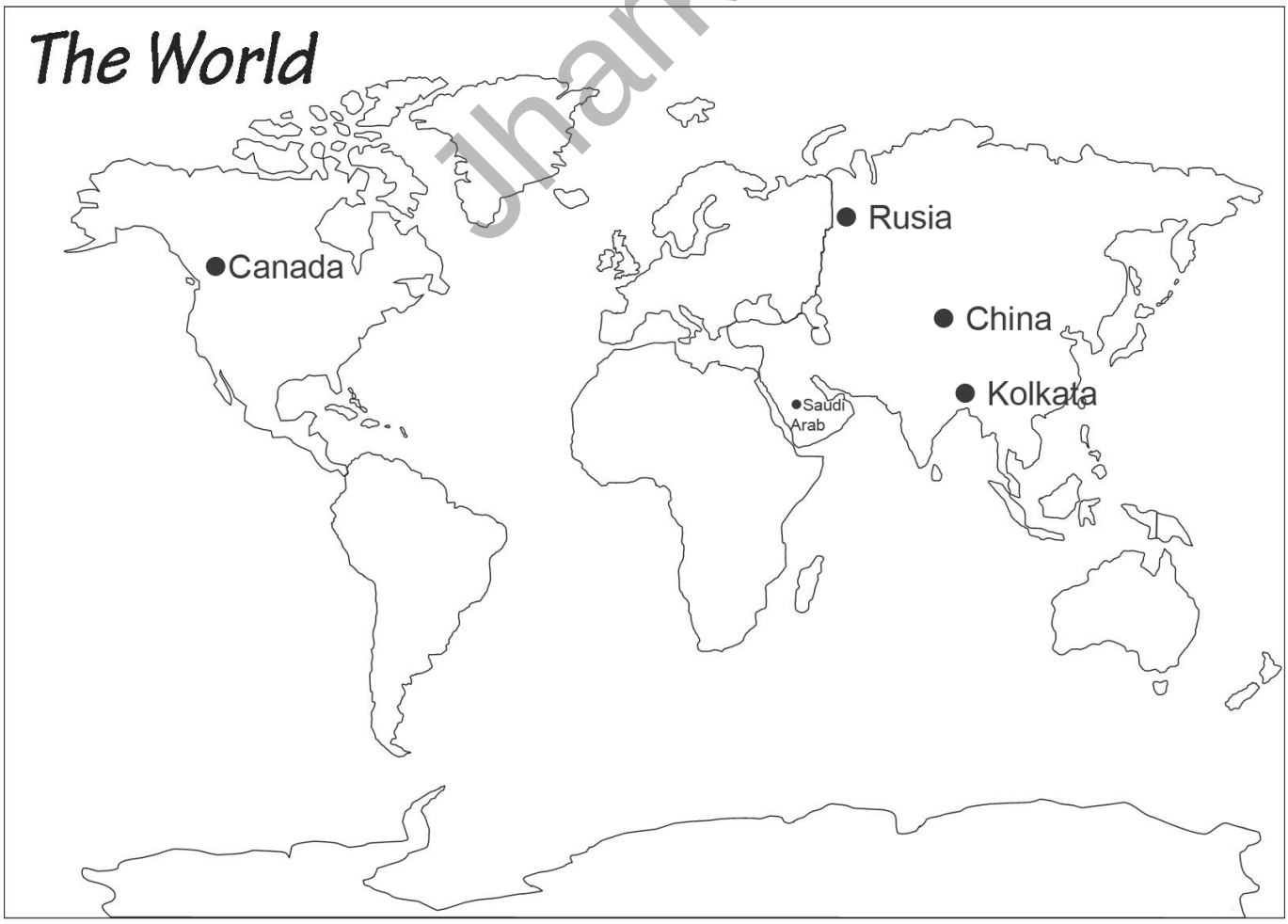

jharkhandlab.com

jharkhandlab.com

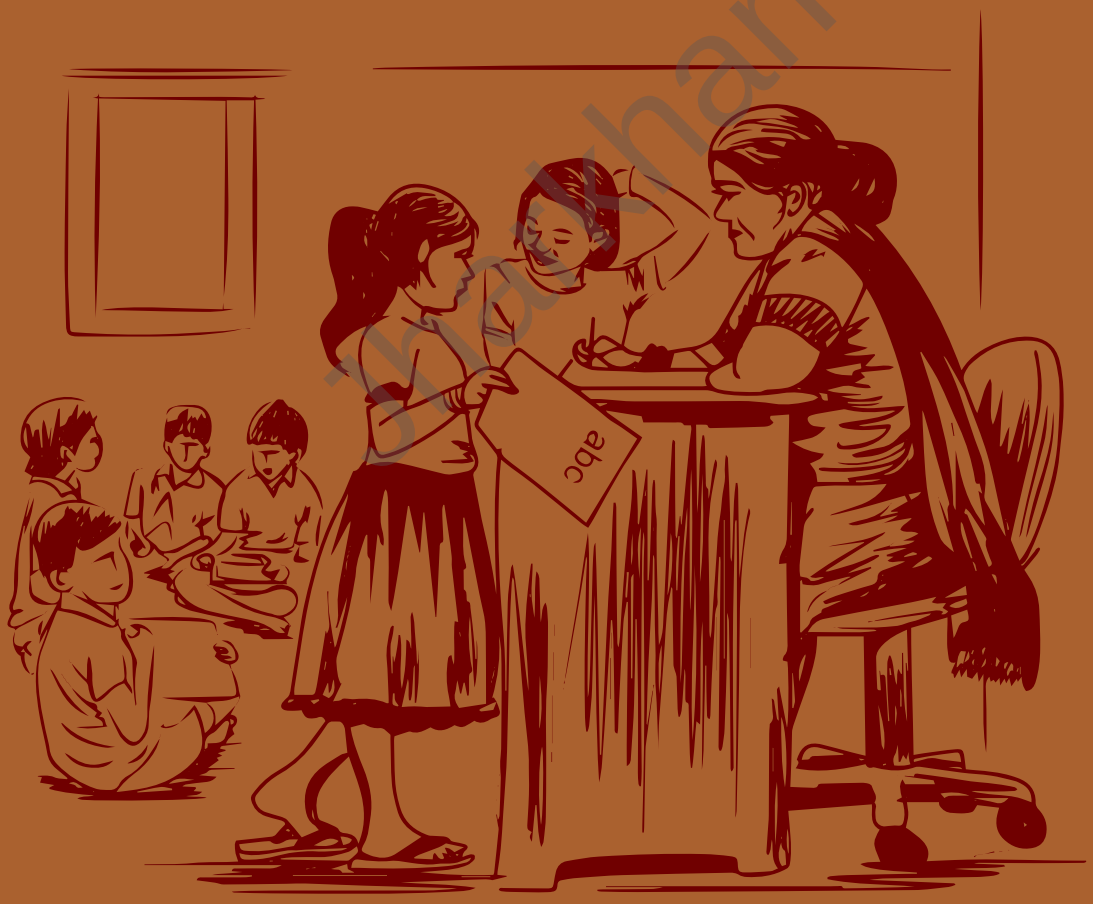

झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi